दिव्य पत्र माला

भाग-२

पूज्य गीता भगवान

ॐ

INDEX

		पृष्ठ संख्या
1.	सदैव अपनी सच्ची	5
2.	ज्ञानी नको द्रिसे	9
3.	चिठ्ठियाँ तुम सबकी	12
4.	तूफान आता है	14
5.	तुम्हारे मन के	18
6.	मौन करना कितने समय	21
7.	तीनो लोकों नौ खण्ड	25
8.	यदि तुम आत्मा का	26
9.	ओम में टिको	28
10.	कुँए से रोज	29
11.	श्रवण, मनन, निध्यासन	31
12.	अर्जुन ने धर्म युद्ध	32
13.	स्वार्थ मोह निकालकर	34
14.	आत्मा समझने से	37
15.	आतम तृप्ति वाले को	39
16.	ईश्वर अहंकार को खाता	42
17.	Change your wrong	45
18	पहले मन का बंधन	48
19.	तुम मन के पीछे	51
20.	ज्ञान से बढ़कर प्रेम	53
21.	मेरा शरीर भले कहीं	57
22.	अन्त बेले में	61
23.	असल में हर एक	62
24.	आज की दुनिया	63
25.	सभी हालतों में	64
26.	शास्त्रों की लम्बाई	65
27.	सत्संग करते होगे	66

28. गुरू ने सरल सलाह 68
29. आज दिवाली मनाई 70
30. अपने अंदर की सफाई 72
31. सत चित्त आनन्द 74
32. दिव्य दृष्टि वाले 76
33. प्रलय करती है 80
34. गुरू के ख्याल 83
35. Happy Diwali 87
36. गुरू केवल जगाता 88
37. सच्ची दिवाली मनाओ 91
38. सत्संग अधिक से अधिक 92
39. समाधि का मतलब 96
40. गुरू सच्चा तभी 97
41. अर्जुन के रथ को 100
42. योग माना रमज़ 103
43. इन्द्र जैसा देवता 108
44. कितने ही दिनों से 112
45. शरीर को मन्दिर 117
46. बीमारी और दुःखों 119
47. तुम तो सच्ची 121
48. भगवान अपने 123
49. वेदान्त मान वेद 124
50. यह शरीर तो 127
51. धन्य हो तुम 131
52. जैसे हम 134
53. यहाँ सत्संग 138
54. बाहर की हालतें 142
55. करोड़ों का नुकसान............ 145
56. प्रेम पत्र मीरा का 150

57. हिम्मत वालों के 154
58. ज्ञान का सूक्ष्म 156
59. समय पर परीक्षा 160
60. जो Fact को 163
61. अपनी पिछली जीवन........... 164
62. प्रिय तुम तो खाली 165
63. Knowledge Means 167
64. नये वर्ष का पत्र 171
65. Card मिला 172
66. चुपकर के बैठने 174
67. सत चित आनन्द 175
68. देर से हुए काम 179
69. Morning Excercise 183
70. गुरू वचन बोलता है 185
71. सुस्ती तमोगुण है 188
72. खुशी की बात है 191
73. आज सुबह दादा ने 193
74. गुरू नानक साहिब 195
75. खोटा सिक्का 197
76. सभी लिखते हैं 200
77. कबीरा तू कबीर 203
78. जिज्ञासू को अपनी 205
79. एक लाल मिलने से 213
80. अब तो लखनऊ को 216
81. मैं वह दिन 218
82. गृहस्थ में रहते हुए 221
83. भगवान जो 223
84. सब मौज आननद में 225
85. संकल्पमय सृष्टि 231
86. महात्मा गाँधी 235

87. हम बहुत भाग्यशाली 239
88. इन्द्र जैसा देवता 242
89. योग माना रमज़ 246
90. अर्जुन के रथ 249
91. गुरू सच्चा तभी 254
92. कितने ही दिनों 257
93. तुम्हारी याद कितनी 262
94. तुम्हारी Points 267
95. मैं ब्रहम हूँ 269
96. अपनी Tataly 270
97. प्रेम मम् रूप 271
98. तुम्हार प्रेम पत्र 276
99. भगवान के राज्य में 279
100. तुम ज्ञान सबको 281
101. इस राह पर बढ़ने 283
102. तुम सब होशियार 287
103. Divene Dada Bhagwan 289
104. दत्तात्रेय भगवान के 292
105. सच्चे गुरू को 306
106. सुस्ती तमोगुण 310
107. गुरू की कृपा 313
108. हमें भी वैराग्य 315
109. हमें राज्य करने 318
110. जैसे दान करके 320
111. तुमने अपने आप 322
112. खावंद पहिंजे 323
113. सिर को अपना 325
114. जिसकी अमानत होगी 327
115. संत और ब्रहमज्ञानी 329
116. दुःख में धैर्य 331

पत्र गीता भगवान का -1

सदैव अपनी सच्ची मस्ती के नगाड़े कोने–कोने में बजाकर सबको अपने सच्चे स्वरूप की पहचान देते रहो। तुमने जो मेरी प्रशंसा की है वह पढ़कर दुःख हुआ, आश्चर्य लगा कि मैंने क्या किया है। भगवान के भी हाथ में नहीं है जो किसी को ज्ञान दे सके। गाय के हाथ में नही है जो किसी को दूध पिला सके! जो उसका बछड़ा बनेगा वह उसमें से खींचकर निकालेगा। भगवान को इस खाज़ी (शरीर) में और वह भी मोहिनी रूप में पहचानना सख्त कठिन है वह भी आगरे वालों नें बड़ी आसानी से पहचान लिया तो वे कितने न महान हुए। कृष्ण अर्जुन को क्यों बार–बार (हर घड़ी) परम प्यारा कहकर पुकार रहा है, क्योंकि कह रहा है कि इस मेरी माया से तरना कोई मज़ाक नहीं है पर जो आकर मुझे पहचानता है जो ऐसी मोहिनी माया से खट्टा होकर वैराग्य लेकर केवल मेरे लिए जीता है वह अवश्य तैर पर पार होगा। मेरा निष्कामी भक्त जिसे तीनों लोकों का राज्य कौव्वे की विष्ठा के समान लगता है जिसे कुछ भी नहीं चाहिए मेरे सिवाय उसे तो मैं पूरा अपने आप को अर्पण कर देता हूँ। बाकी सकामी भक्त को कुछ न कुछ देकर छूट जाता हूँ पर निष्कामी मेरी जान छोड़ने वाले नहीं हैं। भगवान तो ऐसे भक्तों को ढूँढ़ रहा है। ब्रहमज्ञानी को खोजे महेश्वर। सूर्य

को एक औरत ने प्रार्थना की कि सूर्य देवता तुम्हारी लाख मेहरबानियाँ हैं जो तुमने हमें रोशनी देकर हमारा अंधेरा दूर किया है, तुम्हारे प्रकाश से हम चल फिर रहे हैं। वृक्ष बढ़ते हैं, खेती होती है, कूड़ा (गंदगी) कचरा सुखाते हो, कपड़े सूंखते हैं। सूर्य यह सुनकर बिल्कुल हैरान हो गया, औरत को बोला अंधेरा, अंधेरा क्या होता है? मैंने तो कभी नहीं देखा है। थोड़ा अंधेरा लेकर आओ तो मैं भी देखूँ कौन सा अंधेरा मैने नाश किया है? अरे मैं हूँ ही प्रकाश स्वरूप, मैंने कुछ नहीं किया है। जहाँ भी हूँ वहाँ प्रकाश ही हूँ। मेरा तो स्वधर्म है प्रकाश स्वरूप होकर रहना। यह सब दादा लक्ष्मी हमारे पूरण भगवान की मेहनत है जिन्होंने हमें काले अंधेरों से निकालकर आज इलाही तख्त पर बैठाया है। बीज ही आदि कारण है जिससे दरख्त बना। उनकी ही देग पकायी हुई है जिसमें हम सब खा रहे हैं। जिनका भी हिसाब किताब है इस देग में वे इस शरीर के द्वारा उसी देग का स्वाद लूट रहे हैं। उनकी देग तो खुटने वाली नहीं है। नित–नित होत सवाया।

धाता ध्येय ध्यान ये तीनों जिस समाधी में मिलकर एक हो जाते हैं वही समाधी है कि सोहम्, ओऽम सतगुर् प्रसाद। समाधी का मतलब है सभी संकल्प–विकल्पों का शान्त होना। सब इच्छाओं से फारिग होना। सतगुर् सिखाया सजह समाधी। उठते बैठते चलते जो दृष्टा होकर खड़ा है वही आठो ही पहर समाधी में है। श्रवण करके उसके बाद

पूरा समय मनन ही चलना चाहिए कि घड़ी इक विसरूं राम को तो ब्रहम हत्या मोहे होय। घड़ी न मिलते तो कलयुग होता। ध्यान करना है ज्ञान का न कि आत्मा का क्योंकि आत्मां अलग नहीं है पर मैं आत्मां हूँ यह नित्य प्रति निश्चय करना है। धरते हो ध्यान तुम जिसका वो खुद तुम हो, भूल से अपने को अपने लक्ष्य से अलग समझते हो। सब कर्म धर्म छोड़कर तुम मैं की शरण लो कि मैं क्या? यह ज्ञान सुनने के बाद तो चौबीस घण्टे यह अभ्यास चलना चाहिए कि मैं क्या?सब सवालों का जवाब भी इसी एक अक्षर में ही है। एकान्त माना एक की भी अन्त। जहां एक तुम भी न हो। जब–जब अपने को देखते हो तब–तब नमाज़ नहीं है। देह भुलाना ही आशिकों की सच्ची भक्ति है। मैं नां। अभ्यास है ओम का वैराग्य है मैं नां का। जहां भी मन जाये वहां हे अर्जुन मुझे देख, खींचकर फिर आत्मां में लगाओ। यह अभ्यास हर वक्त करना है। करो आठ ही पहर समाधी, सीखो योगी से उस्तादी। ज्ञान सुनने के बाद जिज्ञासु एकान्त ही पसंद करता है। मन को गुरू के विचारों से मारना यही अभ्यास रात दिन चालू रखना है। ओम बिन हर बात को दिल से सदा ही नाकार करो। हर वक्त मन के ऊपर सवार रहना ही अभ्यास है। दम पर रखे कदम तो अवश्य ही पास हो जाय। हर एक स्वांस पर दम पर कंट्रोल रखना है कि ख्याल कहाँ गया। मन कुत्ते की पूँछ पर बिल्कुल

चढ़कर बैठना है कि कहीं न शैतान हो जाय और की कराई कमाई न खराब कर दे। जैसे साबुन की सीढ़ी पर चढ़ते समय कितना संभल कर चलते हैं इतनी सम्भाल इस मन शैतान की करनी है पर तुम हो शिवोहम शैतान को भी पैदा करने वाले हो तो फिर डर काहे का। मन बेचे सत्गुरू के पास तिस सेवक के कारज रास। किनको तो बरसों लग जाते हैं किन पर पलक में राज़ी हो जाता है। फूल तोड़ने में देरी है पर ज्ञान होने में इतनी भी देर नहीं है। केवल पूरण जिज्ञासू हो जो सिर उतार कर रखे। शीश देने से ही ईश मिलता है। जब तक प्रीतम परदेस में होता है तो उसकी चिट्ठियाँ अच्छी लगती हैं और इंतज़ार करते हैं पर जब प्रीतम सामने आकर खड़ा हो तो फिर फुर्सत ही कहाँ है। □

पत्र गीता भगवान का -2

ज्ञानी नको द्रिसे द्रोह खे नको करे थो सवाब। नही सत्कर्म करता है न ही किसी के गुनाह दोष देखता है। सबके लिए आतम दृष्टि रखता है। यदि सबको अपनी मर्ज़ी पर चलने के लिए छोड़ दे तो फिर तो तुम्हें भी कोई बंधन में न डाले। आज़ादी जनम का हक है हर किसी का। न किसी के गुलाम बनो न किसी को बनाओ। मेरी मौज मेरे अंदर में है क्योंकि मैं चेतन आत्मां हूँ मुझे जड़ वस्तु क्या मौज दे सकेगी? सारी प्रकृति जड़ है। न मन मारना है न मन है पर गुरू रमज़ से मन मोड़ देता है। यहां से हटाकर वहाँ लगायें। रबड़ की तरह मन को मोड़ना सीखो तो कभी भी दुनिया में दुखी नहीं होओगे। नम्रता बच्चे से लेकर बड़े तक सबके साथ होनी चाहिए। जो सोचता है उसका इश्क नहीं है। इश्क वाले के सोच वीचार बन्द हो जाने चाहिए केवल प्रेम ही रह जाय। सबके लिए प्रेम, न ज्ञान न अज्ञान, मिलकर ज्ञानी मिलकर खाली हो जैसे निराकार खाली पोलार (Vacume) है।
ख्याल कोई भी करना तुम्हारा धर्म नहीं है। आत्मांकार को क्या सोचना? वह शरीर की चिन्ता नहीं करता है। सहज जहाँ शरीर पहुँचना है वहाँ पहुँच जाता है। जो कुछ मिलना है वह मिल जाता है बाकी क्या ख्याल करे। सबमें आत्मां समझने से समता भाव से अहमता ममता

कर्ता तीनों रोग निकल जाते हैं। किसी भी शब्द का असर नहीं होना चाहिए। न शुभ न अशुभ। कोई दृश्य अच्छा या खराब मन पर असर न करके जाये। सब खेल है तुम केवल दृष्टा बनकर बैठो, बोले तो कर्ता हो गये। देखने वाले बनो न कि करने वाले। बहादुर के लिए सब सहूलियतें (आसानी) होगी, कमज़ोर के लिए रूकावटें आयेंगी। अज्ञान को निकालो नहीं पर ज्ञान समझो तो अज्ञान पूँछ उठा कर भाग जायेगा। जो अपने साथ एक पाई भी नहीं रखता कि मेरा कुछ दुनिया में है ही नहीं वह दान क्या करेगा? यानि क्या देगा क्या लेगा। देह अध्यास वाला कितने भी सत्कर्म करे या साधन करे तो भी आत्मंसाक्षात्कार नहीं करेगा। मन है घोड़ा, पक्के घोड़े सवार नहीं हो तो दबाकर वह तुम्हारे ऊपर वार करके तुम्हें गिरा देगा। पक्के घोड़े सवार बनो तो सहज घोड़ा वश में आ जाएगा। वैराग्य ऐसा होना चाहिए जैसा किसी का पेट का भरा हो फिर मन को चाहे बढ़िया पुलाव खिलाओ तो खायेगा नहीं। तुम आत्मां रूपी घोड़े सवार बनो तो मन सहज ही वश में आ जाएगा नहीं तो मन को मारते उमर ही गुज़र जाएगी तो भी नहीं मरेगा। गुरू के द्वारा मन वश में आएगा अपने ही आप। समुद्र सुखाना आसान है, पहाड़ को हाथ में उठाकर खड़े होना सरल है पर मन को रोकना गुरू के सिवाय Impossible है। ऋषि मुनि गिर गये माया में इसलिए

क्योंकि उन्हें सच्चा गुरू नहीं मिला है। शरीर है घोड़ा, घोड़े को भूख लगे तो खिलाओ पर अपने को खाने वाला नहीं समझो। निराहारी समझो। न पति का न गुरू का न किसी और का तुम खा रहे हो पर तुम निराहारी हो। आत्मां में खाना पीना नहीं होता है। कोई भी आत्मां के सिवाय दूसरी बात करे तो मोचरा (जूता) लगाओ। अपने को भी मोचरा लगाओ यदि तुम आत्मा के सिवाय कुछ बोलो तो। □

पत्र गीता भगवान का -3

चिट्ठियाँ तुम सबकी पहुँची हुई हैं पढ़ कर सब खुश होते हैं कि कैसे सब अपने पैरों पर खड़े हैं। सब तुम लोगों की मेहनत और विश्वास का फल है। पुरूषार्थ तुम्हारा देव है। भाग्य और नसीब पर जो निर्भर रहता है वह नीच पुरूष है। तुमने ही अपने विश्वास और भावना से मुझे भगवान बना दिया। भक्त नहीं होता तो भगवान कैसे नाम पड़ता। तुम लोगों की सच्चाई से मुझे भी मदद मिली है जो इस पद पर पहुँचाया है। तुम सबकी दुआयें और भावनायें ही मुझे ऊपर चढ़ने में मददगार हैं तुम नही आते तो कौन मेरा ज्ञान सुनता कौन कदर करता। मैंने जो लेक्चर किये तुम लोगों को उनसे मुझे ही शक्ति मिली है। मैंने तुम लोगों से कोई मेहरबानी नहीं की है। मेरी प्रशंसा सब गिराने वाली और व्यर्थ है। एक गुरू और दूसरा तुम लोगों ने मुझे बनाया है। जेतिस नज़र न आवही त वात न पूछे कोय। यदि तुम लोगों की नजर मुझ पर नहीं पड़ती तो भगवान भी तो गलियों में धक्के खाता था। कृष्ण भी रास्ते में धक्के खाता था साधारण मनुष्य की तरह, जब अर्जुन ऊधव गोपियाँ मिले तब कदर नहीं हुई तो बेचारे ने शिकायत की कि हे अर्जुन मुझ परमात्मा को ये मूढ़ लोग नहीं जानते हैं। तुम भी करोड़ों में कुछ निकले हो। जिन्होंने ऐसे साधारण रक्त रोग के पुतले में आकर

भगवान का विश्वास रखा है। पत्थर रास्ते में पड़ा है पर किसी इंजीनियर की नज़र पड़ने से वह किसी महल की दीवार में जड़ देता है नहीं तो सभी के पैरों में आ रहा था। तुम लोग अपनी महिमा को जानो कि तुम क्या नहीं हो। तुम भगवान को पैदा करने वाले सबसे ऊँचे हो। ऊँचे ते ऊँचा भगवन्त। लिखा है प्यार में तुम्हारे जो शक्ति है वह ज्ञान में बिल्कुल नहीं है। तुम क्या समझते हो? केवल प्रेम हो या ज्ञान हो? तुम्हें शक्ति किसमें से आयी है? प्रेम किसे कहते हैं? अलग अलग समझा कर लिखो। तुम्हें किससे फायदा पड़ा है? अपना अनुभव लिख कर भेजना। विवेकानन्द कहता है कि प्रेम वह है जो तुम टुकड़े–टुकड़े कर डालो तो भी मैं प्रेम करता आऊँगा। तलवार के नीचे कतल कर दो तो भी मेरा प्रेम घटने वाला नहीं है ऐसा नहीं है कि तुमने प्रेम नहीं किया तो मैं भी नहीं करूँगा। प्रेम सवाली (माँगने वाला) नहीं बनता है प्रेमी दातार होता है। प्रेमी ऐसा नशे में चूर रहता है जो पता ही नहीं चलता है कि मैं पैरों पर खड़ा हूँ या सिर पर। प्रेमी को नशे में जहान देखने में नहीं आता है। माशूक का ध्यान करके खुद माशूक बन जाता है। वो खुद आशिक वो खुद माशूक सदा भरपूर रहते हैं। □

पत्र गीता भगवान का -4

तूफान आता है थोड़े समय के लिए। तुम यदि भगवान से जल्दी ही मिलकर एक होना चाहते हो तो मूल्य भी उतना देना पड़ेगा। अरे सब कुछ लुट जाय, इज़्ज़त आबरू भी खाक में मिल जाय, धन दौलत नाश हो जाय तब भी आनन्द मिले तो उसके पीछे सब कुछ कुर्बान कर दो। झूठी इज़्ज़त और मान से दूर हटो। इज़्ज़त की पगड़ी सर पर रखेंगे तो रोज़–रोज कोई उतारकर जायेगा पर अपनी पगड़ी अपने हाथों से उतार कर फेंक दो तो फिर कोई पैदा नहीं हुआ है जो तुम्हारी पगड़ी में हाथ डाल सके। आहे औखो कम गुरू मुख ज्ञानी थियणु, हिकु सख्तियूं सहन सिरते ब्रियो गिलाउन जो ग़म, टियों टहल में टिरन्दो रहे, चोथो चीरे द्रिसे चमु, जद्रुहि दम ते रखे कदम तद्रहि पास पक्क थिये। दम पर कदम रखना माना स्वांस स्वांस पर सावधानी रखना जैसे एक भी स्वांस हरी के सिवाय माया में व्यर्थ न जाये। घड़ी इक विसरूँ राम कूं तो ब्रहमं हत्या मोहे होय। हीरों की दूकान पर चढ़े हो तो पूरी–पूरी कीमत देकर हीरा खरीद करो। "जे सचु (प्रेम) खरीद करणु चाहीं त सिर लाहे विझुकाण में द्रेई दिल दलाल खे समझी अजर जरीं, जेकी ज्राणी पहिंजो सो समु भेट धरी, तहिंखां पोई भरी मुक्ता भार भण्डार मां। जेको तोखे हिलाय सो खुद रखता थो

खाए, द्रिसु यकीनों करामत, हिकु ईश्वर जहिंजो आहे। जो तुझको हिलाने आये सो खुद भस्म हो जावे। सब कर्मों और भक्ति से उत्तम भक्ति है रज़ा पर राज़ी रहना। सच्चा भक्त कहता है कि जो तुध भावे साई भली कार और ज्ञानी कहता है कि मैं भगवान हूँ मेरी मर्ज़ी से ही सब कुछ हो रहा है वह सब ठीक है। तुम भगवान से अपनी मर्ज़ी मिला दो तो फिर बताओ कि तुम ख्याल कौन सा करोगे। सब कुछ तुम में ही हो रहा है। अपने काम पर कोई नाराज़ हो वह तो कोई मूर्ख होगा।

हम आशिक उसी सनम के हैं,जो दिलबर सबसे आला है,
जिसने हमको जी बक्शा, जिसने हमको पाला है।

तुम अपने से पूछो कि तुम्हें कौन मिला है? अरे सर्व शक्तिवान भगवान जिसे मिल गया वह सपने में भी कभी डरेगा? राजा की जिससे दोस्ती हो गयी वह किसकी परवाह करे? तुम्हारे ऊपर माया का प्रभाव तभी होता है जब मायापती होकर नहीं खड़े हो। माया तुम्हारे सामने शर्मिन्दा होकर लौट जायेगी जब तुम लात लगाओगे। निज आनन्द पाने में क्या लज़्ज़त है। जब दिल को चोट (वैराग्य) लगी, उसने थूका है शहनशाही को। सब नियामत दौलत है फीकी, क्या सस्ता सौदा मिलता है, कोई लेने वाला मुश्किल है। क्या फरहत है क्या आज़ारी है, क्या बरकत है कोई हरकत नहीं। तुम छत पर चढ़कर डंका लगाओ कि मैं गुरू लधा, मुझको भगवान मिला। कोई

माल मस्त कोई जाल मस्त, कोई हाल मस्त पर मैं हूँ अपने आप में मस्त। तुम्हारे ज्ञान का प्रताप देखकर इन्द्र का तख़्त आकर हिला है, सब दैत्य देवता आकर डरे हैं कि यह सब तो हम सभी को लताड़ कर ऊपर पद में जाते जा रहे हैं। पूरी ताकत हर तरह से लगायेंगे कि ये वापस आकर हमारे साथ डेढ़ ठग बनकर बैठे पर तुमने शेर का दूध पिया है, तुम पीछे लौटने वाले नहीं हो। जग के मैदान से गीदी कायर होकर लौटने से तो मौत भली है। भगवान के प्रेम में ऐसे गर्क हो जाओ कि जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति कोई भी अवस्था याद न रहे। जिस समय मैं तुम्हें याद नहीं हूँ उस समय तुम वैश्या से बने हुए हो। या है माया या है भगवान। वैश्या बाहर से तो बड़ी अच्छी सुन्दर सजी हुई लगती है पर अन्दर से रोगों और बीमारियों से घिरी हुई है। जो उस पर मोहित होकर उसका संग करता है वह भी रोगी, भोगी होकर मरेगा। सारा दिन तुम अगर माया के धन्धे बैठ कर करोगे तो लोग खुश होंगे पर यदि सारा दिन प्रीतम (प्रीतम) की पचार (चर्चा) करोगे तो लोग नाराज़ होंगे क्योंकि लोग दुनिया के रात दिन विष्ठा में बैठे विष्ठा बटोर रहे हैं सो तुम्हारे फूलों की खुशबू उन्हें कहाँ अच्छी लगेगी। उन बेचारों को तो अच्छा मनोरंजन मिल गया है तुम्हारी चर्चा (प्रपंच) करने का। वे भी भाग्यशाली हैं जो किसी भी तरह मुझे तो बैठे याद कर रहे हैं। वे द्वेष रखने वाले तो शायद तुमसे भी जल्दी तर

जायेंगे क्योंकि वह तुमसे अधिक मुझे याद करते हैं। उनके हृदय में आँखों में मैं ही बैठा हूँ तुम उन्हें मेरा ही स्वरूप करके समझो, सबसे मुस्कुराओ सब में मुझे देखो। यह तो मैं केवल थोड़े समय के लिए तुम्हारी परीक्षा ले रहा हूँ। हँसी–मज़ाक में ये परीक्षायें उड़ा दो। सब तेरी मौज है। मियां मरे तो भी हलवा खाओ, बीवी मरे तो भी हलवा खाओ। आये हो यहाँ बधायी खाने फिर मौज से खाओ–पियो, घूमते फिरते रहो, दूसरी बातों की ओर ध्यान नहीं दो। अपनी मौज में दिन रात जागते रहो जो फुर्सत ही न मिले कि दूसरी आवाज़ कानों में पड़े। आत्मां कहना तो सरल है पर वह होकर खड़ा होना है। आत्मां में डर शक जगत के फुर्ने कुछ है ही नहीं फिर तुम्हारे में कहाँ से आये? □

पत्र गीता भगवान का -5

तुम्हारे मन के मंदिर में इन्द्रियों की खिड़कियों से विषय वासना का कचड़ा फिर अन्दर् न आये इसका सरल तरीका यह है कि रास्ते में नहीं बैठ जाओ। कुर्बानी की कोठरी में घुस कर अन्दर से वैराग्य की कुन्डी लगाकर इन्द्रियों की खिड़कियाँ हमेशा के लिए बन्द कर दो। आतम जिज्ञासू को अपनी नज़र ब्रहमंज्ञानी गुरु के सिवाय दूसरे किसी से भी मिलानी नहीं चाहिए क्योंकि आँखों में कुदरती कैमेरा फिट है। जैसे जैसे स्वभाव वाले मनुष्य से आँख अटकेगी उसके गुण और अवगुण दिल में प्रवेश करेंगे। इस लिए जिज्ञासू अपनी आँख ब्रहमज्ञानी महात्मां की आँख से मिलाये क्योंकि पूरन ब्रहमज्ञानी आठ ही पहर ब्रहमं के सिवाय दूसरा कुछ नहीं देखता, उसकी आंखों में निहारते जिज्ञासू की आँख भी दूसरे पदार्थ देखने से बन्द हो जायेगी, हर वक्त अन्दर बाहर अपने साक्षात प्रीतम का दर्शन करेगा। ऐ दिलब्र के दर्शन की प्यासी! खबरदार (सावधान) कहीं दुनिया के पदार्थों की चाह में दिल ललचा बैठो। जिन्होंने खुदी की गर्दन कटाई उन्हें महबूब के मिलाप की मेंहदी नसीब हुई। बालक अवस्था में भगवान को पाना सोने (Gold) के बराबर है, जवानी में चांदी के बराबर, बुढ़ापे में तांबे के बराबर पर जो तीनों अवस्थाओं में ज्ञान नहीं पाता वह धूर के समान है। अरे आशिक उम्र

थोड़ी है सफर लम्बा है इसलिए जल्दी ब्रहमं की आग में पतंगे की तरह कूद पड़ो तो जगदीश की जोत का जलवा देख सको। जिस्म (शरीर) रस्म (लोकरीत) और इस्म (ब्रहमंभाव) की कैद से छूटकर ज्योर्तिमय हो जाओ।

लोक नीचे की ओर बहता है पर तुम ऊँचे ऊपर जाओ। लोकों की काण छोड़ कर हद पार करनी है। यह ज्ञान है बेहद का। चलो वहाँ जहाँ तू मैं नहीं है। लोक पचार छोड़ कर, प्रपंच छोड़कर सामी साहिब कहते हैं कि वे गहरी नींद में सोते हैं लोगों के आवाज़ तो हवा में उड़ गये हमें लगते कहाँ हैं। मैं हूँ ही नहीं तो फिर लगता किसको है। दूसरा तो उद्यम कोई नहीं है सबसे बढ़कर पुरूषार्थ है। जब हम कहते हैं कि मौन रखो तो फिर खाना कैसे खाता? यह अहंकार है, यदि आज ही टाँगें टूट जायें तो फिर कोई खिलाएगा या नहीं? बीमारों को कौन बैठ कर खिलाता है जब कि वे कुछ भी काम नहीं करते हैं। मैं करता हूँ यही है अहंकार। करन करावन आपे आप मानुष के कुछ नाही हाथ। तुम क्या कर सकती हो सब अपने आप से होता है। आँखें झपकती हैं कान सुनते हैं, पैर पैदल चलते हैं, हाथ चलते हैं तुम अहंकार करती हो कि मैंने किया। इन्द्रियाँ आप से आप ही चलती हैं तुम उनके साक्षी हो देखने वाले न कि करने वाले। आत्मां प्राणों से ऊपर है प्राण पती, ज्ञान स्वरूप। शरीर छोड़ने के बाद आत्मां निराकार आकाशवत ज्यों का त्यों अपने में

स्थित है। यह शरीर औज़ार है जिसके मिलने से सब ज्ञान होता है। प्राणों को जानने वाला आत्मां है कि अभी मेरी साँस घुट रहीं है या तेज़ चल रही है, साँस में उलझन हो रही है। परमात्मां का स्वरूप देखना यानि हर एक में आत्मां देखना यह है दर्शन दूसरा कोई भी दर्शन नहीं है अपने को आत्मां समझो फिर हर एक को आत्मां देखो, बाहर से शरीर भुलाओ। (माया का भारण हरी नाम है)। दूसरा निराकार को पहचानना सरल है पर साकार को पहचानना कठिन है यह सच है। निराकार परमात्मां में तो हर किसी का विश्वास है कि भगवान है, कोई भी दुःख भेजता है तो शान्त करके कोई भी उपाय न समझकर फिर भी उसमें विश्वास रखते हैं पर साकार एक साधारण मनुष्य को परमात्मा समझना बड़ा कठिन है उसके साधारण कर्म को देखकर फिर भूल जायेंगे कि यह मनुष्य है ऐसा क्यों करता है वैसा क्यों करता है। दूसरा उद्यम और कर्म में यह फर्क है कि कर्म तो हर एक करता है पर जो अपनी इच्छा से करता है उसको उद्यम कहते हैं। तुम निष्काम होकर कर्म करो तो तुम्हारा कर्म माना नहीं जायेगा। □

पत्र गीता भगवान का -6

मौन करना कितने समय आता है। पूरे दिन में किसी से क्यों और क्या बात करते हो? अपना काम काज मौन में, बाकी बिल्कुल शान्त में रहो। नाम रूप की बात बन्द करके एक दम सबको आत्मां में सुजाग करो (जागृत करो)। ज्ञान कोई पूछे श्रद्धा से तो बोलो नहीं तो मौन में रहो। दृष्टा होकर बैठकर देखो, कुछ भी करने वाले नहीं बनो। जीते हुए गुरू से ही फायदा पड़ेगा बाकी मरे हुए गुरूओं के किताब पढ़ोगे या बड़ाई करोगे तो कुछ हासिल नहीं होगा। जीते हुए गुरू के कर्म देखते हैं, मरे हुओं की प्रशन्सा करते हैं यह है दुनिया की रीत। जब–जब अवतार चला जाता है तो बहुत पछताना पड़ता है। हाय–हाय करते हैं कि हमें क्या पता था कि यह ऐसा था काश हम पूरा फायदा लेते।

दुनिया का अनुभव लेना माना मिथ्था का अनुभव लेना। जो है ही मिथ्था उसका अनुभव क्या लेंगे? या सर्प का अनुभव क्या लेंगे? जो है ही डंक लगाने वाला, जितना छेड़ेंगे उतना साँप चिढ़ेगा। इस प्रकार दुनिया में जाना ऐसे है जैसे साँप से खेलना। अनुभव लेना है आत्मां का न कि दुनिया का। कोई भी पुस्तक पढ़ने की ज़रूरत नहीं है। गुरू ने सब का तत्व निकालकर तुम्हें बताया है। सींप बूद **Catch** करके मौन हो जाती है फिर मोती होकर निकलता

है। गुरू का एक वचन भी जिसने जीवन में लगाया (अपनाया) वह करोड़ पुस्तक पढ़ने से भी अधिक है। गुरू के मुख से सारा ही ज्ञान उत्तर प्रश्न करके समझ लो। बाकी पुस्तकों से किसी समय ऐसा अज्ञान आयेगा जो गुरू को ही छोड़ जायेंगे। गुरू है हंस जो दूध पानी अलग करके दूध तुम्हें पिलाता है बाकी पानी फेंक देता है। **Right-Wrong** गुरू समझ सकता है वह इतना ऊपर चढ़ा हुआ है कि सब गुरूओं ग्रन्थों को पहचान सकता है कि ये कहाँ–कहाँ खड़े हैं। बाकी तुम तो सबको बोलेंगे कि ये भी सच लिखता है पर वह कहाँ–कहाँ गिरा है यह नहीं समझेंगे। उसका अज्ञान भी ज्ञान समझकर उठायेंगे। सत्य के राह से गुमराह हो जायेंगे। गुरू को भी सीधा जवाब देंगे कि तुम **Wrong** हो व्यर्थ बोलते हो पर ये गुरू तो सच्चा है, सच लिखता है, पूरण ब्रहमज्ञानी है। नम्रता प्यार गुरू के लिए कम हो जाएगा। पुस्तक गुरू के प्रेम और श्रद्धा में रूकावट है। ग्रन्थ माना ग्रन्थि (गाँठें)। गुरू कहेगा शास्त्र छोड़ो तो छोड़ सकेंगे क्योंकि वासना हो जायेगी। शास्त्र पढ़ने वाले को शास्त्रों के फुर्ने उठेंगे, बुद्धि की होशियारी आएगी पर अनुभव का ज्ञान नहीं बढ़ेगा। शास्त्रों का पढ़ना है हौज का पानी, अनुभवी ज्ञान है कुँएं का पानी। कृष्ण ने कहा है मेरी प्रभुता को वेद भी नहीं जान सकते हैं। मैं तुम्हें वेदों से, दान से नहीं मिला हूँ पर प्रेम

और श्रद्धा से मिला हूँ। वेदान्त माना एक आत्मा के सिवाय दूसरी बात न हो। पर जहाँ बुद्धि की बातें व्यवहार की बाते हैं वे तुम्हें भरम में भुलायेंगी। स्त्री ऐसा चली, पुरूष को ऐसा चलना चाहिए यह सब अज्ञान है यह कोई आत्मा का ज्ञान नहीं है। गुरू के अनुभव की कापियाँ सब मक्खन निकला हुआ है **Totaly** आत्मा में टिकाने वाली बातें हैं। इसलिए हम कहते हैं कि तुम भी लिखो। पढ़ना सुस्तों का काम है पर लिखने से मानो अन्दर से कुँयें का मीठा पानी निकलेगा। अनुभव का ज्ञान उज्जवलता की वाणी, यह गत विरले जानी। आत्मा का निश्चय गुरू मुख से नहीं किया तो मानो खुद ही आत्मघात किया अपना। क्यों मरते हो जब अमर बनाने वाला गुरू बैठा है।

When pains are highest God is nearest. दुःखों के पीछे सुख जरूर आने हैं। दर्दों के बाद बच्चा ज़रूर पैदा होगा, धीरज रखो।

Philosphssy = Philo = Love - Sophia- Wisdome lover of wisdome (Greek words) ज्ञान के लिए प्यार जिसको है वही **Philospher** है। लेक्चरार और पंडित दोनों ही माया के और कीर्ती के लोभ पर लेक्चर करते हैं। भगवान को जो धन पर बेचते हैं वे व्यभिचारी वैश्या के घर हैं। राम ने यदि रावण को मारा तो अन्दर में करूणां भी इतनी थी कि बाद में फिर मुक्त

किया पैर लगाकर। पूरन गुरू यदि गालियाँ देता है तो फिर प्रेम और करूणा भी इतनी है अन्दर में, उसे ही हक है कैसे भी, सन्त को गालियाँ देने का। तुम्हारे अन्दर से उसके लिए जो मोह है वह निकाल कर सत्य झूठ बताये। पर वह अन्दर में नाम रूप, द्वेष, द्वेत से इतना खाली है कि तुम पहचान भी नहीं सकेंगे। तुम बोलेंगे कि हम तो उल्टा जहाँ–तहाँ भगवान देखते हैं सबके गुण उठाते हैं पर गुरू तो सबके अवगुण बता रहा है। द्वेत में आकर गालियाँ दे रहा है। □

My look is more than book.

Geeta Bhagwan

पत्र गीता भगवान का -7

तीनों लोकों नौ खण्ड में, गुरू से बड़ा न कोय,
नाम लिये सुख उपजे, ध्यान करे सोई होय।
हरि की सेवा सौ बरस, गुरू सेवा पल चार
तो भी नहीं बराबरी, सन्तन कियो विचार।
इन्सां के मुख लाख हैं, मुख में लाख जुबान
गुरू महिमा फिर भी कभी, हो न सकेगी बयान।

ह्रदय – हरी + दया= हरी की दया

नफरत – न + फरहत = जहाँ फरहत न हो बेचैनी हो

सावधान –

स– सरलता में रहें, सत्य में रहें।

व – विचार करें

ध – ध्यान (अपनी आत्मा का)

न – नम्रता

प्रलय – पर (दूसरा) को लय कर दो।

प्रगट – पर के (दूसरे के) घट में भी भगवान देखे।

Surrender- Sir के **Under** रहो □
(गुरू की आज्ञा में)

पत्र गीता भगवान का -8

यदि तुम आत्मा का निश्चय नहीं करते तो मरे भले हो। गुरू को कोई भी हमदर्दी या तरस तुम्हारे ऊपर नहीं आयेगा कि यह क्यों दुःखी हो रहा है।

मुसीबत को आदमी (न्यौता) भेज कर बुलाते हो तभी आती है नहीं तो (वरना) मुसीबत को कोई ताकत नहीं है जो तुम्हारे पास आये। रोयेंगे, पीटेंगे तो गुरू को और गुस्सा लगेगा पर शान्ति में रहेंगे रज़ा पर राज़ी तो गुरू खुश होगा कि मेरी मेहनत सफल हुई। इन्होंने मेरा एक भी शब्द उठाया तो गुरू उसे अधिक शक्ति बक्शता है जो अपने ऊपर महर करता है उस पर गुरू भी महर करता है। तुम पक्के नहीं हुए हो यह तुम्हारा दोष है तुम्हें दुख भोगना पड़ेगा, पर अभी भी कोई देर नहीं है तुम सब पक्के हो जाओ और दूसरों को भी पक्का करो। मौत बीमारी पाप है ही नहीं। यहाँ कितनी ही विधवायें आती हैं वे सुहागिनों से अधिक चमक रही हैं। जिस दिन इस शरीर का पति मरता है उस दिन वह सच्ची सुहागिन अपने को समझती है कि मैं आज से लेकर भगवान की हूँ। अब कोई भी मेरे ऊपर हक नहीं रखेगा। मन से फुर्ना भी निकल गया। दिल खाली होगी, सम्बंधी रिश्ते नातेदार सब मन से निकलेंगे तभी भगवान आकर बैठेगा। तुम भगवान के लिए अन्दर गद्दी खाली करो। सबसे अधिक

जब भगवान से प्यार करोगे तभी तुम भगवान के भक्त कहलाने लायक हो। भगवान के सिवाय दूसरी बात अच्छी न लगे यह बैराग्य रखना है। कोई भी नाम रूप की लम्बाई चौड़ाई करे तो एकदम आत्मा याद दिलाओ आत्मा में टिकाओ कि आत्मा की बात करो। जज दो मिनट भी अधिक किसी की बात नहीं सुनता है। तुम भी व्यर्थ में एक मिनट भी आत्मा के सिवाय नहीं गंवाओ। जो कहता है कि मैं मरता हूँ वह मानो हत्या करता है। यहाँ आया था अजर अमर होने। मनुष्य मरने के लिए नहीं आया है क्योंकि वह पैदा ही नहीं हुआ है तो मरेगा कैसे? जो पैदा हुआ समझेगा वह मरेगा। □

पत्र गीता भगवान का- 9

ओम में टिको (निश्चय करो) कि जब भी देह छोड़ जाएगी तो जीवन मुक्त उसी वक्त विदेह मुक्त हो जायेगा यानि दूसरी देह नहीं मिलेगीं बाकी जो आत्मां के निश्चय में नहीं होगा उस आत्मां को दूसरी योनि एक दम मिल जायेगी यह काम कोई भी देख नहीं सकेगा क्योंकि इन मायावी आँखों से आत्मां दिखने वाली नहीं है। केवल तुम्हारा विश्वास ही जानता है इसलिए पक्के विश्वासी ही बैंठने चाहिए जो आत्मां में हो और अगले को भी आत्मां बताते आये। क्या भी हो ज़रूरी है अन्त वेले आत्मां में टिकना। ऐसा ख्याल रखो। गीता के दूसरे अध्याय के श्लोक में कृष्ण ने सुनाया कि जो अन्त समय में आत्मा में है वह मेरे से मिलता है बाकी दूसरे दूसरी तरफ जाते हैं। तुम भी मुझ पर विश्वास रखो, काश ! निराश नहीं हो जाओ। जैसे मैंने तुम्हें गीता के अनुसार सुनाया है कि तुम आत्मां हो तो किसी ने भी आज तक आत्मां देखा तो नहीं है पर इतना विश्वास और आनन्द लूट रहे हो। सब ओर आत्मां का आनन्द और अमरता का निश्चय आ गया है। वह दूसरा कोई नहीं देख रहा पर तुम तो आनन्द लूट रहे हो। □

पत्र गीता भगवान का -10

कुँए से रोज़ नया और निर्मल पानी निकलता है ऐसे गुरू के मुख से नित नई वाणी निकलती है जिससे सभी ज्ञान गंगा में स्नान करके पवित्र होकर जांते हैं। बहता पानी निर्मला, खड़ा सो गन्दा होय।

Lecturar और ब्रहमज्ञानी में यह फर्क है कि लेक्चरर शास्त्रों की वाणी पढ़कर, याद करके उधारा **Lecture** आकर करते हैं जिससे वाणी का रस सबको थोड़े समय के लिए आयेगा पर किसी को एक भी फायदा या **Change** नहीं होगी न ही किसी को बीमारी की दवा मिलेगी।

अपरा विद्या उसे कहते हैं **A to Z** जो भी विद्या है। उसे बाहर से ग्रहण करना पड़ता है जो भूल भी जायेगी। उसमें विद्वानपने का अहंकार रहेगा। विद्वानों से हारने का डर भी रहेगा, विद्या भूलने की चिन्ता भी रहेगी और किसी का भी फायदा नहीं होगा। दूसरी पराविद्या है जो ब्रहम विद्या है। गुरू के मुख से आत्मां निश्चय करनी है। ये ब्रहमज्ञानी गुरू हमें भाग्य से मिला है। आज भी गुरू को रात–दिन हमारी चिन्ता है कि जो मेरे पास आए हैं वे कैसे ज्यों का त्यों आत्मा होकर खड़े हो जायें। ऐसा दर्द किसी को भी दुनिया में नहीं है। अथक परिश्रम करके एक से एक **Private** मेहनत करके सब के संशय भ्रम मिटाकर आनन्द में लाता है। लक्ष्मी भगवान ने कहा कि

तुम्हारे ऊपर तो गुरू हैं मेरे ऊपर निराकार है। निराकार देखता है कि ये किस तरह सच्चाई से पढ़ाई करता है। अपनी पूजा या कीर्ति तो नहीं कराता हैं। किसी को अज्ञानी मूर्ख तो नहीं समझता है। अपने शरीर में तो किसी को नहीं अटकाता है। दूसरे के उद्धार के लिए वाणीं चलाता है, एक–एक का दिल लेकर उसका दर्द जानकर फिर उसे दवा देता है। दूसरों को फंसाता तो नहीं है? निराकार की महिमा करता है या अपनी? गुरू के ऊपर बड़ी जवाबदारी है। जैसे गुरूनानक ने कहा है कि 'प्रभु के सिमरन' पर ऐसा नहीं कहा कि नानक के सिमरन पर आज भी सब नानक के शरीर और ग्रंथ को बैठे पूज रहे हैं पर नानक ने कहा कि निराकार के सिमरन से तुम्हें ये–ये फायदे होंगे। आज भी गुरू ऐसा कहते हैं कि मुझे शरीर करके नहीं देखो। किसी का भी नाम रूप दिल में नहीं रखो पर गुरू निराकार आत्मां है यह सतोगुणी ज्ञान है। गुरू हाथ से इशारा देता है कि सूर्य देखो, हम सूर्य को न देखकर हाथ से चिपक जाते हैं ऐसे गुरू इशारा देते हैं निराकार का, हम साकार में अटक जाते हैं। यह अज्ञान है, तमोगुणी ज्ञान है। पर सर्व में पेखे भगवान ये सत्य है।□

पत्र गीता भगवान का -11

श्रवण, मनन, निध्यासन से भी अहंकार आ सकता है कि मैंने किया पर गुरू की कृपा और प्रेम से सब हो जाता है। गुरू हमसे छिपा कर हमारे अंदर ज्ञान, प्रेम, श्रद्धा प्रतीत कराता है उसका हमें भी पता नहीं चलता तभी हम अहंकार से बच सकते हैं। कितने ही कहते हैं कि गुरू भी सपने का है या ज्ञान हो गया तो गुरू को भी छोड़ना है, सो ही छोड़ना है अपना अहंकार अपना देह अभ्यास। गुरू तो है ही आत्मा तो उसमें छोड़ंना या पकड़ना बनता ही नहीं है। शरीर का आधार बराबर नहीं रखना है पर मिलकर एक हो जाना है। गंगा सागर में मिली तो एक हो गयी। दो हों तो छोड़ना या पकड़ना हो। तुम्हारे जागने के बाद गुरू भी आत्मा है परमात्मा है तुम भी वही हो तो एक हो गये तुम और मैं। अब पाप सब मिट गये, खतम हो गया खाता मैंने साजन साफ पहचाना।□

पत्र गीता भगवान का -12

अर्जुन ने धर्मयुद्ध किया था वह तुम्हें भी करना है। ज्ञान सुनने के बाद युद्ध शुरू हो जाता है। रिश्तेदार सम्बंधी,दोस्त सब माया में घसीटते हैं जिससे युद्ध शुरू हो जाता है। अन्दर के सच का पता लगता है कि हमारे अन्दर कितना सच है। सच की जीत होगी झूठ की हार होगी, मोह का पता चलेगा। कृष्ण ने अर्जुन को मोह दिखाया। हमारी लड़ाई विकारों से है न कि लोगों से। हर एक भगवान है आत्मा है। कृष्ण ने भी अर्जुन को आत्मा दिखायी वह रिश्तेदार देखता था इसी प्रकार हम भी बोलते थे कि ये दुःखी न हो वो दुःखी न हो वो छोड़ न दे, वह निकाल न दे पर गुरू ने हमें आत्मा दिखायी कि आत्मा दुखी नहीं होती, न पैदा होती है, न मरती है तो निर्भयता आ गयी। सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार हो गये पर अपनी आत्मा का आधार लिया। **Make I the single refuge.** मैं की शरण लो। जिनसे लड़ाई हुई है उनके लिए अन्दर में प्यार है। उल्टा सत्य झूठ को प्रकट करने के लिए धर्मयुद्ध करके अन्दर को साफ करते हैं। अपने भीतर मन से लड़ाई है। वह गुरू की बात ज्यों की त्यों नहीं मानता। छोटी मैं में अटकता है, गुरू का होने नहीं देता। गुरू से भी अन्दर में लड़ाई होती है आप समान होने के लिए अन्त तक मन गुरू से लड़ेगा। फिर–फिर अपना अहंकार

आता है। नम्रता श्रद्धा विश्वास से आखिर मन पर जीत पाते हैं। शेर गुरू के आगे हाथी का अहंकार नहीं चल सकेगा। अपना मन, बुद्धि स्थाणप हमें लूट लेता है। शरणागत हो जाओ, इसके लिए युद्ध चलेगा।

□

पत्र गीता भगवान का -13

स्वार्थ मोह निकालकर बाकी प्रेम रह गया है सम्बंधी भी ब्रहम रूप हो गये हैं। पहले जहर निकलता है फिर अमृत हो जाता है। साँप से जहर निकालकर फिर गले में पहनेंगे तो ज़हर असर नहीं करेगा। सारा जग अवतार है। जिसका हक हिसाब है इस ज्ञान में वह अवश्य आकर लेगा हम देने वाले भी नहीं हैं। बरसात का काम है बरसना फिर बीज से अंकुर निकले यह हम क्यों सोचें। हमें तो सभी केसों से जबरदस्त अनुभव मिलता है हर एक हमें सिखाकर जाता है। हमें केवल अपना ही उद्धार करना है दूसरों का अपने आप होता है जिसका हमें भी खुद पता नहीं चलता कि कैसे किसको फायदा हो जाता है, यह सारा काम भगवान का है। दूसरा तुम अब बहुत याद आ रहे हो फिर तुम आ रही हो या हम आयें। अब तो पता नहीं क्यों दिन पर दिन तुम सबमें अधिक मोह पड़ रहा है, लगता है कि एक ही घर में हम सब मिलकर रहें। तुम यहाँ आकर रहो या मुझे अपने साथ रखो। फिर क्या कुबूल है? साकार जब तक है तब तक मिलकर रास लीलायें करेंगे।

माया सुन्दर रूपों में आती है हमें चारों तरफ सुजाग रहना है। गुरू रात–दिन माया को नंगा करके देखता है। यहाँ आज सत्संग में **Point** निकली कि शादी

प्रारब्ध में है या पुरुषार्थ से **Cut** हो सकती है? यहाँ एक लड़की 'दिलशाद' मुसलमान है उसकी पाकिस्तान में सगाई हुई है कहती है कि मुझे सभी सम्बंधी आकर कहने लगे कि तुम दुनिया में अकेली कैसे रहोगी, माँ मर गयी है, बाप भी नहीं है, भाई भी नहीं है तुम कैसे दुनिया में अकेली रह सकोगी? फिर मुझे भी कमज़ोरी आ गयी मैंने भी हाँ कर दी। अब बहुत रो रही है कि ना भी नहीं कर सकती हूँ। मतलब कि सत्संग चला कि हर एक अपने अन्दर से पूछे कि मुझे इच्छा है या नहीं? भगवान में जिसका पूरा विश्वास है वह अकेला कभी होगा ही नहीं। अपने ही अंदर पूछो अपने आप से कि मेरी प्रारब्ध है या इच्छा है? ब्रहमज्ञानी की कोई प्रारब्ध है ड्रामा है उसका मन भी नहीं चलेगा, पछुताएगा भी नहीं, दिल भी नहीं हिलेगी ना ही वह शादी को शादी मानेगा, ना ही शादी करके किसी का गुलाम बनेगा। स्वतंत्र रहेगा उसका जहाँ पैर है वहाँ खैर है उसका जहाँ भी जाना होगा वहाँ निष्काम के लिए होगा। वह अपने सुख के लिए नहीं जिएगा पर सुखों के बदले परीक्षा समझता है। सुख भोगने के लिए नहीं है पर परीक्षा के लिए है। ज्ञानी अकर्ता, अभोक्ता है। ज्ञानी की इच्छा न होते हुए भी भावी और ड्रामे से उसके शरीर का रहना खाना घूमना होगा। हर वक्त हुकुम समझेगा पर अपनी इच्छा से नहीं चलेगा। इस बात पर सत्संग चला

सबने बात की। तुम लोगों का क्या ख्याल है?

सम्बंधी भी समझ जाते हैं कि ये खुश है हम बेकार जल रहे हैं इससे तो यही रास्ता लें हम भी। हमारे आदर्श और निरीच्छापने (मौन) से ही सब अपने आप सीख जाते हैं। धीरज के जहाज पर सवार होना है। एक जना अपना सुख छोड़कर भगवान का होकर रहे तो उससे कई लोग रीस करेंगे। कोई कहता है कि गुरू नानक, कृष्ण ने शादी की, बच्चे पैदा किए बाकी तुम क्यों रोकते हो या क्यों छोड़ते हो। रीस तो राजा जनक से करते हैं पर लायक हैं? राजा जनक का महलात जल गया तो भी उठा नहीं निःसंकल्प होकर बैठा रहा तुम भी अगर ऐसे हो तो फिर जैसा अच्छा लगे वैसा करो। कृष्ण ने अर्जुन से कहा तुमने आत्मा समझी अब जैसा उचित लगे वैसा जाकर करो। सोई गुरू ज्ञान सुनाता है फिर तुम मर्ज़ी के मालिक हो जैसा अच्छा लगे वैसा करो। जितना ज्ञान समझा होगा वैसा तुम्हारा कदम उठेगा। गुरू नानक, कृष्ण की तरह तुम सारी सृष्टि से प्यार कर सको, ज्ञान यज्ञ चौबीस घण्टा ही करो फिर जैसा शरीर का ड्रामा होगा वैसा ही हो जाएगा। तुम ऐसा नहीं समझोगे कि मैंने किया। □

तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -14

आत्मा समझने से सब विकार डर एकदम हट जाते हैं। सब दुःखों-दर्दों की एक ही दवा है, देह को भुलाना है कि मैं फलानी हूँ। मैं हूँ तो डर, निराशा सब मन की बीमारियाँ, बुरे ख्याल आते हैं पर भगवान देखने से जगत और जगत की भावनायें सब गुम हो जाती हैं विश्वास करामातों की करामात है। अविश्वासी गिरता है पर विश्वासी पहाड़ को बोले हट जा तो हट जाएगा। गुरू की एक-एक बात पर झुकने से मन मर जाता है। मन कीं क्या मजाल है कि जो विश्वासी को हिला सके अपने निश्चय से। शब्द मरे ता फल पावे और कैसी चतुराई। कितनी भी कोई होशियारी करेगा पर भगवान के इंसाफ से भाग नहीं सकेगा। कोई कहे कि मैं आत्महत्या करके शरीर से, दुःखों से, हट जाता हूँ वह बहुत बड़ी भूल करता है। जब तक देह अध्यास है तब तक जन्म-जन्म में दुःखी होगा। इसी जन्म में सभी कर्मों से, सभी पापों से छूटे तभी मन की शान्ति पायेंगे। गुरू के ज्ञान के सिवाय दूसरा कोई भी तरीका नहीं, कोई भी छूटने का चारा नहीं। पहले चाहें बाद में गुरू की आज्ञा में अपने को झुकाना है। गुरू के ख्याल और अपने ख्याल और भगवान के ख्याल एक करने हैं फिर चाहे कितनी भी तकलीफ हो। इस ज्ञान में पहले मन गुरू का भी दुश्मन होगा

क्योंकि गुरू अहंकार और अहम् भाव की नस को दबाता है तो दर्द होगा। आप्रेशन कराने के लिए हम तैयार होकर जाते हैं पर जब दर्द होता है तो डाक्टर को गालियाँ देते हैं मगर जब जख्म छूटता है तो डाक्टर को फ्रूट के टोकरे और फीस बड़ी खुशी से देते हैं। यह हालात है हर एक मनुष्य की। जो अपने पर कृपा करे वही गुरू का शब्द कमाएगा। □

पत्र गीता भगवान का -15

आतम तृप्ति वाले को कोई भी हालत नहीं उलझाएगी। निरइच्छा वाले को कोई भी जीत नहीं सकेगा। भगवान भी आकर आजमाए तो वह शरीर ही नहीं है तो कहीं भी **Fail** नहीं होगा। हर एक परीक्षा में पास होगा।

भ्रम में नहीं आओ कि गुरू अधिक शक्तिवाला है। जो वो है सो मैं हूँ।

वह शक्कर कैसी जिसमें मिठास न हो।
वह ब्रहमज्ञान कैसा जिससे आनन्द न आये।

कोई कहता है मैं आत्मा हूँ पर आनन्द नहीं है, यह झूठ है। देह अध्यास मनुष्य को रूलाएगा। शरीर करके भी कुछ करना नहीं है सब कुछ अपने आप होता है शरीर को प्रारब्ध अपने आप चलायेगी पर मैं इच्छा से न चलाऊँ। राजा कुछ भी नहीं करेगा, वज़ीर की सलाह से सब होता है। प्रकृति अपने आप करती है तुम पुरूष परमात्मा है।

गुरू ज्ञान नहीं देता है पर तुम अपनी भावनाओं से अमानत लेकर जाओगे। जितनी अपनी कृपा करेंगे उतना ऊपर उठेंगे। निर्दोष पर दोष लगाते हो यदि ऐसा कहते हो कि गुरू प्यार नहीं करता।

खाली आएगा भरकर जाएगा, भरे को गुरू क्या भरेगा? किसी का भी दिल में नाम रूप बिठा कर आयेंगे

तो गुरू पहले सबके नाम रूप भुलवायेगा। जो सुना है, देखा है, जाना है वह सब भुलाना है। भुलाने के सिवाय शान्ती नहीं आयेगी। करमण्डल में कचड़ा पड़ा होगा तो पूड़ी पकोड़े नहीं पड़ेगे। भान्डा भाव अमृत तित डाल। भाव से भरे हृदय में ही अमृत जैसा ज्ञान पड़ेगा।

गुरू का दर्शन नहीं पर गुरू के वचन हृदय से लगाओ। यदि दर्शन से सब कुछ मिल जाता तो फिर अन्धे को तो उम्मीद है कुछ न मिले। पर यहाँ तो सूरदास भी आत्मा सुनकर तर गये। दर्शन किसे कहते हैं 'जहाँ–तहाँ अपना आप देखना यही दर्शन है। सम देखो सबको, आत्मा जग को।

जब है ही निराकार तो दर्शन किसका करोगे? मिलेंगे किससे? जानेंगे किसको? जब हूँ ही मैं दूसरा हो तो जाना जाय। अद्वेत में कुछ भी करना नहीं पड़ता है केवल अपने को जानना पड़ता है। जिसने जगत को मिथ्या समझा वह जगत के कौन से काम–काज करेगा। जो जगत को सत्य समझता है वह नहीं करे तो भी करे। बाहर से भले ही चुप करके बैठा हो तो भी मन चलता रहेगा। गुरू, ज्ञानी करता हुआ भी नहीं करे। अपने से जुदा कुछ समझता ही नहीं है तो इच्छा कैसे होगी। सब कुछ मेरे में समाया हुआ है। अब कौन सी वस्तु जुदा है जो इच्छा करूँ।

बिन गुरू वक्त मुक्ती नहीं पावे, बिना भक्ति सत लोक न जावे।
पिछलों की जो धारे टेका, जिनको आँख से कभी नहीं देखा।
पोथिन में सुनी उनकी महिमा, टेक बाँध मन सबका भरमा।

वक्त का जीता जागता गुरू चाहिए, मरे हुए गुरूओं की जो टीकायें पढ़ते हो जिन्हें आँख से नहीं देखा है उनका आधार लेते हो। वृक्ष को आज की धूप चाहिए ऐसे ही मुक्ति के लिए आज का गुरू चाहिए। भगवान एक से अनेक बनाता है खेल करने के लिए, अपनी शक्ति दिखाने के लिए।

द्वेत में मजा किया है पर है अद्वेत। हमारी अद्वेत पर नज़र है पर अज्ञानी की द्वेत पर।

कभी भी ऐसे शब्द नहीं बोलो जो कोई गिरे, किसी का दिल मायूस हो जाये। सबको ऐसे वचन बोलो जो वो चढ़े आत्मा में। आसमान में उड़े कि मैं भगवान हूँ। गिरे हुओं को ऊपर उठाना तुम्हारा फर्ज़ है। गीता में लिखा है हे अर्जुन काम को ज्ञान की तलवार से काट तो मुसलमानो ने तुहिर कराने का रिवाज निकाला, इन्द्रिय को कटवाया पर उल्टा काम अधिक बढ़ गया, चार–चार शादियाँ करते हैं एक स्त्री से तृप्ति नहीं होती है मतलब ज्ञान ठीक नहीं उठाया है। □

पत्र गीता भगवान का -16

ईश्वर अहंकार को खाता है। किसी का भी अहंकार नहीं चला है। भगवान हँसता है जब मनुष्य बार–बार अहंकार करता है। छोटी मैं से कितने नुकसान पड़े हैं यह सोचो। अब बड़ी मैं **Capital I** से कितने फायदे पड़े हैं। मैं ही तो हूँ आ त मां यानि मैं ही तो हूँ। इच्छा भी कोई नहीं है चाहिए भी कुछ नहीं। जो भी है मेरा नहीं है। जो है उसके जाने का डर नहीं है। कुछ भी मुझे अप्राप्त नहीं है सब मैं ही तो हूँ यह निश्चय है। ख्याल सब बेच दो गुरू को तो सहज समाधि लग जाएगी। कोई भी साधन भगवान पाने का नहीं बताया गया है क्योंकि तुम पहले ही स्वतः भगवान हो। आत्मा के निश्चय के सिवाय मन बस करने के लिए कितने ही साधन यतन करे तो मन वस नहीं होगा। ज्ञान से अज्ञान और मन को जान जाते हैं तो अज्ञान में रहते ही नहीं हैं। जो पहले से ही प्राप्त है उसे हासिल करने के लिए कोशिश करना मूर्खता है। देह अध यास में रहकर निराकार आत्मा का साक्षात्कार कर नहीं कर सकेंगे क्योंकि आत्मा, मन, बुद्धि, शरीर, वाणी से परे है। मैं कौन हूँ? यह ख्याल किसको आते हैं यह स्वयं से पूछने से मन अमन हो जायेगा। आत्मा से कोई भी ख्याल लागू नहीं है। तुम मुक्त हो गये हो यह पता तुम्हें भी नहीं लगा है, कि कैसे हो गये। क्योंकि पहले ही हर एक मुक्त

है। कुछ भी करना नहीं पड़ा केवल गुरू वाक्य सत्यम् किया। मन को कोई भी कमज़ोरी की बात सुनने नहीं दो कि अभी तक मुझे मन आता है। अभी पूरा गुरू जैसा नहीं बना हूँ आत्मा नहीं हुआ हूँ। अभी मेरा बन्धन नहीं कटा है। अभी थोड़ी–थोड़ी इच्छा है ये सभी ख्याल रास्ते में जिज्ञासू को आते हैं जिनके कारण वह कमजोर हो जाता है। पर गुरू के विचार अपने साथ रखे कि नाव गुरू के हवाले है। जहाँ इतना पार पहुँचाया है वहाँ बाकी के लिए भी मैं क्यों उदास होऊँ। बाकी काम भी गुरू का है मेरा काम है पूरा विश्वास रखकर आगे बढ़ना। सब धर्म छोड़कर "मैं" आत्मा की शरण लो, मैं क्या? कुल धर्म, जात–पात का धर्म, राजधर्म,दयाधर्म, पतिधर्म, पत्नीधर्म, पुत्रधर्म ये सब धर्म अपने को देह समझने से पालते हो पर स्वधर्म है अपने आपको पहचानना। जिसने अपने आपको पहचाना उसने सब धर्म पाल लिए। **Who will blame herso that lose their lives in war to keep their vows.** सोल्जर को कौन दोष देगा कि तुमने अपना वायदा पूरा नहीं किया है। जो अपना जीवन देश के लिए कुर्बान करता है। जो अपना पूरा जीवन दान करके तन,मन, धन से निष्काम सेवा करता है उससे कौन पूछ सकता है कि तुम फकीर को दान क्यों नहीं करते? **You are in search of theif, why not search for your self.You will see your-**

self as you truely are. (चोर) मन के पीछे नहीं पड़ो पर अपनी खोजना क्यों नहीं करते कि मैं क्या हूँ। जो तुम सत्य हो वही तुम खुद को देखोगे। चोर की तलाश नहीं करो पर अपनी करो। **Unspoken language.** वाणी न कर सकेगी मेरा कभी भी वर्णन। आत्मा–अखां बाजू देखणां, बिन कनां सुणना, पैरां बाजू चलणा बिन हथा करणां जिव्हा बाजू बोलना, बिन जीवत मरणां, नानक हुकुम पछाण के खसमें मिलणां। □

पत्र गीता भगवान का -17

Change your wrong direction, wrong view, wrong value, wrong attitude to right one. तुम सब **Wrong** हो **Wrong** नज़र है **Wrong** तड़प है। तुम यदि देह में हो तो देखते ही **Wrong** हो। अब **Right** में आ जाओ कि मैं क्या हूँ तो सब कुछ बदल जाएगा।

Mind is nothing but claiming something. Mind is imposter. pretended to be something. मन है कुछ भी नहीं पर दिखता है ऐसे ही दिखायी देता है कि मैं कुछ हूँ? पोज करता है, मानो मैं कुछ हूँ पर हस्ती नहीं है।

Self is full of grace. You are bless your self. God guru, self and grace is samething.

तुम्हारी आत्मा महर दया है। भगवान गुरू आत्मा और दया एक ही बात है।

Grace always is, but is not given.

दया है ही अन्दर तुम्हारी आत्मा में। बाहर कहीं से दया नहीं होगी। तुमने अपनी आत्मा को पहचाना तो अन्दर से ही तुम्हें आशीर्वाद मिल जाती है। बाहर से कोई आशीर्वाद नहीं करेगा।

Who am I, brings death to the ego.

मैं क्या हूँ यह समझ अहंकार को मारकर खत्म कर देती है।

I am sick, you lead guilty therefore. Make your own terms with sickness and be just to yourself and to others. मै बीमार हूँ यह कहा तो तुम दोषी हुए। अपने से भी सच्चे बनो, इंसाफ करो दूसरों के साथ भी। अपनी बीमारी से सुलह करो। जो बीमारी कल होगी ही नहीं वह आज क्यों माने, यह सच नहीं हुआ। All is right which seems most wrong. जो wrong दिखाई दे रहा है वह Right है।पूजा छोड़नी चाहिए। To attain reality, the worship of name and form should be avoid it. सच पाने के लिंए नाम रूप की पूजा छोड़नी चाहिए। पहले कृष्ण और नानक को भगवान समझते थे अब गुरू को समझते हो कि फलाना मेरा भगवान है यह कोई सत्य नहीं है। नाम रूप नाश है, तुम एक ही निराकार से साकार होकर आये हो। यह समझ, अद्वेत मत ही सच है। When self is realized there is end to all efforts and all expirations and explanations. आत्मा को जानने से कोशिशें और अन्दर बाहर की खेंचातानी खतम हो जाती है। There is no problem remains when you know self. अपने को जानने से सब उलझनें खत्म हो जाती हैं। Love of money is root of all evils. धन के लिए प्रेम सब खराबियों की जड़ है। आज भी लाख रूपए मिले तो तुम्हें खुशी होगी या नही Goodness it self is God. God is not Good. भगवान अच्छा

नहीं पर अच्छाई खुद भगवान है। Not do good but enjoy the good. अच्छा करो नहीं पर अच्छाई का आनन्द लो। Neither run to the world nor away from the world, only come to the self. न दुनिया के पीछे पड़ो न दुनिया से भागो। Be as pure as your father is in heavens. ऐसे पवित्र बनो जैसा तुम्हारा पिता है स्वर्ग में पिता जैसा बनो नहीं तो मूत के मूत हो। फलाना मल हो तो मल–मूत्र ही हो। □

पत्र गीता भगवान का -18

पहले मन का बन्धन कटना चाहिए, राग–द्वेष इच्छायें निकलनी चाहिए। आत्मा का निश्चय होना चाहिए। बाहर के बन्धन अपने आप कटते रहेंगे। तुम केवल आत्मा में पक्के हो जाओ बाकी काम सब अपने आप होंगे।

मैं भगवान से कैसे अलग हूँ अपने आप से पूछो। भगवान में और मेरे में क्या फर्क है?

ज्ञान का फर्क है आनन्द यदि किसी को आनन्द नहीं है मुस्कुराता भी नहीं है 24 घण्टे तो उसे ज्ञान का ग नहीं लगा है। गुरू कहता है कि तुम केवल **Sign** करो कि मैं तुम्हारा हूँ मैंने तुम्हें **Fully surrender** किया है बस फिर तुम्हारा काम उतर गया अब तुम्हारे बदले सब फिक्र, चिन्ता, सिमरन, भजन, ध्यान, ज्ञान गुरू सोचेगा कि अब इसके लिए क्या करूँ। तुमसे भी छिपा कर विश्वास शान्ति आनन्द देगा जिसका तुम्हें पता भी नहीं चलेगा। तुम कहोगे कि कैसे ये सब हो गया पता नहीं। यह सब गुरू ने किया जब तुमने सब कुछ छोड़ा। अपने को हल्का कर दो। यह सब गुरू का आकर्षण है जो सबकी दिलों को प्रेम में कैद करता है। काश मैं कभी आजाद न होऊँ, केद करो तो कुबूल मियां। गुरू की कैद में जो काबू है वह दुनिया की, इच्छाओं की, सम्बंधियों की, समाज की, लोकारीत की जनम–मरण की कैद से छूट जाता है। जो

गुरू की आज्ञा में है।

ज्ञानी दूसरे के दुःख को अपना समझकर जी जान से उसे प्यार करता है ज्ञान सुना कर तार देता है पर अपने और अपने वालों के दुःख में दुःखी होकर मोह में गिरता नहीं है। जब तक हमें इच्छा है प्यार की कि कोई हमें प्यार करे तब तक दूसरे की दिल भर नहीं सकेंगे। यदि हम खुद खुटैले है तो फकीर की तरह दूसरों को दान नहीं कर सकेंगें। जितना मिला है उतना दो। गुरू में भी इच्छा नहीं रखो क्योंकि तुम पहले से ही प्यार के सागर हो। गुरू के प्यार से भी दिल नहीं भरेगा (तृप्त होगी)। लेने वाला हमेशा अतृप्त रहेगा, देने से तृप्ति आयेगी। दूसरे में सुख समझने से दुःख भी उतना ही होता है। निरइच्छा होना पहला सबक है। **The other is Hell.** दूसरा नर्क है। अपने में अपने को देखो दूसरा दर्शन बन्द करो। तुम निरइच्छा बनो तो सारी दुनिया की, गुरू का भी दिल होगा तुम्हें प्यार करने का। यदि इच्छा रखोगे तो गुरू भी तंग हो जाएगा। निरइच्छा वाला भगवान को प्यारा है।

भगवान ही भगवान से मिलकर एक हो सकता है पर फकीर राजा से मिलकर एक नहीं हो सकेगा। भले ही शुभ इच्छा भगवान पाने की हो तो भी भगवान नहीं मिलेगा क्योंकि भगवान और इच्छा एक दूसरे के विपरीत

हैं। **You get God above desire.** कोई भी तकलीफ या मुसीबत आये तो शान्त करके बैठो कुछ भी सोचो नहीं **Be still.** मुसीबत दूर करने का कोई यतन नहीं करो। शान्त होकर बैठो अन्दर बाहर शान्त होकर बैठो। देखो बैठ कर तूफान आया फिर चला भी गया पर शोर मचाओगे सलाहें करोगे यतन करोगे तो मुसीबत दुगनी हो जायेगी। **After storms come calm.** मुसीबत को टालने का एक ही उपाय है धीरज। शान्ति में ताकत चाहिए बाकी हलचल करना परेशान होना तो सभी अज्ञानियों का काम है। □

पत्र गीता भगवान का -19

तुम मन के पीछे आकर पड़े हो इसलिए मन को जीतना बहुत मुश्किल समझते हो। रात–दिन मन की ताकत से डर रहे हो पर उसी समय ओम में टिकते जाओ। ओम भूलता है तो उसी वक्त भय मन में आ जाता है। पर ओम को पक्का करो तो मन भाग जाएगा। मन आयेगा ही नहीं। कभी मन की लगाम ढ़ीली छोड़ दो कि चलो मन देंखे कहाँ तक चलते हो। फिर क्या होगा? बड़े में बड़ा कौन सा नुकसान होगा, जो तुम इतना डरा रहे हो। ऐसे देखो जिस समय तुम सुजाग हो तो सपना नहीं आयेगा। गुरू के वचन और विचार याद रखो। हर क्षण मन में वचन विचार याद रखो तो मन नहीं आयेगा। प्रभु ते भुलियाँ त व्यापन सबहिं रोग। ओम् भुलाते हो तो सभी रोग भय लगेंगे। मन के ऊपर पहरा रखो। जब तुम बोलना शुरू करते हो तो पहला अक्षर मैं निकलता है इसलिए पूछो अपने आप से कि मैं कौन? तुम अभी तक समझते हो कि मैं फलानी मैं फलाना हूँ पर मैं आत्मा हूँ यह समझेंगे तो बोलना ही बन्द हो जायेगा। हो मैं धीरग रोग है यानि तुम शरीर समझती हो तो परमात्मा नहीं देखती। ओम केवल कहना नहीं है पर ओम के अर्थ में टिकना है निश्चय करना है कि मैं सत्‌चित आनन्द स्वरूप मुक्त परमात्मा हूँ। सब जो है वो मैं ही हूँ मेरे सिवाय

दूसरा कुछ है ही नहीं। घड़ी इक विसरूँ राम कूं तो ब्रहम हत्या मोहे होय। ध्यान समाधि है गुरू के वचन विचारो। यही है आठो पहर समाधि। वेदान्त कहता है कि तू ब्रहम है न कि तुम ब्रहम होगे। तुम पहले से ही हो। स्वाभाविक मुक्त हो। मुक्ति हासिल नहीं करनी है। कमज़ोरी के ख्याल करने वाला मंज़बूत नहीं होगा। □

पत्र गीता भगवान का -20

ज्ञान से बढ़कर प्रेम है। ज्ञान है दिमाग का प्रेम है ह्रदय का। केवल ज्ञान खुश्क कर देता है पर प्रेम परमात्मा है प्रेम से खुद परमात्मा का रूप हो जाता है। ज्ञान से परमात्मा को जाना जाता है। प्रेम में गुलामी नहीं है, मोह और स्वार्थ में गुलामी है। सच्चा प्रेम ह्रदय तक पहुँचता है। बाहर का मोह़ बाहर तक ही है। प्यार में दिखावा नहीं है, प्यार में कर्म नहीं, क्रिया नहीं है। प्यार स्वभाव है। जब से भगवान मिला तब से प्रार्थना बन्द कर दी। व्रत नियम सब बन्द कर दिये।

विण आंखे वेखणा, चम की आँखे बेकार हैं दिव्य दृष्टि जरूरी है। वह दृष्टि भी ब्रहमज्ञानी गुरू देता है, बनाता है आप समान।

जो समझता है मैं प्यार करता हू वह प्यार नहीं है। प्यार हो जाता है स्वाभाविक पर किया नहीं जाता। प्यार कब हो गया पता ही नहीं चलता है। दो में प्यार नहीं होता पर मैं ही तो हूँ तो अपने आप से प्यार होता है।

अन्दर प्रेम है तो बाहर भी सारी दुनिया में प्रेम नज़र आयेगा प्रेम में दो मिलकर एक होते हैं। मोह में दो ही रहते हैं। प्रेम क्या है यह कोई समझा सकता है? नहीं, जो प्यार करता है जिसको प्यार करता है उसे अनुभव मिलता है। भगवान है प्यार और जिसको प्यार की सौगात

मिली उस भगत को और भगवान को ही प्यार का पता है। मोह को ही प्यार समझ बैठे हो। मेरे दुःख में कोई दुःखी हो मुझे कोई मदद करे मेरी सेवा करे कोई यह प्यार नहीं है। हमारी कोई जीवन बनाये यही प्यार है। **Love is the Path, Love is door.**

जो सीखे हो वह सब भुलाओ, अनजान हो जाओ। नाम रूप से प्यार करोगे तो भुलाने बरस लग जायेंगे मुझे इच्छा है तो उसे फिर भुलाने में वक्त लगेगा। किसी से भी मजा आता है तो उसे फिर भुला नहीं सकेंगे क्योंकि उसके गुलाम हो गये, इन्द्रियों के रस में फँस जायेंगे।

किसी का हँसना, किसी का बोलना किसी का संग भले ही वह सत्संगी हो उसमें भी नहीं फँसना है कि ये अच्छा है। यह मेरे ख्यालों जैसा है, ये मेरे ख्यालो से नहीं बनता है। ज्ञानी किसी से भी नाता नहीं रखता है, किसी के भी संग की जरूरत नहीं है। सारी दुनिया तुम्हारी है। एक घर एक शहर तुम्हारा नहीं है जहाँ तुम्हें पहुँचना है या ज़रूरी कोई भी बात नहीं है जो तुम्हें वह बात करनी है। एक आत्मा के सिवाय दूसरी कोई बात जरूरी नहीं है। गुरू को अपने अन्दंर की ऐसी बात बताओ कि गुरू को तुम्हारे में ऐतबार आ जाय कि तुम्हारा उसमें अपने पति से भी अधिक विश्वास है। जैसे पक्की सहेली या दोस्त से कुछ भी नहीं छिपाते हैं ऐसे गुरू से भी कुछ नहीं

छिपाओ। झूठ में शक्ति है खुद को खुद ही डुबाने की गिराने की। सच को शक्ति है चढ़ाने की। झूठा व्यक्ति हमेशा दुःखी है सच को दुःख है ही नहीं। तुम हठ कर बैठे हो कि जो मैं जानता हूँ वही सही है, दूसरे की सुनते ही नहीं हो। थोड़ा ज्ञान, थोड़ा अज्ञान खौफनाक है। पूरा ज्ञान समझो अधूरा सधूरा ज्ञान नहीं। होशियार नहीं पर साफ दिल बनो। अपनी समझ छोड़ कर गुरू की मति पर चलो। सुख को बढ़ाओगे तो दुःख बढ़ जायेगा। भोजन तो सुखदायक है पर अधिक खा लोगे तो नुकसान करेगा। शर्म उतार दो प्रेम में।

ज्ञान बाहर तक पहुँचाएगा पर प्रेम बिल्कुल अन्दर दिल में घुस कर आयेगा। स्त्री अन्दर घुस आती है मर्द बाहर ही खड़ा रहता है। प्रेम है स्त्री है ज्ञान है पुरुष। स्वार्थी प्रेम है कि मैं कैसे खुश हो जाऊँ पर निस्वार्थी प्यार है कि दूसरे का फायदा कैसे होगा।

स्वार्थी – केवल मेरा फायदा हो।

निस्वार्थी– दूसरे का फायदा हो।

मिला–जुला– मुझे भी फायदा हो दूसरे को भी।

कोई तुम्हें धिक्कारे फिर भी तुम प्यार करो उसे प्यार कहते हैं। **With all thy faults but I love you.** तुम्हारे में कितने भी अवगुण हैं फिर भी मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। बीमार बच्चे को माँ पकड़ती है **Operation** के

समय जैसे उसे दर्द न हो ऐसे ही गुरू भी तुम्हें बचाता है हरदम जैसे तुम्हें कोई दुःख न लगे। गुरू शिष्य के दुःख दर्द सब ले जाता है। पहले दाता गुरू भया जो तन,मन,धन देता है। शिष्य को क्या पता कैसे देते हैं। देकर तो गुरू दिखाता है, सिखाता है। प्रार्थना बाहर से बड़ी अच्छी लगती है पर है तो माँग अन्दर की। आनन्द तुम्हारे अन्दर ही है। मन को व्यर्थ नहीं भटकाओ। अपने को भाग्यशाली समझो। भगवान ने तुम्हारे साथ भलाई की है जो पूरे वक्त पर दुःख के समय आकर सुजाग किया है। दुख उत्तम में उत्तम वस्तु है जो मुक्ति के लिए चाहना उत्पन्न करता है। शरीर को बिल्कुल याद नहीं करो तो बिल्कुल तंदरूस्त हो। खाली बिल्कुल नहीं बैठो जो कोई भी ख्याल आये। किसी न किसी बात या काम में मशगूल (व्यस्त) रहो। मन को ज्ञान की बातों में टिकाओ। □

और सुख आनन्द

तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -21

मेरा शरीर भले कहीं भी हो पर मैं तुम्हारे साथ हूँ ही हूँ। मैं चाहे कितना भी दूर हूँ मगर तेरे पास हूँ। "आत्मा करके तो मिले ही पड़े है पर शरीर का आना जाना प्रारब्ध अनुसार है। तुम अभी भी आँखें बन्द करके देखो तो मैं तुम्हारे पास हूँ या नहीं? काम है वचनों से न कि शरीर से। कोई भी यदि मेरे वचन आकर सुनाये तो समझो कि मैं ही उसके मुख से बोल रही हूँ। हमारा मेलाप भी एक अजीब नमूने हुआ है, एक धोबी के जरिए जिसमें बड़ा राज समाया पड़ा था। थोड़े दिनों में ही ऐसा हिल मिल गये जैसे पहले से ही एक दूसरे को पहचानते हों। है भी यह सत्य कि आदि से जो तुम हो सो मैं भी हूँ तुझमें और मुझमें आदि से ज़रा भी जुदाई नहीं है। मैं आत्मा हूँ वह तुम और हर एक है पर अज्ञान का पर्दा आने के कारण जीव अपने आप को भुला कर बैठा है। इच्छाओं, वासनाओं मोह और काम की जंजीरों में फँस कर अपने को खुद ही दुःखी करके बीमारियों का शिकार बन गया है। जैसे मकड़ी अपना जाल बनाकर फिर खुद उसमें ही फँसकर शिकायत करती है ऐसे मनुष्य भी अपने ही बनाये कल्पित इच्छाओं और ख्यालों में फँसकर अपने को दुःखी कर रहा है नहीं तो दुःख तो बना ही नहीं है। दुख का जन्म ही नहीं हे। जैसे–जैसे ख्याल से तुम जिस

हालत को देखोगे वैसी हालत बन जाती है। तुम्हारा ख्याल यदि तुम्हें दुःखी न करे तो दुनिया में ऐसी कोई भी ताकत नहीं है जो तुम्हें दुःखी कर सके। खुद भगवान भी तुम्हें दुःख भेजकर दुःखी नहीं कर सकता है, यदि तुम अपनी आत्मा में पक्के स्थिर अडोल हो। निराश होना माना नास्तिक होना, कभी भी उम्मीद नहीं उतारो। हमेशा आशावादी होकर रहो। प्रारब्ध पर विश्वास माना भगवान पर विश्वास। जब भगवान खुद हमारी चिन्ता कर रहा है फिर हम अपनी चिन्ता क्यों करें। सब बोझ उतार कर भगवान पर रखो फिर बैठकर देखो कि अपने आप से हो रहा है कि नहीं। तुम साक्षी दृष्टा होकर बैठकर खेल देखो कि कैसा न सुन्दर अच्छा पूरा **(Perfect)** खेल बना हुआ है। जगत है नाटक, न टिकने वाला फिर उसकी चिन्ता करना कितनी नमूर्खता है। सिनेमा पहले ही बनी पड़ी है अब बदलेगा कुछ भी नहीं इसलिए क्यों न शाँत करके हर बात में राज़ी रहें। कमज़ोरी मौत है बहादुरी जीवन है।

कितनी भी परीक्षा हो या असफलता मिले तो भी दिल छोटी न करो, धीरज और विश्वास रखो। मन की न सुनना ही है मन को मारना। मन लायेगा खोटे ख्याल हमारा काम है अच्छे और ऊँचे संकल्प करना कि सब अच्छा ही हो रहा है और अच्छा ही होगा। विचार करके

देखो कि जो भी कुछ हो रहा है वह कुछ भी नहीं है एक कहानी इन्सानी ख्याल का तूफान है सपना है। पलक झपकते सब गुज़रता जा रहा है। बालकपन जवानी ऐसे उड़ गये जैसे बिजली की चमक पर हे मनुष्य तुम इस माया के बहाव में नहीं बहते जाओ क्योंकि तुम **Unchangeable** आत्मा हो। तुम नाश होने वाले कभी भी नहीं हो सारे विश्व का नाश हो जाय जगत तो है ही मिथ्या, नाशवंत, तुम हो आत्मा सत्य। यह ब्रहमज्ञान ही दुनिया में दुःखों से ऊपर रहने का सबक सिखाता है। इस ज्ञान रूपी नाव से ही मनुष्य इस महासागर से तैर कर पार हो जाता है बाकी दूसरे सब गोते बैठे खा रहे हैं। यह ज्ञान देने वाला भी कोई पूर्ण सत्गुरू कामिल पुरूष चाहिए जिसे तुम्हारे में कोई भी इच्छा न हो तो केवल तुम्हारे उद्धार के लिए खुद ही तुम्हारे पास आये। खुदा माना खुद आया हुआ। खुदा बिल्कुल साधारण स्वरूप में तुम्हारे पास आया पर तुमने कितना उसे पहचाना यह तुम्हें पता। ऐसा मौका जीवन में इत्तेफाक से मिलता है इसलिए पूरा-पूरा फायदा लेना चाहिए। जितना जल्दी निश्चय करेंगे उतना जल्दी जीवन मुक्ति का आनन्द लूटेंगे। आज ही निश्चय करो कि मैं आनन्द स्वरूप हूँ, खुशी करो कि मुझे सब कुछ मिला है। अपने स्वरूप को पहचानो। जिसने अपने को पहचाना उसने सबको पहचाना।

Unless you feel all you know not all. यह अनुभव करो कि यह सब मैं ही तो हूँ तो सबको पहचान जाओगे। शास्त्रों के फुर्ने भी गाँठें हैं। शुभ–अशुभ ख्यालों के त्यागी बनो Thoughless बनो। मोले भाव मिले रघुराई। स्याणप चतुराई, पण्डिताई छोड़ कर मैं में टिको। सब कर्म, धर्म छोड़कर आत्मा की शरण लो। □

पत्र गीता भगवान का -22

अन्त बेले में जिसे भगवान याद है वह मुक्त है Neither seek nor avoid. Take what comes. भगवान को नहीं बोलो कि ऐसा क्यों किया। सब अच्छा हुआ। तुम्हारी मर्जी और मेरी मर्ज़ी एक है। खेल में बिल्कुल इन्साफ है।

Are we really greatful for the Good already received? जो कुछ भी है उसके लिए शुक्रगुज़ार Thankful हो? Truth destroy mortality and brings to high, immortality सत्य मौत को नाश करके अमरता को लाता है। □

पत्र गीता भगवान का -23

असल में हर एक आनन्द स्वरूप है पर भूल से वह आनन्द बाहर समझता है। गुरू आकर तुम्हें आइना दिखाता है कि तुम कौन हो, अपने ऊपर आशिक हो जाओ फिर सारी दुनिया तुम्हारे पर आशिक होगी। आशिक वे हैं जिन पर खुद आशिक हो। यदि तुम गुरू पर आशिक हो तो यह कोई बड़ी बात नहीं है पर उसके निश्चय पर, उसके वचनों पर आशिक हो। आज ही गुरू के समान बन जाओ फिर गुरू कैसे नहीं तुम पर आशिक होगा। निर्भय निवैर, अजर–अमर आनन्द स्वरूप हो जाओ तो गुरू तुम पर आशिक होगा, द्वेत में नहीं। देहधारी कैसे गुरू से मिल कर एक होगा। फिर कहोगे कि गुरू मुझे प्यार नहीं करता। □

पत्र गीता भगवान का -24

आज की दुनिया आत्मा को नहीं जानती पर शरीर को सजाती सँवारती है कि मैं कुछ हूँ। हो मै में रहते हैं और मरते हैं पर सच्चे गुरू के पास पहले ही दिन सुनते हैं कि तुम हो नहीं। मैं ना के एक ही अक्षर (शब्द) से मुक्ति मिल जाती है कि मैं नहीं हूँ न मेरा है। न ही मैं कर्ता हूँ। ज्ञानी–'रहत अतीत सर्व रस भोगी।' सब रस हुए भी खाते पीने भी सबसे न्यारा है। वह किसी भी रस में अटका हुआ नहीं है। □

पत्र गीता भगवान का -25

सभी हालतों में कामयाबी की चाभी है प्रेम। प्रेम से पत्थर दिल भी पिघल जायेगा। प्रेम का मतलब है सर्व से प्रेम किसी से कम ज्यादा प्यार नहीं। सबको अपना आप देखना ही प्रेम है। अन्दर में किसी के लिए भी द्वेष न रहे। किसी को भी शरीर नहीं देखो उसके कर्मों में नहीं जाओ यही है प्रेम। आत्मा की दृष्टि रखो। नकाब उठा कर देखोगे तो गुरू भी शरीर नहीं है। जो तू है सो वह है जो वह है सो तू है। तुम्हारे सिवाय भगवान कोई दूसरा नहीं है। अपनी देह भुलाने से सबकी देह का पर्दा उतर जाता है जहाँ–तहाँ भगवान देखता है तो उपकार किस पर करे गा। अपने को शान्त रखने के लिए ही भगवान देखते हैं। सत्य को देखने से कोई भी बुराई अन्दर नहीं आयेगी, नज़र नहीं आयेगी। झूठा अंहकार छोड़कर सच्चा अहंकार करो कि मैं **Misrty** हूँ मुझे कोई भी जान नहीं सकता। गुरू अपना आप गँवाकर तुम्हें कहता है कि तू आत्मा है। जब तुम अपने को पहचानते हो तभी गुरू को भी पहचाना जो मैं हूँ सो तू है। कभी आत्मा कभी शरीर नहीं बनो। मुख से आत्मा कहना और शरीर से माँ–बाप बनकर कभी फर्ज़ कभी डर, कभी मर्यादा करना अपने को धोखा देना है। माया रहित ब्रहम हे। अपने निश्चय में अडोल रहो। अन्दर में अपने से सच्चे बनो। दिन पर दिन विकारों को निकालते आओ। ऐसा करने से बाहर के बन्धन सब कट जायेंगे। निष्काम सेवा से ही प्रेम की नई दुनिया बनेगी। □

पत्र गीता भगवान का -26

शास्त्रों की लम्बाई, चौड़ाई छोड़ कर आत्मा का निश्चय करो। हम तो तेरे दिवाने हैं हम जेर जबर को क्या जाने, हम ज्ञान ध्यान को क्या जाने। ज्ञान अज्ञान सब भुलाकर अब प्रेम की दुनिया में रहो। जो कुछ पढ़ा है याद किया है सब भुलाने के सिवाय आत्मा में नहीं टिकोगे। निराकार में कौन सा **Grammar** है। मैं ही तो हूँ। अष्टावक्र गीता में जनक को गुरू ने कहा कि सब शास्त्र भुलाने के सिवाय ज्ञान पक्का नहीं होगा। भूल जा जो सब देखा है सुना है। सन्त की महिमा वेद न जाने। अब वेद पुराण पुस्तक सब बेकार, पूरन गुरू की **Practical Life** का पुस्तक सबसे बड़ा पुस्तक है। जिसने गुरू को पहचाना उसने अपने आप को पहचाना। जिसने अपने को पहचाना उसने सबको पहचाना। **Unless you feel all you know that all.** यह अनुभव करो कि यह सब मैं ही तो हूँ तो सबको पहचान जाओगे। शास्त्रों के फुर्ने भी गाँठें हैं। शुभ–अशुभ ख्यालों के त्यागी बनो। **Thoughtless** बनो। भोले भाव मिले रघुराई। स्याणप, चतुराई, पंडिताई छोड़कर मैं में टिको। सब कर्म धर्म छोड़कर आत्मा की शरण लो। □

पत्र गीता भगवान का -27

सत्संग करते होंगे, किसी न किसी से रोज़ बात करो तो तुम्हें खुशी आयेगी। पेन्टर यदि सुन्दर न हो तो क्या उसकी तस्वीर नहीं लेंगे। गुरू यदि माँस खाने वाला हो तो उसका ज्ञान नहीं सुने क्या? गुरू के कर्मों में न जाकर जो उसका ज्ञान दिल से लगाता है वही पार पहुँचता है। गुरू के कर्म तब तक देखने में आयेंगे जब तक हम कर्ता है पर तुम दृष्टा हो जाओ अपने मन इन्द्रिय शरीर के कि मेरा कोई वास्ता नहीं है इनसे, मैं न्यारा हूँ सबसे तो गुरू को भी न्यारा समझेंगे। कई कहते हैं कि स्थूल इच्छायें तो नाश हो गई हैं पर अभी सूक्ष्म नाश नहीं हुई है, ये ऐसी हैं जैसे मछली और पल्ले में हज़ारों काँटें होते हैं जो निकल नहीं सकते हैं। पर हमारा जवाब है कि जैसे बड़े–बड़े काँटें निकाल कर बाकी जो बिल्कुल महीन होते हैं उन्हें निगल जाते हैं खाकर खत्म कर देते हैं ऐसे सूक्ष्म इच्छायें सब अपने लक्ष्य में लय कर दो (विजीन कर दो)। सागर सब कचड़ा अपने में समा लेता है ऐसे तू आत्मा सागर है तुम इच्छाओं को खाकर खत्म करके अपने में गर्क कर दो। जिसने मैं को गर्क़ किया उसने सारे जगत की इच्छाओं को अपने में ग़र्क कर दिया। इच्छायें और विकार निकालने बैठेंगे तो जीवन ही पूरी चली जाएगी पर मैं आत्मा हूँ मेरे में इच्छा है ही नहीं मैं आदि से निरइच्छा

हूँ। अपने मन को अपने से जुदा समझकर बैठ कर देखो उसके किसी भी व्यर्थ के ख्याल से बनकर नहीं बैठो। आत्मा बिन हर बात को दिल से हमेशा नाकार करो। मन की एक भी नहीं सुनो। यही खुशी करो कि तुमने मन को पहचाना है कि कैसे भ्रम संशय व्यर्थ के लाकर हमें भगवान से दूर करता है। अपनी भूल पर पछताने और रोने के बदले खुशी करो कि मुझे पहले ही पता चल गया कि बाकी कौन सी कमी है मन में तो उसे आत्मा का विचार देकर निश्चय करेंगे, पक्का करेंगे। हमारी एक सत्संगी का पति लखनऊ में गुज़र गया है। वह और मैं साथ–साथ ज्ञान में आये थे उसने गुरू को छोड़कर अभिमान में आकर कहा कि मैं गुरू की आज्ञा (मर्जंता) में क्यो चलूँ, गुलाम क्यों बनूँ मैं अलग जाकर शिष्य बनाऊँगी सो पूना में गुरू बन कर बैठी दादा लक्ष्मी को छोड़ दिया। अचानक शादी हुई तो पति की गुलाम बन गयी इतना तो मोह हो गया जो अब पति मरा है तो बहुत दुःखी है फिर भी यहाँ के सिवाय चाढ़ा (उन्नति) नहीं है। भगवान को छोड़ कर यदि हम लौट कर माया में जायेंगे जो प्रकृति मार और चोटें लगाकर हमें सिखायेगी और वापिस भगवान के दर पर लाकर पटकेगी। इससे क्यों न शराफत से माया को पीठ देकर भगवान का रास्ता सीधी तरह ले। □

पत्र गीता भगवान का -28

गुरू ने सरल सलाह दी है कि अब तक जो भी करते हो वह अब इसके बाद नहीं करना। जो दूसरे कर रहे हैं वह तुम नहीं करो। दुनिया अज्ञानी है तुम ज्ञानी उसके उल्टा चलो यानि **Mental revolution** करो इन्कलाब लाओ, मन को अलग करो, मन के अनुसार नहीं चलो। **Change of attitude wanted change your wrong outlook that is ignorance.** तुम अज्ञानवश माया के पीछे हो पर आखिर मिला न रब और सब मिला तो क्या हुआ। जगत के पदार्थ मिथ्या है केवल तू ब्रहम सत्य है। **Real value and view** समझना चाहिए यानि तू मैं और सब आत्मा है। देहध्यास गँवाओ। देह सबकी नाश हो जाएगी पर हर एक आत्मा अमर अविनाशी है यह निश्चय करो। सत्‌गुरू से उत्तर प्रश्न करके सत्य समझो। नामरूप अवश्य नाश होगा, तुम स्वयंभव हो अपने आप संकल्प से जगत पैदा किया है यह निश्चय करके देह से हाथ ऊपर उठाओ यानि देह मैं ना। देह के जलने मरने से आत्मा नहीं जलता मरता है पर आत्मा को दूसरी देह फिर मिलती है, नयी देह से फिर मरने वाला चौरासी के जगत में फिरता है, ज्ञानी तो जीते जी शरीर से अलग हो जाता है तो सब विकार शरीर वाले गये। सुन सुनकर डाला है, सुन सुनकर निकालो। विकारों सहित शरीर भुलाओ,

निष्काम बनो इच्छा और अहंकार छोड़कर। सब पदार्थ प्रभु की अमानत है, सब यहीं छोड़कर जाने वाले हो, आया नंगा जाया नंगा। मर्यादा फर्ज़ धर्म ज्ञानी के लिए नहीं है। एक माम् (।) का आसरा है। फुर्ने ख्याल, संकल्प–विकल्प, विक्षेप चिन्ता डर सब शरीर में है। काम, क्रोध लोभ मोह अहंकार भी तुझ आत्मा में नहीं है तुम स्वाभाविक आत्मा अजर अमर अविनाशी हो। बस संशय, भ्रम, शक, शुब्हे गुरू से उत्तर प्रश्न करके साफ हो जाओ। कर्म और भक्ति नर्क में डालेंगे तुम त्रिगुणातीत हो जाओ। अच्छे कर्म सोने की जंजीरें हैं केवल ज्ञान मुक्त करेगा। ज्ञान भया तो कर्महिं नाश। ज्ञान से बीमारियाँ, दुःख, बुढ़ापा, मौत नहीं होगी। कोटि कर्म बंधन के भूल। कर्म सभी राजा जनक ने (तन, मन, वाणी के) त्याग कर दिये क्योंकि उसने अद्वेत मत समझा। योग कृष्ण का समझना। अज्ञान गँवाना है, निश्चय पक्का करना है कि मैं आत्मा पहले से ही हूँ। पुरूषार्थ करके बछड़ा होकर गुरू के मुख से ज्ञान चूसो (पियो) दादा। □

पत्र गीता भगवान का -29

आज दिवाली मनाई है पर सच्ची दिवाली क्या है वह तो किसी को भी पता नहीं है। सच्ची दिवाली है जब मनरूपी रावण का राज्य हमारे ऊपर नहीं चले मन का हक नहीं पर गुरू का हक हमारे ऊपर हो। इस शरीर तन, मन, धन का मालिक गुरू है न कि हम। मैं नहीं हूँ है ही भगवान यह सच है। जब तक हम मन की एक भी बात सुनते हैं तब तक मन के मुरीद (गुलाम) हैं पर कबीर कहता है कि 'कबीर कुत्ता राम का जित खींचे उत जाय।' हम अपने से पूछे कि हम मन के कहने पर चलते रहे हैं या ईश्वर की इच्छा पर। अंदर से जिसने अपने इच्छा रूपी कुत्ते का त्याग किया वह वहीं का वहीं आनन्द की लहरें अपने अन्दर में लहराती देखेगा। मैं सागर हूँ मुझमें यह मन लहर समान है। लहर सागर को क्या कर सकती है? सागर बिल्कुल मौन में गम्भीरता में है। कितने भी तूफान, गर्जनायें, आवाज़, बम भी चाहे लगें पर सागर और आकाश को कोई भी नुकसान नहीं पड़ता। कोई भी हलचल नहीं है और तुम भी आकाश की तरह न्यारे हो। तुम्हें कोई भी मार नहीं सकता। काल की क्या मजाल है जो मार सके तुमको। आत्मा का निश्चय करो तो कोई भी झटका नहीं है। आत्मा बिन हर बात को दिल से सदा नाकार करो। शरीर में खड़ा होकर कोई चाहे कितने भी

साल ज्ञान सुने या कर्म भक्ति करे पर देहध्यासी आतम अनुभव नहीं कर सकेगा। देह को भुलाओ, मैं तीनों कालों में देह नहीं हूँ।जहाँ भी हो वहाँ ज्ञान यज्ञ शुरू करो, कोई न कोई भगवान का प्यारा मिल जायेगा। सब मनुष्य मुसीबत के समय दुःखी होते हैं, उनका हृदय उस समय निर्मल होता है।। किसी न किसी को यह वचन सच्चे लग जायेंगे। आपका भी मन बहलाव हो जाएगा। □

पत्र गीता भगवान का -30

अपने अन्दर की सफाई चाहिए। जो निरइच्छा है वही निर्भय है। अधिक से अधिक क्या होगा यह सोचो और उसके लिए तैयार हो जाओ, भगवान भी थक जाएगा "आजमाए खे आज़माए सो धूर मुँह में पाए" अब कौन सा बड़ा दुःख आयेगा जिससे दुःखी हो सकते हो? लिख कर भेजना।

आज सत्संग में यह पता चला कि प्रारब्ध भी हम बनाते हैं नहीं तो है ही नहीं। मतलब प्रभु के सिमरन दुख न सन्तापे। प्रारब्ध के दुःख–सुख भी उसको भासते हैं जो कुछ बन कर बैठा है। मैं ना माना मैं हूँ ही नहीं तो प्रारब्ध फिर काहे की? आत्मा दुःख–सुख, लाभ–हानि, मान–अपमान से ऊपर है, फिर प्रारब्ध का असर कैसे होगा?

प्राल्बुध सन्दीअ परवाह जी तिखी अथेई तिख
दि̱सी दुख जहान जा तूं अग्रते वधणु सिखु।
पिरींअ सन्दे पार जी मिरयोई मिठाई
कान्हे कड़ाई चखीं डो चेतु करे।

ज्ञान तो सिर्फ कहने मात्र यानि पढ़ाई है पर परीक्षा के समय सावधान **elert** रहना है। शादी या भोग सब परीक्षा है न कि भोगने के लिए। भगवान सुन्दर माया भेजता है आज़माने के लिए पर हम समझते हैं कि सहज मिला सो

दूध बराबर। सूक्ष्म इच्छा का पता ही नहीं चलता है जब परीक्षा आती है।

जदु̱हि सुखन सन्दा सामान अचन तद्रहिं स्याणां मुलजी कीन वञनि।

कन किरत उहाजेक चई सच्चन, वरी अदब रखी कनपिया आणी।

वैराग्य के लिए दुःख ज़रूरी है। भगवान ने गीता में कहा है कि जिसकी यहाँ निन्दा है उसका मरना बेहतर है। यानि हम जो ग्रहस्थ में रहे हुए हैं वे मिसाल दिखाये हमसे कोई भी दुःखी न हो, सबके साथ गुज़ारा कर सकें (रह सकें)। प्रेम और नम्रता में सब वश हो जाते हैं। पहले जब तक रामचन्द्र जैसी मर्यादा नहीं की है तब तक ज्ञान के लायक नहीं हैं। दिल की सफाई ज़रूरी है। हमारा अगर किसी से सच्चा प्रेम है तो वह हमें छोड़ कर नहीं जा सकता है। आना जाना हमारा बना ही पड़ा है। तुम प्रेम को बढ़ाते रहो। "नेठत ईन्दो।" आखिर तो आयेगा, करते–करते आखिर भगवान पहुँच जायेगा। सभी मेरे स्वरूप मौज में होंगे। □

पत्र गीता भगवान का -31

सत चित आनन्द स्वरूप प्रिय सभी भगवान मौज में मस्त रहना। हम यानि हमारे शरीर यहाँ बाम्बे में सुख से पहुँच गये। बाम्बे वाले इस बार बड़े उमंग में हैं, समझ रहे हैं इस बार बरसों बाद आये हैं खूब दिवाली मनाई। सच्ची दिवाली तो है आत्मा का आनन्द। जिसके मन में समता भाव, सम दृष्टि और आत्मिक नेष्ठा आ गई उस जैसा सुखी, आनन्द में इस दुनिया में कोई न होगा। जो अपने में ही अपना लाल ढूँढे कि मैं ही तो हूँ मेरे सिवाय दूसरा है ही नहीं, उसके विकार एक धक्के से ही नाश हो जायेंगे। हम भाग्यशाली हैं जो आप जैसे सच्चे प्रेमी जिन्होंने अपना तन, मन, धन भुलाकर सेवा की, अपने बंगुले छोड़कर सुख छोड़ कर तकलीफ लेकर हमें सुखी किया। आपको सोने की, चाहे हर बात की तकलीफ हुई, बच्चों ने भी इस बार कुर्बानी की। दूसरे गुरू रो रहे हैं कि हमें कोई सच्चा भक्त नहीं मिलता। हम कहते हैं कि हमने ऐसे कौन से कर्म किये हैं कि इतना प्यार, मुफ्त में इतनी सेवा मिल रही है। इस शरीर से क्या हुआ है। इस बार देहली वालों की कुर्बानी भूलने वाली नहीं है चाहे तुम घर वालों चाहे जो बाहर से आते थे, सबने इस बार पूरा फायदा लिया, सबको शरीर की सुख–बुध भूल गयी, पूरा सिमरन सबका हुआ। तुम सब भी अपना अनुभव लिखो

कि तुम लोगों को कौन सा फायदा हुआ।

तुम निराकार आत्मा हो तो बाकी ख्याल कौन सा करते हो? काहे का ख्याल करते हो? आत्मा में लीन होकर ख्यालों से खाली हो जाओ। काम काज सब शरीर से हो रहे हैं न कि तुमसे। एकान्त है एक की भी अन्त, जहाँ एक भी न रहे, मैं न रहूँ। गुरू की तुम्हारे ऊपर विशेष कृपा दिख रही है जो सारी दुनिया को छोड़कर तुम्हारे घर में आकर रहते हैं। उसका होना ही काफी है, छतों दीवारों में ही शुद्धता (पवित्रता) के ख्याल आयेंगे यदि ध्यान से सुनेंगे तो सब जड़–चेतन वस्तुयें भी तुम्हें आत्मा का, सच का गीत सुनायेंगी।

Don't want but be, Raman. जो हो वह खुद को समझो, कुछ भी माँगों नही पर हो जाओ। जो चाहते हो कि भगवान मिले तो वह तुम हो जाओ। **Let God worry and arrange.** भगवान तुम्हारी चिन्ता कर रहा है उसे ही करने दो। देहली वालों ने खूब रज कर खाया है अब सबको जुगाली करनी चाहिए तो मक्खन निकल आयेगा। मुम सब भूलने वाले ही नहीं हो। तुम लोगों की ही कथा चल रही है, भगवान के मुख पर चढ़े हुए हो। □

पत्र गीता भगवान का -32

दिव्य दृष्टि वाले काली घटाओं के होते हुए भी सूर्य को देख सकते हैं। माया से घिरे हुए भगवान को देख सकते हैं, जगत में जगदीश को देख सकते हैं। गुरू साफ आईना है चाहे टेढ़ा–मेढ़ा शरीर हो पर सूर्य दिखाने का कार्य करता है। गुरू को सिर अर्पण करो कि मैं नहीं हूँ कुछ भी नहीं जानता हूँ, अनजान हूँ , बेवकूफ हूँ तुम जैसे चाहो वैसे चलाओ। जैसे कारीगर के हाथ में लकड़ी आती है बिना घड़ी हुई तो कारीगर घड़ कर नाव बनाता है। बुद्ध भगवान ने बीमारी, बुढ़ापा और मौत एक बार देखा तो वैराग्य हो गया, तुमने लाखों बार ऐसे दृश्य देखे हैं पर तो भी वैराग्य नहीं लगा है, जगत के सुख अच्छे लग रहे हैं एक दो दिन व्यर्थ गँवा रहे हो जो मुक्ति का आनन्द नहीं ले रहे हो। मौत,गुरू और भगवान को याद करने का मतलब है गुरू के वचनों को याद करना। भगवान को याद करना है खुद भगवान हो जाना। अहम् ब्रहमंअस्मई तत् त्वम् असि। माया और मन से ऊपर हो जाओ तो परमात्मा का दर्शन हो। वैज्ञानिकों ने दुनिया की खोज की है पर अभी तक बूँद की भी खोज नहीं की है पर जिसने अपने को आत्मा समझा है उसे मानो सागर परमात्मा का अन्त पाया है। तमाशा तुझमें होता है, तमाशे में क्यूँ रोता है। किसी भी दुश्मन से बदला लेना हो और उसे झुकाना हो

तो उससे जाकर हद से अधिक प्यार करो तो वह तुम्हारे प्रेम की तलवार के नीचे अपनी गर्दन झुका कर हमेशा के लिए मर कर खत्म हो जायेगा।

कीर्ति करने के लिए तुम्हारे पास हज़ारों आते हैं उन्हें दुश्मन समझते हो या खुश होते हो? ज्ञानी यथार्थ ज्ञान रखने वाला भी नहीं है। वह सुन्दर अच्छी वेदों की वाणी नहीं उच्चारण करता है, शास्त्रों का ज्ञान मीठा, श्लोकों के साथ नहीं देगा पर जैसा मरीज़ सामने आयेगा उनके संकल्प और भावनायें ज्ञानी से बुलवाते हैं। गुरू मौन में है, हम भी सभी ख्याल छोड़ कर मौन में रहेंगे तभी उसे पहचानेंगे। सवाल जवाब से आत्मा निर्णय नहीं होगा, आखिर भी अपने को पहचानने से ही शान्ति आएगी। ख्याल सब छोड़कर हाल में खुश। बेखुटके बेफुर्ने हो जाओ, यदि शान्ति नहीं आती है तो अशान्त होने की इजाज़त किसने दी है? तुम्हारा धर्म है अशोक रहना, तुम धर्म से गिरते हो तभी अशान्त होते हो। अशान्ति का कारण ढूँढकर निकालो कि कहाँ से और क्यों अशान्ति आती है? बाकी शान्ति तो पहले से ही है। शान्त स्वरूप तुम पहले ही हो। जो निभागा (अभागा) अपने को दुखी और अशान्त समझता है तो कौन पैदा हुआ है जो उसे शान्त कर सके। खुद शान्त स्वरूप होकर कोई झूठ बोलता है कि मैं अशान्त हूँ और दुखी हूँ। न इच्छायें पूरी

करो न दबाओ इच्छाओं का न विरोध करो पर साक्षी भाव में खड़े हो जाओ तो अपने आप ही विकारों का ज़ोर (प्रभाव) टूट जायेगा। अपने को पहचानो और आत्मा का दर्शन कराओ मन को तो मन विकारों सहित रहेगा ही नहीं। मन है ही नहीं तुमने उसे हस्ती देकर भड़काया है बिगाड़ा है।

जो–जो तुमने दुनिया में सुना है वह सब भुलाओ क्योंकि दुनिया की सब खबरें झूठी हैं केवल परमात्मा ही सत्य है। प्रार्थना और शिकायत नहीं करो पर शुकर करो। सब मिलेट्री वालों की औरतों को ज्ञान सुनाओ, भगवान में विश्वास रखाओ। यह मौका अच्छा मिला है, सेवा करो, सब तरफ मुँह दो। भगवान ने तुम्हें ताकत दी है वह आकर तुम्हारे शरीर से सब करवायेगा। इम्तेहान भी वह देगा और पास भी वही होगा तुम बीच में हो ही नहीं। तुम देखो तो दुनिया से कितने ऊपर हो। अब दुनिया में ज्ञान की कदर पड़ेगी कि जहाँ दुनिया रो रही है वहीं तुम अशोक होकर खड़े हो। दुनिया से तुम अगल तरह के हो गये हो तुम सब पर हाथ भगवान का है। तुम्हारी छत और दीवारों में भी भगवान का वास है। तुम अकेले हो ही नहीं, बेपरवाह बादशाह होकर रहो। आज का दिन आनन्द में गुजारो। बीमारी आयी है, वह उतर जाएगी। इलाज करो इन्तज़ार नहीं, व्यवहार को इतना समेट लो (काम करो)

कि काम काम न लगे पर मनोरंजन लगे। खाओ–पिओ ताकत लो, भगवान खुद करने वाला है न कि तुम। प्रेम से काम करोगे तो लगेगा नहीं जैसे नमक सागर में गल जाता है ऐसे तुम परमात्मा में लीन हो जाओ जैसे तुम न हो पर है ही भगवान। करन करावन आपे आप, मानुष के कुछ नाहि हाथ। दुःखों में खुश हो या सुखों में? मान में खुश हो या अपमान में? माफी मिलने में खुश हो या सजा मिलने में? पास खातिरी **Partiality** हो या इंसाफ? डर दिल से निकालो निर्भय हो जाओ। शेर का बच्चा कभी शेर की गर्जना से डरता नहीं है ऐसे ही तुम परमात्मा की किसी भी मुसीबत से डरोगे नहीं क्योंकि तुम उसके बालक हो। बच्चे तो पिता के किये नाराज़ नहीं होंगे। हम अपने स्वभाव को ऐसा बनायें कि जो भी भगवान करे उसमें राज़ी रहें। शिकायत, नाराज़ भी नहीं करेंगे। भगवान साकार चाहे निराकार के खिलाफ नहीं चलो न बोलो, सब बात में उसकी रज़ा पर राज़ी रहो। फुरकने का स्वभाव एकदम निकाल दो। आत्माकार को कहीं भी झटका नहीं है। जहाँ हो वहाँ प्रेम की दुनिया बढ़ाओ। प्रेम के राज्य में रहो। ज्ञान–अज्ञान भुलाकर सबके लिए प्रेम धारण करो तो हल्के हो जाओगे। □

पत्र गीता भगवान का -33

प्रलय करती है अन्दर की दुनिया की जो दुनिया अन्दर घुस आयी है। हर एक अपनी प्रलय करे कि मैं हूँ ही नहीं ना ही कोई मेरा है। अन्दर से कचरा निकालो तो मैं तुम्हारे दिल में बैठा ही हूँ फिर अकेले कैसे होगे? मैं ऐसा करता हूँ या ऐसा नहीं करता हूँ दोनों ही अहंकार हैं। मैं ये खाता हूँ ,यह नहीं खाता हूँ पर निराहारी तो नहीं हुए न। देह में खड़ा हुआ करता है न कि दृष्टा। जगत को जानने के बदले अपने को जानो कि मैं क्या हूँ। जगत को जानने के लिए गये चन्द्रमा पर मगर वहाँ मिट्टी के सिवाय कुछ नहीं पाया। हुआ कुछ भी नहीं पर अपने को जानने से जगत को जानने की कोई ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। जगत है ही मिथ्या उसे क्या जानेंगे। दूसरा इस ज्ञान को समझने में कौन सी कठिनाईयाँ आई हैं? ये ज्ञान सरल है या कठिन यह लिखकर भेजना। कठिन है तो कैसे सरल है तो कैसे? ज्ञान लग गया है या अभी लगेगा बाकी अभी कौन सी कच्चाई है? किस बात में तुम मेरे से कम हो? ये लिखकर भेजना तो तुम्हारे अन्दर का पता चले। बाहर की दुनिया बिगड़ी हुई हो या सुधरी हुई उसमें तुम्हारा क्या? तुम अपने को सुधारो। हालात को नहीं बदलो पर अपने आप को बदलो। कुछ भी बाहर से छोड़ने पर भी छोड़ा नहीं जा सकेगा चाहे सन्यास लेकर एक

झोपड़ी में एक लंगोटी पहनकर बैठो। किसी भी बात से खफा नहीं हो जाओ न विक्षेपता में आओ। जिस बात से भागते हो वही बात सामने आयेगी। मीरा को साँप और ज़हर में भी भगवान दिखाई दिए। तुम बताओ कि तुम्हें बाकी कहाँ नहीं दिखने में आता है जो किसी भी मनुष्य से या किसी भी हालात से तंग (परेशान) होते हो। मुझे ज्ञान नहीं है मैंने आत्मसाक्षात्कार नहीं किया है यह अज्ञान है। भगवान मुझे छोड़ देगा यह शक हमेशा के लिए दिल से निकाल दो। यह संशय है कि क्या गुरू फलाने को विशेष प्यार करता है हमें कम। गुरू हमारा नहीं है फलाने का है। ये कुत्ते का मेंज़ला दिमाग में पड़ा हो तो ये भी लिखकर भेजना या उससे बहुत ऊपर हो? तुम्हारा ख्याल ही सृष्टि का कारण है जैसा ख्याल करोगे वैसा हो जाओगे। संकल्प–विकल्प सब तुम्हारे तुम्हें बाँधेंगे। बाकी गुरू तो संकल्प–विकल्प से खाली है। भरा हुआ गिलास देखने से वाह गुरू और खाली आधा गिलास देखने से हाय गुरू निकलता है। तुम्हारे ऊपर है क्या भी देखो। तुम किसी को नाराज़ नहीं करो यह तो ठीक है पर तुम किसी से नाराज़ न होओ यह ज्ञान है। नाराज़ न होने की कसम उठाओ। त्याग का मतलब नहीं है कुछ भी छोड़ कर जाना पर हर एक को बैठ कर पहचानो कि यह भगवान है तो मैं क्या छोडूँ और क्या

पकड़ूँ? हम इंसाफ की दुनिया में रहे पड़े हैं जहाँ कोई भी जुल्म नहीं हो सकता है ना ही कुछ चाहिए क्योंकि सब कुछ अपने आप ही प्रारब्ध के अनुसार मिल रहा है।

तकलीफ को अपने पास आदमी भेजकर (न्योत कर) बुलाते हो तभी आती है नहीं तो खाली नहीं बैठी है जो तुम्हारे पास आती है। खोटे ख्याल और खोटे कर्मों के कारण तकलीफ आती है। फिर यदि प्रभु का सिमरन नहीं किया है तो वह लगेगी नहीं तो तरावत समझ में आएगी।

यह तुम्हारा दोष है जो तुम मरते हो? अपने को अमर नहीं समझते हो तभी मरते हो। जिस समय तुम्हें कुछ भी अप्राप्त नहीं है उसी समय ही आनन्द की मौज लूटते हो। कुछ भी जाय तो शुकराना मानो कि इतना समय तुमने उसका उपयोग करके मौज ली।□

पत्र गीता भगवान का -34

गुरू से ख्याल मिलाकर एक कर दो तो कभी भी ऐसा नहीं कहोगे कि गुरू ने ऐसा क्यों किया। जो तेरी इच्छा वह मेरे लिए अच्छा। आज्ञा पालन (मृजता) भी प्रेम में हो जाती है पर जो जबरदस्ती मानता है उसकी खुशी दब जायेगी। किसी न किसी समय गुरू को ही दोष देंगे कि गुरू ने यह बात क्यों करवाई। लाचार नहीं पर खुशी से मानो। तुलना करो कि ये सच्चा या वो सच्चा। इस ज्ञान की कदर कितनी करनी है? फीस क्या है? शीश दो तो ईश पाओ। जिसको गुरू की भलाईयों की कदर है वह कभी भी भूले भटके गुरू की गालियाँ और मार पर ऐतराज़ नहीं करेगा, कहेगा इसमें भी भलाई है। तेरे काँटों से भी प्यार तेरे फूलों से भी प्यार। ''हैण्डिल होकर चलने में ही फायदा है पर खुशी से न कि जबरदस्ती।''

भगवान समय पर परीक्षा भेजकर सबकी **Checking** करता है निराकार कहता है कि झूठा कौन है और सच्चा कौन है। संभलना तुम्हारी परीक्षा हो जायेगी फिर न कहना कि मुझे पहले ही बताते तो मैं परीक्षा में पास हो जाता। जिस वक्त ऊपर चढ़ते हैं तो अहम् से अधिक संभलते हैं। इस ज्ञान में जैसे-जैसे ऊँचे होते जाओ वैसे-वैसे अहंकार से बचते जाओ, भूल से भी ''मैं'' नहीं निकले। मैं और तू मे ही रोला है। काफूर हो जाओ, राख

भी न बचे। नम्रता सेवा, श्रद्धा विश्वास मरते दम तक हो बढ़ती हुई कला की तरह रहें, नित–नित होत सवाया। शौक होना चाहिए कि करूँगा या मरूँगा। यही ख्याल पक्का रखो। कमज़ोरी सभी पापों, अनर्थों का मूल कारण है। वेदान्त पाप को नहीं मानता है पर भूल और कमज़ोरी को मानता है। कमज़ोरी और भूल सब मन कराता है। गिराकर उल्टा कर देता है पर हम हैं शेर की औलाद कमज़ोरी हमारे आगे खड़ी न हो सके। विश्वास से बहादुरी आती है। 20 आने विश्वास हो न कि 16 आने, विश्वास अपने में और गुरू में।

जो तकलीफों में और मुश्किलों में भी भगवान से विश्वास नहीं हटाते वे धन्य हैं, उन्होंने जीता। डाक्टर के भी हाथ में नहीं है कि किसी को छुड़ा सके जब तक भगवान का हुक्म नहीं हुआ है। जब प्रारब्ध का हिसाब–किताब खत्म होता है तभी उसकी बीमारी भी उतरेगी। अपने ख्यालों को ठीक करने से बीमारी का असर नहीं होगा। तन की बीमारी से मन का 'है मैं' बड़ा रोग है। मन जीते जग जीत। गुरू को ही पता है कि अज्ञान की जड़ क्या है, दूसरा कोई भी समझ नहीं सकेगा। कोई कहेगा गुरू का दोष है, कोई कहेगा शिष्य का, कोई कहेगा तकदीर का, कोई कहेगा कर्मों का, कोई कहेगा पिछले जन्म का पर दुःख का कारण है ही अपना अज्ञान देहअध्यास। हौ मैं धीरग रोग है। यह दुश्मन किसी

ने नहीं जाना है जो तुम्हारे साथ रात दिन बैठा है जो नाना प्रकार के छल, कपट करके बैठा डंक लगा रहा है। काश! कोई भी इस जानी दुश्मन के वश में न आ जाओ। गुरू बार–बार बैठा सुजाग करता है कि इस मन की इतनी चलती है कि गुरू भी हार जाता है पर जब तुम खुद मन के मालिक होकर मन को मोड़ कर गुरू की शरण में जाओगे तभी यह मन हमेशा के लिए जान छोड़ कर भाग जायेगा। हमारी मर्ज़ी पर छोड़ा गया है कि गुरू को इज़्ज़त दें या मन को। हर एक को इस मन ने गुमराह कर दिया है। राजा से लेकर प्रजा तक सब इस मन के वश में हैं। शैतान का राज्य सारी दुनिया के ऊपर है पर करोड़ों में कोई ज्ञानी निकलता है मन जिसके वश में आ जाता है, दूसरों का भी मन वश में कर देता है। मन कहता है कि दुनिया है मेरे पीछे, मैं हूँ तेरे पीछे। निष्काम गुरू का असर इस मन पर पड़ता है वह केवल गुरू के आगे शरमा जाता है क्योंकि उसकी मेहरबानी से मन मारा हुआ है, वहाँ मन की दाल नहीं गलेगी। मन का मौत है उसके आगे जिसने अपने मन का मौत किया है। या भक्त सामने हो या भगवान नहीं तो मन अपने आप में नही टिकता, अकेला हो जाता है जब तक कि अपने में आनन्द ढूँढ़े। निष्काम सेवा से शरीर भूलता है।

शाह अब्दुल लतीफ ने कहा है कि तालिब का मुर्शिद (गुरू) से मेलाप तब लिखा गया था जब कायनात

वजूद में नहीं आयी थी। तब न ही ईश्वर ने जोड़ी थी कलम, न बनाई थी तकदीर, जब न मुल्क था न मनुष (लोग) जब न ही अभी तक एक बुत में आदम आया था फिर बरसों की जुदाई के बाद युगों के फिराक के बाद (वियोग) आकर एक दूसरे से मिलते हैं और मिलकर एक होते हैं सोई तुम्हारे लिए प्रेम और मेलाप लिखा मुकर्रर हुआ है। आदि से यह अनोखा अजीब प्रेम जो भक्त को भगवान से मिलाकर एक कर देता है। सच्चा गुरू अपने भक्त को अमन और अशरीर (देह रहित) करके क्षण में तीनों तापों से छुड़ा देता है क्योंकि फिर वह संशय में पड़े हुए तालिब (शिष्य) के सभी ख्याल छीन कर अजीब ज्ञान से उसे अजीब पद बक्शता है। विश्वासी को ऐसा नूर का प्याला पिलाता है जो अचानक अपने आप अजगैबी खुमारी (नशा) चढ़ कर उसे उड़ा कर बेहद के बाज़ार का सैर कराता है फिर तालिब अनन्त अचरज से (आश्चर्य से) बैठकर अपना ही दीदार अपने अन्दर करता है। विश्वास ही तालिब को अगम देश में पहुँचाने वाला उड़नखटोला है। पूरण सेवक ही पूरण गुरू के पद पर पहुँच सकता है। कामिल गुरू का मेलाप घर बैठे हो जाता है न कि भटकने से क्योंकि यह तो आदि से लिखा हुआ है बाकी गुरू को रिझाना सिर देना यह तालिब का काम है। विश्वास और प्रेम में सब हो जाता है पता भी नहीं चलता है कि कैसे सर उतर गया, यही करामात है। □

पत्र गीता भगवान का -35

Happy Diwali to you. सच्चा ज्ञान का दिया दिल में जलाना है 24 घण्टे दिन में हर वक्त जलता रहे यह है सच्ची दिवाली, कभी भी दिया बुझे नहीं। **Mood off means light off.** सिलवट वाला कपड़ा **Press** के बिना अच्छा नहीं लगता है ऐसे ही सिर में सिलवटों वाला व्यक्ति अच्छा नहीं लगता है। □

पत्र गीता भगवान का -36

गुरू केवल जगाता है पर ऐसा नहीं कहता है कि ऐसा करो ऐसा नहीं करो। क्या भी जाकर करो पर आत्मा को नहीं भुलाओ। आत्मा को पाकर कोई पाप करके तो देखो तो कर सकोगे? गुरू जगाता है आँखें खुलती हैं तो खड्डे में कैस गिरेंगे? **Be carefull and you don't fall.** रास्ते में खड्डे पहले ही दिखाता है कि माया इस रूप में भुलाने आयेगी। कामनी कंचन कीर्ति से बचो ये तीनों बड़े खड्डे हैं जिनमें कितने ही सन्त साधू, ऋषि–मुनि गिर गये। इस राह पर कितने ही आये पर कोई कहीं कोई कहीं भटक गये। करोड़ों में से कोई ज्यों का त्यों परमात्मा से मिलकर एक होता है। हर एक ऐसा समझे कि वह करोड़ों में से एक मैं हूँ। किसी ने गुरू से कहा, साँई मुझ पर ऐसी आशीश (आर्शीवाद) करो कि मैं गृहस्थ में सुखी रहूँ , गुरू ने कहा ख्याल नहीं करो मैं आर्शीवाद देता हूँ कि सूअर और कुत्ते बनोगे। उन्हें गृहस्थ का सुख बड़ा अच्छा है सूअर को कमाने के लिए सूअरी को छोड़कर 8 घण्टे ऑफिस में नहीं जाना पड़ता है उसे विष्ठा वहीं घर बैठे ही मिल जाती है। गुरू से केवल एक ही प्रश्न पूछना है कि मैं कौन हूँ , मैं ईश्वर कैसे हूँ? दूसरा कोई टके पैसा वाला प्रश्न कोई पूछता है वह बड़ा बेवकूफ है उसे मुक्ति नहीं चाहिए इसलिए आलतू फालतू प्रश्न पूछता है। मेरी

पत्नी खराब है कैसे सुधारूँ, मेरा पति आने नहीं देता, मुझे फलानी इच्छा है, फलाने में मोह है वह कैसे निकले? ये सभी प्रश्न बेहूदे हैं। एक आत्मा के जवाब में सभी प्रश्नों के उत्तर आ जाते हैं सब **Problem Solve** हो जाते हैं। सर्व रोग का औखद नाम। गुण ही तो सत्संग से ग्रहण करना चाहिए, 'ईश्वर हूँ मैं कैसे' आकर पूछना चाहिए , उत्तर प्रश्न अर्जुन की तरह बाअदब (मर्यादा में रहकर इज्ज़त व अदब के साथ) करने चाहिए। विश्वास भी कृष्ण के लिए अर्जुन जैसा होना चाहिए। आत्मा के अर्थ में लबालब टिकना चाहिए। बीमारी के समय और मौत के वक्त तुम्हें धन, हीरे–जवाहरात, दोस्त यार, सम्बंधी, सुन्दर प्रिय लगने वाली स्त्री, पुत्र दुनिया के सभी मजे किस काम आते हैं? दुःख के समय गुरू का ज्ञान ही काम आता है वह भी यदि तंदरूस्ती के समय समझ लिया होगा तो दुःख के वक्त काम आयेगा नहीं तो पछताना पड़ेगा। गहरी नींद में यह प्रश्न नहीं उठता कि मैं कैसे मुक्त होऊँगा। मुझे भगवान कैसे मिलेगा? स्त्री बेटा मरा भी पड़ा हो तो गहरी नींद में तुम्हें क्या असर होगा, कोई भी नहीं। ज्ञानी जागृत में भी गहरी नींद जैसा अनुभव करता है। जगत है ही मिथ्या तो किसी भी दृश्य का असर क्यों होता है? यह दृश्य तो बाहर है फिर अन्दर क्यों घुस आता है क्योंकि दृश्य को सत्य समझते हो पर ज्ञानी दृश्य

को अपना आप समझता हैं कसाई बकरा और तलवार एक ही आत्मा समझता है। त्रिपुटी में त्रिपुटी रहित है। कौन मरा है और किसको मारा? दोनों ही आत्मा है तो दुःख काहे का? कुछ होता ही नहीं है सब मेरा ही खेल है, संकल्पमय सृष्टि है। संकल्प करो आत्मा का। आप लोग वहाँ से हमें खींच रहे हो हम आपको खींच रहे हैं देखें कौन जीतता है। □

आपकी गीता

पत्र गीता भगवान का -37

सच्ची दिवाली मनाओ जिसमें मन रावण को मारो। दिवाली उसकी सफल है जो अपने को राम समझकर अपने दुश्मन मन को अन्दर ही अन्दर मार कर खत्म करता है बाकी तो सारी दुनिया दिवाली मनाती है अपने को बैठ कर खुश करती है। अन्दर में विकारों रूपी बारूद जल रहा है, जल रहे हैं, सड़ रहे हैं (कुढ़ रहे हैं) पर बाहर से दिखावे मात्र बैठ कर खुशी कर रहे हैं। सच्ची खुशी किसी को भी नहीं है दुनिया में। सो सुखिया जिस नाम अधार। बाकी सारी दुनिया राजा से लेकर प्रजा तक सब दुःखी हैं। तुम यह सच्ची समझ सबको देते आओ। जिनको तुमने प्रेम किया है वे तुम्हारे शुकराने भूल नहीं सकेंगे। निष्काम प्यार का बीज कभी नाश नहीं होता है। □

को अपना आप समझता हैं कसाई बकरा और तलवार एक ही आत्मा समझता है। त्रिपुटी में त्रिपुटी रहित है। कौन मरा है और किसको मारा? दोनों ही आत्मा है तो दुःख काहे का? कुछ होता ही नहीं है सब मेरा ही खेल है, संकल्पमय सृष्टि है। संकल्प करो आत्मा का। आप लोग वहाँ से हमें खींच रहे हो हम आपको खींच रहे हैं देखें कौन जीतता है। □

आपकी गीता

पत्र गीता भगवान का -37

सच्ची दिवाली मनाओ जिसमें मन रावण को मारो। दिवाली उसकी सफल है जो अपने को राम समझकर अपने दुश्मन मन को अन्दर ही अन्दर मार कर खत्म करता है बाकी तो सारी दुनिया दिवाली मनाती है अपने को बैठ कर खुश करती है। अन्दर में विकारों रूपी बारूद जल रहा है, जल रहे हैं, सड़ रहे हैं (कुढ़ रहे हैं) पर बाहर से दिखावे मात्र बैठ कर खुशी कर रहे हैं। सच्ची खुशी किसी को भी नहीं है दुनिया में। सो सुखिया जिस नाम अधार। बाकी सारी दुनिया राजा से लेकर प्रजा तक सब दुःखी हैं। तुम यह सच्ची समझ सबको देते आओ। जिनको तुमने प्रेम किया है वे तुम्हारे शुकराने भूल नहीं सकेंगे। निष्काम प्यार का बीज कभी नाश नहीं होता है। □

पत्र गीता भगवान का -38

सत्संग अधिक से अधिक करो और नाम रूप की बात नहीं करो। बातों में तुम्हें रस आता है इसलिए उनके पास बैठते हो जो बातें करते हैं।

सत और असत का सोच छोड़कर तुम हुकुम में मन को मनाते रहो। न मायावी लोगों के पास बैठो, न बोलो, न निहारो केवल मौन रखो। बोलने का भी रस है इसलिए नहीं बोलोगे तो उलझन होगी। रूप भी देखते हो तो बोलते हो ये पसन्द है ये नहीं पसन्द है। तन्दरूस्ती है तो रसों में मन जाता है। बीमारी आयेगी तो अभ्यास शुरू होगा। अकेले बैठे हो कोई भी **Company** नहीं चाहिए। तुम्हारी चंचल बुद्धि है अकेले बैठकर नीरस हो जाते हैं। जब बेरस हो जायेंगे तभी आत्मा का सच्चा रस आयेगा आत्मा का अनुभव होगा ही अकेले में। अपने अन्दर की वाणी हो, अपने भीतर का अनुभव हो तो वह वाणी, वह अनुभव सबको असर करेगा नहीं तो कोई भी नहीं सुनेगा।

दूसरे से रीस नहीं करो पर अपने पर रीस करो कि मैं क्या नहीं हूँ। मैं भगवान हूँ तो भगवान होकर खड़े हो जाओ। शराब के मटके के आगे कोई बैठेगा तो नशा नहीं चढ़ेगा पर शराब पीकर नशे में आयेंगे। अपने में निश्चय करो तो गुरू खुद ब खुद तुम्हें नज़दीक करेगा। पर गुरू में इच्छा रखेंगे कि गुरू मेरे नज़दीक हो मुझे प्यार

करे तो गुरू कभी नहीं करेगा। पर एक–एक वचन पर मरेंगे जीवन में बदलाव लायेंगे तो गुरू की नज़र में आ जायेंगे। गुरू अपने आप मिल जाता है। न तुम कर्ता न गुरू को कर्ता करो। गुरू के प्यार में शक नहीं करना चाहिए कि इसका प्यार मेरे से कम है, दूसरों से अधिक है। प्यार है आत्मा, का सर्व से है। गुरू है भगवान और वह सबमें है और वह सबमें भगवान ही देखता है तो कम या अधिक प्यार क्यों होगा और क्यों करेगा।

गुरू भी यदि सबमें अपना आप न देखे तो फिर दूसरे भला कैसे देखेंगे। गुरू के प्रेम की कदर करो नहीं तो इस प्यार से भी हाथ धो बैठोगे। कल गुरू ही न हो तो प्यार कौन देगा? हर एक अपने का जाँचे। अपनी नहीं चलाना न जाने क्या बनी है।

आधे भरे गिलास पर नज़र रखो। कभी भी कमज़ोरी की बातें मुँह से नहीं निकालो जहाँ एक भी फायदा पड़ा है वहाँ आगे चलकर सब ठीक हो जाएगा। इन्तज़ार नहीं करना है कि मुक्ति कब मिलेगी मुक्त तो पहले से ही हूँ। जज ने कैदी को जब बोला कि तू मुक्त है आज़ादहै तो उसी समय से नाच, टाप शुरू कर दिया कैदी ने, कहा मैं मुक्त हूँ आज़ाद हूँ भले हथकड़ियाँ अभी खुली भी नहीं थीं। ऐसे गुरू वाक्य सत्यम् करके उठाओ कि तू मुक्त है। तू सत है भले ऐतबार आये या न आये पर ज़ुबान से भी

कहो कि मैं मुक्त हूँ तो मन को पता चले कि यह सत को जान चुकी हैं, यह अब मेरे हाथ नहीं आयेगी यह गुरू की सुनेगी।

मन भले बैठकर कहे तुम्हें कि तुम आत्मा में टिकी नहीं हो, दूसरे सब पहुँच गये हैं पर मैं अभी नहीं पहुँची हूँ मैं कम हूँ, दूसरे ऊपर है। दूसरे की ओर निहारना अज्ञान है। न कोई चढ़ा हुआ है न गिरा हुआ है। जो मैं आत्मा हूँ वहीं दूसरा भी है। हर वक्त चढ़े हुए विचार करो। आत्मा बिन दूसरी बात को दिल से नाकार करो। गुरू से ज्ञान का नाता रखो। गुरू है वाणी है गुरू विच वाणी अमृत सारे। अपने को सब कुछ समझो कि मैं क्या नहीं हूँ। अपने ऊपर आशिक हो जाओ। तुम्हारे सिवाय दूसरा भगवान है ही नहीं। दूसरे को भगवान समझना माना अपनी बत्ती बुझाना। अपनी जोत जगाओ। अपने में अपने को मस्त करो अपने जैसा किसी को भी नहीं समझो।

जिसे अपना ख्याल नहीं गिराता है उसे दुनिया में कोई भी नहीं गिरा सकता है। अपने सिवाय कोई भी अपने को चढ़ा नहीं सकता है। अपने सिवाय कोई भी अपने को गिरा नहीं सकता है।

अभी ही उत्तरायण का चढ़ा हुआ ख्याल करो तो चढ़ जाओगे अभी ही शरीर का ख्याल करो तो उल्टे होकर गिर जाओगे।

एक ख्याल यदि उल्टा किया तो पीछे से सौ ख्याल उल्टे आयेंगे। मन की एक बात भी यदि सुनी तुमने तो हज़ार बातें और लेकर आयेगा आकर सारे बदन से पसीना निकालकर टाँगे हिलाकर दिल में धक–धक करके जायेगा। अपना दुश्मन अन्दर बैठा है तुम बाहर ढूँढ़ते हो। जब सूर्य भगवान का दर्शन किया तो बादल रहेगा ही नहीं। शब्द मरे ता फल पावे तो मरण जीअण की सोझी होवे फिरा तो व मरना न जीना है आत्मा अमर–अजर है।

करो कुछ या न करो पर भगवान के साथ राजी रहो, मिले रहो यानि रज़ा में राज़ी। कसम उठाओ रज़ा में राज़ी रहने की कि जो तुध भावे साई भलीकार। गुरू में जिसे शक है कि 'मुझे मुक्त करोगे?' तो गुरू नहीं करेगा पर एक राई के दाने जितना जिसे विश्वास है गुरू में तो गुरू उसके लिए सब कुछ करेगा, कर सकेगा। उसे अपने में भी विश्वास आ जायेगा कि जो गुरू है सो मैं हूँ। अर्जुन ने भगवान को बोला कि हे भगवान तुम्हारे सिवाय मुझे कोई नहीं सूझता जो मेरे शरीर की शिथिलता को दूर कर सके। ऐसा विश्वास तुम्हारा होना चाहिए गुरू के प्रति।

क्राइस्ट ने मुर्दों को जिन्दा किया। जो अज्ञान में मरे पड़े थे वे अमर आत्मा हो गये आत्मा के ज्ञान से अमरता आती है। □

पत्र गीता भगवान का -39

समाधि का मतलब है जहाँ तुम न रहो। जब–जब अपने को देखते हो तो वह नमाज़ नहीं है। अपना आप गँवाओ। आत्मा को प्रगट करो गुम होयके–देख नज़ारा। अपने को आत्मा में इतना लीन कर दो जो शरीर भूल जाये। शरीर गुरू को मुफ्त में बेच दो। सतगुरू सिख की आत्मा, सिख सतगुरू की देह। दुनिया के गुरू समाधि सिखाते हैं पर किसी की भी समाधि लगती नहीं है पर ज्ञान जिसको है कि मैं आत्मा हूँ यह शरीर नहीं हूँ **Non Possession** हूँ। मैं जहाँ–तहाँ हूँ। उसका ख्याल कहीं भी नहीं जाता है वह समझो समाधि में आ जाता है। **Thought less** हो जाता है कि ख्याल करूँ तो किसका करूँ? योग क्षेम सब गुरू उठाकर बैठा है। मैं काहे की फिक्र चिन्ता करूँ। बीमारी में बड़ा ही फायदा पड़ता है। जिसको हर वक्त भगवान याद रहता है। डा० में, नर्स में भंगी में, सम्बंधियों में सब में भगवान ही देखने में आता है मानो लाखों हाथों से मदद कर रहा है। मन निर्मल हो जाता है। सबके शुक्राने मानता है मन साफ पवित्र हो जाता है वैराग्य विरती पक्की हो जाती है।

सब काम काज विषय विकारों से विरती निकलकर एक भगवान में जुड़ जाती है। तुम करो भला हम भलो न जानूं। सब ख्याल छोड़कर हर हाल में खुश रहो। बेफुर्ने बखेटके हो जाओ। शान्त करके मौन में रहो। □

तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -40

गुरू सच्चा तभी हुआ जब हम कुछ बन जायें, हमें भगवान बना दे बाकी हम मरने तक शिष्य रह जायें और गुरू, गुरू होकर अटल टोप पहन कर सर पर बैठा रहे वह गुरू नहीं है। लेक्चर करने वाले, शिष्यों की भीड़ बढ़ाने वाले, कान में फूँक देने वाले, घुरू (माँगने वाले) बहुत हैं जिनसे किसी का उद्धार होना नहीं है।

Don't run rats race. चूहे की तरह सारी दुनिया जल्दी–जल्दी आना जाना करती है। शान्त होकर (विश्राम पाकर) कहीं भी मौज नहीं लेते हैं। साहूकार कहीं भी आराम की साँस नहीं लेते हैं, बैल की तरह बोझा ढ़ोते रहते हैं। आत्मज्ञान के सिवाय कभी भी मन स्थिर नहीं होगा।

ज्ञान सुनकर शान्त होकर नहीं बैठो, निष्काम जीवन गुज़ारो, सुस्ती और आलस्य करके घर में बैठे रहेंगे तो सकामी कर्म होते रहेंगे। भगवान का बोझ हो जायेगा दिमाग़ में। कर्म करने के सिवाय पता भी नहीं चलेगा कि तुम सकाम हो या निष्काम। निष्काम कर्म में मन वश होगा। मुक्ति के लिए यही रास्ता है। ज्ञान से मुक्ति मिलेगी। निष्काम कर्म ही साधन है। त्याग भावना से दुनिया में चलो कि यह सब जाने वाला है। किसी के भी मोह में नही अटको जो छूटते समय थोड़ा भी दुख हो। मेरी यदि एक सुई भी है तो ये सब मैं हूँ ऐसा नहीं कह

सकेंगे। यह सब ब्रहम है तो मेरा क्या है जिस पर हाथ रखूँ कि ये मेरा है।

दूसरा देखने से ही अशान्ति होगी। द्वेत में ही रोला है पर वहाँ भी मैं हूँ तो एकदम शान्ति आ जायेगी कि किसके विकार देखूँ या किससे राग द्वेष करूँ।

यह मेरा भगवान है ये अज्ञान है, तू मेरा भगवान है यह भी द्वेत है पर मैं ही तो हूँ, तू भी मैं हूँ यही सत्यों का सत्य है।

मुझे किसी का संग चाहिए यह अज्ञान है पर मेरा संग सारी दुनिया को चाहिए, मैं जहाँ भी हूँ वहाँ देने वाला हूँ न कि लेने वाला। खुद अपने सच्चे गुरू में भी इच्छा न रहे कि मैं सुनूँ। **I enjoy my self not party.** मैंने सब सुन लिया है। आत्मा सुनने के बाद कुछ भी सुनने के लिए नहीं रहा है। आत्मा सुनकर फिर दूसरों को निश्चय कराओ उसका। काम पर लग जाओ 24 घण्टे ही।

खुद से (आत्मा) जो **Fit** नहीं है वह दुनिया में किसी से भी **Fit** नहीं है। जो अपनी आत्मा में तृप्त है अपने में मस्त है, अपने में गुम है, वह सबसे **Adjust** हो गया, सारी सृष्टि में समा गया कि ये सब मैं ही तो हूँ।

एक आना बाहर से सुख लेंगे तो 15 आना दुख देखेंगे। एक सुख लेंगे तो पूरी उम्र लग जायेगी भुलाने में। जितनी बाहर मुख विरती होगी उतनी अन्दर की शान्ति देर से मिलेगी।

भगवान से पाप की माफी नहीं लो, न ही मिलेगी पर पाप की सजा खुशी से लो। भगवान इन्साफ करता है यदि सज़ा देता है तो। भगवान कहता है यदि मुझे प्यार करते हो तो मेरे कहने पर चलो। पाप माफ होगे तो अधिक पापी हो जाओगे।

माँगने से भरना भला है तो तुम दान देकर किसी किसी को फकीर क्यों बनाते हो? न तुम माँगो न किसी को माँगने दो।

ज्ञान में बड़ा छोटा नहीं है तो भी अहंकार गँवाने के लिए हर एक अपने का झुकाता है कि मैं कुछ नहीं हूँ तुम सब कुछ हो।

गुरू शरीर होकर नहीं बोलता है पर आत्मा में टिककर बोलता है। वह नाम रूप में है ही नहीं। चाहे वह नाम रूप में किसी को गालियाँ भी देता है तो भी एक मिनट के बाद भुला देता है पर तुम देहधारी समझोगे कि मुझे ऐसा बोला गुरू ने। शब्द सब भुलाओ, फिर आकाश की तरह खाली हो जाओ कि मैं आत्मा हूँ। वाणी दृष्टि सब थोथी है। तार ह्रदय की जोड़ो। वाणी न कर सकेगी मेरा कभी भी वर्णन। दृष्टि भी बाहर की सच नहीं दिखाएगी। अन्दर निहारो कि मैं क्या हूँ। अपने को पहचानो तो गुरू को भी पहचाना। सो सिमरे जिस आप सिमराहे। □

पत्र गीता भगवान का -41

अर्जुन के रथ को अश्वत्थामा ने तीर लगाया (अग्निशस्त्र), रथ जल गया तो भी श्रीकृष्ण रथ पर बैठा था इसलिए रथ का जलना दिखाई नहीं पड़ा। अर्जुन ने समझा कि ये मेरा बल है जिसके कारण रथ जला ही नही है। जब रथ खड़ा हुआ (रूका) तो कृष्ण ने अर्जुन को कहा कि पहले तुम उतरो। अर्जुन ने कहा कि पहले तुम उतरते हो आज मुझे क्यों कह रहे हो उतरने के लिए। कृष्ण ने कहा इसमें कोई राज़ है। अर्जुन उतरा फिर कृष्ण उतरा तो रथ जल गया। अर्जुन का अहंकार चूर–चूर हो गया । मतलब तब तक इस शरीर और मन रूपी रथ के ऊपर गुरू का लगाम है तब तक हम हर तरह के खतरे से बचे हुए हैं। गुरू को मन में से थोड़ा सा भी निकाला तो हम जल कर खाक हो जायेंगे। हमारी जीवन गुरू के प्रेम के आधार पर है। विश्वासी ही कायम है। विश्वास गया तो जीवन बर्बाद है। चाहे सब सुख वार दूँ तो भी प्रेम की एक रत्ती का मुकाबला नहीं है। **Light** अपने हाथ में है तो भी हाथ पैर बैठे मार रहे हैं। आत्मा रूपी जोत तुम्हारे साथ है तो भी मन रूपी अंधेरे में गोते खा रहे हो। बिना पानी के गोते खा रहे हैं। बिना आग जले संसार। साधु वासवानी और कई अन्य सन्तों की इच्छा है कि मैं फिर–फिर आऊँ, आकर भारत की सेवा करूँ सो वे कर्ता

हैं समझते हैं कि हम करने वाले हैं सेवा। हमारे सिवाय दूसरा कोई भी ऐसी सेवा नहीं कर सकेगा। पर ब्रहमज्ञानी मुक्त है। वह कोई भी शुभ इच्छा भी नहीं रखता है वह आने जाने से ऊपर है क्योंकि देह नहीं है वह सभी रूपों में अपने को ही देख रहा है। वह एक शरीर से आना नहीं चाहेगा। भगवान किसी भी शरीर से आकर काम ले पर मैं कर्ता नहीं हूँ। कोई पूछता है कि है ही गुरू की कृपा, अपनी कृपा है ही नहीं। हम पर केवल गुरू की कृपा हुई है हमने तो अपने ऊपर कृपा की ही नहीं है **Some have geatness thrust upon them.** तुम किस किस्म (प्रकार) के हो। एक तो पैदा होते ही मुक्त हैं दूसरे यहाँ पुरूषार्थ से हासिल करते हैं तीसरे पर खुद आकर ज्ञान थोपता है (मढ़ता है) ज़बरदस्ती बुला–बुला कर उनके पास जाकर उनके न चाहने पर इच्छा न होते हुए भी, गालियाँ देते हुए भी गुरू न छोड़ता नहीं है क्योंकि वे लहणे (लेनदार) हैं। लहणां जी करके देणां ये **Last** वाले योग भ्रष्ट हैं जिन पर गुरू की कृपा आकर करता है। होंगे तीनों ही मुक्त मुक्ति तीनों को मिलेगी। गुरू किस पर कृपा करे किस पर न करे। जो अपने ऊपर कृपा करता है उस पर गुरू की कृपा पहुँचती है। विश्वास वाले पर गुरू की कृपा हुई पड़ी है। नहीं तो 10 साल के बाद भी विश्वास यदि पूरा नहीं है तो वे भाग जायेंगे। गुरू उन्हें क्या कर सकेगा। अहंकार जहाँ

आ जाता है वहाँ गुरू भी हार जाता है। गुरू की कृपा भी अहंकारी के आगे काम नहीं करती है। भगवान पहले देवताओं की जीत कराकर दैत्यों की हार करवाता है बाद में फिर देवताओं की परीक्षा भी लेता है कि कहीं इन्हें जीत का अहंकार न हो गया हो देवताओं के आगे तिनका रखेगा कि दो टुकड़े करके दिखाओ तो देवता हारेंगे तभी अहंकार जायेगा कि मैं कुछ कर नहीं सकता हूँ तो फिर ज्ञान कहाँ दे सकता हूँ। डाक्टर कहते हैं कि क्रोध मत करो पर क्रोध तो आता है, दुनिया के गुरू भी कहते हैं कि विकार छोड़ो पर विकार छोड़ने के हैं ही नहीं जब तक तुम देह हो तो विकार नहीं जायेंगे। विकार सहित देह भुलाओ कि मैं निर्विकारी हूँ आत्मा। मुझ में विकार नहीं है तभी विकारों से पिण्ड छूटेगा। सन्यासी हठ योगी सब बीमार हैं क्योंकि इच्छायें दबाते हैं। यहाँ हमारे पास सन्यास नहीं है न ही जबरदस्ती कुछ भी रोकना है। पर आत्मा समझने से इन्द्रियाँ रूक जाती हैं। यहाँ भी जो ख्याल उमंग रोकेंगे और गुरू से ख्याल छिपायेंगे, गुरू को दूसरा और अपने को दूसरा समझकर छोटे–बड़े के भाव से दूर रहेंगे, मिलकर एक नहीं होंगे तो उन्हें बीमारियाँ होती हैं। आज भी यदि अपने ऊपर कृपा करें तो अभी ही बदल जायें। गुरू तो उदार चित्त होकर पहले ही दिन सच बताता है कि जो तू है सो मैं हूँ फिर कोई आज ही

निश्चय करता है कोई 100 बरस के बाद निश्चय करता है। यह उसका पुरूषार्थ है अपने को दासी पुत्र समझे या सूर्यपुत्र समझे। दासी पुत्र समझने से हिम्मत नहीं आयेगी शरीर समझने से कमज़ोरी खरीद करेंगे। पर अभी ही समझो कि मैं सूर्यपुत्र भगवान हूँ तो शक्ति आ जायेगी। छिपी हुई शक्ति प्रगट हो जायेगी। गुरू से ऐसे बोलो जैसे कि बेटे से बोलते हो पर अन्दर में भगवान से भी अधिक विश्वास हो। गुरू जो बड़ाई हमें देता है वह गुरू पर नहीं आज़माओ कि वह आत्मा में टिका हुआ है। कम अधिक प्यार है? किसी से थोड़ा प्यार करता है, एक को कहता है बैठो दूसरे को कहता है उठो यह भेद दृष्टि है गुरू में। सभी मूर्खों से वोट लेकर गुरू को आसानी से दोषी साबित कर सकते हो, पर इससे फायदा तुम्हें नहीं होगा। तुम समय–समय पर अपनी आज़माइश (परीक्षा) दो पर गुरू की लोगे तो बेड़ा ही गर्क हो जायेगा, डूब जायेगा। निर्दोष पर दोष लगाने से तुम दोषी हो जाओगे। गुरू दूसरा देखता ही नहीं है गुरू भक्त देखता ही नहीं है वह तो अपना आप देखता है पर तुम हो ही द्वेत में कि मैं भक्त तू भगवान। अद्वेत वाले को वही पहचानेगा जो खुद अद्वेत में टिका होगा। एक खुद आकर गुरू को पकड़ते हैं चिपकते हैं, दूसरे के पीछे गुरू पड़ता है पर देखने में ऐसा आयेगा कि जैसे गुरू में **Partality** है। कोई नहीं भी

चाहता है तो भी पीछे पड़ता है गुरू। हम चाहते हैं तो भी पीछे पड़ने वाले को त्याग करता है। त्याग क्या करना पड़ेगा, अपना कुछ भी नहीं है इसलिये त्याग कौन सा करेगा? अपनी एक सुई भी नहीं है फिर छोड़ें क्या पकड़े क्या? ज्ञान **Catch** कर सकते हैं पर सिखा नहीं सकते हैं। गाय में दूध है पर बछड़ा बने तो दूध दुहे पर गाय को ताकत नहीं है। नहीं फायदा कोई जीने से जो रोते हुओं को हँसाना न आये। तुम इतना दिल खुश रखो कि दूसरों को भी खुश कर सको। जिससे मिलो वह तुम्हारा हँसमुख चेहरा देखकर ही शीतल हो जाये। वह दुगुना भाग्यशाली है जिसकी माँ मरती है तिगुना भाग्यशाली है वो जिसकी स्त्री भाग जाये। बेटा मरे तो घोड़ा इनाम में दे दो। तुम्हारी कौन सी स्थिति है? पति बेटा मिले तो खुशी होती है। कहते हो बहुत अच्छा पर मरते समय नहीं कहते हो कि बहुत अच्छा तो तुम सब बेईमान हो। □

पत्र गीता भगवान का -42

योग माना रमज़ (युक्ति), कारीगरी। कर्म माना कर्म करने की युक्ति कर्म करे भी उसको लगे नहीं, खाते में न आये यह है निष्काम कर्म। मैं और मेरे लिए आसक्ति रखकर, मोहवश कर्म करने से मन में राग–द्वेष उत्पन्न होगा पर राजा जनक की तरह निरासक्त होकर कर्म करना है निष्काम कर्म। अपनों से अधिक दूसरों से जिगरी प्यार करो। पूरे दिन में यज्ञ करने के सिवाय नहीं खाओ, किसी के दिल को ढ़ाँढ़स देने के सिवाय नहीं सोओ।

सत्कर्म कैसा भी अच्छा हो पर दया और मोह के कारण राजा भरत की तरह हिरण की योनि लेनी पड़ेगी। देह से नाता होने के कारण दया और मोह होगा पर आत्मिक प्रेम हज़ारों से करो तो फिर कभी याद भी नहीं आयेगा मानों पूरे दिन में मैं अपने से ही मिला पड़ा हूँ दूसरे से मिला ही नहीं हूँ , दूसरा है ही नहीं। रजनीश कहता है तुम उधार का ज्ञान छोड़ कर अपने ख्याल (विचार) करो पर तुम्हारे दिल में है ही लीद (कचड़ा) सो तुम कौन से ख्याल करोगे? गुरू ही ठूँस–ठूँस कर आत्मा दिमाग में बिठाता है। तुम फिर–फिर देह के गटर में गिरोगे गुरू आकर उठाकर फिर आत्मा में टिकायेगा। अपने मन का ज्ञान हमेशा **Wrong** ही होता है। गुरू के विचार अपने विचार नहीं हुए हैं तो तुम मन से ही बनकर

बैठे हो। तुम्हारी भूलों से हम सीख रहे हैं कि ऐसा भी होता है। मन ऐसे भी गिराता है। तुम्हारी भूलों से हम सीख रहे हैं पर काश तुम सीखो और बचो। जो ग्राहक किसी एक स्थान पर नहीं मरा वह रूलता भटकता रहेगा कहीं भी स्थिर होकर ठिकाना नहीं पायेगा। खोट होगा तो जाकर कहीं न कहीं फँसेगा। लेक्चरार आप समान किसी को भी नहीं बना सकेगा। यदि बनाया हो तो एक को लेकर आओ। देखो कि तुम्हारे जैसा ज्ञान है? हमारे सिखाये हुए दूसरे गुरूओं के पास पहला नंबर है उन्हें वहाँ कीर्ति मिलती है इसलिए फँस जाते हैं। इसलिए हमारी एक गाली भी नहीं सह सकेंगे। जब गुरू इज़्ज़त देता है ऊपर बिठाता है तो तुम प्रशंसा के कीड़े खुश हो जाओगे पर जब गालियाँ देकर आजमाईश (परीक्षा) लेता है तब तुम झूठे भाग जाओगे। छोटे बच्चे को माँ मारती है बाहर निकाल देती है तो बच्चा दरवाजे पर खड़ा होकर रोकर दरवाजा खटखटायेगा कि माँ मुझे गोद में उठाये, गोद में उठाकर सीने से लगाये। ग़ुरू के आगे बालक जैसा हृदय रखो पर तुम्हें अहंकार चढ़ा हुआ है कि मैं अब सीख गया हूँ गुरू को फज़ीलत (तमीज) से बात करनी चाहिए। ये ज्ञान तुम्हें आया कहाँ से, यह भूल गया है। कितने ही आते हैं कि हमें इतना ज्ञान दो कि हम गृहस्थ में सम्बंधियों के साथ कुत्तों की तरह खुश रहें पर राजा जनक ने पहला प्रश्न पूछा गुरू से कि वैराग्य कैसे हो? कितना फर्क है दोनों में फिर भी कहते हो कि गुरू राजा जनक को अधिक प्यार क्यों करता है?

उल्लू पक्षियों से पूछा गया कि जीवन क्या है? बोले अंधेरा, बंदरों से पूछा गया कि जीवन क्या है? बोलो भटकना। ऊँट से पूछा गया जीवन क्या है? बोले बोझ। भँवरे से पूछा गया कि जीवन क्या है? बोले मधुर रस लेना उसमें खो जाना, अपने को गुम करना कुर्बानी। इतने प्रकार के लोग हैं, तुम किस किस्म (प्रकार) के हो?

रामराज्य में विश्वास ऐसा आ जाये कि डरना, पुकारना, शिकायत, जुल्म देखना बन्द हो जाय। हमारा ज्ञान 'धर्म' नहीं है पर **Art of living** है। जीने का हुनर, यही है ज्ञान हमारा। क्राइस्ट कहते हैं कि मैं आता हूँ मोह काम में बन कर बैठे हुओं को झगड़वाने न कि शान्ति फैलाने के लिए। सत्य झूठ को साबित करने के लिए। मन में शान्ति आयेगी न कि घर में। कुछ भी बनना बड़ा पाप हैंहमारा गृहस्थ सारा संसार है। घर सुख वसिया बाहर सुख पाया। घर अन्दर है। जहाँ भी है वहाँ खुश हैं। जेल में एक ने देखी कीचड़, दूसरे ने देखे तारे, चाँदनी रात दोनों की दृष्टि का फर्क है। मोह छोड़ो, इच्छा छोड़ो, यह ज्ञान नहीं है पर मोह और काम तुम्हारे में है ही नहीं तुम शुद्ध पवित्र आत्मा हो यह निश्चय पक्का करो। मुक्ति मुफ्त में मिल गयी है इसलिये कदर नहीं है। □

पत्र गीता भगवान का -43

इन्द्र जैसे देवता जिस स्वर्ग के लिए चाहना रखते हैं वह तुम्हारे कदमों में हैं तो भी तुम्हें नहीं चाहिए। आत्माकार यह शब्द नहीं बोलता है कि मैं यह नहीं कर सकता हूँ **I can not do** क्योंकि वह **totaly** निरइच्छा है एक मिनट में मन में कैसी भी बात मनवा सकता है। आपा (खुदी) और अहंकार ही हठ करवाता है। इच्छा को रोकना भी इच्छा ही है कि मुझे इच्छा न हो। यह हठ योग है पर ऐसा वैराग्य हो कि इच्छा उठे ही नहीं। मिथ्या समझने वाला चीटी से लेकर ब्रहम लोक तक कौन सी इच्छा करेगा। शान्ति की इच्छा भी रूकावट है। तुम पहले ही शान्त स्वरूप हो। इच्छा रूपी लकड़ियाँ निकाली तो पानी ठन्डे का ठन्डा है। वैराग्य से द्रिने दुख होया अण द्रिने राजी रहिया वाली हालत हो जाती है। तुम दूसरों को पता मास्टर (गुरू) में विश्वास रखने का दो ऐसा न हो कि बह गये खुद ही दूसरों को हाथ (सहारा) देते–देते। वृक्ष अपनी जड़ पाताल में मजबूत रखके फिर पत्तों और टहनियों से सबको छाया देता है। अपने को ऐसा मजबूत बनाओ कि सारी दुनिया हिलाने आये तो भी न हिलो। भूल क्यों हुई इसके लिए मत सोचो उल्टा खुशी करो कि अधिक सावधानी मिली। भगवान के बारे में कुछ भी पूछना ऐसे है जैसे कोई बच्चा पिता को बोले कि मुझे

दादा की शादी में क्यों नहीं ले चले। भगवान ने कैसे जगत उत्पन्न किया, भगवान क्या है और कब पैदा हुआ था ये प्रश्न पूछने और उसके अन्त में जाने से बेहतर है कि तुम अपना दुःख, अज्ञान निकालो जिसने तुम्हें दुःखी किया है। यह भ्रम निकालो जिसने तुम्हें शरीर, मोह, माया में फँसाया है। भगवान एक हो या दो, जीव हो या प्रकृति पर उसमें हमारा क्या वास्ता? हमारा काम है आनन्द से। द्वेत की समझ में आनन्द नहीं है। अद्वेत में ही सच्चा आनन्द है. इसलिए अद्वेत ज्ञान ब्रहमं का सुनकर उस पर निश्चय करने से ही सच्चा आनन्द मुक्ति, शान्ति मिलती है दूसरा कोई रास्ता नहीं है। आम खाओ पर टोकरों पर नहीं लड़ो। जिज्ञासू को पहले सतगुरू की शरण में जाकर फिर उसके आदर्श से ही अपने आप को आप समान बनाना है। दूसरे कितने ही शास्त्र पढ़े वे काम के नहीं है। केवल पूरण गुरू का ज्ञान सुने तो बेड़ा ही पार है। जब तक मन का इलाज नहीं करेंगे ख्याल एकाग्र नहीं करेंगे तब तक कोई भी बीमारी नहीं उतरेगी थोड़े समय के लिए दब जाएगी पर फिर दूसरे किसी रूप में बीमारी प्रगट होगी। बड़े में बड़ा रोग है हो मैं का जिसने सारी दुनिया को जलाया है। हमारा काम है कसम उठाना कि कोई भी मुझे नाराज़ नहीं कर सकता है न मैं किसी को मन वचन कर्म से दुःखी करता हूँ। स्वार्थ में आकर

दुःखी–सुखी होता रहेगा उससे मेरा कोई वास्ता नहीं है। मुझे किसी भी सम्बंधी के लिए दया मोह नहीं है कि ये दुःखी है। दुःखी अपने अज्ञान के कारण होते हैं। जब तक कोई गुरू नहीं मिला है तब तक ज़रूर हर एक दुःखी होगा। हर एक अपने उद्धार के लिए आया है न कि दूसरे के उद्धार और सुधारने की चिन्ता करे कि घर वाले सुधरे और बने। मैं एक बन गया तो सारी दुनिया बन गयी। गीता माना एक ही लाईन में गीता का अर्थ है कि वासुदेव सर्वः। जहाँ–तहाँ भगवान है। सब संशय भ्रम निकाल कर नेष्ठा में रहना यह है गीता का मतलब। अपनी देह भुलाना। दुनिया के बाबा, पण्डित देह को भुलाने में लग गये हैं। भ्रम में आकर तुम्हें भी भ्रम में डाला है। बाहर में पाठ–पूजा, तीर्थ, व्रत, सत्कर्म करते हैं अन्दर में लोभ और काम का कुत्ता बैठा है। मथुरा के चौबे सारी उम्र वेशनू होकर रहे हैं केवल दूध और मलाई और पेड़े खाते हैं पर उनके जैसा बदमाश कोई दुनिया में नहीं है। बाहर से ज्ञान–ध्यान, स्नान अन्तर व्यापे लोभ स्वान। हर वक्त यह ख्याल रखो कि यह ज्ञान जो मैं सुन रहा हूँ उससे मेरे विकार नाश होते जा रहे हैं। तुम आत्मा में पक्के होते जा रहे हो। फायदे ही फायदे हैं। आनन्द आता जा रहा है। चढ़ता जा रहा हूँ। कभी भी कमज़ोरी नाउम्मीदी निराशा मायूसी की बात मन में नहीं आने दो। पुरूषार्थी को पक्का

ही मुक्ति मिली पड़ी है। 'मैं कैसे ज्ञान उठा सकूँगा' बड़ा कठिन है। गृहस्थी में रहकर ज्ञान पक्का कैसे होगा? इससे अच्छा सन्यास लेकर सब कुछ छोड़कर अकेला जंगल में चला जाऊँ तभी ज्ञान होगा। झंझटों में ज्ञान नहीं टिक रहा। ये सब मन के छलबल हैं। इनसे सुजाग रहना। जगत मिथ्या है क्यों कि सुषोप्ति में प्रलय हो जाती है पर आत्मा स्वतः सिद्ध है इसलिए तीनों कालों में है। जो समझता है कि जहाँ मैं हूँ उसे कोई संकल्प–विकल्प राग द्वेष, नहीं सतायेगा। भूल करना पाप नहीं है गुनाह नहीं है। भूलें भले हों पर भूल मानना सूरमाई है। भूल को नोट करने से फिर भूल नहीं होगी। तुम साक्षी दृष्टा हो भूल को जाँचने वाले। नौकर की भूल अपने में नहीं मानो। तू अभुल आत्मा है। गुरू माना जो गिरने के खड्डे पहले ही बताये कि इस राह में ये खड्डे हैं, तुम्हें सुजाग करे, गिरने से बचाये। जो गिर गये हैं उन्हें दलदल, कीचड़ से निकालना गुरू का काम है बड़े से बड़ा। बहनों ऐसा कौन करता सतगुरू के बिना, भक्ति और योग के दे दिये हैं भण्डार भर कर। मुक्ति माना **Go to centre** वापस वहीं जाओ जहाँ थे। तुम असुल जो भगवान हो वह हो जाओ। दूसरा कुछ भी करना नहीं है। केवल वापस जाओ जहाँ से आये हो। उसी आत्मा में जाकर असली घर में टिक जाओ तुम वही हो। **I am that** शिवोहम्। □

पत्र गीता भगवान का -44

कितने ही दिनों से कह रही थी कि तुमसे पत्र के द्वारा मुलाकात करूँ, तुम्हारी भी खेंच होगी। पिछले जनम में थे इकरारी आज आकर इकरार पूरा किया। पिछले जनम में तुम्हारा भगवान से इकरार (वायदा) किया हुआ है कि दूसरे जनम में मिलना। आखिर भगवान को ही ख्याल हुआ कि इसे आना तो मेरे पास ही है सो खुद तुम्हें आदमी भेज कर बुलाया। आशिक वे कहलाते हैं जिन पर स्वयं (गुरू) आशिक हो। तो वही माशूक बदल कर आशिक हुआ। इश्क भेजा है एलची (एम्बेसेडर)। विवेकानन्द बहुत घूमा फिरा कि कोई मुझे भगवान दिखाये पर किसी ने भी नहीं दिखाया, आखिर रामकृष्ण के पास आया। रामकृष्ण ने दूर से ही कहा आखिर आ ही गये, तुम मेरे पास ही आने वाले थे फिर इतनी देर क्यों लगाई? विवेकानन्द ने कहा कि मैं तो सन्त साधू भेंट कर नास्तिक हो गया हूँ, समझता हूँ भगवान है ही नहीं। तुम बताओ कि तुमने भगवान देखा है? मुझे दिखा सकते हो? रामकृष्ण ने कहा हाँ मैंने देखा है तुम्हें भी दिखा सकूँगा। जैसे तुम्हें सूर्य दिखाई देता है ऐसे ही मुझे भगवान प्रत्यक्ष दिखाई देता है। विवेकानन्द ने कहा यह पहला ही मिला है जो छाती ठोंक कर कह रहा है कि मैं ही तुम्हे दिखाऊँगा। फिर रामकृष्ण के द्वारा सिर पर हाथ लगाने से विवेकानन्द ने

तीनों लोक देखे, विराट स्वरूप जो अर्जुन ने कृष्ण के मुख में देखा था। अब बताओ तुम्हें कौन मिला है। तुमने वह विराट स्वरूप देखा है या नहीं? तुम दादा को क्या समझते हो? पहले जब आये तो क्या समझा अब कहाँ तक पहुँची हो? इतना ऊँचा जब कोई होगा तभी ऊँचे को जानेगा नहीं तो अपने ही अहंकार में हम भगवान को भी रवाज़ी मनुष्य करके देखेंगे। आदम को खुदा मत कहो, आदम खुदा नहीं लेकिन खुदा को भी आदम मत कहो। कृष्ण कहता है कि हे अर्जुन ये मूढ़ लोग मुझ परमात्मा को नहीं जानते क्योंकि मैं साधारण स्वरूप में आया हूँ और योग माया से घिरा हुआ हूँ। हे अर्जुन वेद अभ्यास, हवन,दान–पुण्य, कठोर यतन करने से भी यह मेरा विश्वरूप दर्शन कोई नहीं कर सकता है जो तुमने किया है। यह दर्शन केवल अनन्य भक्ति, अभ्यास अभेद और अव्यभिचारी भक्ति योग से हो सकता है। आखिर भी एक जगह अपना पूरा आत्मसमर्पण करना है जैसे मेरी मैं बचे ही नहीं। मेरा एक भी ख्याल गुरू से जुदा न हो। साकार के सिवाय कोई भी निराकार में टिक नहीं सकता है। हर एक को अपना आप गँवाना है या किसी का बन जा या किसी को अपना बना ले। हे अर्जुन तुम मुझे झुके हो अब सारी दुनिया तुम्हें झुकेगी तुम्हें कहीं भी झुकने की जरूरत नहीं पड़ेगी। मेरा भक्त कभी भी नाश नहीं होता है। कृष्ण से

पहले अर्जुन कई वेद शास्त्र, सन्त साधू भेंट चुका था। बड़ा सत्पुरूष था पर अभी भी ज्यों का त्यों मोह काट कर प्रकृति से अपने आप को छुड़ा कर नहीं खड़ा था। इसी लिए ही भगवान को ऐसे भक्तों के सामने प्रगट होकर उन्हें प्रकृति से ऊपर उठा कर खड़ा करने के लिए आना पड़ता है कि तू इस त्रिगुणी माया से ऊपर हो जा, तू आत्मा है त्रिगुणातीत। देह के सम्बंध से तीनों कालों में न्यारे हो। आत्मा कहता तो हर एक है, जहाँ–तहाँ अब आत्मा के सत्संग भी हो रहे हैं कि तू आत्मा है तू ब्रहम है पर 'मैं ना' यह मन्त्र कोई नहीं बताता। देह को ही आत्मा समझ कर बैठे हैं। कितने भी होशियार वेदान्ती लोग मिलते हैं वे भी कहते हैं कि मैं आत्मा हूँ पर व्यवहार करते समय तो सभी ख्याल करेंगे न कि ये पति है, मेरा फर्ज़ है, वह दुःखी न हो, यह बेटा है इसे समझाना मेरा धर्म है, यह बेटी है इसका विवाह करवाना मेरा धर्म है मतलब तो कितना भी ज्ञान सुनते हुए बोलते हुए भी व्यवहारिक बुद्धि अन्दर पड़ी है कि दुनिया में तो चलना है न। लोग क्या कहेंगे। अब आत्मा में व्यवहार, धर्म, फर्ज़, वर्ण आश्रम हैं कहाँ? मैं यह देह ही नहीं हूँ तो देह के सम्बंधी और देह के फर्ज़ धर्म मेरे से लागू कैसे हुए? शरीर से ऊपर चढ़ जा। परिवार से, समाज से, जगत से ऊपर चढ़ जा। सब नाम रूप से जब दृष्टि उठायेंगे तभी

आत्मा पर नज़र पड़ेगी। या तो पूरन भगवान ही खींच कर बाँह से निकाले कि अब व्यवहार में कब तक फंसोगे? जीते जी जंजीर उतारो, मरने के बाद कौन जानता है। जो जहाँ खड़ा है वही अपने को राईट (सही) समझता है यही तो माया है। जब कि कोई अपने से ऊपर मिले और वहाँ भी फिर वह अहंकार गँवाकर काश सुने। जिसके पास सुनने के कान हैं वही मन्ज़िल पर पहुँच सकता है नहीं तो (वरना) सभी मार्ग को मन्ज़िल समझ बैठे हैं, अपने को बैठकर खुश कर रहे हैं पर परीक्षा के समय ही उनका पता चल जाता है। जैसे खाँसी और खुजली छिपने वाली नहीं है इसी प्रकार थोड़ी भी इच्छा, मोह या विकार छिपने वाले नहीं हैं। यहाँ चाहिए 16 आना सत्य। ज़हर की एक बूँद या चम्मच भर ज़हर मारने के लिए काफी है। थोड़ी इच्छा भी पुर्नजन्म का कारण बन जाती है। सूक्ष्म इच्छाओं की पूरन गुरू के सिवाय कोई भी पहचान नहीं दे सकता है। कृपा माना गिरो तो पाओ। मन को झुकाना न कि शरीर को। मन मनाभव। एक आदमी का धन चोरी हो गया, किसी सन्त के पास गया उसने कहा अफसोस इस बात का है कि अभी तक तुम क्यों नहीं चोरी हुए हो? धन्य हैं वे गोपियाँ जिनका सब कुछ चोरी हो गया था। सोई सब कुछ देने के सिवाय सब कुछ नहीं मिलता है। कितने बेचारे खुशी को ही आनन्द समझ कर बैठते हैं जब तक

कोई दुःख नहीं है तब तक समझते हैं कि आनन्द में हैं। मन घोड़ा खोलकर गधा बाँध कर जाता है। साकार भगवान के सामने जो सभी परीक्षायें देकर पूरी करता है उसे निराकार की तरफ से कोई परीक्षा नहीं आती है जिसमें वह उलझे। अज्ञानी की बाहरी मुस्कुराहट भी नहीं सुहाती है पर ज्ञानी की स्वाभाविक शक्ल हमेशा सुहाती है। ज्ञानी क्रोध में और चिन्तातुर, संकल्प विकल्प करता हुआ भी दिखाई दे, मैं मैं कहते हुए तो भी वह मुक्त है। पर अज्ञानी बाहर शरीर से शाँत बैठते हुए भी मन में संकल्प–विकल्प करता रहता है इसलिए वह अज्ञान में बँधा हुआ है। लोक वासना देह वासना, शास्त्रवासना। प्रेम है पासपोर्ट। पण्डित पिण गुरू प्रेम बिन लहे न आतम राह। ज्ञानी न सोचता है न चाहता है। जो रखता है दावा यहाँ वह मेहमान से होता है चोर जो जेल खाने में खुदी में रहता है वह ख्वार (बर्बाद) होगा। □

पत्र गीता भगवान का -45

शरीर को मन्दिर समझकर जो सम्भाल नहीं करता, गुरू के रहने का मकान नहीं समझता, बेपरवाह होकर रहता है वह जवानी में ही कमज़ोर हो जाता है फिर किसी भी सेवा में नहीं आ सकता। जिज्ञासू को तंदरूस्ती की ओर बहुत ध्यान देना है नहीं तो न ही व्यवहार में न परमार्थ में सफलता हासिल कर सकेगा। अभी भी कुछ बिगड़ा नहीं है। आज भी गुरू वाक्य सत्यम् करके नियम से पूरा–पूरा चलना, पूरा खाना, पूरा सोना, पूरा घूमना, हे मा सुख की खान। गुरू की एक–एक बात को **Value** देना चाहिए नहीं तो फिर पछताना पड़ता है। यह शरीर मिला है सारी सृष्टि की सेवा करने के लिए पर यदि अपनी ही सेवा नहीं कर सकेगा, खुद ही बीमार होकर दूसरे पर बोझ होंगे तो दूसरे किसी को भी हमारे से क्या मिल सकेगा? शरीर करोड़ों का मिला है जो भगवान पाने के लिए है। सर्व की भलाई में काम लाना है। ज्ञान के बाद इतनी एकाग्रता आ जाती है कि व्यवहार में भी हर एक बात पूरी रीत से करते हैं और ज्ञान में हर एक **Point** चारों तरफ से समझते हैं। ज्ञान में कितने ही यह **Point** ले जाते हैं कि मैं देह नहीं हूँ अब देह की परवाह क्यों करूँ? खाकर क्या करूँगा, दवा करके क्या करूँगा, तंदरूस्त रहकर क्या करूँगा? सफाई रखकर क्या करूँगा? जिसने यह उल्टा ज्ञान लिया वह आज ज्ञान से भी गया तो

अज्ञान से भी गया है। दुनिया में रहने लायक भी नहीं रहेगा। अभी भी गुरू का इशारा समझकर उसके अनुसार चलेंगे तो अवश्य ही कामयाबी हमारे चरण चूमेगी। हमारी रहणी से एक–एक करम में ज्ञान झलकना चाहिए। 24 घण्टे ही मुस्कुराना हर एक कर्म पूजा, भक्ति समझकर करना, हर एक को भगवान समझकर फिर उससे बात करें। एक–एक मिनट आनन्द, शान्ति में गुजरे, कदम–कदम पर शुकराने माने। कोई भी उल्टा चले तो वह पहले भगवान है जो हमारे मन की परीक्षा लेता है मार देने वाला भी भगवान तो प्यार देने वाला भी भगवान। है ही भगवान। हर एक जीवन की घड़ी जोश, होश, उमंग और प्यार में गुजरनी है। करेंगे या मरेंगे तो कर चुकेंगे पर मरेंगे नहीं। कोई भी बड़ी बात नहीं है। कुछ भी **Impossible** नहीं है।

तुम लोग **Transfer** की तैयारी में होंगे। कुछ भी हाल अहवाल नहीं देते हो। दादा का मतलब है कि रोज जो कुछ भी हो वह खबर यहाँ दो। फोन पर कुछ भी समझ में नहीं आया। तुम किस मूड में हो। पकाना, सिलना, घर में सीखती आओ। चुप करके नींद करने से किसी बात में कामयाब नहीं होगे। जवानी में कुछ सीख लो। सुस्त आदमी दुनिया में खुश नहीं रह सकेगा। देखो तुम्हारी बदली **Transfer** कहाँ होती है तो फिर वहाँ जल्दी आयेंगे। आपके घर के सिवाय और कहीं भी मजा नहीं आता। आपने कोई ऐसी तपस्या की है। □

और सुख आनन्द
आपकी गीता

पत्र गीता भगवान का -46

बीमारी और दुःखों को परमात्मा के पाने का उपाय समझकर वह मौका आने पर खुशी करो कि इतने समय के लिए तुम पवित्र रहोगे, किसी भी विकार–विषय में तुम्हारा मन नहीं जायेगा। नम्रता भाव के कारण तुम्हारी दिल पवित्र, साफ रहेगी। शरीर की बेवफाई (नश्वरता) का ख्याल करके वैराग्य पक्का होगा। सम्बंधी तुम्हारे लिए कुछ कर नहीं सकेंगे, नहीं डाक्टर के हाथ में कुछ है यह देखकर सबसे आला (ऊँचे) डाक्टर असली शक्ति में विश्वास आयेगा। शक्ति को अपने साथ समझने का भी अभ्यास होगा। सबसे मन निकालकर एक आत्मा में लगाने का मौका मिलेगा। यह महसूस करके मौन और शान्ति में रहेंगे। एकान्त में जब जाकर बैठेंगे तो अपने को जाँचने का अच्छा मौका मिलेगा। अपने को हम जाँच सकेंगे कि हमारा मन कहाँ है। मोह वालों के लिए वैराग्य और द्वेष वालों के लिए प्यार होगा। बीमारी में कोई भी दिल की बात गुरू को या सत्संगियों को बता दो तो खाली हो जायेंगे। **Fully Surrender** करो। मौन का सबक पक्का करो। एक तिनके को भी तोड़ नहीं सकते हैं फिर अहंकार काहे का? एक बीमारी हो, दूसरा पैसा न हो और कोई सेवा करने वाला भी न हो तो फिर मन कहाँ है? यह शरीर भगवान ने धारण किया है उसकी गति रखे या कुछ

भी करे। निराश न ही हो आशावादी बनो। अजर–अमर आत्मा हो। मौत की क्या मज़ाल है जो तुझ आत्मा को **Touch** कर सके। बीमारी में कौन याद है? गुरू को भी शरीर समझेंगे तो याद करेंगे। यदि गुरू भी है आत्मा और तुम भी आत्मा हो तो जुदाई किसमें है? वह तो मेरे मन मन्दिर में सदैव मेरे से मिला हुआ है। मैं खुद खुदा हूँ और सर्वत्र हूँ। जहाँ–तहाँ मैं ही तो हूँ। यह निश्चय करो। उत्तरायण में रहो, आकाश में,आत्मा में रहो। हर हाल में खुश रहना ही आत्मा का गुण है।□

पत्र गीता भगवान का -47

तुम तो सच्ची गोपियाँ बन गई हो। तुम्हारे सिवाय तो कृष्ण भी अकेला (उदास) हो गया है। तुम्हारे प्रेम भरे मृग जैसे नयन तो मुझसे भूलते नहीं हैं पर अब एक बात करो कि तुम सब भी अब कृष्ण बन जाओ। 'तुम क्या नहीं हो' जो मैं हूँ सो तू है। तुममें और मुझमें आदि से जरा भी जुदाई नहीं है। कृष्ण माना आकर्षण शक्ति खींचने की शक्ति वह तुम्हारे में पहले ही है, हर एक में है क्योंकि आत्मा हर एक है। वह आत्मिक शक्ति और प्रेम है। तुम भी कृष्ण की तरह निष्काम प्यार करो तो सारी दुनिया तुम्हारे पीछे मस्त होगी। तुम भी मेरी तरह बनो। मैं क्या करता हूँ? केवल प्रेम। कृष्ण का अवतार है केवल प्रेम सो प्रेम तो तुममें भी है। तुम सब प्रेम के सागर हो। इतना प्रेम है कि सारी दुनिया को प्रेम के चश्मे (झरने) में स्नान करा दो। तुम माँगने वाले नहीं बनो पर दातार देने वाले बनो। अभी और क्या चाहिए? मेरा खज़ाना तो सब तुम्हारे पास है बाकी मेरे पास क्या है जो तुम्हारे पास नहीं है अपने में मस्त हो जाओ। अपने आप से प्रेम करो। अपने में गुम करो। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे ही अन्दर आत्म रूप में विराजमान हूँ। आखिर अपने में ही टिकना है। भगवान मिले तो मैं खुद भगवान हो जाऊँ तभी भगवान का आना सफल हुआ। यदि तुम मेरी तरह नहीं हुए (बने) तो मेरा

आना ही व्यर्थ गया। गुरू मिलाये गोविन्द। वहाँ–जहाँ हो वहाँ भी मैं ही हूँ। सबको मेरा रूप समझकर प्रेम करो। जुदाई केवल दिल का वहम (भ्रम) है। हर एक को समय दो मौका दो तो सब होशियार बने। वक्त कम है कम अधिक है। अभ्यास और वैराग्य से ही ज्ञान प्राप्त होगा। □

पत्र गीता भगवान का -48

भगवान अपने भक्त को हर परीक्षा के लिए तैयार करके फिर परीक्षा लेता है। शरीर कैसे बेवफा और बेवका है यह दिखाता है कि इसमें आत्मा कैसे न्यारा और निराला है का निश्चय कराता है। भक्त सच्चा हर हाल हाल में शुकराना मानता है। शरीर का कोई अंग–भंग भी हो तो भी शुकराना मानेगा कि आँखें तो हैं, हाथ तो है मनुष्य का जन्म तो है उसकी बीमारी सबको सबक देगी। हर वक्त अपने का जाँचने का मौका मिलेगा कि मैं कहाँ हूँ भगवान में या अपने शरीर में। तन,मन,धन जिसने गुरू का समझा है उसके दिल में कोई हलचल नहीं आयेगी सब कुछ भगवान के हवाले कर दो। सब ड्रामा होता है खेल होता है सच है ही नहीं। सच तो एक ही है। वह हो तुम। शरीर को भोगाते भी तुम नही भोगते। ज्ञानी अपने को कर्ता भोक्ता नहीं समझता। □

तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -49

वेदान्त माना वेद की अन्त, वेद माना **Knowledge** (ज्ञान), **Knowledge** की अन्त। सो यह ज्ञान जिसने लिया (सुना) उसने सब जान लिया। इस ज्ञान के बाद कुछ भी जानने की ज़रूरत नहीं है। जब तक जियो तब तक सीखो ऐसा नहीं पर सीख कर फिर जियो कि फिर सीखने की ज़रूरत न पड़े, केवल प्रेम ही रह जाय। ज्ञान–अज्ञान का अहंकार छोड़कर केवल सबसे प्रेम रह जाय। मैं कुछ नहीं जानता हूँ पर सबके लिए आत्मिक अपने आप समझ कर प्रेम है। अपनी जीवन से अधिक भगवान से प्रेम करो। अपने आप से अधिक दूसरे सब से प्यार हो। यह शरीर तो जाये तो भले जाने दो पर काश दूसरे जियें और जीना सीखें। भगवान के लिए प्रेम तभी होगा जब उसके मिनट–मिनट में शुकराने मानें। ये सागर लहरें बाग–बगीचे सब तुम्हारे मौज लेने के लिए बने हैं। सब जड़ चाहे चेतन के लिए प्यार। मैं और मेरा ये दोनों पुलिस वाले हैं जिन्होंने तुम्हें कैद किया है। तुम कैदी हो। मेरा जब कुछ है ही नहीं तो त्याग फिर काहे का किया है? गुरू को तन मन धन देकर अहंकार नहीं करना कि मैंने दिया क्योंकि तुम्हारा था क्या? गुरू को कुछ भी देकर कभी कर्ज़ उतार सकते हैं क्या? सब कुछ कुर्बान हो जाय पर गुरू के साथ प्रीत निभी रहे। प्रेमी प्रीत लगाना

कठिन है जल में आग लगाना कठिन है इसके लिए हमेशा नम्रता प्यार चाहिए। जितना ऊपर चढ़ते हैं उतनी गुरू की कदर होती है। यदि तुम्हें सच्चा आनन्द चाहिए तो सब कुछ अर्पण करो। **Fully surrender,** फिर अपनी समझ बुद्धि नहीं चलाओ। यह ज्ञान बुद्धि से ऊपर है। गुरू वाक्यम सत्यम् करने के सिवाय हम केवल मन के कहने पर ही चलेंगे। सोचना क्या है? सोचने से ऊपर हो जाओ। तुम भी नहीं करो, दूसरों से भी नहीं करवाओ। न कर्ता न करावता। सबको आज़ाद रखो। हक लो और हक दो। किसी को भी गुलाम नहीं करो। अकेले आये हो अकेले जाओगे इसलिए किसी को भी साथी नहीं समझो। प्रेम सबसे हो पर अन्दर अकेला। जो कुछ तुम्हारे पास है वह अमानत की गठरी समझकर बाँध कर अलग (एक तरफ) करके रखो कि किसी भी समय भगवान ले जायेगा। जल्दी ही अलविदा करके बैठो कि अन्त में अलविदा न करनी पड़े। पापियों को खून करते हुए भी डर नहीं लगता पर तुम्हें सच की राह में क्यो? कोई काम करने के बाद पछताता है पर हम कहते हैं कि पहले ही निश्चय कर लो कि बाद में पछुताना न पड़े। लड़ाई करके बाद में सुलह नहीं करो पर पहले ही सुलह (समझौता) कर लो। ज़बान से कहना नहीं है कि माया निकम्मी है पर समय पर पता लग जाता है कि माया कैसे सत्य लगती है। कोई कहते

हैं कि गुरू के पास आने जाने के लिए भी तो माया चाहिए न? ऐसे अकल मारी गई है सभी की। पतलून (पाजामा) बेचकर नहीं आ सकते हैं? यहाँ आकर गुरू को भी खिलायेंगे इसलिए धन चाहिए। जिस भी उम्र में हो तो वानप्रस्थ लो। ऐसा नहीं है कि 50 वर्ष के बाद लूँगा। घर में कुत्ते होकर अभी कब तक बैठोगे? निकलकर निरवार हो जाओ। दूसरे सब दुनिया के लोग कहते हैं कि हम **40 Years old** हैं यानि चालीस वर्ष के बुड्ढे हैं पर दादा कहते हैं कि मैं **75 Years** का **young** हूँ पिछत्तर साल का जवान हूँ। जितना तुम खुदी से दूर होंगे उतना भगवान के नज़दीक आते हो। मौत को कोई दोस्त समझता है कोई दुश्मन पर यदि मौत आये ही नहीं तो कैसा रहे? किसी से भी बोलो तो अपने से चार प्रश्न पूछो (1) किससे बोलता हूँ? (2) क्या बोलता हूँ? (3) कैसे बोलता हूँ? (4) किस जगह बोलता हूँ? तो मौन आ जायेगा। आत्मा बिन हर बात को दिल से हमेशा नाकार करो। तुम्हारा मन कैसे वश हो गया है? अनुभव लिखना। □

पत्र गीता भगवान का -50

यह शरीर तो कहीं भी हो तो पर मन कहाँ है? तुम अब 16 आने प्रक्की हुई होगी। अब बताओ भगवान तुम्हारे साथ है या अलग है (जुदा है)? क्या अनुभव किया है? मन को खाली नहीं बिठाओ। जहाँ भी हो वहाँ आत्मा याद हो। सब में आत्मा देखो। देने वाले लेने दोस्त दुश्मन सब आत्मा है मतलब जहाँ-तहाँ मैं ही तो हूँ इसका अभ्यास पक्का करो। तुमने जितना भी त्याग किया है मेरे आने से उसके लिए मुझे खुशी है। लोकारीत की छलांग लगाई। सब कुछ भुला कर बैठी। तुम्हारा प्रेम सच्चा है पक्का है तुम मुक्त हो केवल एक आना कच्चाई तुम्हें मुक्ति से दूर करके बैठी है। यह तुम्हारा भ्रम है कि मैं 15 आना कच्ची हूँ? आत्मा में कच्चाई होती है क्या? आत्मा तो पूर्ण है, देह में आकर कच्चा पक्का समझते हो। अभी भी निश्चय करो कि मैं आत्मा 16 आने पक्की हूँ मुक्त हूँ। कोई भी इच्छा, कोई भी विकार मुझे नहीं **Touch** कर सकता। तुम्हारे में अब इतना **Power** है कि तुम किसी को भी बना सकती हो जैसा कि तुम्हारा गुरू में प्रेम विश्वास अटल है तो तुम्हारा विश्वास ही बोलेगा तुम नहीं बोलोगी। चन्द्रा में अब कौन सी भावना है? वहाँ मुझे ही देखना उसकी आँखों में हृदय में नस-नस में मैं ही बैठी हूँ कहाँ मैं नहीं हूँ यह बताओ। अपनी आँखों में मुझे बिठा लो तो

मेरे सिवाय कुछ भी नज़र न आये, यह ब्रहमचर्य की सीढ़ी **(step)** फांद लिया तो बस फिर और कुछ भी सीखने के लिए नहीं बचा। कोई भी दुनिया में बड़ा आदमी नहीं बना है जो ब्रहमचर्य में न रहा हो। आश्चर्य है अब इतना गुरू से प्रेम करके भगवान का हाथ पकड़ कर फिर स्त्री के गुलाम बनो यह कैसे हो सकेगा? तुम अपने में ही मज़ा ढूँढ़ो। आनन्द का भण्डार अन्दर भरा पड़ा है। स्वर्गों का स्वर्ग तुम्हारे अंदर में है तुम्हारा जिस दिन मन खराब हो तो दूसरों से ज्ञान की बातें करो दूसरों को भी निश्चय कराओ। ज्ञान में अगर तकलीफ है, कठिन है तो अज्ञान में फिर कम तकलीफ है क्या? जवाबदारियाँ, बोझ, फिक्र, चिन्तायें, हसद सार, वेर खार, राग–द्वेष, क्रोध की अग्नि में अज्ञानी मिनट–मिनट में जल कर मर रहा है। सख्ती अनके लिए सहें जो दर्दी और दुःखों के समय मदद करें। कुटुम्बी, स्वार्थी मित्रों के लिए सख्तियाँ सह कर क्या करोगे। तुम सब उतार कर मुझ पर रखो निर्भय हो जाओ। मैं तुम्हारे लिये सब भलाई करूँगी, योग क्षेम का भार तुम्हारा मैंने उठाया है। मीरा कहती है और आस जब छोड़ी है मैंने तो मेरो नंग अब तोपे पड़ो। जब तुम छोड़ोगे तब भगवान तुम्हारा बोझ उठायेगा। हिम्मते मरदां तो मददे खुदा। बन्दा बेहिम्मत तो खुदा बेज़ार। □

स्थिर बुद्धि करने के सात साधन–

(1) विवेक और विचार को सच्चा साथी समझना।

(2) हर बात और हर हालत में अर्न्तमुखता का सबक सीखना जैसे वृक्ष को देखकर अन्दर ख्याल करो कि कैसे वृक्ष धूप में जलकर भी हमें छाया देता है। वैसे ही मैं भी अपने को कितनी भी तकलीफ देकर दूसरों के उद्धार के लिए जियूँ।

(3) कान, आंखें और हर एक इन्द्रिय इस प्रकार प्रयोग करें कि मोक्ष का साधन बन जाये यानि सब इन्द्रियों का ब्रहमचर्य।

(4) तंदरूस्ती का हर एक पल अपने वीर्य को बढ़ाने में सफल करें।

(5) उठने–बैठने, चलने–फिरने, खाने–पीने में अपनी आँखें स्थिर रखें।

(6) हर जगह हर पल निर्मल आकाश यानि निराकार का दर्शन करते रहो।

(7) ज्ञान का रंग चढ़ा होने पर भी प्रेम और नम्रता में झुकते रहो जिससे अभिमान न आये।

नाकामयाबी की सात निशानियाँ–

(1) आत्म विद्या से वाकिफ होने पर भी अपने काम क्रोध वगैरह विकारों का इलाज न करना और उन्हें जीत न पाना नाकामयाबी है।

(2) विषय रूपी सुख में कुछ स्वाद आना नाकामयाबी की निशानी है।

(3) जो कहें उस पर रहणीं न रहना नाकामयाबी है।

(4) विकारों को दबाकर दूसरों के दोषों को देखते रहना नाकामयाबी है।

(5) थोड़ा ही अनुभव होने पर गर्व से भर जाना नाकामयाबी है।

(6) एकान्त में दिल जल्दी ही परेशान हो जाने में नाकामयाबी है।

(7) अभ्यास करने में सुस्ती या विक्षेपता का आना नाकामयाबी है।

कुएँ में गिर जाने के बाद भी बच सकते हैं पर संसार रूपी भोगों के कुएं में गिरने पर कोई भी नहीं बच सकता है। दिल में पवित्रता और ब्रहमआनन्द होने से ताकत, दौलत, शोहरत ये मानो तुम्हारे दर की दासियाँ बन जायेंगी। □

पत्र गीता भगवान का -51

धन्य हो तुम जो एक बार में ही मुझमें विश्वास रखा है बिना देखे पर मैं तो हर एक सत्संगी के रूप में हूँ मेरा उनमें ही दर्शन करना। तुम तो एकदम मुक्ति के लायक दिख रहे हो। अब तक जो भी कर्म–धर्म पाठ पूजायें की वे सब मुझे पहुँचीं। तुम्हारी प्रेम भरी तड़प देखकर मैं भगवान आखिर तुम्हारे पास आया अपने आप। खुदा माना खुद आ। जो खुद घर में घुस कर आये वही भगवान है। गुरू तो अटल टोप पहनकर अपने घरों में गद्दी पर बैठे हैं तुम जाकर उनके पास नीचे जूतियों में बैठते हो पर भगवान तो एकदम तुम्हें अपने से मिलाकर एक कर देता है कि जो मैं हूँ सो तू है। कहते हैं कि वह तड़प भी झूठी तड़प है जो तड़पने से साजन न मिले। जिसने कान लगाकर (ध्यान से) ज्ञान गुरू का सुना उसने पढ़ कर पूरे कर लिए शास्त्र सभी, अचानक ही साजन आकर सामने खड़ा हो गया, बुला कर कहा आकर रंग कर रच जाओ। किसी सच्चे ने समझी यह बात उसकी अटपटी अगम की। पतित को पावन सामी किया सतगुरू ने राज़ी होकर दिया अपना निज निर्मल दर्शन, हुआ मन अमन, अविद्या ज़रा भी ना रही। तुम अपने को अब पतित नहीं समझो। आत्मा तो शुद्ध निर्विकार होती है। तुम अपना जनम ऐसे भुलाओ जैसे पिछला जनम। पिछले

जनम के पाप या कर्म याद हैं? इस जनम के भी ऐसे भुला दो। एक बार भगवान को अपना मन बेचो। सब पाप पुण्य भेंट करके फिर भुला दो। धर्मराज जो बाद में हिसाब लेता है वह गुरू जीते जी ही हिसाब लेकर तुम्हारे कर्मों के लेखे ही फाड़ कर फेंक देगा। जैसे सपने में तुमने कितने भी पाप–पुण्य किये हों, तुम जागोगे तो उनका हिसाब कौन लेगा? ऐसे ही तुमने ये सब कर्म अज्ञान की नींद में किये हैं अभी जागो। अब तुम आत्मा हो, कौन है जो तुमसे हिसाब ले। भगवान ने नर्क–स्वर्ग दिखलाया पर गुरू ने आवागमन मिटाया। गुरू ने तुम्हारा आना जाना ही मिटा दिया है, फिर दूसरा जनम भी तुम्हारा नहीं होगा तो हिसाब कौन देगा? दिल का हिलना ही पाप है। यदि तुमने माना कि मैंने पाप किया है तो ज़रूर उसका फल मिलेगा। पर अब मुकर जाओ कि मैं हूँ ही नहीं। मैं ना इस एक अक्षर में ही सारा ज्ञान समाया पड़ा है कि मैं ये शरीर नहीं हूँ, दूसरा गुरू मानियो ग्रन्थ समझो। गुरू मुख नादम गुरू मुख वेदम् गुरू मुख रहिया समाई। गुरू का मुख नाद है, गुरू का मुख वेद है गुरू के मुख में ही भगवान समाया पड़ा है। संत की महिमा वेद न जाने। वेद शास्त्र भी गुरू की महिमा नहीं कथन कर सकते हैं अब बताओ कि तुम बड़े हो या ग्रन्थ बड़ा है। ग्रन्थ वेद है खारे पानी के समुंद्र जिससे प्यास नहीं बुझेगी पर यदि यही पानी बादलों के ज़रिये मीठा होकर बरसात के रूप में आता है तो उससे प्यास बुझती है।

दूसरा गुरू शिष्य का सम्बंध किससे हो, यहाँ तो है ही भगवान, है ही प्रेम। कृष्ण था प्रेम का अवतार। निष्काम प्रेम में ही जादू है जो सच्चे भक्तों को आकर्षित करता है। तुम पक्का करो (निश्चय करो) कि तुम मुक्त हो। कोई भी देर नहीं है। किसी को बहुत दिन लग जाते हैं किसी को एक पल में सब कुछ मिल जाता है। "किन खे द्रोरीन्दे दिहकिन पलक में परचो कयो।" □

पत्र गीता भगवान का -52

जैसे हम पाकिस्तान छोड़कर रोकर निकले कि पता नहीं है कि अब खाना मिलेगा या नहीं, ऐसे तुम्हें भी डर लगता है। तुम्हारे भोजन का भार करतार ने अपने ऊपर लिया है तुम फिर अपने ऊपर भार उठाते हो सो जैसा अच्छा लगे वैसा करो। जो हमारे होंगे वे आगे–पीछे आकर हमसे मिलेंगे। सोने के सिक्के सोने के आखिर होंगे सोने के। पर इतना फर्क ज़रूर होता है कि जो भोग नहीं छोड़ सकते हैं उनसे फिर भगवान भोग छीन लेता है फिर न घर का न घाट का। तुम लोगों को वचनों से बड़ा लाभ होता है यह सच है पर मैंने तो इन ऋद्धियों–सिद्धियों नव निधियों के लिए ज्ञान नहीं दिया है पर जीवन मुक्ति के लिए है। यह आनन्द हासिल करो। पराशर ऋषि ने कितनी करामातें दिखाई ऋद्धियाँ–सिद्धियाँ दिखाई पर आखिर माछाणीं (मछुवारिन) ने कहा कि लानत है तुम्हारी इन करामतों को दिखाने पर जो तुम काम को न जीत सके हो। इस ज्ञान से तो तुम्हारे पाँचों ही दुश्मन नाश हो जाते हैं क्योंकि तुम्हें विकारों का अधिकार समझाया गया है। इससे भी ऊँची समझ से जगत के सब पदार्थों का सहज त्याग करवाया जाता है यानि वैसे तो सब सम्बंधियों दोस्तों, रिश्तेदारों से मोह नहीं निकल सकता तभी कृष्ण ने ज्ञान सुनाया आत्मा का यानि सम देखो सब को आत्मा

जग को। घड़ी इक विसरूं राम कूं तो ब्रहम हत्या मोहे होय। अब आत्मा को देखूँ या माता–पिता या पति या बच्चे और यार देखूँ? जबकि गीता में कृष्ण ने कहा कि जो कुत्ते ब्राहमण पत्थर साने और मट्टी में आत्मा देखता है और आत्मा के सिवाय दूसरा कुछ भी नहीं देखता है वह सच देखता है। तो अब जो तुम्हारी दृष्टि अद्वैत हो गयी है वह आत्मा के सिवाय और कुछ भी नहीं देखती है यह हुई ब्रहमांकार विरती। अवर न पेखे एकस बिन कोय। इस लिए राजा जनक ने कहा कि अब जो मैं दृष्टा साक्षी होकर खड़ा हूँ इसलिए अब फिर कोई भी द्वेत का कर्म नहीं कर सकूँगा इसलिए मैंने सब कर्म त्याग दिये हैं और गीता में भी कृष्ण ने अर्जुन को कहा कि सब कर्म, धर्म, फर्ज़ छोड़कर 'केवल माम् एकम्' समझ जाओ, यानि मैं ही एक हूँ यह समझ धारण करो और दूसरा देखो ही नहीं। अभी बहुत काम करने को पड़ा है, हमारा जहाँ–जहाँ जाना हुआ है वहाँ–वहाँ जीवन मुक्ति के ग्राहक मिलते हैं। सतगुरू सिख का बन्धन काटे पर गुरू का सिख विकार ते हाटे। हर एक करे अपना आप उद्धार। कभी भी किसी देवता या भगवान की कृपा के लिए नहीं ठहरना। अपनी कृपा हमेशा अपने ऊपर हो और सतगुरू का सदा ही संग हो इतनी भगवान ने हमारे साथ भलाइयाँ की हैं उनके शुक्राने न मान कर हम बार–बार भलाई

माँगते हैं तो लायक कैसे हुए? कैसे भगवान सुनेगा? निर्मय तभी होंगे जब पक्का निश्चय (विश्वास) हो कि हमारा सत्संग सच्चा है यानि सतगुरू पक्का भगवान है पर विश्वास तुम्हारे की ही कमी है, अभी तक संशय भ्रम है। अपने से सच्चे बनो। मुझे एक–एक शकल से पता चलता है। सब प्यार करने आते हैं पर एक–एक की बात मैं तोलता हूँ। संशय भ्रम निकलने के सिवाय ब्रहमं नहीं होंगे यह खातरी करो। क्या भी हो पर जीवन मुक्ति हासिल करो यानि अभी का अभी आनन्द में रहना शुरू करो। मुक्त होने के बाद दुनिया में रहने में जो आनन्द आता है वह केवल ज्ञानी को पता है। दुनिया के लोग क्या समझ सकेंगे? हमें क्या समझना है यह भी लोगों को पता नहीं है। लक्ष्य को भी नहीं जानते हैं कहते हैं सब रास्ते भगवान को पाने के हैं पर भगवान को पाया तो किसी ने भी नहीं है। सब आधे रास्ते पर रह जाते हैं। अभी किसी ने निर्णय भी नहीं किया है। सतगुरू उस न जानी हुई वस्तु का उपदेश करता है जिससे अनेकों जन्मों के बाद मनुष्य बेखबर होकर रहा है। हालतों को बदलना बराबर हमारे हाथ में नहीं है पर ख्यालों को बदलना हमारे हाथ में है, बदल सकते हैं। ख्याल से नर्क को स्वर्ग बना सकते हैं। ख्याल से छोटा बड़ा मर्ज़ी से कर सकते हैं। माया मेरे राम की खिन आवे खिन जाय, एक मिलावे राम सूं एक

नर्क ले जाय। कुरूक्षेत्र से धर्म क्षेत्र बनाना है। यद्यपि मनुष्य पाप की पैदाईश है तो भी सतगुरू उसे मुर्दे से मर्द कलर से केसर, मरने वाले को अमर बना देता है। मन का जब **Operation** होता है तब दर्द होता है तो डाक्टर को बेरहम (निर्दयी) समझते हैं क्योंकि डाक्टर नस को दबाता है पर यदि डाक्टर तरस खाये तो हमारी बीमारी कैसे उतरे? जब दर्द सहेंगे तभी बीमारी उतरेगी तो डाक्टर की अधिक कद्र होगी सो ही मन की भी ऐसी ही हालत है। "सद्रे सतगुर कयो टुकड़ा जीए कासाई कुहे बकरा, कढी अज्ञान जा ककड़ा दिन नाऊं पोइ द्रसु द्रुखोयल खे।" (सतगुरू ने बुलाकर ऐसे काट–काट कर टुकड़े किए जैसे कसाई बकरे काटता है हमारे अज्ञान के कंकड़ निकालकर फिर उसने मुझ दुखियारी को (द्रसु) सच्ची समझ दी, पता बताया शान्ति आनन्द का) दादा लक्ष्मी अब गुरू नानक की तरह रटन **(Tour)** पर निकले हैं सैंकड़ों का उद्धार होना होगा। तुम तो रग–रग (नस–नस) में समाई हुई हो तुम कैसे भूलोगी? □

पत्र गीता भगवान का -53

यहाँ सत्संग रोज़ चलता है। रोज़ नये–नये मुर्गे फँस रहे हैं। खुशी से कतलाम होने आ रहे हैं क्योंकि बिना कत्ल के कबूल नहीं होंगे चाहे बरसों बैठ कर सीखें। बिना कुसजण जे कबूल न पइवो तोरे सिखजे बेठो साल। एक बार यह शरीर गुरू को देते हैं तो हमेशा के लिए गुलामी से छूट जाते हैं फिर कहीं भी झुकना नहीं पड़ता है, सारी दुनिया तुम्हें झुकेगी। कल किसी ने सत्संग में पूछा कि ज्ञान है आज़ादगी का फिर गुरू की गुलामी क्यों करें? गुरू की आज्ञा में जी हजूरी में फिर क्यों चलें? सबको छोड़ कर फिर गुरू की गुलामी करनी पड़ रही है फिर बाकी हम आज़ाद कब और कैसे हुए? सो इसका जवाब तुम सभी लिखकर भेजना। तुम सब क्या समझती हो। गुरू के साथ कब तक गुलाम होकर चलेंगे। दूसरा प्रश्न है कि गुरू जैसा **Power** हमारे में क्यों नहीं आता जिस समय गुरू के सामने बैठे हों, इसका क्या कारण है? तुम्हें अब इतना ज्ञान आ गया है कि अब तुम सब लिखो, मैं क्या लिखूँ? तुम लिखो कि तुमने क्या समझा है कहाँ खड़े हो? कमी हो तो लिखो अपने को पूरन समझते हो? चिट्ठी भी आधी मुलाकात है। तुम जो देखना चाहो वह देख सकते हो वह देख सकते हो। तुम इतने बड़े हो कि भगवान को बुलाना चाहो तो एक क्षण में तुम्हारे सामने

हाज़िर हो जायेगा। भगवान के भी बाबे हो (बाप हो) कौन सी कमी है? बिल्कुल पकड़ में आने वाले नहीं हों प्रभु के सेवक से कौन पहुँचे, प्रभु का सेवक दह दिस प्रगटाया। मैं कहीं भी हूँ तेरे पास हूँ, तुम कहीं भी हो मगर मेरे पास हो। मुलाकात भी रोज़ होती है। चाहे पास हो चाहे दूर हो। हम तुम्हें चाहें तुम नहीं चाहो ऐसा कभी न हो सकता। बदल जाये दुनिया न बदलेंगे हम, खुदा की वफा की तुम्ही को कसम। जब एक भी खुश नहीं है तब तक मुझे आराम नहीं है। **I want to be happy but I won't be happy, till I make you happy to.** तुम्हारी खुशी में मेरी खुशी है। तुम हँसों नाचो गाओ तो मैं खुश होऊँ।

रामतीर्थ लिखता है–

(1) तुम्हारे दिल में गोली लगे यह बेहतर है उससे कि उसमें (दिल में) संशय रहे।

(2) नसीब उसका गहरा दोस्त है जो उससे मुँह मोड़ लेता है यानि जो पुरूषार्थ करता है, प्रारब्ध उसका साथ देती है।

(3) सब कुछ जीतने के लिए सब कुछ गँवाना चाहिए।

(4) फतह (जीत) को अधिक प्यार करो मान और प्रशंसा (कीर्ति) को नहीं।

(5) तुम्हारी मिल्कियत की चोरी करने वाला चोर है पर तुम्हारी मिल्कियत की मालकी की चोरी करने वाला गुरू है।

(6) मनुष्य उतना ही साहूकार है (अमीर है) जितना की उसमें चीज़ों को छोड़न की शक्ति है।

(7) दुख और वियोग की आग जो साजन के बिछोड़े में जलती है वह केवल मन रूपी काले कोयले को साफ करके रोशन करती है।

(8) लोग लड़ते हैं क्योंकि एक दूसरे की बोली नहीं समझते हैं कि हर एक के मुख में बजती है मुरली मनोहर की मीठी।

(9) जब पानी को पीछे धकेलते हैं तभी आगे बढ़ते हैं तैर सकते हैं जब सारी दुनिया को पीछे धकेलेंगे तभी उन्नति करेंगे।

(10) धक्का लगाओ बिजली की तरह, खौफनाक बनो गर्जना की तरह पर याद रखो जैसे आसमान ऊपर बिल्कुल शाँत वैसे तुम रह सको।

(11) जब तक माँगोगे तब तक खुटेले खालीपन का अनुभव करोगे। बेपरवाह बादशाह होकर रहो तो खुदा भी तुम्हारी तलाश में निकल पड़ेगा।

(12) किसी भी मनुष्य को जल्दी नहीं समझ सकोगे जब तक उसे प्यार नहीं किया है।

(13) शरीर समझ कर किसी को प्यार करना परमात्मा की बेइज़्ज़ती करना है।

(14) पहले अपने को दुरूस्त(ठीक) करो तो सब कुछ अपने आप दुरूस्त हो जायेगा।

(15) खराबी (विकार) मर्ज़ है उनके लिए फिक्र करना बड़ा मर्ज़ है। नौकर की भूल अपने में नहीं मानो।□

पत्र गीता भगवान का -54

बाहर की हालतें हमें दुःखी नहीं कर सकती हैं केवल हमारा ख्याल हमें दुःखी करता है। हिम्मत वाले ही पार पहुँचते हैं। दुनिया में कैसे खुश रहें यह अकल होनी चाहिए। आज अभी मैं आनन्द में हूँ कल क्या हुआ या कल क्या होगा, एक मिनट के बाद क्या होगा यह सोचना नहीं है। तुम भगवान हो तुम्हारे रिश्तेदार सम्बंधी होते ही नहीं हैं, वे तो पहले ही मरे पड़े हैं। तुम्हारे ख्याल में हैं। संसार अन्दर है बाहर नहीं है। यह सब खेल है इसलिए साक्षी दृष्टा होकर रहो। इंग्लैण्ड के राजा को एक लड़की ने कहा कि यदि मैं तुम्हारी पत्नी होती तो तुम्हें जहर देकर मार देती। बादशाह ने कहा सही यदि मैं तुम्हारा पति हो तो अवश्य वह ज़हर पी लेता। सच में वे जो दूसरों का जीवन ज़हर करते हैं वे ज़हर पीने के लायक हैं।

एक अंधे के पास भगवान आये, भगवान ने कहा आँखें दूँ? अंधे ने कहा, भगवान को कि मेरी आठ बेटे आठ बहुएं हैं 16 आँखें हैं, वे मेरी मदद करेंगे मुझे क्या ज़रूरत है आँखों की? एक बार घर में आग लगी तो दूसरे सब भाग गये यह अन्धा रह गया, मतलब हमें अपना ज्ञान काम आएगा। मानुष की टेक विरथा जान'। स्त्री–पुरूष यदि केवल एक दूसरे को प्यार करेंगे तो सारी दुनिया के प्रेम से वंचित हो जायेंगे। वे बड़े कुटुम्ब से जुदा (अलग) हो

जाते हैं। उनका सर्वव्यापी प्रेम होगा ही नहीं। जितना अपना कुटुम्ब बढ़ेगा उतना बाहर के कुटुम्ब से दूर होगे। गरीब का दिल शाह (बड़ी) होती है, साहूकार का दिल छोटा होता है। एक गरीब अपनी स्त्री के साथ सोया पड़ा था, तीसरा बाहर से आया आकर दरवाज़ा खटखटाया, स्त्री ने कहा अंदर जगह कहाँ है? गरीब ने कहा दो जने सोये हैं फिर क्या तीन जने बैठेंगे। तीन जने बैठ गये, फिर दो जनों ने आकर दरवाज़ा खटखटाया, गरीब फिर खोलने लगा, स्त्री ने कहा जगह कहाँ है? गरीब ने कहा तीन बैठे हैं पाँच खड़े हो जायेंगे टाईम पास हो जाएगा फिर थोड़ी देर के बाद गधा आया उसके लिए भी दरवाजा खोल दिया। साहूकार के पास मनुष्यों के साथ गधों जैसा व्यवहार किया जाता है पर मेरे पास गधों को भी मनुष्य समझा जाता है। गधों को अन्दर झोपड़ी में बिठाकर खुद सिमटकर खड़े हो गये मतलब कि दिल में जगह है तो झोपड़ी भी बड़ी हो जाती है।

दिल साफ करो पर होशियार नहीं बनो! बच्चों की तरह साफ, अंजान हो जाओ। कोई कहे कि मैं केक खाऊँ और फिर बचे भी दोनों बातें नहीं होंगी, भगवान भी मिले और मैं भी रहूँ ऐसा नहीं होगा।

शिष्य गुरू के पास सब पदार्थ लिखकर ले गया कि ये–ये चाहिए गुरू ने सब पदार्थों को **Cross** करके

लिख दिया 'मन की शान्ति'। मन की शान्ति ही सब कुछ है।

घर कुंवारी लड़की के लिए जेल है, स्त्रियों के लिए काम करने का कारखाना बन गया है पर घर को मुसाफिरखाना करके समझो।

सत्य के लिए तुम किस कदर मरने के लिए तैयार हो? सोल्जर भी लड़ाई में हज़ार रूपये तंख्वाह के लिए सिर देने के लिए तैयार है पर तुम सच के लिए यह भी नहीं कर सकते हो।

गुरू के पास कितने ही आते हैं कि शान्ति चाहिए पर अन्दर में और कुछ भी चाहिए तो शान्ति नहीं मिलेगी। कृष्ण के बदले कंस मिलेगा। भूले ही अनुभव है। भूलें करने के बाद ही सीखते हैं। □

पत्र गीता भगवान का -55

करोड़ों का नुकसान हो जाये, ये शरीर भी सूली जैसे कष्टों में आ जाये पर गुरू के लिए रत्ती मात्र भी प्रेम कम न हो। वह प्रेम ही नहीं है जो कम और ज्यादा हो। एक भी शंका गुरू के प्रेम में बाधक है। एक तिनका भी आँख में पड़ ज़ाये तो उलझन होगी। एक ख्याल भी गुरू के विपरीत होगा तो रूकावट उत्पन्न होगी। आखिर भी अपने ख्याल को ही बनाना है न कि गुरू को बदलना है। तुम्हारा मन कहेगा कि गुरू अपनी भूल स्वीकारे तो अच्छा होगा, मैं तो सोलह आने सही हूँ। दूसरों को तो छोड़ो पर गुरू को भी झुकाना चाहते हैं गुरू को तो झुकने में तो कोई देर नहीं लगेगी पर इसमें तुम्हारी कोई जीत नहीं होगी, जो झुकेगा जीत तो उसी की है। राजा भी झुकाता है पर उसमें प्रेम नहीं होता है। यह तो न चाहते हुए भी मन गुरू के आगे झुक जाता है क्योंकि उसकी मेहरबानियों से हम झुके हैं, गर्दन उठाने लायक भी नहीं हैं। इसलिए दूसरा कोई चारा (उपाय)भी नहीं है। पर ये अच्छा है कि खुशी से ख्वाब करके अपना कोई सिर उतार कर दे कि मैं नहीं हूँ मैं ना अब केवल साजन है। तुम समझते हो कि हमारा भगवान फलाने शहर में है, पुकारते हो कि बाम्बे वासी आओ, द्रोपदी की तरह पुकारना अज्ञान है इस कारण देर हुई। पर घट–घट वासी समझो तो अभी का

अभी हाज़िर है। भगवान में इतनी शक्ति नहीं है जितनी 'ओऽम्' मैं आत्मा हूँ मे है। भगवान अपने से जुदा है पर ओऽम असल में है जुदा वस्तु में दुःख–सुख है पर सतगुरू तेरा है आत्म। अपनी आत्मा में ही सारी सृष्टि का दीदार करो उसमें मेरा गुरू भी है। मैं भगवान हूँ बाकी जो सब देखने में आये वह मिथ्या है। नाम रूप नाश है। मैं मायापति हूँ। घर में अधिकार लेकर राजा नहीं होना है पर मैं भीख माँगकर भी प्रसन्न हूँ। मुझे कोई भी चाह नहीं है कि अधिकार मिले इसलिए मैं अभी ही राजाओं का राजा हूँ। दादा की सारी उम्र घर वालों ने बेइज़्ज़ती की वह मौन में रहते थे। कहते थे कि मेरे लिए खाना भी नहीं बनाना बच जाए तो भले ही दे देना नहीं तो ज़रूरत नहीं है। पलंग भी बाहर गैलरी में डालकर जो बेकार जगह थी, कहते थे तुम सब अन्दर सो जाओ। बरसात होती थी तो प्लास्टिक की चादर ओढ़ लेते थे घर वाले सुखपूर्वक रहें पर मुझे शरीर का सुख नहीं चाहिए, पर प्रकृति की तरफ से जो दादा को सुख मिले वे आज तक शायद किसी को नहीं मिले होंगे। हमारा हक भगवान देगा। घर वाले खुटेले अतृप्त क्या हक देंगे। बल्कि हम सबको देते रहे। घर वालों को भी समय पड़ने पर तकलीफ के वक्त यह ज्ञान सुनायें तो उन्हें कदर पड़े कि ये क्या सीख कर आये हैं। न इज़्ज़त की न मान की, न खाने

पीने की न कपड़े की इच्छा रखें। वे समझे ये तो जैसे भगवान हैं, समय पर कद्र पड़ेगी। पर हमें यह भी फिक्र नहीं है कि घर वाले कद्र करें। वे भगवान हैं केवल यह दृष्टि रखो। निरइच्छा वाले को, भगवान देखने वाले को अपने आप भगवान की तरफ से ही हक मिल जाता है। वह जेल में भी रहता है तो शुकराना मानता है, वाह गुरू करता है। भगवान अपने निष्कामी भक्त को क्या नहीं देगा? पर उसे अन्दर का आनन्द देगा वाह गरीबी, साहूकारी भक्त तो लेगा ही नहीं? वह तो दिने सुख होया अण द्रिने राज़ी रहिया। वह पैसे को बेकार समझता है जिसने मायापति को पा लिया, क्या वह अपने को गरीब समझ सकता है? भगवान की आकर गति पड़ती है वह खिलाता–पिलाता चलाता है पर तुम बेपरवाह बादशाह होकर रहो **Don't care** गाँठ नहीं बाँधो कि इतना खर्च किया है कैसे करूँ कहीं खर्च न हो जाये, कैसे आएगा कहाँ से आएगा ऐसा बेवकूफ सोचता है, कल की चिन्ता मूर्ख करता है।

स्वामी दयानन्द को जिसने ज़हर दिया उसे भगा दिया कि कहीं पकड़ा न जाये। सतपुरूष ऐसे **Harmless** होते हैं। क्षमा के समान कोई तप नहीं है ज्ञान को शब्दों से नहीं समझाया जा सकता है पर श्रद्धा एक–एक वचन को हीरे–मोती लाल समझकर उठाता है। मेरे पत्र को

यदि मान दे तो तन,मन,धन से भी अधिक है पर कोई रद्दी का कागज़ समझकर **Use** करे तो कर सकता है, सब तुम्हारी भावना पर निर्भर करता है कोई टीका टिप्पणी करना चाहे तो पत्र से कई घटनाएँ निकाल सकता है। कृष्ण और अर्जुन होकर नहीं बैठोगे तो करोड़ों वर्षों में भी ज्ञान नहीं लगेगा। अपने सब फुर्ने छोड़ दो, अर्जुन की तरह बैठो। गुरू के सिवाय कोई आत्मा नहीं समझ सकेगा चाहे सारी दुनिया के चक्कर लगाकर आए तो भी सुख नहीं मिलेगा। ज्ञानी के लिए क्रोध हथियार है तुम्हारी शरारतों, शैतानियों के लिए रखा है, पर उसको नहीं जलाता है। गुरू से ऐसा काम उतारकर बैठो कि फिर ज़रूरत न पड़े। आखिर भी अपने को पहचानने में ही सुख मिलेगा। कल फिर आयेंगे या अगले साल आ पाना। जितना काम नहीं उतारा है वे आज ही काम उतार कर बैठे। नींद हराम होनी चाहिए। गंगा नदी तुम्हारे शहर में नहीं बहती है तो तुम्हें हरिद्वार का टिकट लेना चाहिए। सुस्ती आलस्य नहीं करना चाहिए। बहु डूबे स्याणे। गुरू गालियाँ देता है तो क्षमा भी करता है, प्रेम भी कर सकता है। जो बाद में कुछ बनेगा वह अहंकार है जो पहले से ही है वह सच है। फिर–फिर ज्ञानी, योगी, ब्रहमज्ञानी, सन्यासी बनना ये सब अभिमान है। आत्मा ही सत्य है वह निरअहंकारी है तुम्हारे मन में इतना **Balance** हो कि देह

की कोई बात न करे या इतनी शक्ति हो कि अगले से देह भुलवाकर संशय निकालकर आत्मा में टिका दो। यदि ये दोनों बातें न हों तो मौन में रहो नहीं तो लिहाज़ में गिर जाओगे। गुरू से जो मन की बात बताकर खाली हो जाता है वह सदा ही आनन्द में रहता है पर यदि कोई बात छिपाई कि कैसे कहूँ तो ह्रदय (दिल) में भेद हो जाएगा। दिल में गटर रखकर कोई गुरू के नज़दीक नहीं हो पाएगा। बाँसुरी की तरह खाली हो जाओ कि भगवान के होंठों पर तुम्हारा ही नाम हो। समुन्द्र कचरे को किनारे पर फेंक कर स्वयं सदैव साफ रहता है, मुर्दा भी डाल दो तो उसे भी किनारे फेंक देता है।

राजा जनक का महल जला पर वह आग बुझाने के लिए नहीं गया। गुरू ने पूछा तुम क्यों नहीं गये? जनक ने कहा मैंने पहले ही सब कुछ जला दिया है। बचा ही क्या है? जो एक सूई भी अपनी नहीं समझता है वह कुछ भी नहीं जाने पर दुःखी नहीं होगा। स्त्रियों को सब कहते हैं कि सीता बनो पर मर्दों को कोई नहीं कहता कि राम बनना है। □

पत्र गीता भगवान का -56

प्रेम पत्र मीरा तुम्हारा मिला, तुसली ने जवाब नहीं दिया है सो ज्ञान सुनते–सुनते कभी–कभी मन बेपरवाह हो जाता है, मेरा फर्ज़ क्या है गुरू के प्रति ये भी भूल जाते हैं। उल्टा कहते हैं कि गुरू को ऐसा करना चाहिए, छोड़ कर नहीं जाना चाहिए यहाँ आना चाहिए, यह तो भगवान पर **Order** चलाना है। चलना है हमको **Order** में और चलाते हैं भगवान को और मजा तो ये है कि ये खबर अपने को ही नहीं पड़ती है। मन कहेगा कि तुम सही हो, गुरू का भी उल्लंघन कर देता है, गुरू की आज्ञा को टाल कर अपनी बुद्धि चलाएगा। ऐसा बीच की अवस्था में सबको होता है पर यही समय है सावधानी का। जिसके अन्दर में सच, उमंग और गुरू के लिए प्रेम और ज्ञान की कद्र है वो गुरू की आज्ञानुसार चलने में समय को नहीं देखता है। जितनी भगवान को तुम्हारी परवाह है उतनी तुमको भगवान की नहीं है। तुम कहोगे कि नहीं आता भगवान तो हम कोई कम हैं क्या? हमें भी कौन सी गर्ज़ पड़ी है कि उसके पास जाने की? गुरू कुछ है तो मैं भी कुछ हूँ मेरे पास भी ज्ञान है आनन्द है जहाँ भी हूँ मज़े में हूँ। पर ये मजा कौन सा है।

एक आनन्द होता है जो किसी भी हालत में कम या ज़्यादा नहीं होता है दूसरा होता है सुख या मज़ा।

जिज्ञासू मज़े को ही आनन्द समझकर आधे रास्ते पर रूक जाता है। मज़ा आता होगा बाहर से समझता है मुझे अन्दर से आनन्द है। ज़रा सी भी इच्छा भगवान से दूर कर देती है। सीता के साथ राम थे पर सीता की इच्छा हुई सोने के हिरन की, राम को भी हाथ से गँवा दिया। न सिर्फ इतना पर रावण के हाथ ऐसी पड़ी की अत्यंत दुःखी हुई। "रब रूठे त मत खसे" रब रूठ जाता है तो बुद्धि छीन लेता है। सीता की भी एक इच्छा के कारण बुद्धि भ्रष्ट हो गई (मति मारी गयी) तो रब ही रूठ गया और जाकर पहुँची रावण के पास।

पुरूषार्थ के समय कहेंगे प्रारब्ध में होगा आना–जाना तो आएगा पर जो प्रारब्ध पर भरोसा करके पुरूषार्थ का आसरा छोड़ देता है वह नीच पुरूष है। जो साकार के होते हुए उसका फायदा नहीं लेता है उसे फिर अंत में पछताना पड़ेगा। किसी समय तो हर एक को पछताना पड़ता है कि मैंने दुनिया और लोकरीत की वजह से अपना समय और भगवान भी हाथों से गँवा दिया। कीमियागिरी वाली दृष्टि हासिल करो। **Make the best of every-thing** मायूस नहीं हो जाओ, कमज़ोरी मौत है मन को अमन करो। मन अपने ते बुरा मिटाना, पेखे सगल सृष्टि साजना। डाक्टर मौत से नहीं छुड़ा सकता है। नां वो मरे न ठागे जाए, जिसके नाम बसे मनमाही। कुछ लोग कहते

हैं ''सहज मिला सो दूध बराबर'' हम कहते हैं ''द्रिने दुख होया अण द्रिने राज़ी रहिया'' हंसमुख रहो सदैव प्रसन्नचित रहो। कोई कहता है ''कत बि कम्ब बि' यानि करो भी डरो भी, ''अगिया तोरीन्दर थेई तिखा'' यानि आगे तोलने वाले (जाँचने वाले) तेज हैं। हम कहते हैं ''भावे कत म कत पर परची रहु पिरींअ सां''। यानि करो या न करो पर भगवान से राज़ी रहो **(Adjust)**, निर्भय होना तुम्हारा पहला फर्ज़ है तभी कहा जाएगा कि परमात्मा में तुम्हारा पूरा विश्वास है। भगवान के राज्य में कभी भी नाहक जुल्म नहीं हो सकता है। ''घड़ी इक विसरूं राम कूं तो ब्रहम हत्या मोह होय।'' तभी निर्भय और निरबैर हो सकते हो बाकी कर्तापना तो कभी मुक्ति नहीं देगा। कोटि धर्म के बन्धन के मूल। ज्ञान भया तो कर्म ही नाश। सबको अज्ञान है वह जाएगा ज्ञान से, न कि कर्मों से। दया धर्म का मूल है नर्क मूल अभिमान। अभिमान से की गयी दया नर्क में धकेलेगी। सब अच्छे कर्म सकाम भाव से किये हुए नर्क में लेकर जाएँगे। सकाम माना इच्छा और अहंकार से किए हुए।

गीता के दो योग हैं पहला ज्ञान योग दूसरा निष्काम कर्म योग। ज्ञान योग माना मैं आत्मा हूँ, निष्काम कर्म योग यानि सब कर्म इच्छा अहंकार से रहित फिर तो बेड़ा पार है। सहज सब कर लो प्रारब्ध के अनुसार किसी

के भी पाप में सहयोग नहीं करो। संचित कर्मों में से कुछ थोड़े से कर्म परमात्मा तुम्हें इस जन्म में देता है उन पर तुमको अवश्य चलना है बाकी इच्छा करके और कर्म मत बनाओ। सिर्फ परमात्मा को पाने के लिए पुरूषार्थ करो। सब अपने आप हो रहा है तुम अहंकार नहीं करो। पदार्थ मिथ्या है यह वैराग्य से समझने से आसक्ति निकल जाती है। उभारी (फुलझड़ी) का चक्कर चलाना बन्द करो। गोला है ही नहीं ऐसा जगत बना ही नहीं है चाहे देखने में भले ही आ रहा है जैसे सपने के पदार्थ देखने में आते हैं पर जग जाने पर मिथ्या हो जाते हैं। मृग–तृष्णा का जल है जो भास रहा है पर हस्ती नहीं है तुमको विश्वास रखना है पर मन न बाँधे धीर सो मन बेचे सत्‌गुरू के पास तिस सेवक के कारज राज। अहमता, ममता छोड़कर समता में टिक जाओ। इच्छा मात्रम् अविद्या, क्या माँगू कुछ थिर नाहीं। इच्छा और अहंकार दुश्मन हैं। अन्दर में चिन्तन और बाहर से ज़बरदस्ती मन को रोकना त्याग नहीं है। □

पत्र गीता भगवान का - 57

हिम्मत वालों के दिलों में नित रहता है हौसला, "बंदा बेहिम्मत तो खुदा बेज़ार"। भगवान को कदम–कदम पर आगे रखकर चलते चलो, कोई भी डर नहीं करो कि कहीं ऐसा न हो जाए, कोई भी विकल्प नहीं रखो। अच्छा संकल्प रखने में तुम्हारा कौन सा नुकसान होता है जैसे संकल्प करोगे वैसा ही भविष्य बनेगा। आत्मा का घाट है कल्पवृक्ष जिसके नीचे बैठकर जैसी भी भावना रखोगे तो वह पूरी होगी। हमें इस राह पर जो भी **Success** मिली है वह अपने शुभ विचारों, प्रबल इच्छा **Willpower** और गुरू के वचनों पर विश्वास रखने के कारण। तुम भी सब हमारे ही जैसे हो **What one man has done, man can always do.** युद्ध के मैदान में बहादुरों का आदर्श आगे रखकर बढ़ते हैं न कि गिरे हुए, हारे हुओं का। आगे बढ़ा कदम, रूकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान। जो होगा देखा जाएगा, हम सूखे चने चबाएंगे पर एको ब्रहम लखाएँगे, हम गाली ताना खाएंगे पर गुरू पर वारी जाएंगे। हम घर–घर धक्के खाएंगे पर एक आत्मा को जानेंगे। ऐसा जिसने प्रण किया है उसे भगवान सृष्टि का मालिक बनाकर रखता है, ऐसे निरइच्छा वाले की पूजा होती है। अच्छे से अच्छा भोजन, मोटरें, बंगले उसकी सेवा के लिए हाज़िर हैं पर उसे चाहिए कुछ भी नहीं। एक दिन भी

निरइच्छा वाला दुःख का दिन नहीं देखेगा। सारी सृष्टि प्रकृति बेकरार होती है ज्ञानी की सेवा करने के लिए पर दुनिया को लात मारो तो दुनिया सलाम करे, पहले ज़रूर तपस्या करनी पड़ती है मन इन्द्रियों को जीतने के लिए पर गुरू के प्रेम में यह तपस्या भी आनन्द देने वाली लगती है, लगती नहीं है सब हो जाता है पर करते कुछ नहीं है। भगवान तुम्हारे अंग–संग है कभी भी डरो नहीं कोई भी तुम्हारा बाल बाँका नहीं कर सकेगा। प्रहलाद, मीरा, सीता सबके दुःख याद करो तो तुमसे तो कोई ऐसी हालत नहीं हुई है अभी तक। प्रेम में धीरज में कैसे भी बिगड़े हुए काम बन जाते हैं पर बोलने से तुम्हारे काम बिगड़ते हैं, क्यों बोला? आत्मा के सिवाय एक अक्षर बोलना कर्म है, मौन है सोना। तुम दृष्टि अपनी साफ रखो। दिल को ऐसा साफ आइना बनाओ कि हर वक्त अंदर–बाहर परमात्मा का दर्शन हो। साफ दिल वाले को थोड़ा भी द्वेत उलझाएगा। वह द्वेत नहीं कर सकेगा। सबमें अपना आप देखने वाले को कभी भी विक्षेपता नहीं आयेगी। मैं ना समझने वाले को कभी भी किसी के शब्दों का असर नहीं होगा। जो भी तुम्हारे साथ उल्टा चले उसको जाकर हार पहनाओ। तुम्हारी आत्मिक उन्नति के लिए वही मददगार है। कोई भी दुश्मन नहीं है। सबको आँखों का तारा समझो। प्रेम की रोज़ खोज करो कि कैसे **Love all alike** हो जाये। □

पत्र गीता भगवान का -58

ज्ञान का सूक्ष्म उपदेश सुनने के लिए बुद्धि भी सूक्ष्म चाहिए। स्थूलता से जो ऊपर है शरीर, सम्बंधी पदार्थों के मोह से जो ऊपर है वही आत्म तत्व को समझ सकेगा। अर्जुन ने गीता के ज्ञान से युद्ध किया न कि ध्यान से। ध्यान भगवान को अलग समझ कर किया जाता है। ज्ञान से जीव ब्रहम का मिलाप, आत्मा–परमात्मा का अभेद होता है इसलिए ध्यान से बेहतर है ज्ञान। ज्ञान है अपने स्वरूप की पहचान की मैं वो खुद खुदा हूँ मेरा सिवाय दूसरा कोई भगवान नहीं है। हर एक यदि पहले ही भगवान न होता तो अभी मुक्त न होता। गधे से घोड़ा कोई नहीं कर सकेगा पर जो पहले ही घोड़ा है पर गधा समझकर बैठा है उसे घोड़े का निश्चय आ सकता है। ब्रहम तू पहले ही है अभी बनेगा नहीं। जीव भाव का कारण कमज़ोरी है। मन मज़बूत आत्मज्ञानी का है, कैसे भी तूफान में डगमगाता नहीं है। अद्वेत का विचार ही दुर्बलता को दूर करता है सब मैं ही तो हूँ तो राग–द्वेष किससे करूँ? डरूँ किससे? ज्ञानी सारी सृष्टि को अपना आप समझकर सबको अपने से मिलाकर एक कर देता है। दूसरे के द्वारा मिले हुए कष्ट का बदला नहीं लेता पर क्षमा कर देता है और भुला देता है। भृगु ऋषि ने विष्णु भगवान की छाती में लात लगायी विष्णु भगवान ने ऋषि

के पैर दबाए कि कहीं तुम्हें तकलीफ तो नहीं हुई? बाकी मेरी छाती तो वज्र जैसी है मुझे तो कुछ भी नहीं हुआ। ज्ञानी खुद शेर है अब दूसरे किसी जानवर की गर्जना से कैसे डरेगा? योग भ्रष्ट जो यहाँ योगयुक्त होने आया है वह सब कर्म–धर्म पूरे करके आया है अब कुछ भी करना नहीं है क्योंकि तुम हो ही नहीं तो समाधि कौन लगाये और किसकी लगाए? वेहु माठ करे चितु शांत करे, तुहिजी शान्त करण सां थो जगत ठरे। (मौन करके शान्त करके बैठो, तुम्हारे शान्त करने से सारा जगत खुश होता है शीतल होता है) शान्त हो जाना ही परम पुरूषार्थ है। हलचल बन्द हो जाये, मन की उस अवस्था परम पद कहते हैं। ज्ञानी परीक्षा को झूल के झूले (झूलना) समझता है और मज़ा लेता है कभी ऊपर तो कभी नीचे हर वक्त मेहर हाल में मौज आ रही है। आनन्द कम अधिक होने वाला नहीं है। मैं और तू का भेद मिटाओ तो आनन्द ही है। सब की आँखों में निहार कर पूछो कि तू कौन मैं कौन? दो हैं ही नहीं दूसरा देखे वो दूसरे का बेटा। अपनी देह भूलेगी प्रेम में। प्रेम बिना थोथे सभी ज्ञान ध्यान व्रत और नेम। कोई भी शुभ, अशुभ इच्छा बन्धन का कारण है। कोई भी संकल्प–विकल्प करना मेरा धर्म नहीं है। मैं निर्विकल्प आत्मा हूँ। आधा अधूरा ज्ञानी बड़ा दुखी होगा। एक बार कितनी भी तकलीफ हो पर बैठ कर पक्का

निश्चय करके पूरण हो जाओ। अगर कभी कर्ता कभी अकर्ता होओगे तो जीते जी ही नर्क देखना पड़ेगा। गुरू को लजाओगे, अपने को भी लजाओगे, हँसी के पात्र बनोगे। सन्तोष धन सबसे ऊपर है। सब कुछ चला जाये पर राज़ी रहना हमारा धर्म है, कुरकी न दिल खे कारो कद्रहि बि मां करियां शल। (कुरक के हम कभी भी काश दिल को काला न करें) कुरकना (दुःखी होना) पुरूषार्थ का मतलब सबने समझा है कुछ करना इसलिए परमात्मा पाने के लिए सब साधन, यतन, समाधि, जप, तप, तीर्थ, यज्ञ कर रहे हैं, जिनसे कभी भी भगवान मिलना नहीं है। पुरूषार्थ का सच्चा मतलब है **Be still and know that you are that** शान्त हो जाओ और अपने को जानो कि मैं वही हूँ। इसमें करना कुछ भी नहीं पड़ता है अपने में विश्वास आत्मा का रखना यही परम आनन्द और अन्तिम पुरूषार्थ है। यह सच्ची शान्ति और मौन आती है ज्ञान से। जब जिस समय आत्मा का निश्चय पक्का हो गया तो बाकी करने के लिए बचा ही क्या? जिसने अपने को पहचाना उसने सबको पहचाना कि ये सब मैं हूँ फिर किसने राग–द्वेष, किसको अपना, किसको पराया, किसको छोटा किसको बड़ा, किसको साहूकार किसको गरीब समझे? भेदभाव सब निकल जायेंगे। जब तलक है भेद मन में कुछ नहीं बन पायेगा, रंग लायेगी ये भक्ति भेद

मिट जाने के बाद। तुम और मैं, जब तक यह भेद है तब तक ज्ञान का ग भी नहीं लगा है। विराट स्वरूप अर्जुन ने देखा कि ये सब मैं ही हूँ। सबको अपना **own self** करके समझेंगे तो विकार एक भी मन में नहीं रहेगा। **The other is hell.** दूसरा देखना ही नर्क है। दूसरा देखने में सैंकड़ो हज़ारो कर्म बनायेंगे। ज्ञानी से एक भी कर्म पूरे दिन में नहीं बनता है क्योंकि यह अद्वेत में है आत्मा में पक्का है यही निश्चय पक्का हमें भी करना है। किससे डर करे, किससे द्वेष करें? निर्भय निर्वैर हो जाओ कि है ही भगवान। निष्कामी को कभी भी भय नहीं रहता है क्योंकि फल की इच्छा नहीं है न ही अहंकार या द्वेत है। अपने से किसी को डर लगेगा? प्रेम ही जीवन है। प्रेम की खोजना करो और प्रेम की दुनिया बढ़ाओ। स्वार्थ में कमज़ोरी है प्रेम में शक्ति है। □

पत्र गीता भगवान का -59

समय पर परीक्षा सबके ऊपर आती है और आयेगी। तुम्हारा मन कहाँ है? तुम कहाँ–कहाँ अज्ञान बोल बैठते हो? आत्मा को कितनी बार भुला देते हो? मन में कितनी शान्ति है, कितनी सावधानी है? रोज–रोज अपने को **Change** करते आते हो या नहीं? अपनी खबरचार देते आओ। गुरू से सब सच्चे बनो तो गुरू ही पक्का करेगा। मन के ख्यालों को अन्दर छिपाओ नहीं, नहीं तो नासूर हो जायेगा सब एक दूसरे को चढ़ाओ किसी पर भी हंसो नहीं कि इसे तो अभी मन आता है पर हर एक करे अपना आप उद्धार। अपनी भूलो को ढूँढ़ों और उनको दुरूस्त करते आओ। अपने को सबका बच्चा समझो बड़ा नहीं समझो। जहाँ भी हो वहाँ सीखने की कोशिश करो। ज्ञानी तो अज्ञानी से भी सीखता है कि अज्ञानी जो भूले कर रहा है वो मैं न करूँ। किसी से भी कम या अधिक प्यार होता है या **Love all alike** हो गये हो? अपने को रोज जाँचते आओ।

आत्माकार वह शब्द नहीं कहता है कि मैं ऐसा नहीं कर सकता हूँ **I can not do** उस पर कोई जबरदस्ती नहीं है क्योंकि वह **Totaly** निरइच्छा है तो एक मिनट में मन को किसी भी बात में मना सकता है। खुदी ही अहंकार, हठ कराती है। इच्छा को रोकना भी इच्छा ही है कि मुझे इच्छा न हो, यह हठ है पर ऐसा वैराग्य हो कि

सहज इच्छा हो ही नहीं। मिथ्या समझने वाला, चींटी से ब्राहमण तक कौन सी इच्छा करेगा? शान्ति की इच्छा भी रूकावट है। तुम शान्त स्वरूप हो। इच्छाओं रूपी लकड़ियाँ निकालो तो पानी ठंडा का ठंडा है। वैराग्य से द्रिने दुःख होया, अण द्रिने राज़ी रहिया वाली हालत हो जाती है। अपने से अधिक किसी को भी दुनिया में नहीं समझो। तुम्हारे जैसा न कोई हुआ है न होगा न है पर है ही भगवान। न अपने को कम समझो न अधिक पर एक रस आत्मा समझो। किसी की तुलना नहीं करो कि यह कहाँ खड़ा है। तुम तरने आये हो, तुम सावधानी के साथ तरते चलो। परचिन्तन नहीं करो कि यह तर गया है वह डूब गया। तुम उनकी तरफ ध्यान देते डूबते जाओगे। तुम केवल मास्टर की तरफ ध्यान दो। उसके इशारों को समझो और जल्दी तर कर पार हो जाओ, इस उसको निहारते उमर चली जायेगी। हर एक करे अपना आप उद्धार न वह अपनी बुरी गति करे। तुम उसे देखो, मास्टर में विश्वास रखने का मतलब ऐसा नहीं है कि वियरा पाण वहीं द्रेई हथ ब्रियनखे। वृक्ष अपनी जड़ें पाताल में पक्की जमा कर फिर पत्तों और टहनियों से सबको छाँव देता है। अपने को ऐसा पुख्ता (पक्का) बनाओ कि सारी दुनिया हिलाने आये तो भी नहीं हिलो। जो तुम्हें हिलाये वो खुद खता खाये। ज्ञानी को भी विक्षेप पानी के ऊपर लकीर के

समान आता है पर वह अपने को विक्षेप रहित समझता है। इन भूलों से भी ऊपर चलो। भूल क्यों हुई उसके लिए सोचो नहीं, उल्टा खुशी करो कि अधिक सावधानी मिली। सबको सावधान करो कि रास्ते में ऐसी भूलें मुझसे हुई हैंत तो तुम सम्भलना। दुनिया की साहूकारी पालिश की हुई ग़रीबी है। कही किसी को भूल से साहूकार न समझ बैठना और खुद को गरीब। पर वह सबसे अधिक साहूकार है करोड़पति है जिसके पास प्रेम का धन है, राजा उनके चरणों पर गिरेंगे। **A happiest man in the word is without a shirt.** रामतीर्थ दो पैसे (टका) मिलने पर, तीन पाये की खाट पर सोने पर, म्यूनिसपालिटी की बत्ती पर पढ़ने पर और बिच्छू तथा साँप वाली कोठरी में सोने पर भी अपने को राम बादशाह समझता था।□

कीन थी कुड़कुड़ ठहे मेहमान जी हिते,
जो रखे दावा हित सो मेहमान न पर चोर आ।
और ज्ञान सब ज्ञान रे ब्रह्म ज्ञान इक ज्ञान (रे–सिवाय)
जैसे गोला तोप का, मार करे मैदान।
नेस्ती हस्ती है यारों और हस्ती कुछ नहीं
बेखुदी मस्ती है यारों और मस्ती कुछ नहीं।

पत्र गीता भगवान का -60

जो **Fact** को जानेगा वह **Act** में नहीं जाएगा। आत्मा को जानेगा तो किसी के भी कर्म में नहीं जायेगा। मैं अगर अकर्ता, साक्षी, दृष्टा हूँ तो दूसरे का कर्म भी देखने में नहीं आयेगा। सब एक ही आत्मा है। शरीर करके किसी को भी देखेंगे तो उसके कर्म गुण देखने में आयेंगे। गुरू को भी शरीर देखेंगे तो कहेंगे कि ऐसा क्यों किया ऐसा क्यों कर रहा है ऐसा क्यों बोला। मुझे कम दूसरे को अधिक प्यार किया पर गुरू तीनों कालों में कर्ता नहीं है यह तभी पक्का होगा जब मैं कर्ता नहीं होऊँगा। एवड ऊँचा होवे कोई, तिस ऊँचे को को जाने सोई। आत्मा पश्यन्ति आत्मा। जैसे डाक्टरी पढ़ने के लिए **First Class Marks** चाहिए ऐसे इस ज्ञान में भी बहुत शुद्ध मन वाला चाहिए जिसे दुनिया के सुख भोग नहीं चाहिए, न राग–द्वेष न विकार मोह, भया, क्रोध से खाली हो केवल भगवान के परायण होकर रहे उसे मुक्ति शान्ति मिलेगी। उत्तम जिज्ञासू इस ज्ञान को **Catch** जल्दी कर लेता है, दूसरे गुरू के संग में होते जायेंगे। कोई पहले पुरूषार्थ करके आये हैं किसी को अभी करना है इसलिए रीस किसी से भी नहीं करनी है केवल अपने को देखना है दूसरे की स्थिति में नहीं जाना है। हर एक को अपनी दवा गुरू से लेनी है। ऐसा नहीं कहे कि दूसरे को यह यह दवा दी मुझे क्यों नहीं देते?□

पत्र गीता भगवान का -61

अपनी पिछली जीवन, कल तक जो कुछ भी हुआ वह भुला सकते हो? तुम्हारी किसी के लिए भी शिकायत तो नहीं है दिल में? फलाना मेरे से अच्छा, चला फलाना खराब चला मेरे साथ ऐसा हुआ वैसा हुआ ये दुःख मिले ये सुख मिले। मैंने दूसरों से भलाई की वापसी में उन्होंने मेरे से भलाई नहीं की ये ख्याल सूक्ष्म में भी अगर है तो पक्का जनम मरण है। मैंने एक कर्म भी नहीं किया है एक कर्म भी मेरे खाते में नहीं है न मेरे साथ किसी ने कुछ किया है। न लेना, न देना, मगन रहना। न एक पाई किसी से ली है न दी है। सपने का संसार मन से नाश करो। सपने में जो भी कर्म हुए वे मन से भुला दो, जागो तो मैं अकेला हूँ। मैं एक अकेला आया हूँ। दूसरा है ही नहीं तो बात किसकी करूँ? द्वेत टोटल नाश करो दूसरे की बात मन में भी न आये। बाहर का कचड़ा अन्दर नहीं डालो। द्वेत माना कचड़ा। मैं ही तो हूँ। सब प्राणी मेरे में समाये हुए हैं सब मेरे अंग हैं कोई भी भला बुरा नहीं है। ज्ञानी को आत्मा इतनी प्यारी है कि शरीर और सम्बंधी कोई भी प्रिय नहीं है। वह आत्मा के सिवाय दूसरा देखता ही नहीं है, चिन्तन ही आत्मा का है। गुरू के ज्ञान से दिल लगाने से बोध रूपी बेटा पैदा होता है। गुरू है आरसी (आइना) उसमें अपना दर्शन करो। अपने को पहचानो। अपने को पहचानना माना अपने को गँवाना। मैं नां। गुम होय के वेख नज़ारा। □

पत्र गीता भगवान का -62

प्रिय तुम तो खाली हो फिर भी पत्र नहीं लिख रही हो। मेरा शरीर बिल्कुल ठीक है तुम सबकी आशीर्वाद से। जो कुछ भी होता है वह राईट ही राईट है चाहे हमें **Wrong** देखने में आये। **It is very right which seems most wrong.** तुम कुछ भी करो नहीं पर भगवान से जो भी **Wrong** बन आये वह सब अच्छा करके उठाओ वाह गुरू। जो भी ड्रामा भगवान हमारे लिए बनाता है वह ऊपर उठाने के लिए है। दुःख भेजता है तो वह खौफनाक सपना है जो सुजाग करता है। भगवान को सतपुरूष कहते हैं मुझे माफी नहीं देना पर हर कर्म की सज़ा देना यदि एक पाप की भी माफी दी पासखातरी की तो तुम्हारा ही नाम दुनिया से निकल जायेगा क्योंकि सब कहते हैं कि भगवान है इन्साफ ये कहेंगे कि भगवान नाइंसाफी कर रहा है। दुनिया में ऐसा जज भी नहीं चाहिए जो पासखातरी **(Partiality)** करे। दुनिया नहीं बदलेगी पर तुम बदल जाओ। जो अपने को प्यार करता है अपने अन्दर वाले से बना हुआ है वही सर्व को प्यार कर सकता है। जो अपने से बिगड़ा हुआ है, राज़ी नहीं है वह किसी को भी दुनिया में राज़ी नहीं कर सकेगा। दूसरे को नहीं पर अपने को प्यार करना सीखो। दूसरा है ही नहीं। भगवान भी दूसरा

नहीं है जिसे प्यार करते हो पर तुम्हारा अपना आप है। यदि भगवान है तो तुम ही हो नहीं हो तो दूसरा कोई भी भगवान नहीं है। आत्मा प्रश्यन्ति आत्मा। अपना आप पहले पहचानो तो फिर भगवान को पहचानोगे। □

पत्र गीता भगवान का -63

Knowledge means farewell to desires. ज्ञान माना सभी इच्छाओ को अलविदा।

Heart is one it accomodates either Maya or Divinity. दिल एक है या माया में लगेगी या भगवान में।

धन में हज़ारों फिक्र, चिन्तायें, बोझ हैं, भगवान से दूर करने वाली है। तुम अच्छे लोगों को लूटते हो, सन्त फिर तुम्हें लूटते हैं कि दान करो। तुम्हारे पास ज्योतिषी आते हैं तुम्हें ठगने के लिए, तुम पूछते हो **Future** के लिए कि मेरा बेटा पास होगा, मेरी बेटी कब शादी करेगी वगैरा पर तुम किसी से **Present** के लिए पूछो कि मेरे पास कितना धन है? कितने बेटे हैं? तो वह जवाब नहीं दे सकेगा। दादा ने किसी से पूछा कि बताओ मैं तुम्हें चाँटा लगाऊँगा या नहीं? तो वह ज्योतिषी भाग गया। ये सभी ठग तुम्हें भविष्य के लिए कुछ न कुछ बता कर चले जाते हैं फिर ऐसा हो या न हो, तुम ठगे जाते हो। इन ठगों से बचो। कभी भी हाथ दिखाने और छठी दिखाने पर ऐतबार नहीं करना। चारो वेद भले ही पढ़ो पर तो भी सत्य को नहीं पहचान पाओगे। रूहानी प्यार और दुनियावी प्यार में यह फर्क है कि एक बिल्कुल निःस्वार्थ है दूसरा स्वार्थ से भरा हुआ और मोह से भरा हुआ है और हमेशा नतीजे के इन्तज़ार में रहेगा कि मेरे प्रेम से मुझे क्या मिल रहा है।

वृन्दावन की गोपियाँ का प्यार ऐसा था कि जिस गोपी का मन और दिल पूरा ही भगवान कृष्ण को शरनागत हुआ होता था वह गोपी दूसरी गोपी को गले लगाकर कहती थी, देखो मैं कृष्ण हूँ।

रूहानी प्रेमी भगवान को पूरे का पूरा प्यार देता है, दूसरे प्रेमी उसे थोड़ा प्यार देते हैं बाकी प्यार बंटा हुआ होता है। वे भगवान को अपने को जुदा समझते हैं। पर रूहानी प्रेमी भगवान से मिलकर एक हो जाता है। उसके लिए दूसरे की पहचान भी नहीं है कि दूसरा कोई है। रूहानी प्रेमी उसे परमात्मा के करीब लाता है, उसे लीन कर देता है। द्वैत निकल जाता है। वह पूरन तरह से भगवान में लीन होकर अन्तिम पद को पाता है और यही है अपने को जानना।

पवित्र मन वाले को एक दम ब्रहमज्ञान की आग लग जाती है। पापी मन वाले को ज्ञान जल्दी नहीं लगता है। एक भी इच्छा माया की भगवान से दूर कर देती है पर जिसने समझा कि मृग तृष्णा के जल से कुछ नहीं मिलेगा वह कौन सी इच्छा रखेगा।

ज्ञानी मौन में है चाहे 20 बरस किसी के साथ रहा हुआ हो पर उससे अपनी इच्छा से नहीं बोलेगा। द्वैत कैसे जाये? ज्ञानी सारी दुनिया से मिलता भी है पर वह किसी भी नाम रूप से नहीं मिलता है पर अपने आप से मिलता है, दूसरे से नहीं मिलता। दूसरा सारे दिन में देखता भी

नहीं है। तुम पहले मनुष्य कुत्ता हैवान पशु पक्षी देखते हो बाद में कहते हो कि यह भगवान है, इसमें भगवान है। ज्ञानी पहले भगवान देखता है कि यह भी मैं हूँ, नकाब उठाकर देखता है कि यह भी मैं ही तो हूँ तुम नकाब में अटक जाते हो कि यह फलाना है यह फलानी है। वह किसी भी सम्बंधी से वास्ता नहीं रखता है किसी से भेद भाव स्त्री पुरूष का नाता नहीं रखता। एक ही आत्मा है।

देहधारी अपनी प्रशन्सा में खुश, निन्दा में दुखी होता है। बेवकूफ वह है जो दूसरों की भूल बताये, होशियार वह है जो अपनी भूल बताये। दूसरे की भूल देखनी नहीं है दूसरे को तुम्हें सुधारना नहीं है पर अपने को सुधारो। भगवान की गल्तियाँ निकालते हो तो मनुष्य की गल्ती से कैसे छूटोगे। भगवान के लिए ही शिकायतें हैं तो मनुष्य की भूलें कैसे देखोगे? दूसरे की भूल देखोगे तो अपनी भूल नहीं दिखाई देगी पर्दा आ जायेगा। तीजा नेत्र जब गुरू देता है तभी जहाँ-तहाँ भगवान दिखाई देता है। अहंकार और खुदी हर एक मनुष्य में है। भगवान से शक्ति नहीं मिलती है पर गुरू से शक्ति हासिल होती है। भगवान से बढ़कर गुरू है जो हर हालत में राज़ी रहना सिखाता है। भगवान निराकार तो पहले भी था पर हमें कौन सी शक्ति और शान्ति मिली। पर गुरू से मिलने से शक्तिवान हो जायेंगे।

अपने ड्रामे को बदलने की कोशिश करते हो

इसलिए प्रार्थना करते हों पर अपनी प्रकृति में विश्वास रखो तो सब ठीक ही ठीक हो रहा है। जज को मत बोलो कि इन्साफ करो वरना अधिक सज़ा मिलेगी ऐसे ही भगवान को नहीं समझाओ कि ऐसा करो ऐसा नहीं करो पर जो कुछ भी हो रहा है वह बहुत अच्छा हो रहा है। कोई भी हालत आये तो समझो कि यह हालत मुझे सिखाने आयी है।

गुरू का प्रेम किसी को सिखाना नहीं है। प्रेम तो अन्दर का उमंग है, जिसको उमंग आयेगा वह रह नहीं सकेगा। जो प्रेम सिखाया जाता है वह **Artificial** है। जो सच्चा जिज्ञासू होगा वह सर्व से प्रेम करने के सिवाय रह नहीं सकेगा। नामदेव को किसने सिखाया कि कुत्ते में भगवान देखो और रोटियाँ जाकर खिलाओ। मीरा को किसने सिखाया कि साँप में जाकर भगवान देखो। प्रेम सिखाने से नहीं सीखते हैं। जिज्ञासू जितना आत्मा में तल्लीन होता जायेगा उतने प्रेम के झरने उसके भीतर से अपने आप ज़ोर से निकलेंगे। वह गुरू को तो छोड़ो पर दुश्मन को, एक वैश्या, को एक कसाई को देखने से नशे में आ जायेगा जैसे चैतन्य महाप्रभू जिसे भी देखते थे उसे निहारते-निहारते नशे में आ जाते थे और अगले को भी नशे में ले आते थे। □

पत्र गीता भगवान का -64

नये वर्ष का पत्र तुम्हारे पास पहुँचा, खातरी हुई। नये वर्ष के कितने ही कार्ड हमारे पास आकर पहुँचे हैं कहाँ-कहाँ से पर सब पैसे व्यर्थ गये। नये वर्ष का सच्चा मतलब है पुराना जीवन भुलाकर नया जीवन बनाना। पुराना जीवन जो माता की कोख से बना है वह भुलाकर गुरू मुख से नया जनम लेना। कल की बात भी याद न आये। रोज़ ब रोज़ अपने को नया **Feel** करना हमेशा **Fresh** और नौबना (नयापन लिए हुए)। दिन पर दिन शक्ति शरीर की, मानसिक चाहे आत्मिक बढ़ती रहे। दिन पर दिन हम समझें कि **Progress** हो रही है। नित-नित अपने में, गुरू में चाहे निराकार में विश्वास बढ़ता जा रहा है। नये उमंग, नये तरंग, प्यार सबके लिए बढ़ता हुआ है। राग-द्वेष, आलस्य, सुस्ती, चिन्ता सोचना सब देह के धर्म छोड़कर आत्मिक धर्म में पक्के होते जा रहे हैं। हर एक दिन, हर एक मिनट, हर एक सेकिण्ड में प्रीतम का नया सन्देश अन्दर ही मिल रहा है। जो अन्दर से खाली है उसे ही यह संदेश सुनने में आएगा। सब नाम रूपों से खाली होकर एक आत्मा में टिक जायें। दूसरे पर आधार नहीं पर अपनी आत्मा पर आधार रखें कि मैं क्या नहीं हूँ, मैं कहाँ नहीं हूँ सब मैं ही तो हूँ। कल मैं फलाना फलानी था आज मैं आत्मा हूँ यही नये वर्ष की सौगात है। □

पत्र गीता भगवान का -65

Card मिला **New Year** का, खुशी हुई **Thanks.** तुम सबको भी बधाइयाँ हों। हर एक दिन नया सन्देश लेकर आता है, कुछ न कुछ सिखाकर जाता है कोई न कोई खेल का पर्दा ऐसा दिखाकर जाता है जो हमारी **Life** को अधिक–अधिक पक्का करके जाता है कुछ न कुछ **Change** करके जाता है मन का विश्वास बढ़ा कर जाता है राम राज्य में निश्चय कराता है, जगत की बेबकाई (अस्थिरता) और बेवफाई का निश्चय करा कर जाता है। अच्छे को अच्छा बुरे को बुरा फल देकर जाता है केवल कोई **Receiving mind** रखे जो हर दिन से भलाई उठाये। कल से आज मैं अधिक कुछ सीखा हूँ। कल मैं भी रवाज़ी (साधारण) मनुष्य था, आज भगवान हूँ। कल मैंने मन पर ऐतबार (विश्वास) किया आज नहीं करता हूँ। कल मनमुख था, आज गुरूमुख हूँ। कल अपने को मरने वाला समझता था आज अमर हूँ। कल हर एक बात का डर लग रहा था आज निर्भय और निर्वैर हूँ। कल गुरू को मनुष्य समझ रहा था पर आज पूरन भगवान समझ रहा हूँ। कल जिनके साथ कोई भूल की उनसे आज माफी लेकर मन को साफ कर लिया है क्योंकि साफ दिल में ही परमात्मा मैं ही तो हूँ। कल मैं दूसरे के दोष देखता था आज सबको माफ करके बिल्कुल भुला दिया।

कल खेल पर नज़र थी कि ऐसा हो रहा है, ऐसा क्यों हुआ पर आज पर्दे पर नज़र है कि है ही ब्रहम। खेल केवल मेरे अज्ञान के अंधेरे के कारण दिख रहा था। कल समझ रहा था कि संसार भगवान ने बनाया है पर आज समझता हूँ कि जगत बना ही नहीं है, परमात्मा ही है जो अधिक प्रतीत हो रहा है। वह परमात्मा मैं ही तो हूँ जिसके संकल्प से यह सृष्टि खड़ी है। गुरू की कृपा से क्या से क्या बन गया। एक दिन में परिवर्तन आ सकता है, एक क्षण में। अब तो हर एक दिन सभागा (भाग्यशाली) है हर एक मिनट सभागा है हर एक स्वांश सभागा है जो उसकी याद में गुज़र रहा है। एक–एक दिन की कदर है **Time is money more than money.** यह है नये वर्ष का सन्देश। □

पत्र गीता भगवान का -66

चुप करके बैठने से किसी मनोरंजन (व्यस्तता) में बैठना अच्छा है। सारा वक्त ज्ञान भी सोचना नहीं है पर आठ ही पहर मन एकाग्रता में आत्मा में हो बाकी शरीर से कैसे भी कर्म होते रहेंगे तो वह सब सेवा ही है। कर्म उपासना है, मनोरंजन है, खेल है। मन में खुशी है तो कर्म उलझायेगा नहीं। गुरू के प्यार में जिसको विश्वास है वह लाड में झूमता रहेगा कभी भी नहीं सोचेगा कि गुरू नाराज़ है। जो अपनी आत्मा को न जान कर मन के कहने में लग कर दुःखी–सुखी होता रहेगा, अपने को राज़ी नहीं रखेगा उसे ऐसा दिखाई देगा कि जैसे गुरू नाराज़ हैपर तुम और मैं तो असल में (पहले से ही) एक हैं। तुम्हें सपने में भी संशय नहीं आना चाहिए। तुम्हें बहुत खुशी होनी चाहिए फुटबाल की तरह नाचती रहो कि मैं और भगवान एक हैं, वह मेरे से राज़ी है मैं उससे। असीं त पिरयुन जा पिरी असांजा। (मैं तो प्रीतम की हूँ प्रीतम मेरा है) तुम खुशी में पाँच किलो मोटी और लाल होकर दिखाओ इसके बाद मिलें तो तुम मोटी होकर आकर मिलना तभी मैं समझूँगी कि तुम्हारा विश्वास और प्रेम पक्का है। मन में एक भी ख्याल आने नहीं दो। मन बदमाश है शक और डर देता है पर निश्चय रखो कि एक ही है दो है ही नहीं। □

पत्र गीता भगवान का -67

सतचित आनन्द स्वरूप मेरे प्राणों से प्रिय आत्मा सदैव अपने आत्म आनन्द में मस्त रहो। प्रिय जैसा नाम रखा है वैसी कंवल के फूल की तरह संसार में रहना, दिल में बसाना प्रीतम प्यारा, देख कर सारी दुनिया का ये झूठा तमाशा। प्रेम से लिखे हुए पत्र तुम सभी के मिले पढ़ कर बेहद आनन्द लूटा। तुमने लिखा है भगवान ने मुझे भुला दिया है नाम भी नहीं लिखा है सो भगवान ने एक बार जिसे अपना बनाया उसे कंभी भी भुला नहीं सकता है। भक्त तो मोह माया में सम्बंधियों के संग में भय में आकर भगवान को छोड़ सकता है पर भगवान का अवतार तो हुआ ही भक्तों के लिए है। तुम हरदम याद हो, भुलाऊँ तो भी न भूलो। तुम्हारा पवित्र प्रेम, निर्मल, शुद्ध हृदय, दिल की सच्चाई कभी भी नहीं भूल सकती है। तुम्हारा और मेरा असली रूहानी नाता है कोई भी हटा नहीं सकता। तुम चाहे कहीं भी हो पर मैं तुम्हारे हरदम साथ हूँ हम भगतों के भगत हमारे। जवानी में जिसे इस जगत और जगत के पदार्थों और भोगों से वैराग्य आ जाता है उसके जैसा अति भाग्यवान तो संसार में कोई विरला होगा। बालकपन में यह ज्ञान सोने के बराबर है जवानी में चाँदी के बराबर बुढ़ापे में ताँबे के बराबर नहीं तो धूल के बराबर है यह मनुष्य। पहले तैरना सीख कर फिर समुन्द्र

में घुसेंगे तो लहरे और झटके कुछ भी असर नहीं कर सकेंगे क्योंकि गुरू पहले ही हर एक प्रकार की परीक्षायें लेकर पक्का कर देता है फिर अब कोई भी बात ऐसी दुनिया में नई नहीं लगती जो अनहोनी हो। सब अनुभव पहले ही गुरू दे देता है। एक दम उठकर खुशी करो कि गुरू ने हमें क्या नहीं ज्ञान विज्ञान समझा दिया है, सारी दुनिया में तुम्हारे जैसा ज्ञान और अनुभव किसी के पास नहीं होगा। भगवान अपने भक्त को कभी भी गिरने नहीं देता है। दसों ही दिशाओं में सारी दुनिया से ऊँचा मालिक करके खड़ा करता है। एक बार जिसने मेरे भगवान की शरण पूरी तरह ली है उसे किसी के भी आगे फिर झुकना नहीं पड़ता है। मेरा भक्त कभी भी नाश होने वाला नहीं है। कोई भी उसे सता या दुःखी नहीं कर सकता है तुम जहाँ भी जाओगी वहाँ राज्य रानी की तरह करोगी। तुम्हारा प्रेम सेवा आज्ञा पालन, सन्तोष देखकर सब झुकेंगे आकर, केवल हिम्मत और पूर्ण विश्वास गुरू में होना ज़रूरी है कि मेरा साथी सच्चा परमात्मा है। जिसने पूरन विश्वास से एक बार सच को पहचाना है वह माया को जान जाता है, कभी भी उसके धोखे में आ नहीं सकता है। काम, क्रोध की वासनायें उसे देखते ही नाश हो जाती हैं। इतने शक्तिमान तुम हो। हिम्मत वालों के दिल में हरदम रहता है हौसला। जोश और होश के साथ

हमेशा आगे बढ़ते चलो। जबकि पहले तो इस राह पर आने के लिए सचमुच मन सम्बंधी और देवता रूकावट डालते हैं पर एक बार दिल पर पत्थर रख कर सारी दुनिया, माया को रिश्तेदारों को लात लगाकर, बेपरवाह होकर आगे बढ़ते हैं तो फिर हमेशा के लिए मोह, काम की जंजीरों की कैद से छूटकर कर बेगमपुर की सैर करते हैं आज़ाद पक्षी होकर। भगवान के प्रेम में आकर मीरा सभी दुख निन्दायें सहन कर गई। सचमुच जब सच्चा प्रेम इन्सान के हृदय में प्रवेश करता है तो इन्सान दिल से दोनों जहान की ख्वाहिशें, चिन्तायें पुरानी जूती की तरह उछाल कर बाहर फेंक देता है। सो तुम्हारा प्रेम तो सच्चा है, वहाँ का एक–एक भक्त सच्ची तड़प और प्रेम की साक्षात मूर्ति है तभी तो भगवान जल्दी राज़ी हो गया है। तुम सब मुझे हरदम याद हो। सत्संग पारस से मिलकर अपने जनम को सुधारो, मौका मिला है दो तीन दिन का प्यारे तू अपना अन्दर उजाड़। तुम सबने इतना जल्दी थोड़े ही दिनों में सत्संग पारस से मिलकर अपना जनम सफल बनाया है ऐसी एक भी मिसाल **(Example)** दुनिया में नहीं मिलेगा। तुमने मौके का पूरा फायदा लिया है। सत्संग के लिए अब तुम्हें छुट्टी मिलती है या नहीं? अब मन की स्थिति कैसी है? सब खोलकर हाल चाल लिखो। मेरे जाने के बाद कौन सी उन्नति की है? प्रिय तुम्हारा

कैसा हाल है? अब सत्संग में जाती होगी। पत्र जल्दी–जल्दी लिखते रहना। भला अब कौन सी बात रह गयी है जो तुम्हें उलझा कर जाये या दुखी कर सके? रोज़ सुबह उठते ही **Promise** करो कि केवल आज का दिन मैं राज़ी रहूँगी, केवल आज का दिन मैं हर वक्त हँसूगी, आज का दिन क्रोध को आने नहीं दूँगी। यदि एक दिन भी तुम कामयाब हुई तो समझो कि मन्ज़िल पर पहुँच चुकी हो। यहाँ सभी सत्संगी मौज में हैं। सब को ओम। सत्संग वहाँ ज़ोर–शोर से चलता होगा। सबके रूपों में मेरा अपना आप आत्मा, सब हर वक्त याद हो। □

पत्र गीता भगवान का -68

देर से हुए काम दुरूस्त होते हैं **Slow but steady.** भले ही ज्ञान चारों तरफ समझकर कदम बढ़ाओ क्योंकि हमें तो विश्वास है पक्का कि यह ज्ञान गॉरेन्टेड है। आखिर इस ज्ञान के सिवाय सब की गति नहीं है इसलिए किसी न किसी समय यहाँ आना पड़ेगा, जायेंगे कहाँ? इसीलिए तो हम भी डोर ढ़ीली छोड़ देते हैं कि बुलबुल भले ही उड़े, मज़ा ले पर डोर अपने हाथ में हैं सो आपने भी हमें डोर दी है हमारे पास बाल–बच्चों सहित गिरवी पड़े हो। हो ही हमारे, जायेंगे कहाँ? तीन प्रकार के जिज्ञासू हैं एक तो सुखों में ही सिमरन करते हैं जिनके पास दुख आयेगा ही नहीं यानि सन्ताप नहीं करेगा। दूसरे दुःख आने पर सुजाग होते हैं यानि ठिकाने लग जाते हैं। तीसरे वे हैं जो कितने भी दुःख आने पर भी नहीं सुधरते हैं वे नौद (कठोर) ही जाते हैं (डीठ हो जाते हैं) कितने भी दुखों के होते हुए केवल एक ही खुशी पर इतराते रहते हैं जैसे मेंढ़क को सर्प खा रहा था पर मेंढ़क खुद तब तक मच्छर झपट रहा था इसी प्रकार काल सर पर खड़ा है पर यह जीव विषय रूपी मच्छर बैठा झपट रहा है। जब तक काल आये तब तक मौज तो कर लूँ। दुनिया के मज़े हैं चूने के लड्डू के समान बाहर से मीठा लगता है पर पेट में जाने के बाद हमारी आँतें, जिगर सब जला देता है।

नावे महले के श्लोक रोज़ पढ़ने चाहिए कि कितना न वैराग्य गुरू नानक ने दिया है रोंगटें खड़े हो जायेंगे। रामचन्द्र का योग वशिष्ठ में वैराग्य पढ़ना चाहिए कि रामचन्द्र को इतनी राजाई होते हुए वैराग्य क्यों लगा है। सच्चा जिज्ञासू वह है जो सुखों के होते हुए समझे, दुख अपने ऊपर आने न दे। गुरू तो मेहरबान है जो उसकी शरण में आता है उसको दुख, बुढ़ापे और पीड़ाओं से सचेत करना चाहता है पर हम बेपरवाह हैं, चिन्ता गुरू की है, हम बन्दर की तरह मुट्ठियाँ भर कर बैठे हैं पर मटके से हाथ निकालना भी चाहते हैं, प्रियतम (भगवान) और पुलाव (विषय योग) साथ–साथ खाना चाहते हैं। गुरू के नज़दीक जाने पर कहते हैं सब तुम्हारा है तेरा–तेरा, पर फिर सत्संग रूपी दिया जला हुआ नहीं है तो कहते हैं मेरा मेरा। रामतीर्थ ने लिखा है कि मन, 'वेदान्त' गुरू के मुख से सुनने से एक दम कबूल करता है (स्वीकारता है) कि मैं हूँ नहीं, यह सब मेरा नहीं है। भगवान का है पर फिर घर आकर बच्चों का मुँह देखता है तो कहता है आखिर भी मेरे ही तो हैं उन्हें ऐसा करना चाहिए, उन्हें मैं सुखी करूँ, ये अच्छे होकर चलें, दुनिया के लोग क्या कहेंगे। यह है माया जो सुन्दर रूप में हमें ठगने आयेगी। हम सुजाग रहें। तेरा–तेरा गुरू नानक साहब वाला न भुलायें। हर वक्त याद रहे। जैसे दान करके फिर वापस

नहीं लेते हैं ऐसे हम सब कुछ भगवान का समझ कर फिर अपना नहीं समझें। आखिर है किसका? भगवान किसी समय भी वापस लेकर जायेगा क्यों न हम कहें कि "जिसकी वस्तु उस आगे राखे, प्रभु की आज्ञा माने माथे।" गुरू से ख्याल मिलाकर एक कर दो तो कभी भी ऐसा नहीं कहोगे कि गुरू ने ऐसा क्यों करवाया। तेरी इच्छा सो मेरे लिए अच्छा। आज्ञा पालन भी प्रेम में हो जाता है। जो ज़बरदस्ती आज्ञा पालन करता है उसकी खुशी दब जायेगी, किसी न किसी समय गुरू को ही दोष देगा कि गुरू ने यह बात क्यों मनवाई (करवाई)। लाचार नहीं पर खुशी से ख्वाब करना चाहिए। अन्दर में तोल माप करो कि ये सच्चा या वो सच्चा। यह दुनिया सच है या परमात्मा। इस ज्ञान की कितनी कदर करनी है, फीस क्या है? शीश दो तो ईश पाओ। जिसको गुरू की भलाइयों की कदर है वह भूले भटके भी गुरू की गालियों और क्रोध पर एतराज नहीं करेगा, कहेगा इसमें भी भलाई है। तेरे काँटों से भी प्यार तेरे फूलों से भी प्यार। हैन्डिल होकर चलने में ही फायदा है कि जैसे तुम चलाओ वैसे वाह–वाह। भगवान समय पर कोई भी परीक्षा भेज कर **Stock checking** करता है कि झूठा कौन है, सच्चा कौन है। झूठे गिरते हैं गड्ढ़े में, सच्चे पकते हैं। हर एक की परीक्षा हो जाएगी इसलिए सुजाग रहना है, परीक्षा के समय नींद न आ जाय। फेल न हो जाओ। जिस वक्त

ऊपर चढ़ते हैं उस वक्त अधिक सम्भल कर चलते हैं ऐसे ही इस ज्ञान में ऊँचे उठते जाओ सम्भल–सम्भल कर चलो कि मैं फिसल न जाऊँ। चढ़े तो चाखे प्रेम रस गिरे तो चकनाचूर। मैं और तू में ही रोला (झगड़ा) है। अपने को जीते जी मार कर काफूर हो जाओ, राख भी न बचे। नम्रता, सेवा, श्रद्धा विश्वास प्रेम मरते दम तक हो। बढ़ती कला चन्द्रमा की तरह रहे। नित–नित होत सवाया। कल से आज **Progres** हो। पीछे पैर नहीं रखना है। शौक हो कि मैं करूँगा या मरूँगा। कमज़ोरी सभी पापों का मूल कारण है। दूसरा कोई भी पाप नहीं है। केवल आतम धात से ही शरीर में कमज़ोरी आती है कि मैं कैसे कर सकूँगा। मैं निर्बल हूँ, यह मंज़िल बहुत कठिन (औखी) है। पर हम शेर की औलाद हैं। तुमने शेर का दूध पिया है तुम्हारा मन सोने के कटोरे की तरह शुद्ध पवित्र है। गुरू ने तुम्हें लायक समझकर यह ज्ञान रूपी अमृत पिलाया है। तुमने जितना विश्वास रखा है उतना पाया है। विश्वास करामत है। 20 आना विश्वास होना चाहिए न कि 16 आना, अपने में चाहे गुरू में। मुझे हरदम तुम याद हो तुम्हारा सच्चा प्रेम और सच्ची सेवा कभी भूलने वाली नहीं है। गुरू की खास तुम पर नज़र है यह तुम्हें खुनकी रखनी चाहिए। □

पत्र गीता भगवान का -69

Morning Exercise यह है कि सुबह उठकर रोज़ मुस्कुराओ मानो कि **Photo** निकल रहा है। **Greatest glory is rising every time. We fall, failures are the pillers of the success.** भूलें कितनी भी हों पर ये मन के स्वभाव हैं, हम अपने में मान कर कमज़ोर न बनें पर आज भी उस भूल को निकालकर अभूल हो जायें। सच्चा वैराग्य लेकर शान्ति को हासिल करना है नहीं तो कदाचित शान्ति नहीं आयेगी। एक बार जो गुरू से ज्ञान सुनकर फिर माया की, विषय भोगों की इच्छा रखेगा वह न ही दुनिया से मजा ले सकेगा न ही भगवान से मज़ा आयेगा। इसलिए एक बाजू हो जा। भगवान को अब तक जुदा समझ रहे थे यह तो बड़ा सरल है एक भंगी भी कहेगा कि भगवान है पर मैं वह हूँ यह कोई भी नहीं मानेगा ब्रहमज्ञानी के सिवाय। बाहर भगवान जो साकार दिखाई दे रहा है वह भी आने जाने वाला है वह भी निराकार में टिका हुआ निराधारों का आधार है पर आत्मा मैं खुद हूँ यह निश्चय करने के सिवाय हमेशा दुखी–सुखी होते रहेंगे। देह अध्यासी नाहीं निराकार को, ना ही गुरू को, न ही अपने को पहचान सकेगा। देह अभिमान गंवाओ तो अभी का अभी बेअन्त का अन्त पा लोगे कि वह बेअन्त मैं खुद हूँ। आप गवाइए तां शहु पाइए और कैसी चतुराई।

तुम्हारा मन कभी भी राईट हो नहीं सकता है पर गुरू ही राईट है क्योंकि वह देह में फँसा नहीं है न ही किसी सम्बंधी में फँसा हुआ है। उसका दिल, दिमाग सालिम है। मोह में बुद्धि उलझी हुई रहती है राईट रांग नहीं सोच सकते हैं अर्जुन की तरह। अपने बेवकूफी के व्यर्थ के, बेहूदे ख्यालों पर हँसी आनी चाहिए कि मुझ आत्मा में ये ख्याल है कहाँ? मैं तो सबसे न्यारा हूँ। किसी से भी मेरा वास्ता कहाँ है। आज ही पक्के होकर खड़े हो जाओ तो हम भी चिन्ता से छूटें। रात दिन तुम्हारी फिक्र सता रही है कि ऐसा न हो कि किसी का भी शरीर छूट जाये और मनुष्य देह व्यर्थ चली जाये। तुम तो सुख से सोये पड़े हो पर नींद तो हमारी हराम है। सूर्यमुखी फूल का मुँह हमेशा सूर्य की तरफ होता है। सूर्य एक जगह खड़ा है इसी प्रकार गुरू जहाँ है वहीं है पर हमें उसमें मन रखना है। चकोरी का चन्द्रमा से नींह होता है तो कितना भी उसे जलना पड़ता है पर चन्द्रमा से आँखें नहीं निकालती है इसी तरह हमारी विरती भगवान में रहे भूल कर भी माया में न जाये नज़र। यही परम पुरूषार्थ करना है। सब गुरू पर उतार कर नहीं रखना चाहिए। हमें अपनी मेहनत करनी है। गुरू अपनी करके बैठा है। □

पत्र गीता भगवान का -70

गुरू वचन बोलता है, तुम्हारा काम है राईट तरह से Catch करना। जैसे भी बॉल उछालता हूँ पर तुम्हें Catch करना है। कानों से सुना हुआ कुछ फायदे वाला नहीं है पर मन से एक शब्द भी सुना हुआ व्यर्थ नहीं जाएगा। भूल भुलैया के खेल में तुम्हें डाला है अब बहादुरी यह है कि निकल कर दिखाओ। फँसना सरल है पर छूटना बहादुरी है। फिसलना सरल है, डूबना सरल है पर तैरने में दम चाहिए। लोक बहता है लय वाला (नीचे की ओर) पर तुम तो ऊँचे उठो। गुरू नानक से सब रीस करते हैं कि शादी की बाल बच्चे पैदा किए पर उसने छोड़ा कितने में? कितना वैराग्य था यह किसी नें देखा ही नहीं। गुरू की कृपा का पात्र बनना है। गुरू का सिख विकार ते हाटे। काल को और सम्बंधियों को शरीर देने से सर्व की सेवा में शरीर देना चाहिए। मैं मुक्त कब होऊँगा यह 'कब' निकालो तो आज ही मुक्त हो। बड़े में बड़ी होशियारी है अपनी भूल ढूँढ़कर कर निकालना न कि दूसरे की भूल देखना। मन को पहचानना बहादुरी का काम है। मन के हज़ारों स्वांग हैं, तुम्हें चक्कर में डालकर घुमाने के। वह बार–बार गुरू के विपरीत ख्याल लाकर गुरू से दूर करना चाहेगा, सरलता से राजाई नहीं छोड़ेगा इस लिए कुत्ते के पूँछ को नलकी में डाल दो। नली है सत्संग, आत्मा का ख्याल। मन को गुरू का डर होना चाहिए कि गुरू को क्या अच्छा लगेगा क्या

नहीं। मन दुश्मन केवल गुरू दिखाता है। सब सारी दुनिया मन से बनी पड़ी है गुरू ही आकर मन को नंगा करके दिखाता है। यही मन गुरू केखिलाफ लड़ाई करेगा। आखिर जीत गुरू की है। बशर्ते कि तुम गुरू से बँधे रहो और मन को इन्कार करते आओ।

जीव गिरा भी शब्द में है कि तू फलाना है चढ़ेगा भी फिर शब्द से कि तू आत्मा है। वह कंजूस है जिसे गुरू लकब देता भी है कि तू भगवान है पर वह नालायक पगड़ी उतार कर फेंकता है कि मैं भगवान नहीं हूँ। मैं नां भी कौन करता है? मौन मुर्दे जैसा हो अन्दर चाहे बाहर। मन उलझता है क्योंकि बाहरमुख है, बाहर का मज़ा समझा है इसलिए भटक रहा है। जेल, फाँसी सब मैं के कारण होते हैं। न को हम, न को तुम, तो दफ्तर ही गुम। एक बच्चा माँगता है दूसरा नहीं तुम्हें कौन सा पसंद है? इसी प्रकार एक भक्त माँगता है भगवान से कि भगवान प्यार करो, भगवान आओ, भगवान चिट्ठी लिखो पर दूसरा नहीं माँगता है तो उसे सब कुछ मिल जाता है। वह थोड़े से भी तृप्ति का गुण धारण करके मौज में रहता है। एक बूँद, ब्रहमज्ञान की मस्त करे दिन रैन। तुम लिखते आओ गुरू अपना धर्म पाल रहा है, तुम रोज हाल चाल देते रहो मन खाली करते चलो। गुरू को तुमसे अधिक तुम्हारा ख्याल है, दर्द दिल में है, तुम निश्चिंत रहो। शरीर मेरा कहीं भी है पर मैं हूँ तुम्हारे साथ। मेरा घर तुम्हारे दिल में है न बाम्बे

न पूने में। तुम अपनी दिल में पुख्ता बिठाओ। सच्चा गुरू आँखों से, लेक्चर से, होशियारी से नहीं सिखाता है पर उसका जीवन आदर्श होकर सबको खींचता है। अन्दर की जोत है सच्चा प्रेम है जो तुम पर गहरा असर करता है बाहर से प्रेम का दिखावा नहीं करता है पर अन्दर का प्रेम सबको लीन कर देता है। तुम्हारा बच्चा एक क्लास एक साल में पास करता है तुम्हें कितने साल लगेंगे आत्मा की क्लास पास करने में। दूसरों को छोड़ो पर जो अपने को ही ख़ुश नहीं रख सकता वह दूसरे को कैसे खुश करेगा? सब दुख दर्दों कारण है मैं। मैं हूँ तो दुखी सुखी हूँ। एक–एक ख्याल, एक–एक भावना में भगवान हो, भगवान का प्रेम हो। जो भी कर्म करे वह प्रेम से भर कर, वाणीं से मीठा बोलें। सबके लिए प्यार हो कि ये सब भगवान हैं। अधिक से अधिक दोस्त सहेलियाँ बनायें। सबको प्रेम से खींचे। तुम्हारे पास तो इतना खजाना है कि निकालोगी तो दुनिया हैरान हो जायेगी। पर तुम कंजूस हो मेरा नाम निकालने के बदले अभी तक उदासी के पत्र निख रही हो। खुशी के पत्र लिखो तो मुझे खुशी हो। मैं तुम्हारे साथ तुम्हारी जबान में हूँ। रोज़ किसी न किसी से बात करो चुप करके एक मिनट भी नहीं बैठो। बड़े में बड़ा पाप हैं अपने से दूर होना। अपने से प्यार करना सीखो वहाँ भी मैं ही हूँ। तुम्हारा स्वरूप मेरा ही है। □

पत्र गीता भगवान का -71

सुस्ती तमोगुण है। अर्जुन गुडाकेश यानि सुस्ती आलस्य को जीतने वाला था। गुरू भी यदि तुम्हारी तरह सुस्त होकर अपेन घर बच्चों के साथ बैठा होता तो तुम्हारा और इतनों का उद्धार कैसे होता। जैसा आनन्द तुम्हें मिला है वैसा जब तक दूसरों को नहीं दिया है तब तक कर्ज़ा चढ़ा पड़ा है। आप जपे औरां नाम जपावे। पूरे दिन में जब तक किसी एक को विश्वास नहीं दिलाया, किसी टूटे दिल को हमदर्दी नहीं दी तसल्ली नहीं दी है तब तक रोटी हराम है। अब आप न केवल शरीर के डाक्टर हैं पर मन के भी। डबल डाक्टरी पास करके यदि कोई बैठ जाये तो घर में तो मरीज़ बेचारे तो बीमारी में चिल्लाते ही रह जायेंगे। हमें सीखने का भी जबरदस्त शौक फिर दूसरे के लिए भी इतनी करूणा होनी चाहिए जैसे गुरू मेहनत करता है। प्रेम है एक तरफा **One way traffic** निष्काम मेहनत जरूर ठिकाने लगा देगी। एक का उद्धार किया तो समझो पूरे शहर का उद्धार किया। आपको भी पता चलेगा कि आपके पास कितना खजाना है ज्ञान का, कौन से सही जवाब देकर आते हो, दे सकते हो। वह आपका विश्वास देखकर हैरान हो गया या नहीं। इस बेकार शरीर से किसी का काम हो, किसी के संशय उतरें शक्ति मिले तो यह अच्छा या नींद करके अपना

जीवन गँवाएं तो अच्छा? नींद करके किसी ने जीवन की पहेली नहीं सुलझाई है (**Solve** की है)। आपका असली गुरू नानक भी घर बच्चों के साथ बैठ जाता तो जगत का उद्धार कैसे करता? निष्काम जीवन की चाशनी जिसने चख कर देखी वे सकामी कर्म बन्धन रूप करके समझते हैं। डाक्टर से पूछो कि अपनों का इलाज अपनों को सुख तो हर एक दे रहा है पर ये कहते हैं सबके लिए समान **Same** कम ज्यादा नहीं यही समता योग है। गुरू नानक ने भी अपने स्त्री बच्चों की चिन्ता की क्या? जो इस भगवान के काम पर लगा हुआ है उसके ऊपर कोई भी फर्ज़ धर्म ड्यूटी नहीं है। करे या न करे वह है स्वार्थ के बिना। ज्ञानी कुछ भी करने के लिए बँधा हुआ नहीं है, वह अपनी मर्जी़ का मालिक है उससे कोई ज़बरदस्ती कर्म नहीं करा सकता है जेसे अज्ञानी बैल की तरह आँखें बाँधकर बैठा बोझ ढ़ोता है कि ये मेरे हैं मैं इनका हूँ बस मुझे केवल इनकी चिन्ता करनी है। वह छोटे कुटुम्ब की चिन्ता फिक्र छोड़कर बड़े कुटुम्ब से मिल जाता है सारी सृष्टि का मालिक राजाओं का राजा है उसे कौन कहे कि ऐसा करो वैसा नहीं करो। वैराग्य में अपना शरीर भी याद नहीं है सो सम्बंधी कहाँ से याद आयेंगे। वे गृहस्थ एक–कुत्ते–कुत्ती के खड्डे को समझ कर बैठे हैं। चार दीवारों और छत वाला घर 5-7 बच्चे और स्त्री बस

भोग भोगने हैं, मोह को फर्ज़ समझ कर अपने को शाबासी दे रहे हैं कि हम गृहस्थी हैं पर सच्चा गृहस्थ है घर में स्थित आत्मा रूपी घर में स्थित हों। सारी दुनिया हमारा घर है। आप यहाँ सभी को बहुत याद आते हैं। रोज़ इन्तज़ार करते हैं कि कब आते हो? आप सपने में देख रहे हैं तो हम भी याद कर रहे हैं। **Love wins Love.** आपको गोर शोर (भीड़–भाड़) पसन्द नहीं है (अच्छी नहीं लगती है) जब सबको अपना कुटुम्बी समझेंगे तो मज़ा ही और (अलग) आयेगा। □

पत्र गीता भगवान का -72

खुशी की बात है गुरू को तुम सब याद हो। समय पर हर प्रकार की मदद आपको मिली है और मिलती रहेगी। विश्वास करामतों की करामत है हर वक्त शुकर करो पर फिक्र नहीं करो। फिक्र करेंगे तो **Mood off** हो जायेगा। **Mood off means light off.** अंधेरे में कैसे मनुष्य हाथ पैर मारता है ऐसे ही जब कोई फिक्र करते हो तो **Mood off** हो जाती है उस आत्मा ही **Light** बुझाकर शरीर की अंधेरी कोठरी में गोते खाना शुरू करते हो। गुरू ज्ञान का दीपक मन मन्दिर में हर वक्त जलाना पड़ता है। ज़ाहिर करो ज़ात अपनी दमदम शरीर को भुला दो। वजूद शरीर को भुलाकर दमदम (पल–पल में) अपनी असली ज़ात को ज़ाहिर करो। ज़ात हमारी आत्मा पमरेश्वर परिवार। जो तुमसे उल्टा चले वही तुम्हारे लिए भगवान है बाकी जो तुम्हारी राय का है उसके लिए तो मोह है। ज्ञानी किसी से भी **Adjust** नहीं होता उसका सभी देहधारियों के साथ झगड़ा है। थोड़ा तुम राईट थोड़ा मैं राईट यह कोई ज्ञान नहीं है। या तुम देह हो या आत्मा। कभी देह कभी आत्मा यह सत्य नहीं है। एक आदमी की दो पत्नियाँ थीं एक जवान एक बुड्ढ़ी। जब जवान के साथ घूमने जाता था तो वह कहती थी तुम्हारे जो सफेद बाल हैं वे मैं निकाल देती हूँ नहीं तो तुम मेरे

बाप लगते हो। जब बुड्ढ़ी के साथ घूमने जाता था तो वह कहती थी कि तुम्हारे काले मैं निकाल देती हूँ नहीं तो मेरे बेटे लगते हो। आदमी को ही गंजा बना दिया। ऐसे कभी दुनिया से बन जाते हो कभी गुरू से तो दोनों के पास नहीं होगे इसलिए एक बाजू हो जा।□

पत्र गीता भगवान का -73

आज सुबह दादा ने सत्संग में बोला कि गुरू तो हर वक्त अपनी परीक्षा समझकर आपस को जो जाणे नीचा की तरह चल रहा है। मान और अपमान में सम होने का इम्तहान समझ कर शान्त में रहता है। वह कुछ भी सहता नहीं है, उसे कुछ भी होता नहीं है, दुख–सुख में सम साबित हुआ, रबड़ की गुड़िया की तरह मुड़ सकता है। हर हालत में राज़ी रहता है मौन धारण करता है, दिल में (मन में) हँसता हैं, तरस आता है पर शिष्य बेचारा अहंकार के कारण कुछ भी सुनने को तैयार नहीं है। यहाँ शिष्य में झुकना, नम्रता और प्रेम सहित आदर होना चाहिए वह सबको समझाने पर नहीं आता है ऐसा अहंकार है। मन अपनी भूल मानने के लिए तैयार नहीं है। यदि मन को नंग करे तो जीत जाये पर मन कहेगा कि तुम्हारी इज़्ज़त आबरू रहनी चाहिए पर किसी भी तरह शरणागत नहीं होगा। स्त्रीहठ, ज़िद और अपनी चलाने से बाज़ नहीं आयेगा। नम्रता का अहंकार नम्रता से भी खराब है। गुरू कहता है कि मैंने ज्ञान नहीं दिया है तो शिष्य अहंकार वश कहता है कि मैंने ज्ञान उठाया है। गुरू के हाथ में है क्या ज्ञान देना?

लाखों भलाईयाँ करके यदि गुरू यदि आज गालियाँ देता है तो लाखों भलाइयाँ एक सैकिण्ड में भूल जायेंगी।

गालियाँ देते मुझे चालीस वर्ष हो गये हैं पर आज तक एक जनी भी नहीं निकली है जो कहे कि दादा मुझे गालियाँ लगती ही नहीं हैं मैं आत्मा हूँ। शरीर और मन को कत्लेआम कर डालो कि मेरा क्या। एक-एक जनी पूछने आ रही है कि गालियाँ क्यों देते हो। हमारी गालियाँ अभी तक लग रही हैं तो दुनिया की गालियाँ कैसे नहीं लगेंगी। हमने कोई भी गाली नई नहीं बनायी है सब गालियाँ पहले ही अवतार देकर गये हैं।

भूले भले हों पर एकदम सुजाग हो जाओ। जिन के लिए भूलें की हैं उनसे एक दम जाकर माफी लो। मन को नंगा करो शर्म नहीं करो। मन की इज़्ज़त नहीं रखो। मन बड़ा हरामी है। मन को सज़ा दो और दिलाओ। दिल छोटा नहीं करो कि मन क्यों आ रहा है, बदमाश सुनकर जायेगा। यह मन जल्दी नहीं सुधरता इसलिए ज़रूर दुखी होकर मरेगा। हमने सब जवाब दे दिये हैं अब खुद ही अपना धर्म समझो। पक्के होकर खड़े हो जाओ तो हम भी चिन्ता से छूटे। □

पत्र गीता भगवान का -74

गुरू नानक साहिब ने बोला है आप जपे औरां नाम जपावे। सुनत कहत रहत गत पावे। ज्ञानी का जहाँ पैर वहाँ खैर है। दादा कहते थे कि भाग्यशाली को चाहे समुन्द्र में कोई फेंक दे तो भी वह वहाँ से भी मुँह में मछलियाँ पकड़ कर बाहर निकलेगा। मतलब ज्ञानी को भगवान चाहे कैसी भी हालत में रखे तो वहाँ भी वह फायदे में है पर दूसरों को भी फायदा देकर आयेगा दोस्त बनाकर आयेगा। हर एक हालत शुकराने मनाने के लायक है, शुकराने मानने के लिए है। **You laugh and the world will laugh with you.** तुम हँसो तो सारी दुनिया तुम्हारे साथ हँसेगी, रोना अकेले पड़ेगा। अब कोई कारण नहीं है रोने का। भगवान ने कोई भी दुनिया में मुसीबत पैदा नहीं की है जिससे हम दुखी हों या आँख से आँसू टपकाये क्योंकि यह दुनिया हमारे दुश्मन की नहीं है पर परम मित्र दयावान परमात्मां की है बनाई हुई। जैसे शेर का बच्चा शेर की गर्जना से नहीं डरता है ऐसे परमात्मा का बच्चा भी परमात्मा की कैसी भी हालतों से डरता नहीं है। आपके वहाँ के साथी दुःखी हैं उन्हें आपको ही भगवान में विश्वास दिलाना है जैसे यह यात्रा भी तीर्थयात्रा बन जाये। यह वक्त है सबकी मदद करने का। सुख में तो कोई भी ये बातें सुनने के लिए तैयार नहीं है पर दुखों के

समय हृदय कोमल निर्मल और शुद्ध होता है आप यदि वहाँ ये हमारे भजन गाकर सुनायें तो बिल्कुल सब शीतल हो जायेंगे। इतने दिनों में भजन भी नहीं सीखे हैं क्या सावित्री से। कहो तो हम लिखकर भेजें आप वहाँ सबको गाकर सुनाओ तो सब बहुत प्रसन्न होंगे। भजन परमात्मा से मिलने के लिए **Wireless** बिना तार का रास्ता है तन मन लीन हो जाता है। सत्संग में इतनी ताकत है कि शरीर भूल जाता है मानों कि भगवान सामने खड़ा है जैसे कि हमे उसे बातें कर रहे हैं। श्याम को भजन का इतना शौक है कि खुद तो आनन्द में लीन हो जाता है पर जो दुखी और परेशान दिल वाले उलझन में आते हैं वे भी शान्त होकर सुध–बुध गँवा बैठते हैं। हम सब आपको याद करते हैं उम्मीद है जल्दी मुलाकात होगी।

Throw a lucky man in to the see he will be back with the fish in his mouth.

Everything is right though it seems most wrong. □

पत्र गीता भगवान का -75

खोटा सिक्का अधिक समय तक **Market** में नहीं चलेगा। आखिर पोल खुल जायेगी। ऐसे ही किसी का भी झूठ अधिक समय तक नहीं चलेगा एक दिन पोल पट्टी खुल जायेगी।

धन की चाह में संसार की ठोकरें खाना किसलिए? मान के लिए अपमान सहना किसलिए? यद्यपि लोगों के लिए कंजूस होना खराब है फिर भी यदि कंजूस अपना धन नहीं देता तो उसके लिए कैसी दुश्मनी?

ज्ञानी कहीं भी उपदेश नहीं करता है, उपदेशक बनकर नहीं जाता है ज्ञान सुनाने के लिए पर दूसरे आकर उससे ज्ञान सुनते हैं।

गुरू शब्दों से नहीं पर अपने जीवन से सिखाता है और सुधारता है पर अन्दर का साफ है सरल है और करूणा वाला है होशियार और चालाक नहीं है। गुरू का दिल साफ है। होशियारी नहीं है उसमें। गुरू का प्रेम मौन में है, वह मौन में रहने वाला है। उसे देखते ही तुम्हारे अन्दर में पवित्रता आ जायेगी तुम पवित्र हो जाओगे उसके सामने यदि 10 भूलें करते हो तो पीछे से 100 भूलें करोगे। जब संसार में रोशनी आती है तो दुनिया अंधेरे से प्यार करती है, क्योंकि वे बदकर्मों में फँसे हुए हैं इसलिए रोशनी को धिक्कारते हैं जिससे उनके कर्म प्रगट न हो जायें।

तुम मुझे भगवान क्यों कहते हो जब उस पर चलते ही नहीं हो जो मैं कहता हूँ। एक दिन जो आत्मा के विचार के सिवाय गुज़रता है और मन से हार होती है उसके लिए शर्म आनी चाहिए। जीवन बड़ा दुर्लभ है, उसमें अभी ही आत्मा को समझो। अपनी दुर्लभ घड़ियाँ दुनिया के काम धन्धों में नहीं गँवाओ। तुम समय को **Pass** नहीं करते पर समय तुम्हें खा रहा है। रास्ते में किसी बोझ उठाने वाले को आधे में नहीं छोड़ो पर तुम भी बोझ उठाओ। उसका भी बाँटों। तपे हुए दिलों को शान्ति दो।

निष्काम के बदले आराम की चाह, अभ्यास के बदले उपदेश की चाह उन्नति में रूकावट है।

समुन्द्र में ज़बरदस्त लहरें आती हैं तो सब गड्ढ़े भर जाते हैं ऐसे ही अवतार आता है तो सबके दिल भर जाते हैं।

दुनिया में किसी को पति मिलता है प्यार करता है तो नाज़ में झूमती है ऐसे ही जिसे भगवान मिल गया वह कितना न नाज़ में झूमेगा।

जिस समय मनुष्य मान की इच्छा छोड़ देता है उसी समय हल्का हो जाता है और अहंकार से छूट जाता है।

सोचो कुछ भी नहीं पर जो सामने आये करते जाओ, निराकार की मर्ज़ी से पर अपनी इच्छा कुछ भी नहीं चलाओ। इच्छा विचार फुर्ने अपने कुछ भी नहीं रखो। संकल्प–विकल्प कुछ भी नहीं करो। निराकार में

कोई भी संकल्प–विकल्प नहीं है। तुम शरीर हो इसलिए सोचते हो। तुम्हारे सोचने से कुछ भी नहीं होगा जब कुछ सोचेंगे तो सब कुछ हो जायेगा जो होना है। तुम्हें अपने पर विश्वास है कि मैं आत्मा हूँ? कितने यह समझते हैं कि अभी तो मै आत्मा हूँ पर मरते समय मन पता नहीं कहाँ जायेगा। फिर दूसरा जनम मनुष्य का मिलेगा? यह प्रश्न कोई पूछता है तो यह अज्ञान है।

यदि तुम आत्मा का आनन्द लेते हो तो विषय विकारों से मज़ा नहीं ले सकोगे। सच्चा गुरू सहज प्यार सिखाता है। तुम्हारे में कितने भी अवगुण हैं तो भी मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। यह है गुरू का सच्चा प्यार करूणा वाला। सच्चा गुरू ज्ञान सुनाकर छोड़ देता है, किसी को भी अपने हुकुम या गुलामी में नहीं रखता है। सच्चा गुरू वह है जो किसी का मास्टर नहीं बनता, हुकुम नहीं चलाता। न किसी के **Order** में चलता है न किसी का गुलाम बनता है न ही किसी को गुलाम बनाता है। भय काहू को देत नहीं, नहीं भय मानत आन। न किसी से डरता है न डराता है। अगर गुरू गलती बताये तो अच्छा नहीं लगेगा खुद गलती निकाले तो अच्छा लगेगा। जो अज्ञान में काम किये वह ज्ञानी होकर तुम्हें शोभा नहीं देते। अपने विकारों को देखो दूसरे से नफरत नहीं करो, जिसके विकार दिखें उस पर करूणा करो। □

पत्र गीता भगवान का -76

सभी लिखते हैं कि कोई ऐसी बात लिखो कि हमारा मन वश में हो। मुझे तो समझ ही नहीं आ रहा है कि कोई भी ऐसी छिपी हुई बात है जो हमने अपने पास प्राईवेट रखी हो। बात सिर्फ यह है कि आत्मा को छोड़कर तुम मन के सिमरन में पड़े हो। मन की कभी अलग हस्ती हो भी सकती है क्या? पर तुम्हारा मन भी कहाँ है? बेकार में बदनाम कर दिया है। आत्मा की सत्ता के सिवाय मन की हस्ती हो सकती है क्या? पर तुम्हारा अज्ञान है जो तुम्हें पता नहीं चलता है। ज्ञान कोई नया है क्या जो रोज़ सवाल पूछेंगे, मन को मोड़ेंगे? अब यह पूछो कब लगायेंगे? बेकार में अपने को शरमा रहे हो, खुद भी नर्क में जाओगे साथ ही हमें भी नर्क में खींचोगे। तुम्हें अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए न कि दूसरों के आधार पर। मरने के बाद मुक्त होंगे क्या? या हमारे हाथ में है क्या तुम्हें ज्ञान की पुड़िया घोलकर पिलाना? कुछ समझदारी की बात लिखो जिसे पढ़कर हमें भी खुशी हो पर तुम तो सन्यासियों की तरह डंडा लेकर मन के पीछे पड़े हो। दादा ने हफ्ते दस दिन से यह वाणीं शुरू की है यदि तुम आज भी आप समान नहीं बने या संशय या भ्रम रह गये तो उसमें कसूरवार तुम हो पर उसकी सज़ा गुरू को मिलेगी। तुम्हारी यह मर्ज़ी है क्या कि हम छूटे हुए भी

तुम्हारी वजह से नर्क में जायें पर तुम तो इतने बदज़ात हो फिर भी कहोगे हम दूसरा जनम लेंगे गुरू तुम भी दूसरा जनम लेकर आना तो फिर तुमसे ज्ञान सुनेंगे। अभी तो मनुष्य हो फिर तो घोड़ा, गधा, ऊँट बनोगे और हैवान होकर क्या ज्ञान सुनोगे और समझोगे? इस पद ते जो नर चूके सो आय जाय दुख पायेगा। मनुष्य योनि में मोझ नहीं पा सकते तो पशु योनि में क्या ज्ञान सुनोगे और समझोगे? यह अज्ञान अन्दर से निकालो और जल्दी ही समझ जाओ। जो कुछ भी है कुदरत का खेल बैठकर देखो। गुज़रने से पहले ही गुज़रा हुआ समझने वाला कभी होनी में नहीं जाएगा। हर बात को हँसी मज़ाक में उड़ाने वाला सभी ख्यालों से खाली हो जाएगा। हम इतने बहादुर बनें कि कोई भी लहर हमें हिला न सके। हर एक को यह पत्र अपना समझना चाहिए न कि खास एक का। जो भी माया में आशावादी होकर जायेगा उसे निराशा ज़रूर मिलेगी। ईश्वरीय सृष्टि में तो आज भी दुख, शोक चिन्ता नहीं है। जीव सृष्टि में अनेक दुख और झंझट हैं। ईश्वरीय भावना में कितना दम और पुरूषार्थ चाहिए यह तो हर एक खुद जान सकता है इसलिए तो महापुरूष कह कर गये हैं न मान अपने को कुछ तू, पर कुछ तो मानेगा। मौज–सुख कुछ न मानने से आता है। अपने को कुछ मानने में लाचारी और हैरानी है। प्रिय तुम सभी समझदार हो, सभी

जानते हो, गुरू ने सबकी आँखें खोल दी हैं। एक–एक को दिव्य नेत्र दिये हैं पर उनका उपयोग किस समय पर करें हर एक के ऊपर छोड़ दिया है। यदि अपने साथ समझ रखोगे तो जीवन रूपी गाड़ी आसानी से पार कर सकोगे पर यह तो सभी को अनुभव मिल रहे हैं कि सगल सृष्टि का राजा दुखिया। राजा को भी शान्ति नहीं मिल सकती जब तक उसमें राजा पना है। देह अध्यास छोड़े बिना किसी को भी दिव्य आनन्द शान्ति नहीं मिल सकेगी। इसलिए दादा बार–बार सबको यह **Point** याद कराते थे कि 'जो–जो जाने तिस सदा सुख होई।' यानि जो खुद का अनुभव करेगा कि मैं कौन हूँ, कौन सी हस्ती हूँ, ऐसा पुरूष सुखधाम की सैर करेगा। इसलिए दुख का सपने में भी जनम नहीं हुआ है। माया में तो ज़रूर खेंचातनी होगी, तू मैं होगी। निराकार अन्त तक तुम्हारी सम्भाल करेगा क्योंकि उसी ने तो शरीर धारण किया है तो चिन्ता भी वही करेगा। माया में तो मनुष्य धन का आधार लेकर नाचेंगे पर हम ईश्वर इच्छा पर चलेंगे क्योंकि हरि का भगत हरिजेहरा। पूत हो तो पिता जैसा नहीं तो मूत का मूत। तुम्हारे अन्दर तो इतने खज़ाने हैं कि कभी भी खुटेंगे नहीं। नित–नित होत सवाया। ज्ञानी की सारी सृष्टि सेवा करती है इसलिए फिक्र से खाली रहता है। □

पत्र गीता भगवान का -77

"कबीरा तू कबीर है तेरो नाम कबीर,
राम रतन तब पाइए जो पहले तजे शरीर।"

पहले यह शरीर छोड़ना है कि मैं यह शरीर नहीं हूँ तभी राम रतन आत्मा होंगे। सुमरन माना सुमरण अपनी मौत (खुदी की मौत)। मैं न रहूँ केवल आत्मा रह जाय। सिमरन माना पहचानना अपने आप को। असिमरन माना भुलाना अपने आप (खुदी) को।

तन मन एक रस तो सिमरन कहिए सोय। मन की एकाग्रता ही आत्मा का आनन्द है। जहाँ तन हो वहीं मन हो यह है सच्चा सिमरन। मनुष्य योनि भोगने की नहीं छूटने की है। कर्म काटने के लिए हैं बनाने के लिए नहीं। अपनी देह की रक्षा की जब तक फिक्र है तब तक समझो मरने का डर है। तराजू में काण (खोट) है तो तौल पूरी कहाँ से होगी? शरीर है प्राण सहित इसलिए मरता है, आत्मा है प्राण रहित इसलिए नहीं मरता। तुम्हारे ख्यालों मं खराबी है तो आनन्द कहाँ से आएगा? तुम अल्पज्ञ हो कि मैं आत्मा हूँ, अपने को पहचाना तो सर्वज्ञ भी हो जाओगे कि सब मैं ही तो हूँ। सर्वज्ञ माना सबको जानने वाला।

घर टूटा तो मालिक है न, पिजड़ा टूटा तो पक्षी तो है, तोता नहीं मरा। अज्ञानी का जीना मरने के समान है वह जीते हुए भी मरे के समान है।

जीव भाव है–दासी पुत्र, आत्म भाव है सूर्य पुत्र।

ऋद्धियाँ–सिद्धियाँ वैश्या के समान हैं ज्ञानी उन्हें छोड़ देता है, फेंक देता है। ये बाहरी सुन्दरता है। मन को मोड़ कर आत्मा में जोड़ना सीखो। माया अज्ञानी के लिए नर्क का साधन है। ज्ञानी तो मायापति है। अज्ञानी को माया ज्ञान से दूर कर देती है।

शाहूकार को ज्ञान नहीं लगेगा, शाहूकार माना शाह तो है पर दिल काला है। जैसे नाव को मल्लाह और मल्लाह को नाव लेकर जाती है ऐसे ही आत्मा के निश्चय से देह अध्यास जाता है और देह अध्यास जाने से आत्मा का निश्चय होता है। गुरू वाक्य सत्यम् करो, **Take it from me** विश्वास रखो आज नहीं तो कल आत्मा का निश्चय पक्का हो जाएगा। दिमाग वाले लोग इस बात को नहीं समझेंगे। शाहूकारों को, होशियारों को ज्ञान नहीं लगेगा, बेचारे आते हैं पर समझ नहीं आता है। भोले भाव मिले रघुराई **Collector** और **General** यहाँ से वापस जायेगा।

स्कूल में जाते हो कुछ भी नहीं जानते हो मास्टर ने कहा **A** और **B** तुम ने नहीं कहा कि **A** क्यों **B** क्यों नहीं, तुमने एकदम विश्वास किया। यहाँ भी आते हो तो खाली होकर आओ भर कर नहीं। मैं कहता हूँ तू आत्मा है तो बोलोगे मैं कैसे आत्मा होऊँगा? मैं तो शरीर हूँ। गुरू की मति पर चलो अपने मन मति पर नहीं। कितनी ही बातों पर तुम्हारी गुरू से नहीं बनती है, दूसरों को भी रोकते हो सत्संग जाने से। □

पत्र गीता भगवान का -78

जिज्ञासू को अपनी आवश्यकतायें कम करनी चाहिए जैसे कि मैं हूँ ही नहीं, फिर चाहिए क्या? एक बार पूरन निरइच्छा बनना है। "कोद्रि बि नाहे तुहिंजी दुनिया में मिल्क हिक, पर जे दिल अद्रोल अथेइ त बेशक लहीं थो लख तूँ।" तुम्हारी संकल्पमय सृष्टि है जो तुम चाहो सो तुम हो। मन का काम है अपना काम करना, पर गुरू के विचार हमेशा याद रखो कि मैं तीनों कालों में देह नहीं हूँ। तूम्हारा ख्याल यदि तुम्हें न गिराये तो दुनिया में कोई भी नहीं है जो गिरा सके। इच्छा मात्रम् अविद्या। तुम खुद कोई भी इच्छा नहीं रखो। मिनट–मिनट में सीन बदल रहा है कोई भी फिक्र नहीं रखो मन में। जगत बनिया ही नहीं। गुरू हथियार देता है पर चलाना खुद को है। ज्ञानी न चाहता है न सोचता है वह तो जड़ वस्तु की तरह रहता है। सच्चा पुरूषार्थ जो करता है वह मन्ज़िल पर जरूर पहुँचता है। पर काश कोई देकर यह दवा यह दर्द न छीन ले। माया के विकार मन को वैराग्य दिलाने के लिए जरूर होने चाहिए नहीं तो माया फिर–फिर सुन्दर लगती है तो ज्ञान में आनन्द नहीं है तो दुनिया में जाकर सुख लेता हूँ , पर रोज़–रोज़ मनुष्य का जनम नहीं मिलेगा। आज नहीं समझा तो फिर मुश्किल।

किसी के भी दोष न दिखाई दें। सब में भगवान

देखो। नानक हुकमें जे बुझे त हौ मैं कहे न होय। तुम पुरूषोत्तम में टिक जाओ तो प्रकृति तुम्हारी दासी बन कर खड़ी होगी। हुकुम राजा का राज रानी का। सारी सृष्टि तुम्हारे हुकुम में चल रही है। लाखों खज़ाने लूटने आया हूँ। लाखो लश्कर (फौज) है। यह याद करो कि वह मालिक तुम तब हो जब तुम्हें कुछ भी नहीं चाहिए। क्या माँगू कुछ थिर नाही। मालिक अपने नौकर को ज़रा सी बात पर कदम–कदम पर समझाता है ऐसे तुम मन को समझाओ।

तुम सब मन के पीछे बहुत पड़ गये हो इसलिए मन को जीतना बड़ा मुश्किल समझते हो। रात दिन मन की ताकत से डरते रहते हो पर साथ–साथ ओम का निश्चय पक्का करते चलो। ओम भूलता है तो उसी समय मन आता है पर ओम में निश्चय पक्का करो तो मन नहीं आयेगा। किसी समय मन को **Free** छोड़ो कि चलो मन कहाँ और कब तक चलोगे, फिर क्या होगा, बड़े में बड़ा कौन सा नुकसान होगा जो तुम मुझे इतना डरा रहे हो? ऐसे देखो कि जिस समय तुम सुजाग हो तो चोर आ नहीं सकेगा, सुजागी (जाग्रत) में सपना नहीं आयेगा। गुरू के वचन और विचार याद रखो। क्षण–क्षण में, दिल में गुरू के वचन विचार सदा याद रखो तो मन नहीं आयेगा। प्रभू ते भूलिया तो व्यापन सभेई रोग। ओम भुलाते हो तो सब डर, रोग मन के लगते हैं। मन के ऊपर पहरा रखो। तुम्हें दूसरा कोई काम थोड़ई दिया है। मौन धारण करो,

बोलना बन्द करो। जब तुम मुँह से बोलना शुरू करोगे तो पहले मैं अक्षर निकलेगा सो अपने से पूछो कि मैं कौन? तुम अभी तक कहते हो कि मैं फलानी पर मैं हूँ आत्मा यह समझो तो बोलना ही बन्द हो जाएगा। हौ मैं धीरग रोग है यानि तुम अभी तक शरीर समझती हो पर आत्मा नहीं देखती। ओम केवल कहना काम का नहीं है पर ओम के अर्थ में टिकना है निश्चय करना है कि मैं सतचित आनन्द मुक्त परमात्मा हूँ और सब जो है या नहीं है सो मैं हूँ। मेरे सिवाय दूसरा है ही नहीं। घड़ी इक विसरूं राम कूं तो ब्रहम हत्या मोहे होय। तुम्हें कृष्ण याद नहीं है पर कंस याद है। तन मन समेत तुम शरीर भुलाओ। जीव भाव छोड़कर तुम आत्मा यानि ब्रहमं में पक्के रहो। क्रोध के सिवाय काम नहीं चलता यह कहना गलत है। प्रेम सबसे अधिक ऊचा है। आत्मा यानि ईश्वर जब शरीर में प्रवेश करता है तो उसे जीव कहते हैं। नाम जाति, वर्ण, आश्रम ये सब शरीर के उत्पन्न होने के बाद बनाये गये हैं। फिर शरीर के होते ही बदलते सदलते रहते हैं पर मैं तो आत्मा हूँ। कीता बहता बह गया, कीता बह–बह जाय, ऐसा भेद विचार के तू मत गोता खाय। नानक कहता है कि कितने बहते बह गये, कितने बहते जा रहे हैं पर यह भेद विचार कर तुम गोता नहीं खाना। अन्दर में ख्याल है कि मन बड़ा बदमाश है और तुम डर जाते हो पर तुम मन के मालिक हो यह याद करो। तुम हो मायापति तो माया क्या

करेगी? तुम पुरूष हो तो प्रकृति तुम्हारी दासी, तू सागर और जगत तुम्हारी लहरें। पूरा दिन भगवान याद नहीं है इसलिए डर में रहते आते हो। मेरा एक–एक शब्द विचारो। जैसे मन खराब ख्याल लायेगा ऐसे अपना फायदा समझो क्योंकि जैसे मन डरायेगा वैसा होगा नहीं फिर शुकर करेंगे कि अच्छा हुआ ऐसा हुआ नहीं। मन से ऐतबार (विश्वास) निकल जायेगा कि सच में जैसा मन कहता है वैसा होता तो नहीं है। मन आता है डराने के लिए, तुम चिढ़ोगे तो तुम्हें चिढ़ायेगा, यदि तुम न डरो तो तुम्हें कोई डरा नहीं सकता है। तुम्हारा ख्याल तुम्हें दुखी न करे तो भगवान भी तुम्हें दुखी नहीं कर सकेगा। अपने को दुखी बिल्कुल नहीं मानो क्योंकि तुमसे अधिक दुःखी दुनिया में हैं। जैसी दृष्टि तैसी सृष्टि। चम दृष्टि नहीं पर सम दृष्टि। काम दृष्टि नहीं पर राम दृष्टि। मायाकार वृत्ति नहीं पर ब्रहमांकार विरती दिव्य दृष्टि धारण करो, दम दृष्टि रखो। मेरा ज्ञान सूखे वृक्ष हरे करता है जिसे निहारूँ वह भगवान है। तुम्हें अपने में विश्वास नहीं है, बेईमान हो। गुरू में विश्वास नहीं है नहीं तो बताओ कि तुम स्वाभाविक मुक्त हो फिर विश्वास क्यों नहीं करती। सिखु रम्ज़ विजूद विञांइण जी। अपने अहंकार सहित देह को गँवाने की रमज़ सीखो। छो थो सरीर सद्राए तूं सूर सहीं। शरीर कहलवा कर क्यों दर्द सहते हो। आप विसर्जन होय। मैं ना, अहम् भाव छोड़ो। खुदी छोड़ कर खुदा हो जाओ। किसी भी कर्म के कर्ता नहीं बनो। निष्कामी अकर्ता है।

शुभ चाहे अशुभ कर्मों का त्यागी विशेष है। दृष्टा बनकर कभी भी कर्ता नहीं बनेगा। गंगा सागर में मिली फिर वह गंगा नहीं हो सकती। सम भाव सम दृष्टि, समत्व बुद्धि **Someness of Oneness** देखो। केवल राम। सब सत्कर्म सकामी जनम मरण में भटकाते हैं। अज्ञानी है आग जो सबको जलाती है पर ज्ञानी है आग का चित्र, आनन्द स्वरूप प्रेम का सागर, जगत पति, सबका साक्षी, अपना तमाशा खुद देखता है। ज़ाहिरी बदलाव यद्यपि अज्ञानियों में देखने में आता है पर ज्ञानी के निश्चय को हिलाता नहीं है। भ्रम गया तो ब्रहम हुआ। बड़ा भ्रम है देह का। संसा मूल चुकाया तो आतम प्रतीताया। सच्चे गुरू का पता उससे चलेगा जो उनसे आप समान बनाया होगा। काचे गुरूते मुक्त न होय। गुरू में मालिक प्रगट है वह **God Man** यानि **God + Man** है। अब यदि तुम गुरूमुख तो तुममें परमात्मा आ गया या नहीं? गुरू नहीं कहता है कि मैं व्यक्ति हूँ, मनुष्य हूँ पर गुरू है ईश्वर। यदि गुरूनानक अपना चोला (शरीर) छोड़ने के बाद भी मुक्ति दे सकता तो फिर अंगद साहिब को गद्दी देने की क्या ज़रूरत थी? गुरू अंगद ने फिर अमरदास को दी। मतलब है कि हमेशा ज्ञान जीते सतगुरू से मिलेगा बाकी सन्त की महिमा वेद न जाने। इल्म वह सच्चा है जो प्रीतम दिखाये, वह है ब्रहमंज्ञान (विद्या)। जो जगत मिथ्या समझ जाये उसने मानों कि परमात्मा पाया या जो परमात्मा जान जाये उसके लिए जगत मिथ्या है। मक्खी जैसे सारा शरीर

छोड़ जाकर ज़खम पर बैठती है ऐसे तुम्हारी नज़र गुरू के ऐबों पर जाती है पर गुणों पर नहीं। तुम्हारा धर्म हे गुण ग्राहक दृष्टि रखना। ज़बान से हर एक ज्ञानी है पर कोई बिरला अभिमान से छूट सकता है। बिल्ली का अहंकार छोड़कर ऊँट का अहंकार करते हो। मन कहीं भी जाता है तो मेरे में जाता है क्योंकि सर्व आत्म भावना जो है। सम में वसे थो साांई, घट वध छो कहिंखे भांई। जो अभी की हालत में नाराज़ है वह किसी भी हालत में राज़ी रह नहीं सकेगा। आखिर भी अपने को हालतों के अधीन नहीं करो। जानवर भी सुख में सुखी और दुख में दुखी होते हैं पर इन्सान का मरतबा (पद) ऊँचा है जो दुख में भी सुखी गुज़ार सकता है। दुख सुख जिस सम कर जाने, सम दृष्टेता, नानक पाप पुण्य नहीं लेपा। हकीकत में हिकु पर ज़ाहिरीअ में ज्यादह। हकीकत में एक है पर बाहर से अनेक दिखाई देता है। सांई लोक पुकारदे कर कर लम्बे हाथ, तू परमातम देव है तू है त्रिलोकी नाथ।

दानी समझते हैं कि दुनिया में सहायता की ज़रूरत है पर सृष्टि अनाथ नहीं है। तुम अहंकार नहीं करो, 'द्रिये थो मथों पर कहिंजे हथां। देता है ऊपर से पर किसी के द्वारा।

दुःख में ऐसी ताकत है जो सैकड़ों सुखों को नाश कर देती है ऐसे नीच सुख के लिए तुम तड़प रहे हो। गुरू ने कहा मत पर, मेरी तरह दृष्टा, सब मैं ही तो हूँ। दूसरी बातें भुलाकर केवल यह अभ्यास करो। ज़िन्दगी कुछ नहीं है केवल ख्यालों की गड्डी है।

To see God is to be God. It is a sin not to say 'I am God.' God you are indeed only feel that and live as that.

जब है ही संकल्पमय सृष्टि फिर क्यों न अच्छा (उम्दा) संकल्प करें। **AS you think so you become.** क्यों नहीं कहते कि मैं शाहों का शाह हूँ। तुम्हारी सूक्ष्म इच्छा तुमसे यह नहीं कहलाती है। विरती तीन प्रकार की है।

१. प्रिय– आम देख कर लेना (सत्संग सुनना)

२. मूध – पैसा देकर आम लेना (मनन करना)

३. प्रमोध– आम का स्वाद लेना (निध्यासन) आत्मा का अनुभव।

उलझी हुई सूत की गाँठें खोलेंगे तो बहुत देर लगेगी और शायद सूत खुलने के बदले और उलझता जाये पर कैंची लेकर काटना सरल है ऐसे कर्म काटने हैं। झेड़ा तो होगा निबेरा। झगड़ा करेंगे तो फैसला हो जायेगा।

जिस कुत्ते के गले में पट्टा बुँधा हुआ है उसे कोई हाथ नहीं लगा सकेगा क्योंकि उसे मालिक वाला समझते हें। ऐसे ही जिसके ऊपर परमात्मा का हाथ है उसका कोई भी बाल भी बाँका नहीं कर सकता है। कोर्ट में जज क आने से शान्ति हो जाती है। ज्ञानी के मौन में ही शक्ति है।

Word is the grand son of Atma.

आत्मा का पुत्र फुर्ना उठता है, फुर्ने से शब्द (फुर्ने का बेटा) बोलते हैं यानि शब्द आत्मा का पोता है। आत्मा में दादे **(Grand Father)** तथा शब्द में पोते की ताकत है।

गिला प्रेम की माला का मोती है, अपयश इश्क की ज्योति का उजाला है। जीव है तालाब के समान तालाब में दरिया का जल नित नया न आता रहे तो तालाब में काई बन जाती है और मच्छर कीटाणु उत्पन्न हो जाते हैं और उसमें अपना घर बना लेते हैं। इसी तरह दिल रूपी तालाब को प्रेम रूपी नाली के ज़रिये परब्रहम रूपी अमृत दरियाह से हमेशा ताज़ा रखो।

दिल मेरी है फ़ानूस और दिल है मेरी जलती हुई शमा।
दुनिया का सारा तमाशा अन्दर ही अन्दर बैठकर देखता हूँ।

हमेशा सावधान रहना है। घड़ी इक विसरूँ राम कूं तो ब्रहमहत्या मोहे होय। पहले उलझन होती है सो वह जो ज़रूरी है। जैसे–जैसे गहरे जायेंगे, प्रीत बढ़ेगी, निष्काम कर्म करेंगे। निष्काम कर्म माना अपने आप ही कर्म सामनें आयेंगे। अपने को इतना हल्का करना है। जैसे पुरानी जुराब फेंक देते हैं ऐसे मैं हूँ ही नहीं, है ही भगवान। हमें केवल अपना उद्धार करना है दूसरा है ही नहीं जिसका मैं या तुम उद्धार करें। सब मैं ही तो हूँ। मेरे सिवाय तुम नहीं हो तुम्हारे सिवाय मैं नहीं हूँ। जुदाई रखना ही पाप है। दिल तेरा मेरा एक है हम दोनों को बहुत एक दूसरे के लिए प्यार भरी तड़प है। सूफ़ी कहते हैं "सिकां सिकां शाल न मिला, मतां मिलन्दे ई माठ अची वञे।" तड़पते रहे मिलें नहीं, कहीं मिलते ही ही ये तड़प शान्त न हो जाये। □

पत्र गीता भगवान का -79

एक लाल मिलने से खुशी छलकती है पर सो दर कैसे छोडूं जिस दर पर इतना हमारा दाद है मान है। 'सो दर कींअ छोड़िया जो दर दाद करे।' जिज्ञासू का काम है भगवान की इतनी प्रशंसा करे कि वे जल्दी परमात्मा के पास पहुँच जाये। उपजे चाह साध के संग। एक दृष्टान्त है कि एक आदमी सत्संग में गया पर देर से तो उसे बहुत पीछे जगह मिली दूर सो क्या किया आगे बढ़कर जाने के लिए एक–एक रूपया लोगों को देता हुआ आगे–आगे गुरू के सामने जाकर पहुँचा सो इतनी सत्संग की कदर करनी चाहिए। माया मुँह फाड़कर खड़ी है, तुम्हारे लिए तो है ही भगवान। एक बार जगत को जिसने झूठा समझा कि जगत मिथ्या है केवल भास रहा है, मन की कल्पना है वह अब देखता ही जगदीश है। तुम्हारे सिवाय दूसरा है ही नहीं सब स्वरूप तुमने ही धारण किये हैं तुम इतने बड़े होकर खड़े हो। कुछ समय मौन धारण करके देखें। तुम्हारे हर एक लफ़्ज़(शब्द) में विनम्रता है? ब्रहमज्ञानी ऊँच ते ऊँचा पर मन अपने ते सबसे नीचा। शरीर करके अपने को सबसे कम समझना है। जो कुत्ते और गधे को भी नमस्कार करता है कि यह आत्मा है तो उसका अहंकार गया हुआ कहेंगे। मैं ना पहले सीखना है। जब टोटली शरीर की मैं ना होगी तभी आत्मा का अहंकार

खुद ब खुद प्रगट होगा। 'अल्लाह लहू तो क्या कहूँ, कहूँ तो उपकार। परमात्मा की बोली है मौन। ज्ञानी का बोलना इतना नहीं सिखाता जितना मौन। इस ज्ञान में गम्भीरता रखनी है। धीर पुरूष बनना है।

न धन जी ख्वाहिश न तन जी ख्वाहिश
ख्वाहिश रूग्रो थी तुहिंजे पसण जी
सम में आही तूं तो में आहे सब कुछ
कोशिश करियां सम मे तोखे पसण जी
अविद्या जे आझड़ भुलायां न तोखे, हरदम त्यारी रखां
पाणं में पेही थी द्रोह द्रुखन खां न्यारो
बेगमपुरा बाज़ार में,

द्रिसु पहिंजो पाण नज़ारो, कदी ख्याल ख़ुदीअ जो सारो।

कोई भला कहे आवें बुरा कहे हम तन दियो है डार लोगों की प्रशन्सा और चतुराई को उठाकर आग में डाल दो। मैंने तो अपना तन उठाकर साईं के चरणों में डाल दिया है भले ही कोई बुरा कहे या भला।

राम भी मशहूर है रावण भी पर राम दिल के ऊँचे तख्त पर चढ़ा हुआ है जिनका नाम लेते तन मन शीतल होजाता है पर रावण नफ़रत का पुतला हो गया। आज तक दुनिया उसके शीशों को जला रही है। उसके अहंकार को आज भी मार रहे हैं पर राम का ख्याल करने से अहंकार अपने आप मर जाता है। वह ज्ञान का आदर्श था,

वह अज्ञान और अहंकार का। हमें दोनों से सीखना है। रावण यदि नहीं होता तो राम की बढ़ाई (महानता) भी नहीं होती। रावण के जुल्म में भी इन्साफ, रावण को मारने में भी इन्साफ।

जिज्ञासू की सच्ची पुस्तक है गुरू। एक भी ख्याल जो प्रियतम के ख्याल से विरूद्ध है वह भगवान से दूर करता है।

दुनिया सतपुरूषों को गाली देती है पर वे आज भी हैं।

Give- as the rose gives purfume as it is its nature.

उदासीन—बेवास्तेदार।

गौतम बुद्ध ने मन को कहा मैं पूरण हूँ मेरे में कोई भी खोट नहीं है तो मन भाग गया।

मन को शुकरानों की भट्टी में डाल दो। ज़बरदस्ती भी शुकराने मानो तो खुशी आ जायेगी। गुरू ने सब कुछ तुम्हें दे दिया है। हर वक्त तुम्हारा ही ख्याल है। जैसे माँ की खुशी बच्चे की लायकी लगने में होती है बेटा डाक्टर है या बैरिस्टर होकर अपने पैरों पर खड़ा होता है तो माँ भी खुशी करती है ऐसे गुरू की खुशी इसमें है कि तुम आनन्द में रहो। □

पत्र गीता भगवान का -80

अब तो लखनऊ को मथुरा वृन्दावन बना दिया है। मन का विकल्प ही है जो गिराता है। सब जगत मन में पड़ा है बाहर कुछ भी बना ही नहीं है। कमज़ोरी मौत है। न कुछ हुआ है न होगा न हो रहा है। है ही सपना और खेल पर यदि सत्य समझेंगे तो संकल्प–विकल्प भी सच लगते हैं। संकल्पों की बड़ी सिद्धी है। मन ने ही फुर्ना रचा कि ये मेरे सम्बंधी हैं। पर हे अर्जुन ये सब मरे पड़े हैं यह किस समय देखेंगे? जब माया पति हो जायेंगे तो एक भगवान के सिवाय सब माया ही है। ऐसा कृष्ण है जो सम्बंधी सब मरवा देता है, अपना आप गँवाता है, दिलदार के दर्शन में। निर्भय होने के सिवाय ज्ञान कौन सा? गुरू बाबे में बोला है कि निर्भय होय भजो भगवान। जो निर्भय सो अकाल मूरत अजूनी स्वयंभव। हिम्मत से हौसला ठीक रहता है। हिम्मथ वारन जी दिलयुन में नित रहे थो हौंसलो। कमज़ोरी से रहना दुनिया में पाप है। अपने में विश्वास रखो तुम शाहों के शाह हो। जैसी प्रीत हराम में तैसी हरि में होय। यह अपने को आज़माओ कि पहले भी मीरा, बुद्ध, नानक ने कैसी चलन की। हमें लोक वासना गिराती है। देहवासना भुलाने के सिवाय कुछ भी हासिल नहीं होना है। केवल कहना है क्या कि जगत बनिया ही नहीं? सचमुच ऐसा बनकर खड़ा होना है। मैं क्या नहीं हूँ

यह नशा हर वक्त रखना है। कर्ताभाव ही दुखी करता है। मैं ना तोते वाली दिखाओ तभी उसे पिंजड़े में से निकाल दिया। तुम तो सबको अच्छा बनकर दिखाते हो कि मैं काम काज घर के पूरे करके खाली, फुर्सत के समय सत्संग में जाती हूँ। खाज़ी प्रेम में लड़की सब कुछ छोड़कर एक की संगत में जाती है। या कुछ करके दिखाओ या मर के दिखाओ। मरण खां अग्रु भरी जे तूं त माणीं मौज सुखदाई। जीते जी जंजीर उतारो मरने के बाद किसने देखा है। आखिर तो जिसके होंगे उसी के कहलायेंगे। केवल भजन नहीं गाना है कि "तुहिंजी आहिंया तुहिंजी रहन्दसि तोसां नीह ग्रन्ढियो थम। सोन जा सिक्का सोन जा आखिर थीन्दा सोन जा। □

पत्र गीता भगवान का -81

मैं वह दिन देखना चाहता हूँ जिस दुनिया में एक-एक सुजाग हो जाये कि मैं भगवान हूँ। भगवान ही दुनिया में रहे। जितना तुम भाव का भाण्डा लेकर आओगे उतनी तुम्हारे ऊपर मेहर आर्शीवाद होगी। भाण्डा भाव अमृत तित डाल।

Self is full of grace तुम्हारी आत्मा भरा पड़ा है आर्शीवाद से। **Be you as pure as perfect as your father is in heaven.** ऐसे पवित्र बनो जैसा तुम्हारा पिता है स्वर्ग में।

महर्षि से किसी ने पूछा कि मैं कैसे रहूँ दुनिया में? महर्षि ने कहा दुनिया में ऐसे चलो जैसे अभी मौत का समय है। मौत के समय क्या करोगे? बोला मौत के समय सबसे माफी मागूँगा, बुलाकर मिल्कियत बाँट दूँगा, किसी पर भी गुस्सा नहीं करूँगा, काम का ख्याल नहीं करूँगा, भगवान का सिमरन करूँगा, उसकी याद में रहूँगा। महर्षि ने कहा अभी ही ये सब कर लो, मौत के समय खाने पीने, भोगों और घूमने फिरने की इच्छा नही करोगे तो अभी ही निरइच्छा बन जाओ।

कबीरा तू कबीर है, तेरो नाम कबीर।
राम रतन तब पाइए, जो पहले तजे शरीर।।

भगवान ने शरीर दिया है दुःख सहने के लिए। यह

शरीर गधा है उस पर बोझ रखकर खुद घोड़े सवार हो जाओ। गुरू को सेवा लेनी नहीं पर तुम उसकी सेवा करते हो तो उसमें तुम्हारा फायदा है ऐसा समझकर सेवा करो बाकी तो गुरू को भी सेवा नहीं लेनी है पर करनी है। खाली होकर आओ तो गुरू का ज्ञान अन्दर जायेगा। सबको भुलाकर आओ जो भी देखा है पढ़ा है वह भी भुलाकर आओ। प्यासे के लिए समुन्द्र का पानी व्यर्थ है ऐसे ही अज्ञानी के लिए शास्त्र व्यर्थ है। अग्नि का चित्र अग्नि के तेज से रहित है। ऐसे ही ज्ञानी के कर्म भी देखने मात्र हैं, उसमें कर्ताभाव नहीं है बदला लेने का आनन्द एक दिन का है पर सहना, भुला देना हमेशा आनन्द देता है शान्ति देता है।

समदृष्टि सतगुरू करी, मेरो मरम निकाल
जहाँ देखूं तहं एक है, साहिब का दीदार।

समदृष्टि तब जानिये जब शीतल समता होय,
समजीवन को आत्मा लखे एक सा होय। दूजा को देखूं नहीं राम रहिया भरपूर।

"गुरू सों ज्ञान लीजिए तो शीश दीजिए दान,
बहुते मूरख रह गये, राख देह अभिमान।"

"जो हिम्मत दिल से करता है वह भवसागर से तरता है।" बन्दा बे हिम्मत वो खुदा बेज़ार। दलेलबाज़ी से दिलबर नहीं मिलेगा। अकल से रहबर के करीब नहीं हो सकेंगे। जितना तुम भाव का भाण्डा लेकर आओगे उतनी तुम्हारे ऊपर महर आशीश होगी। जो सबसे अधिक गुरू

को प्यार करता है वह गुरू का शिष्य कहलाने लायक है। यदि एक भी वस्तु दुनिया में गुरू से अधिक प्यारी है तो अभी भक्त कहलाने के लायक भी नहीं हो। गोपियों को प्रेम था। हम ज्ञान को इतनी **Value** नहीं देते जितना प्रेम को। प्रेम बिना कोई पार न आवे, बात करे जम सूआ।" पण्डित भी गुरू प्रेम बिन लहे न आतम राह। ज्ञान से भी ऊपर विज्ञान है। जब तक गुरू का आदर्श सामने नहीं रखा है तब तक तुम्हें ज्ञान नहीं होगा। ज्ञान केवल सुनना सुनाना नहीं है पर खुद को प्रेम के रंग दें गुम हो जायें। प्रेम में ही गुम होंगे। ज्ञान से भगवान को जानोगे पर प्रेम से तो खुद भगवान हो जाओगे। गोपियों जैसे प्रेम ज़रूरी है नहीं तो पण्डित हो जाओगे। केवल ज्ञानी पने का अहंकार है, कोई भी दुनिया में सच्चा प्यार गुरू जैसा नहीं करता। तुम्हारा सच्चा प्यार तो गुरू तो तुम्हारे लिए सब कुछ छोड़कर यहाँ आया पर तुम सब कुछ छोड़कर गुरू के पास आये हो? गुरू के पास बैठे हो? एक मनुष्य का जनम, दूसरा गुरू कृपा (सच्चे गुरू का मिलन) तीसरी अपनी कृपा हो तो मुक्ति अवश्य ही मिलेगी। "सन्त कृपाल कृपा करे तो, सन्त के संग निन्दक भी तरे।" जो भगवान नहीं कर सकता वह गुरू कर सकता है।

ज्ञानी चन्दन है जिसे कामना का कीड़ा छू भी नहीं सकता है। गुरू से प्रीत चाँद और चकोरी जैसी होनी चाहिए। जितनी हमारी चाहना है, श्रद्धा है उतना गुरू का प्रेम है तुम्हारे साथ।□

पत्र गीता भगवान का -82

गृहस्थ में रहते हुए तुम्हारे अन्दर अधिकार भावना आ जाती है जबकि सब कुछ है ही भगवान का। भगवान की शक्ति से ही सब कुछ होता है। जब किसी आकार में फँस जाते हैं तो निराकार को भूल जाते हैं। जब तक खुद आत्मा के निश्चय में नहीं रहते, सामने वाले में भगवान नहीं देख सकते हैं।

The whole world is filled with God.

बर्फ की पूरी सिल्ली पानी है, विश्वास नहीं आता पर पानी तो हो जाता है, वही पानी भाप बनकर उड़ जाता है, बर्फ से जल, जल से बर्फ बनता देखते हैं पर विश्वास नहीं होता कि "कोई जगह न तुझसे खाली है तू व्यापक डाली–डाली है।" जैसे शरीर के भीतर बहुत जगह है, इन्जेक्शन लगाते हैं, ग्लूकोज़ या ब्लड चढ़ाते हैं तो सब चला जाता है ऐसे ही भगवान अन्दर बाहर सब जगह बैठा है, आँखें कोई चीज़ नहीं देखती हैं फिर भी भगवान है, दिखाई नहीं देता पर अनुभव किया जाता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, भूख, प्यास दिख नहीं सकते पर अनुभव कर सकते हैं। जब तक खुद को आत्मा नहीं जानेंगे तब तक तुम्हें भगवान नहीं दिखेगा। है ही भगवान जगत नहीं है। तुमको गुरू सावधान करता है तो क्यों नहीं सावधान होते हो?

भगवान बोलता है कि मैं तुम्हारी तरह योग माया से घिरा हुआ आता हूँ पर उसके अधीन नहीं हूँ। तुम माया के गुलाम बन जाते हो। घर में कोई चीज़ खो जाती है तो तुम नौकर को चोर समझते हो पर चीज़ मिल जाती है तो भाव बदल जाता है। सारा संसार तुम्हारे भाव पर आधारित है। तुम्हारा कोई नुकसान नहीं करेगा जब तक तुम भगवान का भाव रखोगे। □

पत्र गीता भगवान का -83

भगवान को जानी जानन हार कहा गया है। दिल को जानने वाला, सो उसे पता था कि क्यों यह शरीर यहाँ पहुँचा है। यहाँ तो सर्व अर्पण करने के सिवाय यह मंन्ज़िल हाथ नहीं आयेगी। लोकारीत ज्यों का त्यों काटनी है। गुरू की आज्ञा के सिवाय एक भी कदम नहीं उठाना है। बिल्कुल मर कर मिट्टी होना है। अपने बारे में कुछ भी नहीं सोचना है। अब मैं नही हूँ है ही साजन। सधुन सन्दो हीउ सौदो नाहे। पाणहई मिलन्दुइ होत पर तूं बि थिजाइ कुछ अगुभरी, मता चवई बरोज त कमीनीअ मां कुछ कीन थियो। (भगवान अपने आप मिलेगा पर कुछ तुम भी आगे बढ़ना, कहीं प्रियतम यह न कहे कि इस कमीनी से कुछ न हुआ) रम्ज़ और मर्यादा का ज्ञान अभी कब तक चलेगा? आखिर तो आगे बढ़ना है, ऊपर चढ़ना है। हम समझते हैं कि हम रोज़–रोज़ उन्नति कर रहे हैं पर यह तो गुरू ही जानता है कि इनकी नाव किनारे से बँधी पड़ी है केवल चप्पू चला रहे हैं। सो गुरू के संग के सिवाय रस्सी किनारे से नहीं टूटती है। जहाँ हमारी उन्नति हो वहाँ पुरूषार्थी करके जाना चाहिए। मन का स्वभाव है जहाँ खड़ा है वहीं शान्त में ठन्डा हो जाता है कि यहाँ बड़ा आनन्द है पर अपने से ऊपर वाले का संग करने से ही अपनी कमियों का पता चलता है। अपना सीखना कभी

भुलाना नहीं है।

वृक्ष पाताल में अपनी जड़ पक्की करके बाकी फल फूल सबके आगे रखता है भेंट करता है। इसी प्रकार हमें भी अपनी जड़ पाताल तक पहुँचानी है यानि पक्की नेष्ठा में रहना है बाकी फल फूल ज्ञान प्रेम सबके आगे भेंट रखना है पर हर वक्त देखना है कि मेरी जड़ कहाँ है "और उपदेशे आप न करे, आवत जावत जमे मरे।" हमारा जनम मरण कटा हुआ है अभी किसी में फँसे हुए हैं। गुरू यदि कहे कि अभी आओ तो सब कुछ छोड़कर जा सकते हैं? जैसे एक गुरू ने शिष्य की वेदी पर बैठे हुए परीक्षा ली कि 'आ जाओ' वह स्त्री का हाथ छोड़कर भी गया। हमारा त्याग कितना है? अपने से नित्य पूछना चाहिए। जहाँ तक पहुँचे हैं वहाँ तक तो बहुत कुछ सीखे हैं पर अभी भी कोई मंज़िल है जहाँ चढ़ना है, थोड़े बहुत में खुश होकर नहीं बैठें। मन्ज़िल तो तेरी दूर है, जाना ज़रूर है चलते मुसाफिर रूक जाना नहीं। आगे कदम बढ़ाना, पीछे लौट कभी मत आना। □

पत्र गीता भगवान का -84

सब मौज आनन्द में गीत गाते आगे बढ़ते चलो। रूकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान, चल चल रे नौजवान। आगे बढ़ा कदम, मत डरो आँधी और तूफानों से। तुम तो मुझसे भी होशियार हो गये हो। बाकी क्या चहिए? क्या नहीं समझा है? तुमने एक–एक बात में मेरे शुकराने माने हैं और प्रशंसा की है पर उससे अधिक तो मैं तुम लोगों के शुकराने मानती हूँ जो तुमने मुझ स्त्री रूप में आये हुए भगवान को भी पहचान लिया। भगवान को पहचानने वाला तो भगवान से भी बड़ा हुआ। अर्जुन न होता तो गीता कैसे बनती? कृष्ण को सारी दुनिया कैसे पहचानती? यह तो अर्जुन की ही बड़ाई है इसलिए तो कृष्ण भी मोहित हो गया अर्जुन के पीछे कि हे अर्जुन तुम मेरे परम प्यारे हो। भगवान आये दुनिया में पर यदि कोई न पहचाने तो फिर जैसा आया तैसा गया। तुम्हारे जैसे भगत अगर न मिलें तो यह आना भी व्यर्थ हो जाता। पर तुम लोगों ने ही मेरा आना सफल किया जिसके लिए लाख–लाख भलाइयाँ मानती हूँ तुम्हारी। तुमने लिखा है कि दया दृष्टि रखते आना। वह तो है ही दयालू। तुम्हें यदि कहीं जुल्म दिखाई भी दे पर वहाँ भी उसकी दया ही है। तुम्हारे ऊपर पहले अभी या इसके बाद भी उसकी दया ही है। अब जब तुम खुद भगवान हो सो कौन दया करे और किस पर करे। अब तो दया शब्द भी बनता नहीं

है। दया भी दूसरे पर करते हैं फिर द्वेत में आये तब दया करे। इसलिए दया हर एक अपने ऊपर करे। 'कृपा करे जे आपणीं तां गुरू का शब्द कमाय।' जो अपने ऊपर दया करेगा वही गुरू का शब्द कमायेगा। यदि भगवान के हाथ में हो तो सारी दुनिया को ही तार दे। पर तरेगा हर एक अपनी बांहो से। तुम्हारे जैसी सच्चाई सफाई देखकर मुझे बहुत खुशी हुई है जो तुमने एक-एक दिल की बात मुझसे की है। जिस समय मन बेचा गुरू के पास उसी समय ही तुम्हारा अन्तःकरण साफ हो गया। जप-तप ध्यान, हवन, यज्ञ व्रत नेम करो तो तुम्हारा अन्तःकरण साफ हो फिर ही ज्ञान के तुम लायक होगे सो ही ऐसे ही बाबा ब्राहमणों ने सबकी उम्र ही गँवा दी। जो मुक्ति के लायक है उनको भी मीठी वाणी सुनाकर स्वर्ग के सुख व आश्वासन (दिलासे) देकर सत्कर्मों में फँसा दिया है। हज़ार वर्ष तपस्या करने से अहंकार बढ़ता है पर दो घड़ी सत्संग सुनने से अहंकार चला जाता है क्योंकि गुरू सिखाता है मै नां। मैं हूँ ही नहीं है ही भगवान। अब तक आत्मघाती महापापी होकर बैठे थे, सत्कर्म किये उल्टा अधिक बन्धन रूपी जंजीरों से बंधते गये। 'कर्मी तो आवे कपड़ा, नदरी मोक्ष द्वार।' बिना आतम ज्ञान ममत न मिटे मन की चाहे सैंकड़ो साधन करो, पढ़ो वेद पुराण, गीता में भगवान ऐसा कहा अर्जुन को मेरा कोई शिष्य नहीं है। सन्त करे आप समान। जहाँ गुरू और शिष्य है वहाँ द्वेत है। है ही भगवान। जो मैं हूँ

सोई तुम हो। एक दम निश्चय करो। शरीर से ऊपर चढ़ो। शरीर में ही गुरू शिष्य है। मैंने तुम्हें बताया है कि तू है भगवान उसमें नहीं है शक गुमान। फिर भगवान कैसे शिष्य होगा। कभी भी अपने को कम नहीं समझो। तुम अर्जुन से भी ऊँचे हो, निर्विकारी, निर्दोष, शुद्ध आदि से मुक्त आत्मा हो। देह से तुम्हारा तीनों कालों में वास्ता नहीं है। देह के बारे में बोलना, सोचना भी पाप है। मेरे जैसा न हुआ न होगा। इस खुनकी में रहो। आत्मा समान दूसरा कुछ है ही नहीं। सारा जगत तुम्हारे ही आधार पर चल रहा है। तुम्हारे हुकुम में सूर्य चन्द्र तारे चमक रहे हैं। इतने बड़े तुम हो केवल हठ छोड़ो। घर बार शरीर से आसक्ति निकालो। न कुछ तुम्हारा है न तुम किसी के हो। तुम तो बेहद के मालिक हो। सारी सृष्टि तुम्हारा ही घर है कुटुम्ब है। सारी दुनिया से प्रेम करो। सारी सृष्टि तुम्हारी ही देह है, सब प्राणी तुम्हारे अंग हैं। जैसे देह का हर अंग प्रिय है ऐसे सब कुछ तुम्हें प्रिय लगना चाहिए। न राग न द्वेष। सबसे मिला हुआ पर रहता है सबसे न्यारा। ना किसी से दोस्ती नां किसी से बैर। सब जगह अपना ही दीदार करो जहाँ-तहाँ मैं ही हूँ फिर डर किसका, वैर किससे, क्रोध किसं पर काम किसके लिए, लोभ काहे के लिए, अहंकार किसलिए, मोह किससे? सब विकार द्वेत में दूसरा देखने से होते हैं पर अन्दर से राग द्वेष निकालकर फिर मौन धारण करो। प्रेम की दृष्टि

सबके लिए हो। नफरत न हो–न ही मोह पर प्रेम। प्रेम में कोई भी वर्तन नहीं करनी है पर दृष्टि अच्छी रखनी है। व्यर्थ बोलने की ज़रूरत नहीं है। काम से बात करने की मनह नहीं है। तुम्हारा प्रेम सच्चा है तो तुम मन्ज़िल पर पहुँचे हुए हो कोई भी चिन्ता नहीं करो, अपने आनन्द में चलते चलो। रास्ता आगे साफ है। कोई भी शक्ति तेरे को रोकने वाली नहीं है। व्यवहार करते हुए भी ज्ञान नहीं भुलायेंगे। सो आत्मा में व्यवहार होता है क्या? फिर शरीर की बात क्यों की?

व्यवहार है ही कहाँ? व्यवहार भी दूसरे से होता है पर जब ग्राहक भी तुम, देने वाले लेने वाले और चीज़ भी तुम्हीं हो तो फिर कौन व्यवहार करे और किससे करे? व्यवहारिक बुद्धि निकाल दो। व्यवहार को परमार्थ का रंग लगा दो। आत्मा का रंग सबको लगा दो फिर बताओ किस समय आत्मा को भुलाकर व्यवहार देखेंगे सब कुछ होता है अपने आप ही। तुम करने वाले कौन हो? तुम हो ही कहाँ? हूँ ही मैं यह पक्का करो। तुम हो ही नहीं। 'मैं ही तो हूँ' इस निश्चय में टिक कर खड़े हो जाओ। शरीर की मैं नहीं करो।

History repeats itself. यानि हर एक ज़माने में ऐसा होता है जैसे पहले भी हुआ था और आगे भी ऐसे ही होगा। कृष्ण ने कहा जब–जब पाप बढ़ता है तब–तब मैं आकर अपने को प्रगट करता हूँ। स्त्री उद्धार के लिए

पहले भी आया था तब सन्यास का दस्तूर बन्द करके गृहस्थ धर्म का पालन का रास्ता दिखाकर गया। साधारण स्वरूप में हमेशा आता है तो अपने वाले नहीं पहचान सकते हैं। ऐसी परम्परा से होता आया है कोई विरला पहचाने। हमेशा भगवान को पहचानना कठिन काम होता है– यह है माया। जैसे–जैसे जिज्ञासू ऊपर चढ़ता है तैसे–तैसे अहंकार को भुलाता है बिल्ली का अहंकार छोड़कर ऊँट का अहंकार पकड़ लेता है। 'क्षण–क्षण भूलनहार।' सावधानी ही सीढ़ी है। तुम्हें आगे बढ़ने के लिए चाहिए बेहद हल्कापन, नम्रता नानक जैसी हो। प्रभू और माया ज्ञान और अज्ञान से बाहर से देखने में एक से होते हैं पर कर्म का मर्म जीतता है यानि भावना। निष्काम कर्म में कभी भी शक नहीं आता है। इच्छा और अहंकार से कर्म सकामी है और इसके विपरीत निष्कामी कहलाता है। पहले अभी और इसके बाद **Same** ही है और होगा पर मैं क्या? सो कोई भी नही कहता और न ही जानता है कि मैं ही तो हूँ। सबमें यह कमी विश्वास की ही है। गुरू को मानुष जानते जनम जनम होय स्वान। हर एक करें अपना उद्धार। उन्नति करते आओ। गुरू की करनी गुरू भरेगा चेले की करनी चेला। नौकरी करनी है कन्हइये की वह रोज़ ईमानदारी से करते आओ। जैसा करवाये वैसा करें। 'हलाए त हली वञां बीहारे त बस।' 'हीअ बि सज्रण वाह वाह हूंअ बि सज्रण

वाह वाह।'

'नाटक' है न ही कुछ हुआ है न कुछ हो रहा है, न ही होगा। जगत मिथ्या अन–हुआ विस्तार है उसकी बात फिर कौन सी करें। प्रारब्ध शरीर की अपने आप चलेगी। मेरा पुरूषार्थ नहीं चलने वाला है। साक्षी दृष्टा होकर अपना आप देखो। अपने आप देखने आया अपना तमाशा। यह बाज़ीगर की बाज़ी, रहो रंज न उसमें राज़ी। दुनिया में तुम भी रहो और दूसरों को भी अपनी तरह रहने दो **Live and let live.** फिराक दिल होकर रहो (बड़े दिल वाला उदार) उदारचित बनो। आज का दिन अपना समझो। जीते जी जंजीर उतारो मरने के बाद कौन जानता है। दुनिया सारी अज्ञानी है तुम ज्ञानी हो इसलिए कभी भी तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए। वे हैं पगले उल्टा उनकी दवा करनी चाहिए हमदर्दी करनी चाहिए। पर नफरत एक से भी नहीं होनी चाहिए। हर एक के लिए प्रेम धारण करो पाप से दूर भागो फिर सत्कर्म भले नहीं करो तो जीवन मुक्ति पाओगे। पर पाप करके नर्क से नहीं छूट सकोगे। हर एक में आत्मा देखने से पापों से छूट जाते हो। कोई भी बदकर्म फिर हो नहीं सकता है। सब बातें तुम समझ गये हो पर मन बदमाश है जो फिर–फिर भुलाता है। तुम फिर–फिर निराश होकर पूछते हो कि अभी मुक्त कब होऊँगी। तुम्हारी स्त्री फिर–फिर विधवा हो जाती है। तुम अमर आत्मा से फात्मा हो जाते हो। हमेशा ओम के पक्के रहो।□

पत्र गीता भगवान का -85

संकल्पमय सृष्टि है। तुम्हारा किया हुआ संकल्प आगे पीछे ज़रूर आकर पूरा होगा। ध्रुव भक्त ने संकल्प किया था कि मुझे अटल राजाई, पदवी मिले, फिर बाद में भगवान को बोला मुझे मुक्ति चाहिए, पर भगवान ने कहा कि तुमने संकल्प किया था अटल पदवी का इसलिए वह राजाई ज़रूर भोगनी पड़ेगी फिर दूसरे जनम में अमर होगे। इसलिए तुम्हें भूल कर भी संकल्प नहीं करना है। तुम्हारा काम नहीं है कोई भी संकल्प करना **Thinking is not your real nauture.** आत्मा स्वाभाविक मुक्त है अभी कोई भी संकल्प नहीं करो। ज्ञानी को शरीर की प्रारब्ध क्या भी दिखाये पर वह कोई भी संकल्प नहीं करता है, भरपूर तृप्त है। द्वेष अधिक समय तक रखना शोभा नहीं देता। राग मोह निकालकर फिर प्रेम को आज़माना चाहिए। प्रेम है परमात्मा **Love is God.** कमज़ोरी है मौत है इससे तो मरना बेहतर है। प्रारब्ध और परमात्मा पर भरोसा रखकर ज्ञानी अद्वेत में साक्षी दृष्टा होकर वृत्ति खड़ा होता है और ब्रहमाकार विरती में गाता है "सतगुर पूरे जी आहे वडाई, जिते भोगी बणन था ज़ोगी, रोगी बणन था अरोगी, पेनूं बणन था शाह, सूरन समेत सरीर विसार। आप विसर्जन होय तो सिमरन कहिए सोय। सखियूं गारियुन में पिण सुझि आई कृष्ण कन्हइए

जी शहनाई। मन में ज्ञान रखो आज का भूत और भविष्य को भुलाओ। **Now or never** तुम्हारे ऊपर कोई भी ज़बरदस्ती नहीं है। मुकर जाओ बाल बच्चे, दिवाला निकालो, मैं किसी का पति या पत्नि नहीं हूँ। मैं हूँ आत्मा बाकी सम्बंधी हैं कर्म प्राणी। पूछना है? ज़हर देने आये हैं उन्हें मोह का दूध नहीं पिलाओ। अपने सपने सुधारो। हमें कभी भी सपना नहीं आता है, इसे सुषोप्ति निद्रा कहते हैं। जिसके पास धन नहीं है उन्हें एक ही दर्द है जिनके पास अधिक है उनकी हड्डी में दर्द है। इस ज्ञान से पुराने–पुराने दर्द भी उतर गये हैं। ज्ञान हर एक को हर हालत में खुश रहना सिखाात है। हाज़िर भगवान ही तुम्हारा संशय दूर करेगा। अर्जुन ने पहले देखा तो तुम आज देखो, दूसरे फल देखेंगे। देर तुम्हारी है, भगवान तो हमेशा है। एक ने कहा कि मुझे **T. B.** है, मैंने कहा वह **T. B.** नहीं है तुम यह संकल्प करोगी तो हो जायेगी। उस बेचारी ने संकल्प छोड़ यिा तो T. B. उतर गयी। इस प्रकार बीमारियाँ ज्ञान में गुम हो गयी हैं **Blood pressure, T.B. Dibities** दमा, लकवा (अद्धांग), जोड़ों का दर्द, नासूर, मन की बीमारी। विकल्प करोगे तो अभी ही ऐसा हो जायेगा इसलिए संकल्प अच्छा रखो। संकल्पमय सृष्टि है एक बार भी किया हुआ संकल्प तो ज़रूर सिद्ध होगा इसलिए संकल्प और विकल्प बन्द करके बैठो। तू आत्मा है तेरा धर्म नहीं है कुछ भी ख्याल करना। मन है

दुश्मन, वह ख्याल करता है तुम विचार से ख्याल को मारो वहीं गर्दन दबाकर मार डालो। **Inferiority** निकालकर **Superiority Complex** रखो। सब विकार गायब हो जाते हैं जब घड़ी इक विसरूं राम कूं तो ब्रहमहत्या मोहे होय। आप विसर्जन होय। ज्ञानी क्रियमान कर्म नहीं करता है। केवल निष्काम कर्म ज्ञान यज्ञ करता है। बाकी सब प्रारब्ध अनुसार जो प्रवृति या निवृति जो उससे होती है वह अवश्य ही होनी है। यद्यपि अज्ञानी समझते हैं कि ज्ञानी कर रहा है। अज्ञानी ज्ञानी को नहीं पहचान सकते हैं क्योंकि वे कर्ता द्वेत में चलते हैं और ज्ञानी उल्टा है अज्ञानी अहंकार में रहता है, 'हौ में' का हठ है वह प्रारब्ध पर नहीं भरोसा कर सकता है। ज्ञानी का अद्वेत मत, द्वेत वाले अज्ञानी को समझ में नहीं आता है। कर्तापने में फँसे हुए दृष्टापने को नहीं समझ सकते हैं। मुक्ति को चाहने वालों को स्वर्ग या नर्क के सुख दुख पसन्द नहीं आते हैं। ब्रहमलोक के सुख भोग कर फिर भी आखिर मृत्युलोक में मुक्ति पाने के लिए आना पड़ेगा। इस पद ते जो नर चूके वो आय जाय दुख पायेगा। न ही जाप नहीं ताप (तपस्या) मुझसे मिलते हैं। गुरू तो मिलाये गोबिन्द। जो हमारे इस शरीर में ही दिखा दे कि 'तत्वमसि यानि सो प्रभू तू है।' जिसकी तलाश करते हो वो स्वंय तुम हो। तुम्हें गुरू वाक्य सत्य समझकर प्रतीति (अनुभव) करना चाहिए। शास्त्रों में भी प्रतीति

(विश्वास) करो अपने में विश्वास रखो। दुश्मन को दोस्त बनाने में तुम्हारी परीक्षा है। अच्छे कर्म भले ही करो पर पाप–पुण्य बिल्कुल तुम्हारे खाते में नहीं आना चाहिए। स्वर्ग–नर्क से बचो तो जीवन मुक्त होंगे। अद्वेत मत है नम्रता भाव। आखिरी आत्माकार का पद है। **Forgive and forget.** राग द्वेष निकालकर प्रेम धारण करो। द्वेत दुश्मन है। विक्षेप तो जब तक शरीर है तब तक आता रहेगा, पर हमारा अभ्यास भी चालू रहेगा। अभी पानी पर लकीर जितना रहेगा इसलिए समझो कि असर नहीं करता है। निष्काम कर्म है ज्ञान यज्ञ, जिसमें माया बिल्कुल काम काम नहीं आती है। माया निकम्मी है भगवान की तुलना में।

सम्बंधी साँप की तरह डंक लगाते हैं तो भी मोह में फँस जाते हैं। सकामी, स्वार्थी है। सब कुछ अपना आप **Feel** करो। चिन्ता से दोनों गये, माया मिली न राम। मारने वाले से बचाने वाला बड़ा है। □

पत्र गीता भगवान का -86

महात्मा गाँधी ने अख़बार में लिखा कि एक सत्संगी देर से आया, पूछा मैंने– 'क्यों?' बोला सिर से खून निकला सो पट्टी बाँधने में देर हो गई। सो महात्मा ने कहा 'खून बहाते हुए आ जाते तो शायद रास्ते में ही बन्द हो जाता।' मतलब है कि जैसे पुशू साढ़े दस **Office** पहुँचती है– शायद वही घड़ी समझने की हो। ''समुंद्र जे अगया तूं झले बीहु झोली।'' दुख आते हैं सावधान करने के लिए। उन्नति के लिए दुःख ज़रूरी है। ज्ञान के बाद यदि यह शरीर भगवान के काम में नहीं लगायेंगे तो बीमारियाँ आयेंगी। किसी ने कहा कि एक गुजराती का बेटा मर गया है ख्याल आया है कि उसे ज्ञान सुनाऊँ पर मन ने कहा लोग क्या कहेंगे, तो नहीं गई। आज आई तो बोली कि गला घुट गया है बुखार आ गया है सोई अपने आप ही यह बात महसूस की। निष्काम कर्म करने से सारी शक्ति भगवान वाली आ जाती है। हर एक को जब तक अपना आप समझ कर ज्ञान नहीं देंगे तब तक नहीं लगेगा, भाग जायेंगे। इसमें भी हमें अपने आप को ही दोष देना चाहिए कि अभी भी हमारा प्रेम कम होगा। रोज़–रोज़ अपनी बेहतरी करनी है। किसी ने कहा कि कई साधू केवल अपना उद्धार करके शान्त में रहते हैं। मैंने कहा उनके उद्धार की प्रमाणिकता निष्काम से ही पता चलेगी।

वह उद्धार करके नहीं बैठा है जो अपने लिये जीता है। तुम आत्मा हो तब जब दूसरे को निश्चय कराओ। सत्संग में आने से रोज़–रोज़ विचार बढ़ते हैं। उपजे चाह साध के संग। दूसरी सारी दुनिया अकेले ही अपने आप सिमरन करती है पर यहाँ ही गुरू बाँह पकड़के तारता है।

तुम तो हमको भुला बैठी हो पर हमसे नहीं भूल सकती हो। कोई एक बार दिल देकर भुला कर तो देखे। जो कुछ भी होता है वह तुम्हारे ही हुकुम से। 'हुकुमें अन्दर हर कोय बाहर हुकुम न कोय।' नानक हुकुमे जे बुझे तां हौ मैं कहे न कोय। यदि भगवान को हर वक्त देखें तो कभी भी न कहे कि ऐसा क्यों हुआ। भगवान को एक मिनट भी भुलाना नहीं है। प्रहलाद मीरा और अन्य सभी ने दुःखों में ही भगवान को पाया। हमें तो अभी कुछ भी नहीं हुआ है। अपने को जीव समझकर दुख सहते हैं। यहभजन हमेशा याद करो कि "दिल खे सदाईं पहिंजे स्थिर अडोल रखु तूं।" सूरी आहे सिथन लाइ सेजा सच्ची सूधरी, सोना आग में पड़ता है तभी चमकेगा। उन्नति के लिए दुःख ज़रूरी है। मुसीबतों में मुस्कुराना ही मुक्ति है। भगवान से वे ही मिलते हैं जो मन की तपस्या करते हैं। तुम भी एक दिन तपस्या करके चूड़ाला बन कर खड़ी हो सको। संकल्प दृढ़ रखना चाहिए। मैं भगवान की हूँ तो भगवान जो कुछ करे वह ठीक है। तुम खुद भगवान के राज़ को जानो कहो कि तुम कहीं से भी परीक्षा लो मैं

राज़ी रहूँगी, खीजूँगी नहीं। तुम करो भला हम भलो न जाने। गिरना है चढ़ने की निशानी। तुम अपने को कभी भी अकेला नहीं समझो, 'सदां बसत तुम साथ।' तुम ज्ञान अज्ञान को जानने वाली हो। हर क्षण किसी न किसी भजन की पंक्ति गाती रहो। मन से बन कर नहीं बैठना है। इम्तहान में झपकी नहीं खानी है। रोज़–रोज़ हमारा इम्तहान है। नहीं अपने को लजाओ नहीं गुरू को लजाओ। तुम एकदम ऊपर चढ़ जाओ तो मैं तुम्हारे साथ हूँ। पहाड़ पर चढ़ने के लिए लाठी का आधार ज़रूरी है। निराकार ने तो जान बूझ कर खाडे में गेरे। गुरू के वचन हैं हथियार सो वे समय पर काम में लाने चाहिए। जैसे मिलेट्री हमेशा सरकार का खाती है पर लड़ाई के समय भागना नहीं मुँह देना है ऐसे हमें तैयार रहकर पास होना है। कोई भी अज्ञानी नहीं है पर भगवान है। 'सर्व में पेखे भगवान' वह कैसे देखती हो? वह किस समय देखेंगे? सास पति सब भगवान ही बना है यद्यपि बार–बार विस्मृति हो जाती है पर मार देने वाला भी भगवान तो हलवा खिलाने वाला भी भगवान खुद ही तो है। सब मैं ही बना हूँ। यही शरीर यही आत्मा। पर हमें शरीर भुलाकर आत्मा पर दृष्टि रखनी है। 'सम देखो सबको आत्मा जग को।' शुद्ध अहंकार ज़रूर रखना है। कुछ भी अगर सह न सके तो भुलाना दिल के दर्दों के लिए पसंदीदा दवा है

तुम्हारी। सत्पुरूष दुख माँग कर लेते हैं। कोई बेचारे अस्पताल में पड़े हैं, तन्दुरूस्ती के लिए निहार रहे हैं पर हम तो तंदुरूस्त होते हुए भी मानो अपने को बीमार समझते हैं। 'घड़ी इक विसरूं राम कूं तो ब्रहमहत्या मोहे होय।' व्रत याद रखो। ये ज्ञान की **Points** अपने से लगानी है केवल सुनानी नहीं है। ज्ञान माना सच्ची समझ। निश्चय अपने से करो कि सोने के सिक्के आखिर होंगे सोने के। आज का ही केवल विचार करो। अपने को आज का मेहमान समझो। यह भी गुज़र जायेगा। ज्ञानी माना समय पर अपने मन को वश में रखे। ज्ञान सुनना और सुनाना तो सरल है पर अमल करना ज़रूरी है। □

तुम शान्त करो कोई शोर नहीं,
दुई दूर करो कोई और नहीं।

पत्र गीता भगवान का -87

हम बहुत भाग्यशाली हैं जो गुरू की नज़रों के नीचे पल रहे हैं। गुरू का साथ पाकर बहुत सेफ **Safe** हैं। पहले कितनों को अपनी बातें बताते थे तब भी अंदर का भय नहीं जाता था; आज एक गुरू को अपना भेदी बना दिया तो पूरी दुनिया से निर्भय हो गये। गुरू मिलने के बाद कुछ करना ही नहीं पड़ा। गुरू के प्यार में आपे ही दुनिया से किनारा हो गया। गुरू ने ऐसा बना दिया है जो उसके लिए शब्द छोटे पड़ रहे हैं। अपना जीवन बनाने के लिए कुछ करना नहीं पड़ा। सत्संग रूपी भठ्ठी का रोज़ संग करते-करते अंदर से पक गये। अब चित्त शान्त रहता है। अब बाहर की परिस्थितियों की परवाह नहीं है। खुशी इस बात की है कि गुरू हमारे साथ है। जिसने **Sweet will** से सब कुछ करना सिखाया है। अब आश्चर्य ये लगता है कि किसी भी बात का आश्चर्य नहीं होता है। अब किसी के लिए या किसी भी बात के प्रति कोई शिकवा शिकायत नहीं है। अंदर से किसी भी बात की फिकर नहीं तो मुख पर उसका जिकर भी नहीं। बनावटी जीवन जीने से गुरू ने नैचरल **(Natural)** जीवन जीना सिखा दिया है। गुरू ने अंदर से इतना निरइच्छा बनाया है, उतना ही सलामी-गुलामी से छूट गये हैं, उतनी ही जीवन खुनकी वाली हो गयी है। इस कोशिश से गुरू ने

हमको ऐसा बना दिया है कि न हम किसी को मन, वाणी या कर्म से दुखी करते हैं और न किसी से दुखी होते हैं। पहले गुरू ने अपने साथ निष्काम होना सिखाया फिर घरवालों के साथ निष्काम होना सिखाया। अब घर–घर नहीं लगता। अब घर एक मन्दिर समझकर सेवा हो रही है। सच्ची मर्यादा तो गुरू ने सिखाई है। लख–लख शुक्राने गुरू के जो सुख में ऐसा सच्चा स्मरण कराया है जो बाहर से हालतें आती भी हैं तो उस हालत को लेकर अटक नहीं जाते हैं। गुरू ने उड़ना सिखा दिया है। अब किसी के हाथों अपने को बेचते नहीं हैं । अब तो हमने अपनी **Fix Value** रख दी है। माता ने दो बातें अंदर डाल दी हैं एक अपने से प्यार करना सिखाया है और दूसरा धीरज में रहना सिखाया है। धीरजवान गुरू की वजह से ही हम धीरज में हैं। अकर्ता और अथक गुरू की वजह से ही हम **Fresh** रहते हैं और हमारे अंदर भी थकावट नहीं आती है। गुरू का आदर्श सामने रख कर ही हम नेचुरल जी रहे हैं। माता ने अंदर से ऐसे गहने पहनाये हैं कि बाहर से सजने संवरने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती है। पहले तो इच्छाएँ ही हमारे अंदर थकावट पैदा करती थी। अब हम जो **Natural** जी रहे हैं तो थकावट ही नहीं लगती। अंदर से गुरू ने मौड **(Modern)** बना दिया है। जैसे अंदर से फट् (जख़्म) सूख जाता है तो

बाहर से छिलका उतरने में देरी नहीं लगती है, ऐसे ही अंदर से गुरू ने ऐसी घड़ावट की है जो बाहर से किसी को कुछ बोलना ही नहीं पड़ता। अंदर से गुरू ने ऐसा मज़बूत किया है जो बाहर से दोष–दृष्टि ही चली गयी है। गुरू के दिये हुए निरइच्छापने से खुद ब खुद सभी बातों से छूट गये हैं और गुरू की करामत क्या देखें, हम कैसे आये थे गुरू के पास और गुरू ने हमें क्या बना दिया। हमने ये कभी नहीं सोचा था कि हम इतनी निश्चिंतता वाला जीवन बिताएंगे। अंदर से सबके लिए शुक्राने निकलते हैं। गुरू के प्रति बहुत–बहुत शुक्राने निकलते हैं जो जितने भी गाओ कम पड़ेगे। घर वालो के शुक्राने, प्रकृति के शुक्राने, इस तन के शुक्राने, साध–संगत के शुक्राने, इन सब के सहयोग से ही तो हमारी जीवन आगे बढ़ा है। रब मिला सब मिला। 'और कुछ नहीं तुम से है कहना, बस सतगुरू मेरे दिल में रहना।' गुरू ने आज में जीना सिखा दिया। नाज़ है हमको जीवन बनाने वाले पर। □

पत्र गीता भगवान का -88

इन्द्र जैसा देवता जिस स्वर्ग के लिए चाहना रखते हें वह तुम्हारे कदमों में है तो भी तुम्हें नहीं चाहिए। आत्मकार यह शब्द नहीं बोलता है कि मैं यह नहीं कर सतता हूँ I can not do क्योंकि वह Totaly निरइच्छा है एक मिनट में मन में कैसी भी बात मनवा सकता है। आपा (खुदी) और अहंकार ही हठ करवाता है। इच्छा को रोकना भी इच्छा ही है कि मुझे इच्छा न हो। यह हठ योग है पर ऐसा वैराग्य हो कि इच्छा उठे ही नहीं। मिथ्या समझने वाला चीटी से लेकर ब्रहम लोक तक कौन सी इच्छा करेगा। शान्ति की इच्छा भी रूकावट है। तुम पहले ही शान्त स्वरूप हो। इच्छा रुपी लकड़ियाँ निकाली तो पानी ठन्डे का ठन्डा है। वैराग्य से 'दि̱ने दुख होया अण दि̱ने राजी रहिया' वाली हालत हो जाती है। तुम दूसरों को पता मास्टर (गुरू) में विश्वास रखने का दो ऐसा न हो कि बह गये खुद ही दूसरों को हाथ (सहारा) देते–देते। वृक्ष अपनी जड़ पाताल में मजबूत रखके फिर पत्तों और टहनियों से सबको छाया देता है। अपने को ऐसा मजबूत बनाओ कि सारी दुनिया हिलाने आये तो भी न हिलो। भूल क्यों हुई इसके लिए मत सोचो उल्टा खुशी करो कि अधिक सावधानी मिली। भगवान के बारे में कुछ भी पूछना ऐसे है जैसे कोई बच्चा पिता को बोले कि 'मुझे

दादा की शादी में क्यों नहीं ले चले।' भगवान ने कैसे जगत उत्पन्न किया, भगवान क्या है और कब पैदा हुआ था ये प्रश्न पूछने और उसके अन्त में जाने से बेहतर है कि तुम अपना दुःख, अज्ञान निकालो जिसने तुम्हें दुःखी किया है। यह भ्रम निकालो जिसने तुम्हें शरीर, मोह, माया में फँसाया है। भगवान एक हो या दो, जीव हो या प्रकृति पर उसमें हमारा क्या वास्ता? हमारा काम है आनन्द से। द्वेत की समझ में आनन्द नहीं है। अद्वेत में ही सच्चा आनन्द है इसलिए अद्वेत ज्ञान ब्रहम का सुनकर उस पर निश्चय करने से ही सच्चा आनन्द मुक्ति, शान्ति मिलती है दूसरा कोई रास्ता नहीं है। आम खाओ पर टोकरों पर नहीं लड़ो। जिज्ञासू को पहले सतगुरू की शरण में जाकर फिर उसके आदर्श से ही अपने आप को आप समान बनाना है। दूसरे कितने ही शास्त्र पढ़े वे काम के नहीं है। केवल पूरण गुरू का ज्ञान सुने तो बेड़ा ही पार है। जब तक मन का इलाज नहीं करेंगे ख्याल एकाग्र नहीं करेंगे तब तक कोई भी बीमारी नहीं उतरेगी थोड़े समय के लिए दब जाएंगी पर फिर दूसरे किसी रूप में बीमारी प्रगट होगी। बड़े में बड़ा रोग है 'हो मैं' जिसने सारी दुनिया को जलाया है। हमारा काम है कसम उठाना कि कोई भी मुझे नाराज़ नहीं कर सकता है न मैं किसी को मन वचन कर्म से दुःखी करता हूँ। स्वार्थ में आकर

दुःखी–सुखी होता रहेगा उससे मेरा कोई वास्ता नहीं है। मुझे किसी भी सम्बंधी के लिए दया मोह नहीं है कि ये दुःखी है। दुःखी अपने अज्ञान के कारण होते हैं। जब तक कोई गुरू नहीं मिला है तब तक ज़रूर हर एक दुःखी होगा। हर एक अपने उद्धार के लिए आया है न कि दूसरे के उद्धार और सुधारने की चिन्ता करे कि घर वाले सुधरे और बने। मैं एक बन गया तो सारी दुनिया बन गयी। गीता माना एक ही लाईन में गीता का अर्थ है कि वासुदेव सर्वः। जहाँ–तहाँ भगवान है। सब संशय भ्रम निकाल कर नेष्ठा में रहना यह है गीता का मतलब। अपनी देह भुलाना। दुनिया के बाबा, पण्डित देह को भुलाने में लग गये हैं। भ्रम में आकर तुम्हें भी भ्रम में डाला है। बाहर से पाठ–पूजा, तीर्थ, व्रत, सत्कर्म करते हैं अन्दर से लोभ और काम का कुत्ता बैठा है। मथुरा के चौबे सारी उम्र वैष्णव होकर रहे हैं केवल दूध मलाई और पेड़े खाते हैं पर उनके जैसा बदमाश कोई दुनिया में नहीं है। 'बाहर से ज्ञान–ध्यान, स्नान अन्तर व्यापे लोभ स्वान।' हर वक्त यह ख्याल रखो कि यह ज्ञान जो मैं सुन रहा हूँ उससे मेरे विकार नाश होते जा रहे हैं। तुम आत्मा में पक्के होते जा रहे हो। फायदे ही फायदे हैं। आनन्द आता जा रहा है। चढ़ता जा रहा हूँ। कभी भी कमज़ोरी नाउम्मीदी निराशा मायूसी की बात मन में नहीं आने दो। पुरूषार्थी को पक्का

ही मुक्ति मिली पड़ी है 'मैं कैसे ज्ञान उठा सकूँगा, बड़ा कठिन है गृहस्थी में रहकर ज्ञान पक्का कैसे होगा? इससे अच्छा सन्यास लेकर सब कुछ छोड़कर अकेला जंगल में चला जाऊँ तभी ज्ञान होगा। झंझटों में ज्ञान नहीं टिक रहा। ये सब मन के छलबल हैं। इनसे सुजाग रहना। जगत मिथ्या है क्यों कि सुषोप्ति में प्रलय हो जाती है पर आत्मा स्वतः सिद्ध है इसलिए तीनों कालों में है। जो समझता है कि जहाँ–तहाँ मैं हूँ उसे कोई संकल्प विकल्प राग द्वेष नहीं सतायेगा। भूल करना पाप नहीं है गुनाह नहीं है भूलें भले हों पर भूल मानना सूरमाई है। भूल को नोट करने से फिर भूल नहीं होगी। तुम साक्षी दृष्टा हो भूल को जाँचने वाले। नौकर की भूल अपने में नहीं मानो। तू अभुल आत्मा है। गुरू माना जो गिरने के खड्डे पहले ही बताये कि इस राह में ये खड्डे हैं, तुम्हें सुजाग करे, गिरने से बचाये। जो गिर गये हैं उन्हें दलदल, कीचड़ से निकालना गुरू का काम है बड़े से बड़ा। बहनों ऐसा कौन करता सतगुरू के बिना, भक्ति और योग के दे दिये हैं भण्डार भर कर। मुक्ति माना **Go to centre** वापस वहीं जाओ जहाँ थे। तुम हासुल जो भगवान हो, वह हो जाओ दूसरा कुछ भी करना नहीं है। केवल वापस जाओ जहाँ से आये हो। उसी आत्मा में जाकर असली घर में टिक जाओ तुम वही हो। **I am that** शिवोहम्। □

पत्र गीता भगवान का -89

योग माना रमज़ (मुक्ति) कारीगरी। कर्म माना कर्म करने की युक्ति। कर्म करे भी पर उसको लगे नहीं, खाते में ना आये यह है निष्काम कर्म। मैं और मेरे लिये आसक्ति रखकर, मोह वश कर्म करने से मोह में राग द्वेष उत्पन्न होगा पर राजा जनक की तरहँ निरासक्त होकर कर्म करना है निष्काम कर्म। अपनों से अधिक दूसरों से जिगरी प्यार करो। पूरे दिन में यज्ञ करने के सिवाय नहीं खओ, किसी के दिल को ढ़ाढ़स देने के सिवाय नहीं सोओ।

सत्कर्म कैसा भी अच्छा हो पर दया और मोह के कारण राजा भरत की तरह हिरण की योनि लेनी पड़ेगी। देह से नाता होने के कारण दया और मोह होगा पर आत्मिक प्रेम हज़ारों से करो तो फिर कभी याद भी नहीं आयेगा मानो पूरे दिन में मैं अपने से ही मिला पड़ा हूँ, दूसरों से मिला ही नहीं हूँ, दूसरा है ही नहीं। रजनीश कहता है तुम उधार का ज्ञान छोड़कर अपने ख्याल (विचार) करो पर तुम्हारे दिल में है लीद (कचड़ा) सो तुम कौन से ख्याल करोगे? गुरू ही ठूँस–ठूँस कर आत्मा दिमाग में बिठाता है। तुम फिर–फिर देह के गटर में गिरोगे गुरू आकर उठा कर फिर आत्मा में टिकाएगा। अपने मन का ज्ञान हमेशा **Wrong** ही होता है। गुरू के विचार अपने विचार नहीं हुए हैं तो तुम मन से ही बनकर बैठे हो। तुम्हारी भूलों से हम

सीख रहे हैं कि ऐसा भी होता है। मन ऐसे भी गिराता है। तुम्हारी भूलों से हम सीख रहे हैं पर काश तुम सीखो और बचो। जो ग्राहक किसी एक स्थान पर नहीं भरा वह रूलता भटकता रहेगा कहीं भी स्थिर होकर ठिकाना नहीं पायेगा। खोट होगा तो जाकर कहीं न कहीं फंसेगे। लेक्चरार आप समान किसी को नहीं बना सकेगा। यदि बनाया हो तो एक को लेकर आओ। देखो कि तुम्हारे जैसा ज्ञान है? हमारे सिखाये हुए दूसरे गुरूओं के पास पहला नंबर है उन्हें वह वहाँ कीर्ति मिलती है इसलिए फँस जाते हैं इसलिए हमारी एक गाली भी नहीं सह सकेंगे। जब गुरू इज़्ज़त देता है ऊपर बिठाता है तो तुम प्रशंसा के कीड़े खुश हो जाओगे पर जब गालियाँ देकर आजमाईश (परीक्षा) लेता है तब तुम झूठे भाग जाओगे। छोटे बच्चे को माँ मारती है बाहर निकाल देती है तो बच्चा दरवाजा पर खड़ा होकर रोकर दरवाजा खटखटायेगा कि माँ मुझे गोद में उठाये, गोद में उठाकर सीने से लगाये। गुरू के आगे बालक जैसा हृदय रखो पर तुम्हें अहंकार चढ़ा हुआ है कि मैं अब सीख गया हूँ गुरू को फज़ीलत (तमीज) से बात करनी चाहिए ये ज्ञान तुम्हें आया कहाँ से, यह भूल गया है। कितने ही आते हैं कि हमें इतना ज्ञान दो कि हम गृहस्थ में सम्बंधियों के साथ कुत्तों की तरह खुश रहें पर राजा जनक ने पहला प्रश्न पूछा गुरू से कि वैराग्य कैसे हो? कितना फर्क है दोनों में

फिर भी कहते हो कि गुरू राजा जनक को अधिक प्यार क्यों करता है?

उल्लू पक्षियों से पूछा गया कि जीवन क्या है? बोले अंधेरा, बंदरों से पूछा गया कि जीवन क्या है? बोले भटकना। ऊँट से पूछा गया जीवन क्या है? बोले बोझ। भँवरे से पूछा गया कि जीवन क्या है? बोले मधुर रस लेना उसमें खो जाना, अपने को गुम करना कुर्बानी। इतने प्रकार के लोग हैं, तुम किस किस्म (प्रकार) के हो?

रामराज्य में विश्वास ऐसा आ जाये कि डरना, पुकारना, शिकायत, जुल्म देखना बन्द हो जाय। हमारा ज्ञान 'धर्म' नहीं है पर **Art of living** है। जीने का हुनर, यही है ज्ञान हमारा। क्राइस्ट कहते हैं कि मैं आता हूँ मोह काम में बन कर बैठे हुओं को झगड़याने न कि शान्ति फैलाने के लिए। सत्य झूठ को साबित करने के लिए। मन में शान्ति आयेगी न कि घर में। कुछ भी बनना बड़ा पाप हैंहमारा गृहस्थ सारा संसार है। घर सुख वसिया बाहर सुख पाया। घर अन्दर है। जहाँ भी है वहाँ खुश हैं। जेल में एक ने देखी कीचड़, दूसरे ने देखे तारे, चाँदनी रात दोनों की दृष्टि का फर्क है। मोह छोड़ो इच्छा छोड़ो यह ज्ञान नहीं है पर मोह और काम तुम्हारे में है ही नहीं तुम शुद्ध पवित्र आत्मा हो यह निश्चय पक्का करो। मुक्ति मुफ्त में मिल गयी है इसलिये कदर नहीं है। □

पत्र गीता भगवान का -90

अर्जुन के रथ को अश्वत्थामा ने तीर लगाया (अग्निशस्त्र), रथ जल गया तो भी श्रीकृष्ण रथ पर बैठा था इसलिए रथ का जलना दिखाई नहीं पड़ा। अर्जुन ने समझा कि ये मेरा बल है जिसके कारण रथ जला ही नही है। जब रथ खड़ा हुआ (रूका) तो कृष्ण ने अर्जुन को कहा कि पहले तुम उतरो। अर्जुन ने कहा कि पहले तुम उतरते हो आज मुझे क्यों कह रहे हो उतरने के लिए। कृष्ण ने कहा इसमें कोई राज़ है। अर्जुन उतरा फिर कृष्ण उतरा तो रथ जल गया। अर्जुन का अहंकार चूर–चूर हो गया । मतलब अब तक इस शरीर और मन रूपी रथ के ऊपर गुरू की लगाम है तब तक हम हर तरह के खतरे से बचे हुए हैं। गुरू को मन में से थोड़ा सा भी निकाला तो हम जल कर खाक हो जायेंगे। हमारी जीवन गुरू के प्रेम के आधार पर है। विश्वासी ही कायम है। विश्वास गया तो जीवन बर्बाद है। चाहे सब सुख वार दूँ तो भी प्रेम की एक एक रत्ती का मुकाबला नहीं है। **Light** अपने हाथ में है तो भी हाथ पैर बैठे मार रहे हैं। आत्मा रूपी जोत तुम्हारे साथ है तो भी मन रूपी अंधेरे में गोते खा रहे हो। बिना पानी के गोते खा रहे हैं। बिना आग जले संसार। साधु वासवानी और कई अन्य सन्तों की इच्छा है कि मैं फिर–फिर आऊँ आकर भारत की सेवा करूँ सो वे

कर्ता हैं समझते हैं कि हम करने वाले हैं सेवा। हमारे सिवाय दूसरा कोई भी ऐसी सेवा नहीं कर सकेगा। पर ब्रहमज्ञानी मुक्त है। वह कोई भी शुभ इच्छा भी नहीं रखता है वह आने जाने से ऊपर है क्योंकि देह नहीं है वह सभी रूपों में अपने को ही देख रहा है। वह एक शरीर से आना नहीं चाहेगा। भगवान किसी भी शरीर से आकर काम ले पर मैं कर्ता नहीं हूँ। कोई पूछता है कि है ही गुरू की कृपा अपनी कृपा है ही नहीं। हम पर केवल गुरू की कृपा हुई है हमने तो अपने ऊपर कृपा की ही नहीं है **Some have geatness thrust upon them.** तुम किस किस्म (प्रकार) के हो। एक तो पैदा होते ही मुक्त हैं दूसरे यहाँ पुरूषार्थ से हासिल करते हैं तीसरे पर खुद आकर ज्ञान थोपता है (मढ़ता है) ज़बरदस्ती बुला–बुला कर उनके पास जाकर उनके न चाहने पर इच्छा न होते हुए भी, गालियाँ देते हुए गुरू नहीं छोड़ता है क्योंकि वे लहणे (लेनदार) हैं। 'लहणां जी करके देणां' ये **Last** वाले योग भ्रष्ट हैं जिन पर गुरू कृपा आकर करता है। होंगे तीनों ही मुक्त–मुक्ति तीनों को मिलेगी। गुरू किस पर कृपा करे किस पर न करे। जो अपने ऊपर कृपा करता है उस पर गुरू की कृपा पहुँचती है। विश्वास वाले पर गुरू की कृपा हुई पड़ी है। नहीं तो 10 साल के बाद भी विश्वास यदि पूरा नहीं है तो वे भाग जायेंगे। गुरू उन्हें क्या कर सकेगा। अहंकार जहाँ आ जाता है वहाँ गुरू भी

हार जाता है। गुरू की कृपा भी अहंकारी के आगे काम नहीं करती है। भगवान पहले देवताओं की जीत कराकर दैत्यों की हार करवाता है बाद में फिर देवताओं की परीक्षा भी लेता है कि कहीं इन्हें जीत का अहंकार न हो गया हो देवताओं के आगे तिनका रखेगा कि दो टुकड़े करके दिखाओ तो देवता हारेंगे तभी अहंकार जायेगा कि मैं कुछ कर नहीं सकता हूँ तो फिर ज्ञान कहाँ दे सकता हूँ। डाक्टर कहते हैं कि क्रोध मत करो पर क्रोध तो आता है, दुनिया के गुरू भी कहते हैं कि विकार छोड़ो पर विकार छोड़ने के हैं ही नहीं जब तक तुम देह हो तो विकार नहीं जायेंगे। विकार सहित देह भुलाओ कि मैं निर्विकारी हूँ आत्मा। मुझ में विकार नहीं है तभी विकारों से पिण्ड छूटेगा। सन्यासी हठ योगी सब बीमार हैं क्योंकि इच्छायें दबाते हैं। यहाँ हमारे पास सन्यास नहीं है न ही जबरदस्ती कुछ भी रोकना है। पर आत्मा समझने से इन्द्रियाँ रूक जाती हैं। यहाँ भी जो ख्याल उमंग रोकेंगे और गुरू से ख्याल छिपायेंगे, गुरू को दूसरा और अपने को दूसरा समझकर छोटे–बड़े के भाव से दूर रहेंगे, मिलकर एक नहीं होंगे तो उन्हें बीमारियाँ होती हैं। आज भी यदि अपने ऊपर कृपा करें तो अभी ही बदल जायें। गुरू तो उदार चित्त होकर पहले ही दिन सच बताता है कि जो तू है सो मैं हूँ फिर कोई आज ही निश्चय करता

है कोई 100 बरस के बाद निश्चय करता है। यह उसका पुरुषार्थ है अपने को दासी पुत्र समझे या सूर्य समझे। दासी पुत्र समझने से हिम्मत नहीं आयेगी शरीर समझने से कमज़ोरी खरीद करेंगे। पर अभी ही समझो कि मैं सूर्यपुत्र भगवान हूँ तो शक्ति आ जायेगी। छिपी हुई शक्ति प्रगट हो जायेगी। गुरू से ऐसे बोलो जैसे कि बेटे से बोलते हो पर अन्दर से भगवान से भी अधिक विश्वास हो। गुरू जो बड़ाई हमें देता है वह गुरू पर नहीं आज़माओ कि वह आत्मा में टिका हुआ है। कम अधिक प्यार है? किसी से थोड़ा प्यार करता है, एक को कहता है बैठो दूसरे को कहता है उठो यह भेद दृष्टि है गुरू में। सभी मूर्खों से वोट लेकर गुरू को आसानी दोषी साबित कर सकते हो, पर इससे फायदा तुम्हें नहीं होगा। तुम समय पर अपनी आज़माइश (परीक्षा) दो पर गुरू की लोगे तो बेड़ा ही गर्क हो जायेगा, डूब जायेगा। निर्दोष पर दोष लगाने से तुम दोषी हो जाओगे। गुरू दूसरा देखता ही नहीं है गुरू भक्त देखता ही नहीं है वह तो अपना आप देखता है पर तुम हो ही द्वेत में कि मैं भक्त तू भगवान। अद्वेत वाले को वही पहचानेगा जो खुद अद्वेत में टिका होगा। एक खुद आकर गुरू को पकड़ते हैं चिपकते हैं दूसरों के पीछे गुरू पड़ता है पर देखने में ऐसा आयेगा कि जैसे गुरू में **Partality** है। कोई नहीं भी चाहता है तो भी पीछे पड़ता

है गुरू। हम चाहते हैं तो भी पीछे पड़ने वाले को त्याग करता है। त्याग क्या करना पड़ेगा, अपना कुछ भी नहीं है इसलिये त्याग कौन सा करेगा? अपनी एक सुई भी नहीं है फिर छोड़ें क्या पकड़े क्या? ज्ञान **Catch** कर सकते हैं पर सिखा नहीं सकते हैं। गाय में दूध है पर बछड़ा बने तो दूध दुहे पर गाय को ताकत नहीं है। 'नहीं फायदा कोई जीने से जो रोते हुओं को हँसाना न आये।' तुम इतना दिल खुश रखो कि दूसरों को भी खुश कर सको। जिससे मिलो वह तुम्हारा हँसमुख चेहरा देखकर ही शीतल हो जाये। वह दुगुना भाग्यशाली है जिसकी माँ मरती है तिगुना भाग्यशाली है वो जिसकी स्त्री भाग जाये। बेटा मरे तो घोड़ा इनाम में दे दो। तुम्हारी कौन सी स्थिति है? पति बेटा मिले तो खुशी होती है। कहते हो बहुत अच्छा पर मरते समय नहीं कहते हो कि बहुत अच्छा तो तुम सब बेईमान हो। □

पत्र गीता भगवान का -91

गुरू सच्चा तभी हुआ जब हम कुछ बन जाये, हमें भगवान बना दे। बाकी हम मरने तक शिष्य रह जायें और गुरू होकर अटल टोप पहन कर सर पर बैठा रहे वह गुरू नहीं है। लेक्चर करने वाले, शिष्यों की भीड़ बढ़ाने वाले, कान में फूँक देने वाले, घुरू (माँगने वाले) बहुत हैं जिनसे किसी का उद्धार होना नहीं है।

Don't run rats race. चूहे की तरह सारी दुनिया जल्दी–जल्दी आना जाना करती है। शान्त होकर (विश्राम पाकर) कहीं भी मौज नहीं लेते हैं। साहूकार कहीं भी आराम की साँस नहीं लेते हैं, बैल की तरह बोझा ढ़ोते रहते हैं। आत्मज्ञान के सिवाय कभी भी मन स्थिर नहीं होगा।

ज्ञान सुनकर शान्त होकर नहीं बैठो, निष्काम जीवन गुज़ारो, सुस्ती और आलस्य करके घर में बैठे रहेंगे तो सकामी कर्म होते रहेंगे। भगवान का बोझ हो जायेगा दिमाग़ में। कर्म करने के सिवाय पता भी नहीं चलेगा कि तुम सकाम हो या निष्काम। निष्काम कर्म में मन वश होगा। मुक्ति के लिए यही रास्ता है। ज्ञान से मुक्ति मिलेगी। निष्काम कर्म ही साधन है। त्याग भावना से दुनिया में चलो कि यह सब जाने वाला है। किसी के भी मोह में नही अटको जो छूटते समय थोड़ा भी दुख हो। मेरी यदि एक सुई भी है तो ये सब मैं हूँ ऐसा नहीं कह

सकेंगे। यह सब ब्रहम है तो मेरा क्या है जिस पर हाथ रखूँ कि ये मेरा है।

दूसरा देखने से ही अशान्ति होगी। द्वेत में ही रोला है पर वहाँ भी मैं हूँ तो एकदम शान्ति आ जायेगी कि किसके विकार देखूँ या किससे राग द्वेष करूँ।

यह मेरा भगवान है ये अज्ञान है, तू मेरा भगवान है यह भी द्वेत है पर 'मैं ही तो हूँ', 'तू भी मैं हूँ' यही सत्यों का सत्य है।

मुझे किसी का संग चाहिए यह अज्ञान है पर मेरा संग सारी दुनिया को चाहिए, मैं जहाँ भी हूँ वहाँ देने वाला हूँ न कि लेने वाला। खुद अपने सच्चे गुरू में भी इच्छा न रहे कि मैं सुनूँ। **I enjoy my self not party.** मैंने सब सुन लिया है। आत्मा सुनने के बाद कुछ भी सुनने के लिए नहीं रहा है। आत्मा सुनकर फिर दूसरों को निश्चय कराओ उसका। काम पर लग जाओ 24 घण्टे ही।

खुद से (आत्मा) जो **Fit** नहीं है वह दुनिया में किसी से भी **Fit** नहीं है जो अपनी आत्मा में तृप्त है अपने में मस्त है अपने में गुम है वह सबसे **Adjust** हो गया, सारी सृष्टि में समा गया कि ये सब मैं ही तो हूँ।

एक आना बाहर से सुख लेंगे तो 15 आना दुख देखेंगे। एक सुख लेंगे तो पूरी उम्र लग जायेगी भुलाने में। जितनी बाहर मुख विरती होगी उतनी अन्दर की शान्ति

देर से मिलेगी।

भगवान से पाप की माफी नहीं लो, न ही मिलेगी पर पाप की सजा खुशी से लो। भगवान इन्साफ करता है यदि सज़ा देता है तो। भगवान कहता है यदि मुझे प्यार करते हो तो मेरे कहने पर चलो। पाप माफ होगे तो अधिक पापी हो जाओगे।

माँगने से भरना भला है तो तुम दान देकर किसी किसी को फकीर क्यों बनाते हो हो? न तुम मागो न किसी को माँगने दो।

ज्ञान में बड़ा छोटा नहीं है तो भी अहंकार गँवाने के लिए हर एक अपने का झुकाता है कि मैं कुछ नहीं हूँ तुम सब कुछ हो।

गुरू शरीर होकर नहीं बोलता है पर आत्मा में टिक कर बोलता है। वह नाम रूप में है ही नहीं। चाहे वह नाम रूप में किसी को गालियाँ भी देता है तो भी एक मिनट के बाद भुला देता है पर तुम देहधारी समझोगे कि मुझे ऐसा बोला गुरू ने। शब्द सब भुलाओ, फिर आकाश की तरह खाली हो जाओ कि मैं आत्मा हूँ। पाणी दृष्टि सब थोथी हैं तार हृदय की जोड़ो। वाणी न कर सकेगी मेरा कभी वर्णन। दृष्टि भी बाहर की सच नहीं दिखाएगी। अन्दर निहारो कि मैं क्या हूँ। अपने को पहचानो तो गुरू को भी पहचाना। से सिमरहे जिस आप सिमराहे।

पत्र गीता भगवान का -92

कितने ही दिनों से कह रही थी कि तुमसे पत्र के द्वारा मुलाकात करूँ तुम्हारी भी खेंच होगीं पिछले जनम में थी इकरारी आज आकर इकरार पूरा किया। पिछले जनम में तुम्हारा भगवान से इकरार (वायदा) किया हुआ है कि दूसरे जनम में मिलना। आखिर भगवान को ही ख्याल हुआ कि आना हुआ कि इसे आना तो मेरे पास ही है सो खुद तुम्हें आदमी भेज कर बुलाया। आशिक वे कहलाते हैं जिन पर स्वयं (गुरू) आशिक हो। तो वही आशिक बदल कर माशूक हुआ। इश्क भेजा है एलची (एम्बेसेडर)। विवेकानन्द बहुत घूमा फिरा कि कोई मुझे भगवान दिखाये पर किसी ने भी नहीं दिखाया, आखिर रामकृष्ण के पास आया। रामकृष्ण ने दूर से ही कहा आखिर आ ही गये, तुम मेरे पास ही आने वाले थे फिर इतनी देर क्यों लगाई? विवेकानन्द ने कहा कि मैं तो सन्त साधू भेंट कर नास्तिक हो गया हूँ, समझता हूँ भगवान है ही नहीं। तुम बताओ कि तुमने भगवान देखा है? मुझे दिखा सकते हो? रामकृष्ण ने कहा 'हाँ, मैंने देखा है तुम्हें भी दिखा सकूँगा।' जैसे तुम्हें सूर्य दिखाई देता है ऐसे ही मुझे भगवान प्रत्यक्ष दिखाई देता है। विवेकानन्द ने कहा यह पहला ही मिला है जो छाती ठोंक कर कह रहा है कि मैं ही तुम्हे दिखाऊँगा। फिर रामकृष्ण के द्वारा सिर पर

हाथ लगाने से विवेकानन्द ने तीनों लोक देखे, विराट स्वरूप जो अर्जुन ने कृष्ण के मुख में देखा था। अब बताओ तुम्हें कौन मिला है। तुमने वह विराट स्वरूप देखा है या नहीं? तुम दादा को क्या समझते हो? पहले जब आये तो क्या समझा अब कहाँ तक पहुँची हो? इतना ऊँचा जब कोई होगा तभी ऊँचे को जानेगा नहीं तो अपने अहंकार में हम भगवान को भी रवाज़ी मनुष्य करके देखेंगे। 'आदम को खुदा मत कहो,' आदम, खुदा नहीं लेकिन खुदा को भी आदम मत कहो। कृष्ण कहता है कि हे अर्जुन! ये मूढ़ लोग मुझ परमात्मा को नहीं जानते क्योंकि मैं साधारण स्वरूप में आया हूँ और योग माया से घिरा हुआ हूँ। हे अर्जुन! वेद अभ्यास, हवन,दान–पुण्य, कठोर यतन करने से भी यह मेरा विश्वरूप दर्शन कोई नहीं कर सकता है जो तुमने किया है। यह दर्शन केवल अनन्य भक्ति, अभ्यास अभेद और अव्यभिचारी भक्ति योग से हो सकता है। आखिर भी एक जगह अपना पूरा आत्मसमर्पण करना है जैसे मेरी मैं बचे ही नहीं। मेरा एक भी ख्याल गुरू से जुदा न हो। साकार के सिवाय कोई भी निराकार में टिक नहीं सकता है। हर एक को अपना आप गँवाना है या किसी का बन जा या किसी को अपना बना ले। हे अर्जुन! तुम मुझे झुके हो अब सारी दुनिया तुम्हें झुकेगी तुम्हें कहीं भी झुकने की जरूरत नहीं पड़ेगी। मेरा

भक्त कभी भी नाश नहीं होता है। कृष्ण से पहले अर्जुन कई वेद शास्त्र, सन्त साधू भेंट चुका था बड़ा सत्पुरूष था पर अभी भी ज्यों का त्यों मोह काट कर प्रकृति से अपने आप को छुड़ा कर नहीं खड़ा था। इसी लिए ही भगवान को ऐसे भक्तों के सामने प्रगट होकर उन्हें प्रकृति से ऊपर उठा कर खड़ा करने के लिए आना पड़ता है कि तू इस त्रिगुणी माया से ऊपर हो जा, तू आत्मा है त्रिगुणातीत। देह के सम्बंध से तीनों कालों में न्यारे हो। आत्मा कहता तो हर एक है, जहाँ–तहाँ अब आत्मा के सत्संग भी हो रहे हैं कि तू आत्मा है तू ब्रहम है पर 'मैं ना' यह मन्त्र कोई नहीं बताता। देह को ही आत्मा समझ कर बैठे हैं। कितने भी होशियार वेदान्ती लोग मिलते हैं वे भी कहते हैं कि 'मैं आत्मा हूँ' पर व्यवहार करते समय तो सभी ख्याल करेंगे न कि ये पति है, मेरा फर्ज़ है, वह दुःखी न हो, यह बेटा है इसे समझाना मेरा धर्म है, यह बेटी है इसका विवाह करवाना मेरा धर्म है मतलब तो कितना भी ज्ञान सुनते हुए बोलते हुए भी व्यवहारिक बुद्धि अन्दर पड़ी है कि दुनिया में तो चलना है न। लोग क्या कहेंगे। अब आत्मा में व्यवहार, धर्म, फर्ज़, वर्ण आश्रम हैं कहाँ? मैं यह देह ही नहीं हूँ तो देह के सम्बंधी और देह के फर्ज़ धर्म मेरे से लागू कैसे हुए? शरीर से ऊपर चढ़ जा। परिवार से, समाज से, जगत से ऊपर चढ़ जा। सब नाम रूप से

जब दृष्टि उठायेंगे तभी आत्मा पर नज़र पड़ेगी। यह तो पूरन भगवान ही खींच कर बाँह से निकाले कि अब व्यवहार में कब तक फंसोगे? जीते जी जंजीर उतारो, मरने के बाद कौन जानता है। जो जहाँ खड़ा है वहीं अपने को राईट (सही) समझता है यही तो माया है। जब कि कोई अपने से ऊपर मिले और वहाँ भी फिर वह अहंकार गँवाकर काश सुने। जिसके पास सुनने के कान हैं वही मन्ज़िल पर पहुँच सकता है नहीं तो (वरना) सभी मार्ग को मन्ज़िल समझ बैठे हैं, अपने को बैठकर खुश कर रहे हैं पर परीक्षा के समय ही उनका पता चल जाता है। जैसे खाँसी और खुजली छिपने वाली नहीं है इसी प्रकार थोड़ी सी इच्छा, मोह या विकार छिपने वाले नहीं हैं। यहाँ चाहिए 16 आना सत्य। ज़हर की एक बूँद या चम्मच भर ज़हर मारने के लिए काफी है। थोड़ी इच्छा भी पुर्नजन्म का कारण बन जाती है। सूक्ष्म इच्छाओं की पूरन गुरू के सिवाय कोई भी पहचान नहीं दे सकता है। किरपा माना 'गिरो तो पाओ।' मन को झुकाना न कि शरीर को। मन मनाभव। एक आदमी का धन चोरी हो गया, किसी सन्त के पास गया उसने कहा अफसोस इस बात का है कि अभी तक तुम क्यों नहीं चोरी हुए हो? धन्य हैं वे गोपियाँ जिनका सब कुछ चोरी हो गया था। सोई सब कुछ देने के सिवाय सब कुछ नहीं मिलता है। कितने बेचारे खुशी को

ही आनन्द समझ कर बैठते हैं जब तक कोई दुःख नहीं है तब तक समझते हैं कि आनन्द में हैं। मन घोड़ा खोलकर गधा बाँध कर जाता है। साकार भगवान के सामने जो सभी परीक्षायें देकर पूरी करता है उसे निराकार की तरफ से कोई परीक्षा नहीं आती है जिसमें वह उलझे। अज्ञानी की बाहरी मुस्कुराहट भी नहीं सुहाती है पर ज्ञानी की स्वाभाविक शक्ल हमेशा सुहाती है। ज्ञानी क्रोध में और चिन्तातुर, संकल्प विकल्प करता हुआ भी दिखाई दे, मैं मैं कहते हुए तो भी वह मुक्त है। पर अज्ञानी बाहर शरीर से शाँत बैठते हुए भी मन में संकल्प–विकल्प करता रहता है इसलिए वह अज्ञान में बँधा हुआ है। लोक वासना देह वासना, शास्त्रवासना। प्रेम है पासपोर्ट। पण्डित पिण गुरू प्रेम बिन लहे न आतम राह। ज्ञानी न सोचता है न चाहता है। जो रखता है दावा यहाँ वह मेहमान से होता चोर है जो जेल खाने में खुदी में रहता है वह ख्वार (बर्बाद) होगा। □

पत्र गीता भगवान का -93

तुम्हारी याद कितनी ही बार आती है। मैंने सन्देशा भेजा तो भी नहीं आयीं। मैं तुम्हारे लिए दूसरे दिन भी रही पर तुमने अभी तार पूरी मिलाई नहीं है भगवान से फिर भला खेंच कैसे होगी। 'वह तड़प भी झूठी, तड़प जो तड़पने पर साजन न मिले।' परमात्मा से मिलने के लिए सच्चा प्रेम और श्रद्धा ज़रूरी है। सच्चा प्रेम तभी होगा जब हम उसे पाने के सिवाय एक पल भी न रह सके। घड़ी नां मिलते तां कलजुग होता। इतनी उत्कण्ठा जब जिज्ञासू में उत्पन्न होती है तब साक्षात परमात्मा खुद आकर उसके सम्मुख खड़ा होता है और अपने मुखारबिन्द से बिल्कुल कहता है कि 'मैं हूँ भगवान इसमें नहीं है कोई शक गुमान, नानक लक्ष्मण मेरा ही नाम।' जिसे जन्मों से तुम ढूँढ़ते आये हो और जिसके लिए आज भी तड़प रहे हो वह मैं हूँ। मुझ परमात्मा को ये मूढ़ लोग नहीं जानते हैं। पर झूठों को ऐतबार नहीं आता है कहते हैं कि जो भगवान होता है वह फिर कहता है कि क्या कि मैं भगवान हूँ। यह तो उल्टा अहंकार करता है। अरे पर जो है ही सचमुच भगवान वह फिर क्या कहे? भगवान के सिवाय जो अपने को दूसरा कुछ कहता है तो यह तो और भी बड़ा झूठ हो गया और अहंकार हो गया। यदि कृष्ण अपनी पहचान न देता अर्जुन को कि मैं भगवान हूँ तो

अर्जुन बेचारे को कौन सी ताकत है कि उसे ऐसे साधारण स्वरूप में साले के रूप में पहचान सके। मज़ा तो ऐसा था कि कृष्ण वृन्दावन की कुंज गलियों में रात दिन आता जाता था पर किसी ने भी नहीं पहचाना उल्टा कहते थे कि ये जा रहा है बिगड़ैल जिसने सबकी बहु बेटियों को बिगाड़ा है जादू करके जिससे सब गोपियाँ ग्वाल मतवाले होकर उसके पीछे डोल रहे हैं। सम्भाल करना इससे कहीं जादू न करके जाये। पर यदि भक्तों के घर के पास से गुज़रता था तो वे बलिहार जाते थे। एक ही घर में पिता नहीं पहचानता था बेटा पहचानता था, यह है माया। एक मिनट में भगवान दिखाई देता है दूसरे मिनट में साध ारण मनुष्य। धूप–छाँव का खेल है। पर पूरन भक्त दिव्य दृष्टि से उसे ऐसा पहचानता है कि कैसे भी रूप में आये तो वह एकदम पहचान लेता है। ऐ मेरे स्वामी तेरी बांकी अदा है, कहीं राम है तू कहीं कृष्ण है तू, कहीं राजा है तू कहीं भिखारी है तू। कहीं पीर है तू कहीं मोहताज है तू। दिखाया है दर्शन जबसे मुझे तूने, मेरी निगाह में नया गुल खिला है, तेरे प्रेम की बहार में मस्त हूँ मैं, बका में फ़ना है, फना में बका है। कोई भी गुरू गुसाईं नहीं है जो कह सके छाती ठोंक कर कि मैं भगवान हूँ। गुरू खुद ही अपने को गन्दा बन्दा नीच कहलवाते हैं। तो फिर शिष्य बेचारे तो उनसे भी अपने को कम समझते हैं। माँस की

गर्दन झुकाते–झुकाते उमर ही पूरी हो गई है पर आनन्द की एक झलक भी नज़र नहीं आती है। पर राजा जनक तो गुरू अष्टावक्र से ज्ञान सुनकर एक दम बोले कि अब मैं कैसे नमस्कार करूँ? मेरी मुझको ही नमस्कार है, दूसरा बना ही नहीं है तो झुकूँ किसको? जो खुद निराकार में टिका हुआ है केवल वही अद्वेत का ज्ञान सुना सकता है बाकी तो सबके पास द्वेत है कि मैं गुरू तू शिष्य, अब तन मन धन से मेरी सेवा करो। पर गुरू ऐसा चाहिए जो छुड़ावे संसार, 'हींयर जो हींयर मुक्त करे बीहारे।' या पीउ दोरीन्दे द्रीह किन खे पलक में परचो कयो। 'चाहे करो या न करो पर प्रीतम से राज़ी रहो।'

एक शिष्य गया गुरू के पास बालो भगवान का दर्शन कैसे होगा? गुरू ने कहा 'अहम् ब्रह्मास्मि तत्वमसि तत् त्वम् असि।' वह भगवान तू है। शिष्य ने कहा ऐसा सस्ता भगवान मिलना होता तो इतने साधु–सन्त हज़ारों साल तपस्या करके जंगल में न भटकते। इस गुरू को शायद पूरी खबर नही है। फिर दूसरे के पास गया उसने कहा हाँ मैं तुम्हें भगवान का दर्शन कराऊँगा। पहले पाँच वर्ष मेरे भण्डारे में नंगे पाँव खड़े होकर सेवा करो, लकडियाँ लेकर आओ पाँच वर्ष मेरी लंगोटियाँ साफ करो और सत्संगियों की सेवा करो। तीसरे पाँच वर्ष सोहम् का मन्त्र जाकर अकेली कोठरी में जप करो। पन्द्रह वर्ष के

बाद शिष्य ने गुरू को कहा कि सेवा कर करके अब तो शरीर ही सूख गया है, जवानी पूरी हो गई अब कब भगवान का दर्शन होगा, गुरू ने बोला 'सोहम्' माना वह तुम हो। बस शिष्य के नीचे से ज़मीन सिखक गई। मुँह सिर पीटकर कहने लगा अरे यदि मैं पहले के कहने पर विश्वास करता तो आज मैं मुक्ति का पद हासिल करके बैठा होता अब फिर ऊपर से बैठकर 'जपु साहिब' पढ़ना पड़ेगा। मतलब है कि बात एक ही समझनी है। नानक लेखे इक गल है और है भी झखणा झाख। एक बात है कि मैं क्या हूँ। यहाँ से पट के वहाँ लगाना है। इस मैं को छोड़कर उस मैं को पावीं पसीं रंग पियारा। मैं भरिया है जग सारा, मैं को कोई न मारया। है ही में को पहचानना। 'अपने को पहचानने आया वह भले आया काम न था कोई दूसरा यहाँ प्यारे– काम न था कोइ दूसरा।' सैर करने यहाँ आया वह भले आया बाकी दूसरे तो व्यर्थ आये, उल्टा पृथ्वी पर बोझ है। पर ज्ञानी के लिए पृथ्वी अन्न उत्पन्न करके निहारती है इन्तज़ार करती है कि केवल कुछ ग्रहण करे। छः ऋतु और बारह महीने उसके लिए ही बदलते रहे हैं। वृक्ष बाग बगीचे फल फूल कर उस आत्मवेता के पूजन के लिए निहार रहे हैं। कपड़े बुन रहे हैं, विद्यार्थी पढ़ रहे हैं कि हम उस ब्रहमज्ञानी की महिमा वर्णन करके कथन करके उसकी उच्च रहनी से सबक सीखें। ज्ञानी

त्याग के तख्त पर बैठ कर विवेक रूपी मोतियों की माला से शोभायमान होकर सिर पर ब्रहमज्ञान रूपी मुकुट धारण करके सच्चाई और एकता का हकीकी निर्भय नाद बजाकर हमें इस जीवन का सच्चा हक हासिल करवा रहे हैं। उसके पृथ्वी पर लाखों एहसान हैं। तुम्हारे साथ तो भगवान की मुलाकात अजीब और सुन्दर ढंग से हुई कि तुम हाथ से पकड़ कर घसीट कर उसे घर ले आयी। भगवान इतने सरल तरह से तो किसी को नहीं मिला है। तुम्हीं सच्चा अर्जुन हो भगवान ने भी जल्दी कृपा करके तुम्हें अपनी पहचान दी क्योंकि तुम पूरन लायक हो। दिल की सच्चाई और सफाई का गुण तुम्हारे जैसा किसी विरले में होगा। दिया बत्ती तेल बस तैयार है तो देर काहे की है। भगवान तो बिना पैसे का वकील है जिसकी सलाह से सब रूकावटें और मुश्किलातें एकदम काफूर हो जाती हैं। हे अर्जुन! ये सब मरे पड़े हैं, काके,मामे, चचेरे भाई और गुरू गुसाईं जिन्होंने तुम्हें सच्ची शिक्षा नहीं दी, झूठ की तरफ बनकर बैठे हैं, उन्हें मैंने पहले ही मार दिया है तुम केवल निमित्त मात्र होकर लड़ाई करो तुम्हारी निश्चय ही जीत है। मेरा भक्त नाश होने वाला नहीं है केवल विश्वास रखकर मैं को याद करके जाकर लड़ाई करो तो बेड़ा पार है। □

पत्र गीता भगवान का -94

तुम्हारी **Points** लिख रही हूँ। दूसरा देखे वो दूसरे का बेटा। दुनिया को पता चलना चाहिए कि तुम अपने को भगवान समझते हो तो तुम्हें कोई भी शरीर करके नहीं देखेगा। इर्द–गिर्द सब भगवान ही बन जायेंगे। जो तुम्हें भगवान देखेंगे वे खुद भगवान बन जायेंगे। इस प्रकार सारी दुनिया ही भगवान से छा जायेगी। **Whole world is filled with God.** पूरे दिन कम से कम एक बार याद करो कि मुझे गुरू ने क्या न बनाया है और क्या न दिया है। कितने कष्टों विकारों माया के झंझटों मोह, द्वेष जनम मरण से छुड़ाया है। तुम अपनी कीमत जितनी भी रखोगे उतनी दुनिया भी तुम्हारी करेगी। अपने को गन्दा बन्दा पापी समझेंगे तो दुनिया भी ऐसा ही करके देखेगी, अपने को आत्मा समझकर चलोगे तो दुनिया भी ऐसा ही समझेगी। दुनिया तुम्हें तब तक गिरायेगी जब तक तुम मज़बूत नहीं हो। तुम्हें गुरू ऐसे तो गिरने के खड्डे दिखाता है कि तुम कहीं भी गिर नहीं सकते हो। कमज़ोरी, धिक्कार (किसी के लिए भी) शक और डर वाले के अन्दर भगवान नहीं टिकता है। लोहे से मिट्टी उतरेगी तो चुम्बक खींच सकेगा। निरइच्छा और निरअहंकारी को ही भगवान का दर्शन जहाँ–तहाँ होता है। **Pure in heart only see God.** ज्ञान से इतना दिल रखो जितनी अपने

इकलौते बच्चे के लिए। ज्ञान ही जीवन है। गुरू का शरीर नहीं भी हो तो तुम्हारे पास ज्ञान के स्वरूप गुरू ही रहेगा। जिसके अन्दर ज्ञान पक्का है उसके अन्दर ही गुरू विराजमान है वही गुरू को गया हुआ नहीं समझेगा।□

पत्र गीता भगवान का -95

मैं ब्रहमं हूँ तो किसको कहूँ कि मैं अल्लाह हूँ क्योंकि दूसरा भी तो अल्लाह है इसलिए ज्ञानी को अहंकार नहीं होता है कि मैं भगवान हूँ सब कहते हैं कि अपने को भगवान समझने से अहंकार हो जायेगा पर यहाँ तो उल्टा अहंकार का नाश हो जाता है जब तक खुद को भगवान समझते हैं क्योंकि जहाँ-तहाँ जड़-चेतन सब मैं ही तो हूँ दूसरा है कहाँ जिससे अहंकार करूँ? विवेकानन्द ने जब वैश्यायें देखीं तो एकदम नमस्कार किया कि भगवान तुम सब रूप में नाज़ नखरे कर रहे हो। द्वेत का बिल्कुल धुँआ भी न रहे, यही ज्ञान पक्का करना है। हमें सब शिकायतें है दूसरों से। दूसरा यदि निकल जाये अन्दर से तो सब दुःख-दर्द राग, द्वेष हसद सार (ईर्ष्या जलन) भी निकल जाये। द्वेत के कारण झगड़े फसाद हैं। गुरू आकर केवल स्वरूप की याद दिलाता है कि तुम कौन मैं कौन! अपने को पहचानो मुझे पहचानो, सबको पहचानो। करना कुछ भी नहीं है ऐसी सरल बात है कि दूसरी सभी विद्यायें कठिन हैं जो कि दिमाग में बाहर से ठूँसनी पड़ती हैं। यह आत्मा तो बिल्कुल अपना आप है। केवल सत्य को प्रगट करो।

The only difference between a sage and sinner is that the sage has past and the sinner has future. यहाँ हमारे पास किसी ने अर्थ निकाला कि ज्ञानी जो कुछ आज है वह उसका **Past** का अनुभव है, पापी को **Future** में भोगना पड़ेगा। दूसरे किसी ने अर्थ किया कि पापी को भी **Future** है सुधरने के लिए।□

पत्र गीता भगवान का -96

अपनी **Totaly** न चलाने से भगवान की इच्छा पूरी होगी। भगवान से जो हो वह बहुत अच्छा होगा। खुद कर्ता होकर कुछ भी किया तो कर्म बनेगा। हम अपने को अकर्ता समझें तो हल्के हो जायेंगे नहीं तो भारी हो जायेंगे। भगवान हमारे लिए बहुत अच्छा बैठा सोच रहा है। हम **Thoughtless** होकर रहें। दिल दिमाग़ हमेशा **Rest** में रखें। स्वभाव को वश में रखें। स्वभाव निकल न आये। नहीं तो **Control** से बाहर निकल जायेंगे तो फिर पछताना पड़ेगा। शरीर पर भी इसका असर पड़ेगा। शरीर में आयेंगे तो दूसरा देखेंगे तो स्वभाव निकल आयेगा। □

पत्र गीता भगवान का -97

प्रिय मम् रूप मम प्राण अपने सच्चे स्वरूप को पहचान कर हमेशा अखण्ड आनन्द लूटती रहना। प्रेम पत्र तुम्हारा बेहद प्रेम से लिखा हुआ पहुँचा पढ़कर बेहद खुशी हुई। 'अनन्द अनन्द भया मेरी माई सतगुरू मैं पाइया, सतगुरू पाया सहज सेती मन बजियां बधाइयां।' जब पूरन गुरू मिलता है तो मन में अनहद शब्द की बधाइयां और साज़ बजने शुरू हो जाते हैं। मिठे ओम जा मन में वाज॒ा वज़न, रगूं राग॒ इन्हंईअ में रीधियूं रहन। नस–नस में रग–रग में आनन्द के बाजे बजने चाहिए। हर एक दिन **Holiday** है हर एक रात **Golden Night** है। अब तो भगवान को रोज़ खींच रही हो नहीं तो भगवान इतना भारी था कि कभी घर से बाहर नहीं निकला था। ऐसी कोई रस्सी डाली है कि पत्थर जैसा और पहाड़ जैसा भारी भी तुम्हारे लिए ऐसा हल्का हो गया कि जो पत्ते की तरह उड़ता चला आ रहा है। तुम्हारे प्रेम रूपी तूफान लगने से भगवान पलक झपकते ही कहाँ–कहाँ से तुम्हारे पास आकर पहुँच जाता है। बताओ तो पिछले जनम में या इस जनम में ऐसा कौन सा पुण्य किया है। भाग॒न द॒िनो भरि तद॒हि पिरींअ सां मेलो थियो, जन्मन पोढियो तद्रहि साब पियों 'जनम–जनम का बिछुड़िया मिलिया, साध कृपा ते सूखा हरिया।' 'बहुत जनम बिछुड़े थे माधव ये जनम

तुम्हारे लेखे।' बहुत जनम बिछुड़ कर अब आकर मिली हो। मैंने भी तुम्हारे जैसे की तलाश की। इतने बरस जाकर दुनिया में पड़ीं फिर भी सुख कहाँ मिला इसलिए दुनिया से भी ठोकरें लगवाई जैसे वहाँ कभी भी मज़ा न आये और मेरी याद में, तलाश में रहो। दुनिया में अगर एक जगह से भी सुख मिलता है तो मेरे से मुलाकात न होती। पूछती हो कि दुनिया में यदि कोई बहुत दुखी है तो उसे प्रेम कहाँ से आयेगा सो जिन्होंने दुख दिये उन्हें साक्षात ब्रहम का रूप समझकर बेहद भलाई करने वाला समझो तो बेशक उनके लिए प्रेम का चश्मा (झरना) बहने लगेगा। दुख देने वाला तो कोई भी नहीं है अपने मन की इच्छायें ही हैं जो हमें दुखी करती हैं और किए हुए कर्मों का फल भी है पर किसी का भी दोष नहीं है। प्रेम का चश्मा जो सूख गया है वह गुरू आकर तरोताज़ा करके बहाता है। तुमने मुझको प्रेम सिखाया, सोये हुए आतम को जगाया, एक नई दुनिया में बसाया रूप दिखाया, मस्त बनाया। जो खुद प्रेम का सागर है वह तो बूँद को अपने में समा कर सागर बना देता है जिसमें जो भी आये उसे नहला दे। लिखती हो कि मैं शान्त रहना चाहती हूँ सोई शान्त माना मुस्कुराता हुआ चेहरा होना चाहिए जो हर एक देख कर खुद हमारे जैसा मुस्कुराता हुआ और शान्त हो जाये। तुम्हारा चेहरा तो दिन पर दिन चमकता जा

रहा है और मुस्कुराता हुआ वह तुम नहीं देख सकती हो पर और सभी देख रहे हैं। पहले दिन और आज के दिन में रात दिन का फर्क है पर अभी भी लिख रही हो कि अभी तक बिल्कुल शीतल नहीं हुई हूँ। इसमें तुम्हारी देर है क्योंकि अभी तक मन पूरा नहीं दिया है। जब तक एक ख्याल एक घटना जिन्दगी की मुझसे छिपी हुई है तब तक आनन्द नहीं आयेगा। एक बार मेरे से खुल कर बात करो या लिखो। अपनी पिछली जीवन पूरी बताओ, चाहे मैं जानी जानन हार हूँ तो भी तुम्हें बताने के सिवाय शान्ति नहीं आयेगी। ऐसे कई दुखों और गमों के मारे हुए मुझसे मिले हैं जो आत्महत्या करने वाले थे पर मेरे से मिलने के बाद जिन्दगी बहार हो गयी। मैं भगवान हूँ मुझे सब पता है कि मेरी माया में मनुष्य कितने दुखी हैं हाय–हाय और त्राहि–त्राहि करते मरते जा रहे हैं। बिना आग जले संसार। मैंने ही माया उत्पन्न की है फिर भला मुझे कौन सी खबर नहीं होगी? मुझसे क्या छिपा होगा। सैकड़ो ने मुझे अपने दुख और गम सुनाये हैं पर उन्हें दवा देकर सब भुला दिया जैसे सागर में कितना भी कचड़ा पड़े तो वह वैसा का वैसा है। हमें किसी ने दुखी किया या हमने भी अज्ञानवश होकर किन्हीं को दुखी किया वे सब बातें अब भुलानी है जैसे पिछला जनम भूला हुआ है। ऐसे गुरू के मुख से नया जनम लेकर पिछला अज्ञान का जनम भुलाना

है। पर जैसे सारी दुनिया अपने अन्दर के दुंख और गम अन्दर में ही रखकर मर जाती है फिर वहाँ जाकर धर्मराज को अपना लेखा देती है। सो वह धर्मराज गुरू बनकर आता है हमसे जीते जी सारा हिसाब लेकर कर्मो के चिट्ठे फाड़ कर फेंक देता है। जनम मरण के चक्कर से छुड़ाकर जीवन मुक्ति का आनन्द लुटवाता है। तुमने लिखा कि तुम अपने को इतना महदूद (सीमित) क्यों बनाते हो कि केवल घर कुटुम्ब में तुम्हें देखूँ पर मैं तो हर जगह तुम्हें देखती हूँ। सोई गैरों में भगवान देखना सरल है पर अपनों में जिन्हें बरसों से मन मान कर बैठा है कि ये मेरे हैं जिनमें स्वार्थ है राग और द्वेष है उनमें भगवान देखना मुश्किल है, मुश्किल से देखने में आता है। पाँचों विकार करीबी सम्बंधियों से होते हैं। काम माना इच्छा, इच्छायें अपनों में ही होती है कि ये मेरी इच्छा पूरी करे या मेरी मर्जी से चलें। वे जब मेरी मर्ज़ी के खिलाफ चलते हैं तो दूसरा विकार क्रोध उत्पन्न होता है। गुस्सा भी अपनों पर आता है गैरों पर नहीं आयेगा, पर क्रोध करना है अपने मन पर न कि दूसरों पर। लोभ भी उनके लिए ही होता है कि ये खायें और इनके लिए कमाऊँ। मोह भी उनके लिए होता है जिन्हें अपना समझकर बैठते हैं। अहंकार भी वहीं पर आता है कि मैं पति, मैं पिता मैं बड़ा हूँ, ये छोटे हैं मुझे जवाब क्यों दिया और मेरी मर्ज़ी से क्यों नहीं चले।

मतलब कि द्वेत में ही सारा रोला (झगड़ा) है। द्वेत निकालने से ही मुक्त हो, द्वेत तभी आता हैजब पहले देह याद आती हैं मैं हूँ तो दूसरा भी है पर मैं ही नहीं हूँ तो दूसरा है कहाँ? कहाँ है 'जगत, खतम हो गया खाता, मैंने साजन को साफ–साफ पहचाना।' हर एक जगह अपना आप देखने से स्त्री में स्त्री की भावना नहीं जायेगी। महात्मा गाँधी ने लिखा है कि जब मैंने अपने पत्नी से पत्नी की भावना निकाली तो सारी दुनिया की स्त्रियाँ मुझमें विश्वास रख आईं कि यह सतपुरूष है। जो अपनी स्त्री में फँसा हुआ है वह दूसरा कहीं भी फँस सकता है। जो भी सतपुरूष होकर गये हैं वे पूर्ण ब्रहमचर्य में रहे हैं। भगवान भी उनमें ऐतबार (विश्वास) करेगा समझेगा कि इसे मेरे सिवाय मेरी माया में कोई भी आसक्ति नहीं है।
आखिर न मिला जे रब और सब मिला तो क्या हुआ,
दुनिया में दिल का मतलब पूरा हुआ तो क्या हुआ। □

पत्र गीता भगवान का -98

तुम्हारा प्रेम पत्र मिला बहुत खुशी हुई कि फिर भी तुम्हें सच पहचानने की आँखें मिलीं। थोड़े समय के लिए भगवान ने माया दिखाई जैसे कृष्ण किसी समय यशोदा को तीनों लोक दिखा कर फिर माया दिखाता था कि कहीं यह मुझे पहचान न ले। भक्तों को भी परीक्षा के लिए माया दिखाता था। जो कच्चा होगा वह भूल जायेगा बाकी जिसने पूरी तरह गुरू को भगवान करके पहचाना होगा उसे भले ही कोई आकर कहे कि तुम्हारा गुरू शराब के गुत्ते पर या वैश्या के पास जाते हुए देखा तो भी जिज्ञासू (सच्चा) एक कदम भी पीछे नहीं हटेगा। ईमान (विश्वास) करामतों की करामत है। श्रद्धावान लभतेज्ञानम्। यह बड़ी सावधानी की सीढ़ी है साबुन की सीढ़ी है एक बार फिसला तो फिर शुरू से मेहनत करनी पड़ेगी। इसलिए गुरू का आसरा श्रद्धा प्रेम विश्वास रखकर हाथ पकड़कर ऊपर चढ़ना चाहिए। कुसंग है कोयले के बराबर। कोयलों का संग करे और कालिख न लगे यह तो अनहोनी सी बात है। अपने जैसी या अपने से कम स्थिति वाले का कभी भी संग ना करे, हमेशा अपने से अधिक चढ़े हुओं का संग करें। हमारा काम है संशय वालों को विश्वास दिलाना न कि खुद भी संशय में आ जाना। फिर भी भगवान की तुम पर अति कृपा है कि तुम्हें आँखें दीं। तुम

तो लायक ही भगवान के पास आने के हो फिर तुम्हें कैसे न बचायें? भगवान का हाथ हमेशा भक्त के ऊपर है वह हमेशा कोशिश करेगा कि मेरा प्यारा भक्त गिर न जाये क्योंकि भक्त को चोट लगी माना भगवान को लगी। मुझे तो हर वक्त तुम्हारी फिक्र थी और बड़ी उम्मीद है तुमने कि उसे साथ देकर सत्संग में आगे बढ़ाओगी। मेरी सच्ची भावना थी कि तुम्हें भी सुजागी (जाग्रता) आ गयी। क्योंकि मैं ही तुम्हारे हृदय में विराजमान हूँ। 'बोध अंदर जो दिये उपदेश सही सुत्रांणिज सो दरवेश।' तुम्हारे भीतर जो तुम्हे उपदेश दे वही सच्चा दरवेश (महात्मा) है। 'अन्दर बैठ कर सुनो शान्ति साज़, सतगुरू की सुन्दर आवाज़।' माया तो बहुत ही रूपों में चारों ओर बिखरी हुई है कि कहीं यह गिरे–पर –'माया को लात मारो माया सलाम करे। दुनिया से डरोगे तो दुनिया डरायेगी, आँखें दिखाएगी, रौब जमाएगी तान के सीना चलो दुनिया के बाप हो तुम दुनिया तुम्हारी है।' दूसरे सत्संगों में जाओगे तो सब खुश होंगे पर जब भगवान के पास जाओगे तो सारी दुनिया करीब से करीब सम्बंधी सब बदल जायेंगे क्योंकि सच की राह में अधिक से अधिक रूकावटें आती हैं पर तुम्हारा कोई भी कुसूर नहीं है कैसे भी वीर इस माया में भूल गये। तुम अब खुश हो जाओ कि तुम्हें अनुभव मिला आगे के लिए सुजाग हो गयी। घोड़े सवारी

में अधिक धक्के ज़रूर खायेंगे पर फिर भी कूद कर आगे उठो और आगे बढ़ो। रूकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान, चल चल रे नौजवान। तूफान और आँधियाँ तो आयेंगी पर तुम बैठ कर नाटक देखो दृष्टा होकर खेल देखो। तुमनें ही खेल रचा है तुम ही करने वाली हो, तुम ही देखने वाली हो। कल को भुलाओ जो हुआ उसमें भलाई है सबकी परीक्षा होती है। तुम आज का ख्याल करो। मुझे तो पक्का था कि तुम्हें गफलत की नींद आ गयी है पर ज़रूर सुजाग हो जाओगी। गुरू तो है ही नेःकलंकी अवतार उसे कलंक लगाने वाले खुद नर्क बनायेंगे। तुम शान्त होकर बैठकर खेल देखो।□

पत्र गीता भगवान का -99

भगवान के राज्य में यह कायदा है ही नहीं कि कोई भी सजा से छूट जाये। उसका इंसाफ ही महर है। **They who make sin must suffer.** पापी को भोगना चाहिए। पापी पर दया नहीं करो कि भगवान इसकी आँखें क्यों निकाली हैं। पुण्यों के फल निकलते हैं तो खुश होते हो बाकी पाप के फल मिलते हैं तो दुखी होते हो रोते हो। यह अज्ञान है। आत्मा के ज्ञान से उनके कर्मों और उनके फलों की ओर ध्यान नहीं दो कि यह क्यों हुआ वह क्यों हुआ। मैंने कौन सा कर्म किया था जो यह फल मिला। आत्म में टिको तो कोई भी कर्म तुमसे लागू नहीं है। अज्ञान में, सपने में कर्म किया अब जागो तो न ही कर्म न उसका फल तुझ आत्मा में है। सब सपना समझकर भुला दो। जैसी भावना वैसा फल। गुरू में भी भावना रखेंगे पक्की भगवान की तो कभी भी शंका नहीं आएगी। गुरू की आज्ञा में मरते समय मन डरता है कि गुरू क्या करेगा मेरा क्या होगा, नातेदार, रिश्तेदार सब रूठ जायेंगे, दुनिया में बदनामी हो जाएगी पर हकीकत में जबरदस्त फायदा करता है गुरू क्योंकि सारी दुनिया से छुड़ाकर सच में टिकाता है। गुरू सलाहकार सच्चा दोस्त है, सच्चा वकील है। जीते जी मरने में दुनिया दुख समझती है पर एक बार किसी ने मरने की मौज ली हो तो फिर कभी भी करकेगा

नहीं दुखी नहीं होगा, मरने का आदती हो जायेगा। गुरू माया से हटाकर मन के विपरीत काम करवाकर मायापति, मन का मालिक करके खड़ा करता है मन जीते जग जीत।

ज्ञानी बाहर के महल नहीं बनाता है पर सबके दिलों में महल बनाता है जो महल कभी भी बिगड़ने, टूटने वाला नहीं है।

तुम्हारा घर धर्मशाला है पर तुम मोह रखकर बैठे हो। ज़मीन के लिए दो भाई लड़ते हैं पर है मुसाफिरखाना। बाबा दादा सब कहाँ गये। घर में मोह ममता रखने वाला जाकर प्रेत बनता है। अन्त काल जो मन्दिर सिमरे प्रेत जूण बल बल उतरे।

यह मनुष्य जन्म अनमोल है भगवान के काम में लगाना चाहिए।

भगवान के खेल को बिगाड़ने की कोशिश न करो। जो भगवान की राह पर आता है उसे शादी करने की क्या ज़रूरत है? वह तो योगी का जीवन गुज़ार कर हज़ारों को मुक्त कर सकता है सबको यह संतोष धन देते आओ पर भगवान से कुछ भी माँगों नहीं। फकीर नहीं बनो।

किसी भी माया के पदार्थ के लिए पतन नहीं करो। जो भी तुम्हें मिलना है वह समय पर अपने आप ही तुम्हें मिलेगा। □

पत्र गीता भगवान् का -100

तुम ज्ञान सबको बताओ पर गुरू की पहचान नहीं दो। वह जब देखेगा तुम्हारा ज्ञान अनुभव का है शास्त्रों का रटा रटाया ज्ञान नहीं है तो अगला अपने आप पूछेगा कि यह तो ज्ञान नया है, नई बात है तब वह पागल हो जायेगा ज्ञान के पीछे, खुद ही गुरू के लिए पूछेगा। किताब नहीं पढ़ना है अनुभवी गुरू से अनुभव का ज्ञान मिलता है वही जीवन में असर करता है बहुत से लोगों से मेहनत करने की जरूरत नहीं है, किसी एक को आप समान करो जो लाखों को जाकर बनायेगा। गुरू के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करो पर जल्दी में किसी को गुरू के पास नही भेजो जो वह बेचारा गुरू की गल्तियाँ सह नहीं सके और ज्ञान उल्टा लेकर जाये। शीश गुरू उतारेगा तुम केवल उसे तैयार करो सिर उतारने के लिए, जैसे वह कुरके (दुखी) नहीं सिर कटते समय।

दूसरों को आराम देने के लिए भले ही झूठ बोलो। सच बोलो पर उससे जो सच उठा सके, सह सके। सच कहने में कोई दुखी हो तो उसे सच नहीं बताओ। बुखार हो 103^{0} तो बताओ कि 100^{0} है उतर जाएगा।

तराजू का हल्का पलड़ा तुम लो भारी दूसरे को दो दुनियावी पदार्थ सब देने पड़ें तो भी देकर भगवान को पायेगा सच्चा आदमी। चण्डाल के पास भीख माँगनी पड़े,

राज्य दुश्मन या चण्डाल को या शैतान को देना पड़े तो भी ज्ञान पाओ।

जो मेहनत करेगा अपने पास ज्ञान पक्का रखेगा, जाकर दूसरों को बताएगा वह खुश रहेगा। गुरू को तुमसे कुछ भी नहीं चाहिए भले अपना ज्ञान हासिल करके जाके दो, हर एक का हक है ज्ञान पर, आनन्द शान्ति पर।

कॉलेज से पुराने **Students** जाते हैं नये आते हैं ऐसे ही सत्संग में भी गुरू के पास से पुराने जाकर काम पर लगें और नये रोज़ आये। हँसी हृदय से निकलनी चाहिए न कि बाहर से। सच्ची हंसी उसके निकलेगी जिसके अन्दर कोई भी माया की इच्छा नहीं होगी। **If you love me, keep my commandents.** यदि मुझे प्यार करते हो तो मेरी हिदायतें मानो और उन पर चलो। पाप करना मेरे धर्म में नहीं है। भगवान को नहीं बोलो कि पाप की सज़ा मत दो। **Without punisment the sin will multiply.** सज़ा के बिना पाप दुगुना होता जायेगा।

भगवान द्वारा की गयी भलाइयों के शुकराने मानने हैं जो वह और अधिक दे। तुम ऐसे लायक बनकर दिखाओ कि भगवान तुमसे खुश हो न कि शिकायतें करो कि भगवान ये नहीं दिया वो नहीं दिया पर हर बात में शुक्राने मानो तुम सच में सुधर कर दिखााओ तो भगवान खुश होगा। □

पत्र गीता भगवान का -101

इस राह पर बढ़ाने वाले **Opposition Party** वाले हैं उनके लाख शुक्राने मानने चाहियें। जो भी तुम्हारे मन के उल्टे चले हों उनकी महरबानी मानो चाहे तुम्हारे घर वाले हों चाहे जिज्ञासू हों चाहे गुरू हो। सभी ने बड़ा एहसान किया है क्योंकि हमारे मन को पक्का किया है। जो सहमत हुए इस राह पर उनके भी शुक्राने हैं **Balance** पूरा हो गया–किसी ने प्रशंसा की किसी ने निन्दा की दोनों ही फायदे वाली हुई। हर एक चाहेगा कि मैं आनन्द में रहूँ क्योंकि आनन्द स्वरूप हर एक है तो हर एक अपने अन्दर यही कोशिश करेगा कि मुझे विक्षेप न आये, दुख न सन्ताप करे, अपने आप बढ़ रहे हैं बाकी हम किसी को सिखा नहीं सकते हैं। विकारी देख कर अज्ञानी मूर्ख समझकर किसी को भी सिखाओगे तो वह नहीं सीखेगा पर केवल भगवान की दृष्टि रखो तो वह अवश्य ही बन जायेगा। जिधर गिरती नज़र उनकी ख्याले नूर होते हैं। कोई भी प्रश्न जब तक तुम्हारे में उत्पन्न होता है तो उससे समझो कि अभी अद्वैत सिद्ध किया हुआ नहीं है। वाद–विवाद में समय नहीं गँवाओ पर प्रश्न उत्तर करके निश्चय करो। गुरू जो तुम्हें बैठा बता रहा है कि तुम खुद भगवान हो तो उसमें विश्वास कैसे नहीं रखेंगे, जिसे हमसे कोई भी लालच नहीं वह हमें क्या ठगेगा। तो

भी गुरू की करनी गुरू भरेगा चेले की करनी चेला। यहाँ जो भी आते हैं वे कहते हैं गुरू ऐसा क्यों करता है गुरू ऐसा क्यों करता है, गुरू को भी ऊपर से निराकार का डंडा है इसलिए जितनी सच्चाई रखेगा उतना ही उसे आनन्द मिलेगा वरना उसके मन में भी शान्ति नहीं रहेगी। गुरू गालियाँ भी देता है प्यार भी देता है। हमें गालियाँ याद रहेंगी पर बरसों का प्यार भूल जायेगा। वह मनुष्य कुत्ते के समान हुआ जैसे कुत्ते को पुचकारो तो खुश होगा डंडा लगाओ तो भौंकेगा पर सच्चा भक्त कहता है कि मान करो या अपमान करो तो भी मैं समझूँ कि तुम्हारी समान महर (कृपा) है। चाहे सुख दो या दुख दो मुझे सब मंजूर है। भाई मंझ जैसी परीक्षायें अभी तक गुरू ने तुमसे नहीं ली है वह भाग पुस्तक का तो खोल कर पढ़ो। एक मिनट भी आनन्द और प्रेम के ख्याल से दूर हो तो बहुत बड़ी कसम खाई। जिसके लिए मन आये उसी समय उससे प्रेम से जाकर बात करो कि मुझे तुम्हारे बारे में यह ख्याल आया है। अपनों को ही धिक्कारो कि मेरे मन में दूसरे की बात क्यों घुस आती है क्योंकि यह द्वेत है कि ये दूसरा मैं दूसरा। यदि समझेंगे कि ये दूसरा भूला हुआ भी तो मैं हूँ तो झगड़ा ही खतम। न हम न तुम तो दफ्तर ही गुम। तुम गुरू से भी कस खाते हो डर रख कर, पर हम मूर्ख से भी मज़ा लेते हैं। सतो, रजो, तमो तीनों गुणों में मैं हूँ। कोई सतोगुणी स्वभाव का है कोई

रजो और तमो गुणी स्वभाव का है पर वहाँ भी मैं हूँ तो विक्षेपता कैसी होगी। प्रेम मुड़ना सिखाता है जो मुड़ेगा सो जुड़ेगा। सूखी लकड़ी जैसे मत बनो पर ह्रदय निर्मल रखो, नायलान के जोराब (मोजे) की तरह सबसे **Fit** हो जाओ। मूड हमेशा अच्छा रखना अपना। किसी से भी तंग नहीं हो। कुत्ते बिल्ली, फकीरों को दान करोगे तो वे दूसरे जनम मे आकर खिलायेंगे। कुत्तों की कुत्तियाँ बनोगे कुत्ते आकर खिलायेंगे। फकीर की पत्नियाँ बनोगे तो फकीर आकर खिलायेंगे। जिसने हलवा खिलाया उसी ने पत्थर लगाया यह वृत्ति रखो कि सुख देने वाले या दुख देने वाले दोनों ही भगवान खुद हैं। कितनी भी गालियाँ या अपमान जब हमें न लगे तभी समझो कि हम आत्म में टिके हुए हैं शरीर नहीं हैं। रोना भी भ्रम हँसना भी भ्रम सब सपना है पर सत केवल आत्मा है। जड़ भरत हो जाओ कि किसी का भी फुर्ना (ख्याल) नहीं करना है। गुरू के पास शिष्य आया तो गुरू नाच कूंद ड्रामा करा रहा था दूसरी बार आया तो सब शान्त बैठे थे ब्रहमंज्ञान सुनने के लिए, तीसरी बार आया तो गुरू अकेला बैठा था। कारण पूछा तो तो गुरू ने बताया पहले मायावी जड़ बुद्धि वाले लोग आये थे उन्हें भजनों ड्रामों से खुश करके विरती एकाग्र की और सूक्ष्म की फिर वे ज्ञान सुन सके। अब हर एक निष्काम कर्म में लग गया है मैं अकेला ही हूँ,

फिर नये–नये आयेंगे। गुरू जो भी करता है उसमें राज़ है। सच्चे गुरू के पास 'मैं' मरेगी और लेक्चरारों के पास बुद्धि तेज़ होगी होशियारी आएगी बहस करने की। गुरू क१पा और ईश्वर कृपा भी वही ग्रहण कर सकेगा जिसने अपनी हस्ती खाक़ में मिलाई है। जो यहाँ अहंकार गँवाएगा उतना भगवान के करीब आयेगा। 'अदल करीं त मुहिंजी जाय नाहे,–फजुल करीं तां जीवा।' इन्साफ करोगे तो मेरे इतने गुनाह हैं और भूले हैं कि 'खिन–खिन भूलनहार, लेखे कबहू न छूटिये' पर कृपा करोगे तो जी सकूँगा। भगवान के आगे कोई जीत नहीं सकेगा चाहे अपने को मार कर खत्म कर दे तो भी कोई फीस नहीं दी। गुरू और ज्ञान की फीस बहुत बड़ी है। एक तपस्वी ने 10 वर्ष तप करके भगवान को कहा कि अब फल दो, इन्साफ करो। भगवान ने कहा कि फल यह है कि 10 वर्ष जिस पत्थर पर बैठकर तप किया है वह चट्टान जैसा पत्थर 10 वर्ष तुम्हारे ऊपर रखा जायेगा यह है इन्साफ तुम्हारे अहंकार और समझ का। □

पत्र गीता भगवान का -102

तुम सब होशियार हो गई हो। ज्ञान सबके अन्दर में है। तुमने कोई कम नहीं सुना है। रोज़ सत्संग ज़ोर शोर से करो, एक दूसरे को ऊपर चढ़ाओ अपने सच्चे अनुभव सुनाओ, सच अन्दर से निकलना चाहिए। ज्ञान माना सच्ची समझ। ज्ञान कोई जिन भूत नहीं है, कठिन–कठिन जो कहता है वह बेवकूफ है पर है ही भगवान, सरल स्वभाव रखो, सबको परमात्मा समझकर अन्दर से दिल इतना साफ रखो कि पूरे दिन में किसी का भी अवगुण न दिखाई दे। किसी को भी खराब अच्छा नहीं देखो, केवल अपने को साफ़ रखो कि मैं भगवान देखती हूँ? जलना, पजरना, हसर– सार, बैर–खार निकाल कर प्रेम ही प्रेम दिल में हर एक के लिए जड़ चेतन के लिए रखो। किसी के लिए भी दूसरा समझ कर द्वेष रखेंगे तो अपने आप को दुखी करेंगे और विक्षेपता लायेंगे।

विकार अन्दर में है तो हमें कोई भी नुकसान नहीं डालते हैं पर बाहर दूसरा देखने से वे ही विकार हमें जलाते हैं पर यदि अपना आप देखेंगे तो वे ही विकार भले शरीर में हों पर हमें दुखी नहीं करेंगे। पूरा समय बैठ कर हँसो कि ये सब मैं हूँ। अष्टावक्र गीता पढ़ो आत्मा का निश्चय करो। हज़ारो नाम रूप और उनके गुण अवगुण देखने से तो एक ही परमात्मा देखो। हमारी पुरानी चिट्ठियाँ निकाल कर एक एक खोल कर पढ़ो। ज्ञान

तुम्हारे पास जितना है उतना किसी के पास नहीं है। उदार चित बनो। कंजूस और छोटे दिल वाले नहीं बनो। सबको अपना आप समझेंगे तो न चाहते हुए भी सबके लिए प्यार होता रहेगा। शरीर से वैराग्य और आत्मा का अभ्यास करो। जहाँ भी हो जिस घर में जिस भी हालत में रहो वाह गुरू और शुक्राने याद रहें। रोज़ अपने को गोड़ते चलो। मन को मोड़ कर आत्मा में टिकाओ। सब खुश होकर हँसो, रोने का टाईम गया **Laughing is a best tonic.** हँसो और सबको हँसाओ, अन्दर का कमल फूल खिल जायेगा।

आत्मा गुरू से लो और शरीर गुरू को दो। शरीर गुरू का समझो आत्मभाव गुरू से लो। देह की चिन्ता छोड़ो। तन, मन, धन गुरू का करके समझो। कल की फिक्र नहीं करो। तुम हो ही नहीं यह निश्चय करो। प्रारब्ध शरीर की बहुत अच्छे से अच्छी बनी पड़ी है। कभी भी कोई डर नहीं रखो कि मेरे से क्या होगा, मैं कैसे चलूँगी? तुहारी **Life** दुनिया से ऊपर है सुनहरी है। **Golden Chance** मिला है मनुष्य देह, बार–बार नहीं मिलेगी। एक–एक मिनट एक–एक श्वांस पर **Control** करो, बेकार के बेहूदे ख्याल न चलें। सब ख्याल परमात्मा को अर्पण कर दो वह तुम्हारे बोझ उठा कर बैठा है फिर तुम व्यर्थ ही अपने कन्धे पर बोझ उठाकर भारी क्यों हुए हो? हल्के होकर नाचो कूदो। हमें सब याद हो। □

Divene Dada Bhgwan's Points

1. The One Supreme Purpose of human Life, is Man"s return to its "Divinity."
2. Again reunite with the Absolute, breaking the chain of re-birth forever.
3. By the Grace of "OM" always there will be Souls, who will know and understand the "Truth."
4. You reject the world, and gain the Absoulute.
(complete, independent)
5. Thus a mortal, becomes 'Immortal'.
6. He who has already achieved, must light the way to mortals, who seek the same path.
7. Thus Guru, becomes the Guide of others. Jeevan Mukt's have no other duties.
8. No Guru, can give you 'Realisation.' This you can only attain for yourself.
9. The Guru can Guide and show the way, but the dis ciple must do the practise.
10. Guru guidance can take only two forms :
a. To clear the mind of delusions. (false belief or impressions), thus to overcome past conditioning.
b. To teach the practical steps.
11. It is not so much what you must believe, as those wrong ideas, that you have to reject.
12. Empty the mind of all misconceptions and free the mind from its past conditioning.
13. The past is not presented for discussion, and no

body is going to persuade you, but before this wisdome can have any meaning, empty the mind for all pre-conception.

14. Empirical thinking, will never solve problems or pathways to the Absolute.
15. Realisation and Liberation comes when the rela tives burn at the root.
16. The Philosopher lives in a pattern of thoughts, con cept, decuction (Knowledge by reasoning), and ideas, and soon he begins to doubt everythin. The doubt which grows to the end of themselves.
17. With or Without Philosophy the real truth, the Ab solute is never approched.
18. Thus inspite of all ideas, an theories, the world of relativity remains.
19. Guru and Masters of Realisation. did'nt find the path by speculation (from opinion by guessing).
20. The Truth revealed and everything attained, only in the calm of contemplation. (meditation).
21. The Man who sits outside the travandor, but he can never be intoxicated.
22. The true disciple seeks to join with "OM", and does not crave for any sort of Power.
23. He who seeks something to show and display, they approach the plant because he wants the flowers.
24. From the vast Universe to the OM, the Absolute is all pervading (spread throught out)
25. If Om, is everywhere and in all things, then where

can we find a place where OM is not.

26. Immoratality is not of the world, neither intensity, nor work increase, neither new actions, nor social work.
27. Try to give life a purpose or aim, and you will miss the true Art of living.
28. Change your Attitude and relationship and you can live again as Supreme Self.
29. It is spontaneous and comes of itself to natural man with an Awakened Mind, by sitting calm.
30. It is pose in honour and dishonour, and smiling the same with friend and foe.
31. True Consciousness, can never wear a mask, be tween the pure and impure. never rest.
32. Wisdome may come from a thousand sources, so it is wrong to stress "One School of Thought."
33. Particles of Truth are found every where, and no one School has yet possessed the Whole.
34. But when you turn your back from the world, and all confusions of mankind, Remember only few can get away, so no reproach (regret) for those who stay behind.
35. You are the Highest Self, the Supreme Reality, wake up O' sleeping soul, regain Immoratality. □

दत्तात्रेय के 24 गुरूओं से प्राप्त शिक्षायें

जब दत्तात्रेय सर्वगुण संपन्न गुरू न चुन सके तो उनके हृदयाकाश में आकाशवाणी हुई। मन में आत्मा का संदेश आया कि ऋषि मूर्ख मत बनो। पूर्णतः निर्दोष और नपूर्ण ज्ञानयुक्त व्यक्ति तुम तीनों लोकों में खोज नहीं सकते, इसलिए अपने में सच्चा शिष्यत्व पैदा करो। जिज्ञासा, श्रद्धा और विश्वास से अपने हृदय में पात्रता उत्पन्न करो, फिर तुम्हें गुरूओं का अभाव नहीं रहेगा। दत्तात्रेय के नेत्र खुल गये उनकी सारी समस्या हल हो गई। ज्ञान लाभ करने का जो एकमात्र रहस्य है, वह उन्हें आकाशवाणी ने अनायास ही समझा दिया। अपना मनोरथ पूरा करने के लिए वे उत्तर दिशा की ओर चल दिये। घर से निकलते हुए उन्हें रास्ते में जो–जो चीज़ें देखीं, उसी से शिक्षा ग्रहण की और पूर्ण ज्ञानवान होकर वापस लौटे।

दत्तात्रेय बोले– "पृथ्वी, वायु, गगन,जल, यम, अग्नि, चन्द्र, सूर्य, कबूतर, अजगर, समुद्र, पतंगा, मधुमक्खी, भौंरा, हाथी, हिरण, पिंग्ला वैश्या, कौआ, बालक, स्त्री, लोहार, सर्प, मकड़ी और भृंग– यही मेरे चौबीस गुरू हैं।

(1) पृथ्वी : धूप, शीत, वर्षा को धैर्यपूर्वक सहन करने वाली, लोगों द्वारा मल–मूत्र त्यागने और पदाघात सहने वाली, अभद्रता करने पर भी क्रोध न करने वाली अपनी कक्षा और मर्यादा पर निरंतर नियत गति से घूमने वाली पृथ्वी को मैंने

गुरू माना और उसके इन सदगुणों को सीखा।

(2) वायु : अचल होकर न बैठना, निरंतर गतिशील रहना, संतप्तों को सांत्वना देना, गंध को वहन तो करना पर स्वयं निर्लिप्त रहना– ये विशेषतायें मैंने पवन में पाई और उन्हें सीखकर मैंने गुरू माना।

(3) गगन : अनंत और विशाल होते हुए भी अनेक ब्रहमाण्ड को अपनी गोदी में भरे रहने वाले, ऐश्वर्यवान रहते हुए भी रंच भर अभिमान न करने वाले आकाश का यह गुण मुझे बहुत प्रिय लगा। वही बात स्वयं आचरण में लाने का प्रयत्न आरम्भ करते हुए मैंने उसे अपना गुरू माना।

(4) जल : सबको शुद्ध बनाना, सदा सरल और तरल रहना, आतप को शीतलता में परिणत करना, वृक्ष, वनस्पतियों तक को जीवन दान करना, समुद्र का पुत्र होते हुए भी घर–घर जीवनदान के लिए जा पहुँचना–इतनी अनुकरणीय महानातायें जल में देखी तो उसे मानना ही उचित समझा।

(5) यम : अभिवृद्धि पर नियंत्रण करके संतुलन स्थिर रखना, अनुपयोगी को हटा देना, मोह के बंधनों से छुड़ाना और थके हुए को अपनी गोद में विश्राम देने के आवश्यक कार्य में संलग्न यम को देखा तो उन्हें भी गुरू बना लिया।

(6) अग्नि : निरंतर प्रकाशवान रहने वाली, उष्मा को आजीवन बनाये रखने वाली दबाव पड़ने पर भी अपनी लपटें उर्ध्वमुख ही रखने वाली, बहुत प्राप्त करके भी

संग्रह से दूर रहने वाली, स्पर्श करने वाले को अपना ही रूप बना लने वाली समीप रहने वालों को भी प्रभावित करने वाली अग्नि मुझे आदर्श लगी अतएव उसे गुरू धारण कर लिया।

(6) चंद्र : अपने पास प्रकाश न होने पर सूर्य से याचना कर पृथ्वी को चाँदनी का दान देते रहने वाला परमार्थी चन्द्रमा मुझे सराहनीय सेवक लगा। विपत्ति में सारी कलायें क्षीण हो जाने पर भी निराश होकर न बैठना और फिर आगे बढ़ने के साहस को बार–बार करते रहना धैर्यवान चन्द्रमा का श्रेष्ठ गुण कितना उपयोगी है? यह देखकर मैंने उसे गुरू बनाया।

(8) सूर्य : नियत समय पर अपना कार्य अविचल भाव से निरंतर करते रहना, स्वयं प्रकाशित होना और दूसरों को प्रकाशित करना, सूर्य का यह सद्गुण इसी योग्य था कि उन्हें गुरू माना जाए।

(9) कबूतर : पेड़ के नीचे बिछे हुए जाल में पड़े दाने को देखकर लालची कबूतर आलस्यवश अन्यत्र न गया और उतावली में बिना कुछ सोचे विचारे ललचा गया और जाल में फँसकर अपने प्राण गँवा बैठा– यह देखकर मुझे ज्ञान उपजा कि लोभ से अविवेक और अविवेक से पतन होता है। जिससे यह मूल्यवान शिक्षा मिली, वह कबूतर मेरे गुरू ही तो है।

(10) अजगर : शीत ऋतु में अंग जकड़ जाने और वर्षा के कारण मार्ग अवरूद्ध रहने के कारण भूखा अजगर मिट्टी खाकर काम चला रहा था और धैर्यपूर्वक दुर्दिन को सहन कर रहा था। उसकी इस सहनशीलता ने मुझे अपना अनुयायी और शिष्य बना लिया।

(11) समुद्र : नदियों द्वारा निरंतर असीम जल की प्राप्ति होते रहने पर भी अपनी मर्यादा से आगे न बढ़ने वाल रत्नराशि के भण्डारों का अधिपिति होने पर भी न इतराने वाला, स्वयं खारे होने पर पर भी बादलों को मधुर जल दान करते रहने वाला समुद्र मेरे लिए इतना शिक्षण कर रहा था तो उसे गुरू कैसे न मानता।

(12) पतंगा : लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्राणों की परवाह न करके अग्रसर होने वाला पतंगा जब दीपक की लौ पर जलने लगा तो आदर्श के प्रति उसकी अविचल निष्ठा ने मुझे बहुत प्रभावित किया। जलते पतंगों को जब मैंने गुरू माना तो आत्मा ने कहा– नश्वर जीवन को महत्व न देते हुए सच्चे आस्थावान को आदर्श के लिए उद्यत रहना चाहिए।

(13) मधुमक्खी : पुष्पों का मधुरस संचय करके दूसरों के लिए समर्पण करने को जीवन साधना में लगी हुई मधुमक्खी संसार को सिखा रही थी कि मनुष्य स्वार्थी नहीं परमार्थी बने। मैंने उसका संदेश सुना और शिष्य

भाव से ग्रहण कर लिया। इन उपदेश दात्री देवियों को गुरू ही तो मुझे मानना चाहिए था।

(14) भौंरा : राग में आसक्त (भौंरा) अपना जीवन मरण न सोचकर कमल पुष्प पर बैठा रहा। रात को हाथी ने पुष्प खाया तो भौंरा भी मृत्यु को प्राप्त हुआ। राग में आसक्त प्राणी किस प्रकार अपने प्राण गँवाता है, यह शिक्षा अपने गुरू भौंरा से मैंने सीखी और गाँठ बाँध ली।

(15) हाथी : कामातुर हाथी मायावी हथनियों द्वारा प्रपंच में फँसकर बंधन में बाँध दिया गया और फिर आजीवन त्रास भोगता रहा, यह देखकर मैंने वासना के दुष्परिणामों को समझा और उस अविवेकी प्राणी को भी अपना गुरू माना।

(16) मृग : कानों के विषय में यह आसक्त मृग को बधिकों द्वारा पकड़े जाने और जिव्हा की लोलुप मछली को मछुवे के जाल में तड़पते देखा तो सोचा कि इन्द्रिय–लिप्सा के क्षणिक्र आकर्षण में जीव का कितना बड़ा अहित होता है इससे बचे रहना ही बुद्धिमानी है। इस प्रकार ये दोनों प्राणी भी मेरे गुरू ही ठहरे।

(17) पिंग्ला वैश्या : पिंग्ला वैश्या जब तक युवा रही जब तक उसके अनेक ग्राहक रहे। वृद्ध होते ही वह साथ छोड़ गये। रोग और दरिद्रता ने उसे घेर लिया। लोक में निन्दा और परलोक में दुर्गति देखकर उसका

चित्त निरन्तर खिन्न रहने लगा उस दुखिया को देखकर मैंने सोचा कि समय चूक जाने पर पछतावा ही शेष रह जाता है, सो समय रहते वे सत्कर्म करने चाहिए जिससे पीछे पश्चाताप न करना पड़े। वह दुखियारी पिंग्ला जिसने अपना और दूसरों का जीवन पतित बनाया सद्गृहस्थ का आनन्द और पतिव्रत धर्म द्वारा परलोक साधन का व्यवहार गँवाकर वह बहुत पछता रही थी। उस पश्चाताप से दूसरों को सावधानी का संदेश देने वाली पिंग्ला भी मेरे गुरू पद पर प्रतिष्ठित हुई।

(18) कौआ : काग पक्षी किसी पर विश्वास न करके और धूर्तता की नीति अपनाकर घाटे ही में रहा। उसे सबका तिरस्कार मिला और अभक्ष्य खाकर संतोष करना पड़ा। यह देखकर मैंने जाना कि धूर्तता और स्वार्थ परता की नीति अंततः हानिकारक ही होती है यह सिखाने वाला कौआ भी मेरा गुरू है।

(19) बालक : राग–द्वेष, चिन्ता, काम, क्रोध, लोभ आदि दुर्गणों से रहित जीवन कितना कोमल, सौम्य और सुन्दर लगता है, कितना सुखी और शान्त रहता है, उसका प्रत्यक्ष दर्शन मुझे अबोध बालक में हुआ और वैसा ही बनने के लिए बच्चे को अपना आदर्श माना, उसे भी अपना गुरू कहा।

(20) स्त्री : एक स्त्री चूड़ियाँ पहने धान कूट रही

थी। चूड़ियाँ आपस में खनखनाती थीं स्त्री चाहती थी कि उसके घर आये मेहमानों को उसका पता न चले इसलिए उसने हाथों की चूड़ियाँ उतार दीं– एक–एक ही रहने दीं। तो उनका खनकना बन्द हो गया। इस दृश्य को देखकर मैंने सोचा अनेक कामनाओं को रहते मन में संघर्ष उठते रहते थे, पर यदि एक ही लक्ष्य नियत कर लिया जाए तो सभी उद्वेग शान्त हो जायें। जिस स्त्री से मुझे यह प्रेरणा मिली उसे भी मैं गुरू ही मानता हूँ।

(21) लोहार : लोहार अपने भट्टी में लोहे के टूटे–फूटे टुकड़े गर्म करके हथौड़े के चोट से कई तरह के औजार उपकरण बना रहा था। उसे देखकर समझ में आया कि निरूपयोगी और कठोर प्रतीत होने वाले मनुष्य भी यदि अपने को तपाने और चोट सहने की तैयारी कर लें तो उपयोगी उपकरण बन सकते हैं। लोहार की क्रिया को देखा और उससे जो निष्कर्ष निकला वह गुरू दीक्षा जैसी ही प्रेरणा थी।

(22) सर्प : सर्प दूसरों को त्रास देता है और प्रतिउत्तर में सब ओर से त्रास पाता है यह शिक्षा देने वाला वह दुर्बुद्धिग्रस्त प्राणी यही बताता है कि उदण्ड क्रोधी, आक्रामक और आततायी होना किसी के लिए श्रेयस्कर नहीं हो सकता है। यह शिक्षा शिरोधार्य करके सर्प को भी मैंने अपना पथ पदर्शक ही मान लिया।

(23) मकड़ी : मकड़ी अपने पेट में से रस निकालकर

उससे जाला बन रही थी और जब चाहती थी उसे मुँह में समेट कर फिर पेट से निकाल लेती थी। मुझे सूझा कि अपनी दुनिया हर मनुष्य अपनी भावना के अनुरूप ही गढ़ता है और यदि चाहे तो पुराने जाले को समेट कर पेट में रख लेना और नया वातावरण बना लेना भी उसके लिए संभव और सरल हो सकता है। मकड़ी अपनी क्रिया द्वारा मनुष्यों का महत्वपूर्ण पथ प्रदर्शन करती है यह देखा तो गुरू भाव से मैंने उसे भी प्रणाम किया।

(24) भृंग : भृंग कीड़ा एक झींगुर को पकड़ कर लाया और अपनी भुनभुनाहट से प्रभावित कर उसे अपने समान बना लिया। यह दृश्य देखकर मैंने सोचा कि एकाग्रता और तन्मयता की अर्चना कर मनुष्य अपना शरीर और मानसिक कायाकल्प कर डालने में सफल हो सकता है। इस प्रकार भृंग भी मेरा गुरू ही ठहरा।

सत्‌गुरू किसी व्यक्ति विशेष को नहीं मनुष्य के गुण ग्राही दृष्टिकोण को कहते हैं विचारशील लोग सामान्य वस्तुओं और घटनाओं से भी शिक्षा ग्रहण करते और अपने जीवन में धारण करते हैं। अतएव उनका विवेक बढ़ता जाता है। यह विवेक ही सिद्धियों का मूल कारण है। अविवेकी लोग ब्रहमा के समान गुरू को पाकर भी कुछ लाभ नहीं उठा सकते। दूसरा कोई भी हित साधन नहीं करता उद्धार वो अपनी आत्मा के प्रयत्न से ही हो सकता है।

गुरू बनाने का उद्‌देश्य जीवन को प्रगति पथ पर अग्रसर करने वाला प्रकाश प्राप्त करना ही तो है। वह कार्य अपनी गुणग्राहक विवेक बुद्धि के बिना संभव नहीं हो सकेगा। इसलिए सर्वप्रथम गुरू है विवेक और उसके पश्चात वे सब जो ज्ञान प्राप्ति का आधार बनते हैं।

ओऽम

ज्ञान की सफलता की निशानियाँ

- मन निर्मल आकाश रूप भासे।
- कोई भी पदार्थ चलायमान न कर सके।
- दुःख–दर्द में ईश्वर की महर का हाथ हमेशा दिखना चाहिए।
- मन और इन्द्रियाँ हमेशा भरपूर रहें।
- हर बात हर ख्याल से अपने को असंग रखे।
- हर समय में अपने दिमाग में शीतलता व प्रकाश का दर्शन होता रहे।
- कभी भी कोई भी बात हमको हिला कर न जाये।

माता मदालसा की लोरी

तू शुद्ध है, तू बुद्ध है, तू है निरंजन
सर्वदा संसार माया से रहित
तू है स्वरूप स्थित सदा
संसार सदा स्वप्न है

अब मोह निद्रा त्याग तू
कह रही तनय से माँ
पुत्र! सत्वर जाग तू

ज्ञान की सात भूमिकायें

ज्ञान प्राप्त करने के लिए ज्ञान की सात भूमिकायें बताई गयी हैं।

(१) शुभेच्छा– ज्ञान प्राप्ति की इच्छा।

(२) विचारणा– "मैं कौन हूँ" कहाँ से आया हूँ, कहाँ जाऊँगा? संसार की जितनी वस्तुयें हैं, आते समय भी कष्ट देती हैं, जाते समय भी।

(३) तन्मान्सा– मैं इस शरीर से अलग चेतन आत्मा हूँ।

(४) सत्प्राप्ति– अब मेरे जीवन में केवल सत्य आयेगा।

(५) अनासक्ति– संसार की सब आसक्तियों का त्याग जल में कमल की नाईं, जल में रहते हुए जल से बाहर।

(६) पदार्थ अभावनी– उसे संसार का कोई भी पदार्थ अपनी ओर खींचता नहीं।

(७) तुरीया अवस्था– जाग्रत, स्वप्न, सुषोप्त–तीनों में ब्रहमानंद छाया रहता है।

संसार के बंधन- ज्ञान की आज़ादी

(१) इच्छा– इससे छूटने का उपाय संतोष धन। जब आवे संतोष धन सब धन धूर समान।

(२) विषयों से प्रीत– पाँच विकारों से मनुष्य बँधा पड़ा है इससे छूटने का उपाय आत्म विवेक जागृति से सब छूट जाते हैं।

(३) आदतें– नाम की धुनी से सब आदतें छूट जाती हैं। ज्ञान से जब प्रीत हो जाती है तब पुरानी आदतें खत्म हो जाती है।

(४) अहंभाव– नम्रता से छूटता है।

(५) मोह बंधन-- समत्व भाव से छूटता है। जब नील गाढ़ी हो तो उसमें समत्व का पानी डालकर हल्का करते हैं, मोह गाढ़ा हो तो उसमें समत्व का पानी डालें, प्यार का जल डालें।

(६) आम इंसान की आवाज़ें– दुनिया की तरफ से कान बंद करें। एक गुरू की ही आवाज़ सुनें। गुरू के वचनों में और शास्त्रों के वचनों में ही हमारी श्रद्धा होनी चाहिए। शास्त्र का ज्ञान भी गुरू के मिलने से ही उपयोगी है।

(७) कुसंग– मन का ही बड़ा कुसंग है, बचने का उपाय सत्संग है। जैसे चोर एक दिन में मेहनत से सारी जिन्दगी की कमाई–चोरी करके ले जाता है ऐसे ही हम गुरु के सत्संग से जो खज़ाना सम्भाल के रखे रहते हैं–एक बुरा ख्याल देकर मन चोरी करके चला जाता है।

विचार–

एक– एकरस रहना।

दो– दुई दूर करना।

तीन– तीन लोकों से ऊँचा मेरे सतगुरू का दरबार।

चार– चारो तरफ की सुजागी

पाँच– पाँच कोश से न्यारा

छः– छोड़ दे उसके हाथ में नैया, 'छोड़ सयानप सगली मना।'

सात– सातों दिन भगवान के वचनों पर चलें, सत् का अभाव न करें।

आठ– आठों पहर की समाधि

नौ– नौकरी भगवान की करें

दस– दस द्वारों से ऊपर दम पे कदम

नवधा भक्ति

भगवान ने नवधा भक्ति को इस प्रकार व्याख्यायित किया है–

(१) श्रवण– प्रेमपूर्वक, पूरे मनोयोग से मन मनाभव होकर सत्य का श्रवण, ज्ञान का रसास्वादन लेना भगवतभक्ति की प्रथम कड़ी है।

(२) कीर्तन– ज्ञान के गीत गाते रहे, जिसे निष्काम बोला गया है। ज्ञान जो सुना है उसी के गुण गाते रहें– 'पिरी जो पसण या पचार।' मिड़ई आपा विसर्जन करना है। नर्तकी नृत्य करते समय अपने को भूल जाती है, वैसे ही प्रभु के गुणों के गान से हमारा देह अध्यास गुम हो जाता है, अतः इसे भगवत् भक्ति का द्वितीय सोपान (सीढ़ी) कहा जा सकता है।

(३) स्मरण– अन्दर बाहर से स्व का मरण। आप विसर्जन करिए तो सुमिरण कहिए सोय। आपे का विसर्जन–रह जाए सिर्फ एक प्रभु।

(४) पदसेवन– 'पद' **Means** 'वाणी' यानि गुरू वचनों की सेवा। गुरू वाक्यम् सत्यम्। न कि आराध्य (साकार में गुरू) के पैरों की पूजा, शरीर की सेवा। जिन सेव्या तिन पाइया।

(५) अर्चन– (भगवान–मूर्ति आदि) की सामग्रियों सहित

(धूप–दीप, नैवेद्य जल पुष्प आदि) पूजा करते हैं, वैसे ही 'थाल बीच तीन वस्तु सत्य संतोष विचार' दीपक ज्ञान से, प्रेम पानी, जीवन–पुष्प स्थूल सूक्ष्म कारण शरीर रूपी पत्र, कर्मों रूपी फल से अपनी आत्मा का अर्चन होता रहता है।

(६) वन्दना– अन्तर्मुखी होकर अन्दर से वन्दन चलता रहता है। मानसिक सामग्री से मानसिक पूजा करके वो सुख पाते हैं– 'जो तू है सो मैं हूँ '–नज़र का धोखा मिट जाता है।

(७) गुरूसेवा– गुरू की सेवा, भगवान की सेवा– अटकना पर लटकना नहीं। एक समय तमोगुणी भक्ति दिखती है पर फिर सर्व से वही प्रेम–''चरण धूल तेरे जन की होवां।''

(८) सखाभाव– आराध्य, आदर्श (गुरू) के साथ मित्रता भाव पर एक अदब के साथ **Misuse** नहीं। हुज्जत (मित्रता) इज्जत के साथ नहीं तो **Familiarity breeds contest.**

(९) आत्मसमर्पण– भक्ति की पराकाष्ठा है आत्मसमर्पण– जहाँ भक्त रहता ही नहीं, होता ही है भगवान। आराध्य के प्रति समर्पित होने के कारण राजा मोरध्वज ने अतिप्रिय पुत्र की बलि सहर्ष दे दी– उफ तक नहीं किया। आराध्य की प्रियता ही अपनी प्रियता हो जाती है भक्त के लिए आत्मसमर्पण की स्थिति में– ''जियें हलाई तियें वाह–वाह'' ''गुरू परिपूर्ण समर्पित हो जा, धोखा कभी खा नहीं सकता।'' □

पत्र गीता भगवान का -103

सच्चे गुरू के मुख से मानो कमान से तीर निकलता है जो आर पार घुस जाता है केवल श्रद्धा और विश्वास से कोई **Catch** करे। गुरू मुख नाम झपै इक वार। सींप बरसाती बूँद **Catch** कर एक दम मुँह बन्द कर देती है तो वह मोती होकर निकलता है। इस प्रकार गुरू के वचन सुनकर यदि मौन रहें और वही विचारते रहें तो वे भी हीरे मोती होकर निकलते हैं। मत विच रतन जवाहर माणिक जे इक गुरू की सिख सुणें। शिष्य यदि गुरू की एक बात सुने तो उसकी मत में जो हीरे जवाहर पड़े हैं वे प्रकट होकर निकल आयें। खज़ाना छिपा पड़ा है उसका गुरू आकर पता बताता हे। सभी विकारों को निकालने का एक ही रास्ता है सबको अपना आप करके समझो। सब बदमाशी मन की है। मन तुम्हारे और गुरू के बीच में रूकावट है। जब मन और बुद्धि दोनों को अर्पण करते हैं तभी इस मन से जान छूटती है। शरीर सभी के विकारी हैं। यदि दूसरे में विकार देखने में आया तो आराम हमारा खराब होता है। निर्विकारी है आत्मा। आत्मा पर नज़र रखो कि सब अपना आप है दूसरा कोई है ही नहीं। जगत है आइना जिसमें केवल मैं ही हूँ। मेरी परछाई है जगत। संशय हज़ारों हैं पर निश्चय तो एक ही है। यदि कोई गुरू हमें तारने आता है यह मन उसे ही मारने आता है पर मन बेचे सतगुरू पास तिस सेवक के कारज रास। एटम बम

का मुकाबला करने वाला आत्मा का बम है यानि कि प्रलय हो जाये ।तो भी मैं आत्मा मरने वाला नहीं हूँ। मैं अमर अजर हूँ। आत्मा के सिवाय दूसरी हर एक बात नकारते आओ। बीती और भविष्य की छोड़ कर (भुला कर) वर्तमान में रहो। **Live in the present.** आज का आनन्द लूटो, एक मिनट के बाद क्या होगा यह नहीं सोचो। गुरु तुम जनवरी में आना सो तुमने काल पर जीत पाई है क्या? **Now or never** का यह ज्ञान है। ईश्वर का अनुभव करना नहीं है पर अपने को ईश्वर करके पहचानना है कि मैं क्या हूँ? घर पर बैठे किसी को भी ज्ञान लगना नहीं है। सबने पहाड़ों पर नदियों के किनारे पर घर बच्चों से दूर जाकर एकाग्रचित्त से सुना है इस तरह एकाग्रचित्त से यह ज्ञान हफ्ते में जल्दी लग जाता है। बाकी गुरू भले बीस बार आये तो होगा कुछ भी नहीं। पहले गुरू आदत डालता है पर "पाण्हंई मिलन्दुइ होत पर तूं बि थिजांइ कुछ अग़भरी, मतां चवई ब़रोच त कमीनीअ मां कीन थियो।" अब आगे आप को बढ़ना है। भगवान बहुत से कदम उठा कर आपके पास आया अब जो आप कर सकते हैं वह गुरू को नहीं कहें। आप समरथ हैं क्या नहीं कर सकते हैं। पुरूषार्थी पहाड़ हटा सकता है। आपके त्याग से आपको फायदा पड़ेगा। हमारे त्याग से हमें। "त्याग़ जी ताकत ते आहे मन जी मौजुन जो मदार" त्याग की ताकत पर मन की खुशियाँ आधारित हैं। त्याग करना है अपने

अहम् भाव का सब मर्ज़ी इच्छायें छोड़कर एक मैं की शरण लो कि मैं क्या? इस राह पर किसी की भी मदद नहीं चाहिए एक गुरू के सिवाय। सन्त के पास जाइए तो आप साथ न लीजे कोय। "हिकु सतगुरू अथेई साथी बियो सजण तूं न गोल्ह।" प्रेम गली अति सांकरी जामें दो न समाय। प्रेम की गली इतनी पतली है जिसमें दो नहीं समायेंगे यानि गुरू और मेरे में भी जब तक भेद है तब तक प्रेम नहीं है। गुरू और मैं मिल कर एक हो जायें तभी प्रेम की गली में प्रवेश कर सकेंगे। गुरू के सिवाय सारा जगत भुलाना है। मन में कुछ भी दूसरा नहीं रखना है। "और आस जब छोड़ी है मैने तो मेरोनंग अब तोपे पड़ो।" मीरा ने अपने पति को भुलाकर भी केवल कहा कि "मेरे गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।" हम अपने से पूछें कि हमारा सबसे अधिक प्यार गुरू से है या दूसरा कुछ भी अन्दर है। गुरू के सिवाय कितना समय और सम्बंधियों के सिवाय कितना समय रह सकते हैं? जैसे मछली पानी के सिवाय नहीं रह सकती है ऐसी तड़प जब तक नहीं हुई है, जगत ज़हर समान नहीं लगा है तब तक भगवान नहीं मिलेगा 'सच्चो मजो थेई मंझि वैराग, सवें सियाणा दिसु तूं पुछाए।' सम्बंधियों को जल्दी भगवान समझ बैठते हैं पर यहाँ तो पहले सारी सृष्टि को भगवान समझ कर सर्व से प्रेम करके झूंगे में अपने वालों को भगवान समझना है बाकी अपने वालों से हमेशा वैराग्य में रहना है क्योंकि

मोह सात चमड़ियों में जन्मों से अपने वालों के लिए पड़ा है उनकी तरफ तो हमेशा झुकाव है मन का पर अब **Change** करना है। 'लोक वहे थो लह वारो पर तूं त ऊँचो बहु ओभार' आप हरदम हमें याद हैं। याद करना है बिछोड़ा, विस्मृति है मेलाप। जो तुम्हारे साथ अंग संग है वह किस समय भूला हुआ है जो याद करें। मैं तुम्हारे पास हूँ तुम मेरे पास हो, हर वक्त मौज में रहो। हम सभी तुम्हें याद करते हैं तुम सच्चे प्रेमी हो तो तुम्हारा रास्ता **Clear** है। हर वक्त खुशी करो, सब समय बना पड़ा है। तुम्हें जुदा रखा है प्रेम बढ़ाने के लिए, "सिकां सिकां शाल न मिला मतां मिलन्दे ई माठ अची वञें।" जब मुहब्बत की चिंगारी भड़केगी (जल उठेगी) तब न तुम रह सकोगे न मैं। □

पत्र गीता भगवान का -104

सुस्ती तमोगुण है। अर्जुन गुडाकेश यानि सुस्ती आलस्य को जीतने वाला था। गुरू भी यदि तुम्हारी तरह सुस्त होकर अपेन घर बच्चों के साथ बैठा होता तो तुम्हारा और इतनों का उद्धार कैसे होता। जैसा आनन्द तुम्हें मिला है वैसा जब तक दूसरों को नहीं दिया है कर्ज़ा चढ़ा पड़ा है। 'आप जपे औरां नाम जपावे।' पूरे दिन में जब तक किसी एक को विश्वास नहीं दिलाया, किसी टूटे दिल को हमदर्दी नहीं दी तसल्ली नहीं दी है तब तक रोटी हराम है। अब आप न केवल शरीर के डाक्टर है पर मन के भी। डबल डाक्टरी पास करके यदि कोई बैठ जाये घर में तो मरीज़ बेचारे तो बीमारी में चिल्लाते ही रह जायेंगे। हमें सीखने का भी जबरदस्त शौक फिर दूसरे के लिए भी इतनी करूणा होनी चाहिए जैसे गुरू मेहनत करता है। प्रेम है एक तरफा **One way trafic** निष्काम मेहनत जरूर सफल होगी। एक का भी उद्धार किया तो समझो पूरे शहर का उद्धार किया। आपको भी पता चलेगा कि आपके पास कितना ज्ञान है। कैसे राईट जवाब दे सकते हो । वह आपका विश्वास देखकर हैरान हो गया या नहीं? इस बेकार शरीर से किसी का काम हो किसी के संशय उतरे शक्ति मिले तो यह अच्छा या नींद करके अपना जीवन गँवाएं तो अच्छा? नींद करके किसी ने

जीवन की पहेली नहीं सुलझाई है । आपका असली गुरू नानक भी घर बच्चों के साथ बैठ जाता तो जगत का उद्धार कैसे करता? निष्काम जीवन की चाशनी जिसने चख कर देखी वे सकामी कर्म बन्धन रूप समझते हैं। डाक्टर से पूछो कि अपनों का इलाज अपनों को सुख तो हर एक बैठा दे रहा है पर ये (दादा) कहते हैं सबके लिए समान कम ज्यादा नहीं यही समता योग है। गुरू नानक ने भी अपने स्त्री बच्चों की चिन्ता की क्या? जो इस भगवान के काम पर लगा हुआ है उसके ऊपर कोई भी फर्ज़ धर्म ड्यूटी नहीं है। करे या न करे वह है स्वार्थ के बिना। ज्ञानी कुछ भी करने के लिए बँधा हुआ नहीं है वह अपनी मर्ज़ी का मालिक है उससे कोई ज़बरदस्ती कर्म नहीं करा सकता है जैसे अज्ञानी बैल की तरह आँखें बंद करके बैठा बोझ ढ़ोता है कि ये मेरे हैं मैं इनका हूँ बस मुझे केवल इनकी चिन्ता करनी है। वह छोटे कुटुम्ब की चिन्ता फिक्र छोड़कर बड़े कुटुम्ब से मिल जाता है सारी सृष्टि का मालिक राजाओं का राजा है 'उसे कौन कहे कि ऐसा करो वैसा नहीं करो।' वैराग्य में अपना शरीर भी याद नहीं है सो सम्बंधी कहाँ से याद आयेंगे। वे गृहस्थ एक कुत्ते कुत्ती के खड्डे को समझ कर बैठे हैं। चार दीवारों और छत वाला घर 5-7 बच्चे और स्त्री बस भोग भोगने हैं, मोह को फर्ज़ समझ कर अपने को शाबासी दे

रहे हैं कि हम सद–गृहस्थी हैं पर सच्चा गृहस्थ है घर में स्थित आत्मा रूपी घर में स्थित हों। सारी दुनिया हमारा घर है। आप यहाँ सभी को बहुत याद आते हैं। रोज़ इन्तज़ार करते हैं कि कब आते हो? आप सपने में देख रहे हैं तो हम भी याद कर रहे हैं। **Love wins Love.** आपको भीड़–भाड़ पसन्द नहीं,जब सबको अपना कुटुम्बी समझेंगे तभी मज़ा आयेगा। □

पत्र गीता भगवान का -105

गुरू की कृपा बाहर से नहीं मिलेगी पर अन्दर से अपने आप से ही मिलेगी। आत्मा ही खुद कृपा है। **Grace always is and is not given. Grace is the self, Guru, God, grace and self are same. Grace is within. It is what you are and something outside yourself.**

आत्माकार को अन्दर से ही आशीर्वाद मिलेगा बाहर से नहीं। बाहर से कहीं से भी कृपा नहीं होगी। 'सब कुछ घर में बाहर नाहीं, बाहर टोले से भरम भुलाई।' ज्ञानी ज्ञान के बाद निरइच्छा होते हुए भी प्रारब्ध अनुसार बहुत से कर्म करता है, जब तक उसकी प्रारब्ध का चक्कर खत्म हो और 24 घण्टा ही निष्काम जीवन हो जाये। दादा ने ज्ञान के बाद धन्धे व्यापार किये, लक्ष्मी ने मशीन चलाई। ज्ञान के बाद पन्द्रह वर्ष काम किया है। जब बहुत रश बढ़ गयी सत्संग की, ज्ञान के भक्त बढ़ गये उन्होंने जबरदस्ती उनसे काम छुड़वाये। हर एक के घर की प्रकृति अलग है। अपने पैरों पर खड़े होकर किसी के ऊपर अपने जीवन का बोझ न डाल कर यदि हम अपना काम करके कमा कर सम्बंधियों को भी दें और अपना भी खर्चा निकालें तो उसमें कोई खराब बात नहीं है। अन्दर में शक्ति रहेगी **Inferiority** नहीं रहेगी नहीं तो जीव भाव में मन हमेशा कमज़ोर करेगा कि मे। किसी का खाती हूँ

जब तक कि कोई ब्रहमज्ञानी आप परमेश्वर हो जाये और अपने को निराहारी निरासक्त शरीर रहित, माया रहित समझे। ब्रहमज्ञानी का बोझ प्रकृति पर है क्योंकि वह इस शरीर का दावा छोड़कर टोटली निष्काम होकर खड़ा है बाकी और सभी जो देह में है, जिज्ञासु है उन्हें यह ख्याल आयेंगे इस लिए उनको शरीर निर्वाह के लिए कर्म करना पड़ता है पर इसमें वह अकर्ता अभोक्ता है। मैं नहीं करता हूँ भगवान जो करता है सब भलाई है जहाँ–तहाँ से अनुभव लेकर ऊपर चढ़ता है। लगन और सच्चे प्रेम वाला कहीं भी माया में गिरेगा नहीं उल्टा ऊपर चढ़ता जायेगा। गुरू का जिसने हाथ पकड़ा है वह कभी भी नहीं छूटेगा। जिन्होंने भी तुम्हें मदद की है सभी के शुक्राने मानने से दिल खुश होगा। □

और सुख आनन्द
तुम्हारी गीता

पत्र गीता भगवान का -106

हमें भी वैराग्य लेना चाहिए कि हममें से कोई शरीर छोड़ जाये तो दूसरा कोई दुखी तो नहीं होगा? यदि वह दुखी होगा तो इसमें तुम्हारा कसूर है क्योंकि तुमने उसे जीते जी ही अपने शरीर से मोह निकलवा कर भगवान पर भरोसे नहीं रखवाया है। आपने उन्हें अपना आधार दिया है कि मैं तुम्हारा हूँ तुम्हें कमा कर खिलाऊँगा उस पर दया दिखाकर कि कहीं यह दुखी न हो इसलिए मीठा बोलूं, दिल की बातें करूँ। यही कारण है कि मरने के बाद भी मनुष्य स्वार्थ और सुख याद करके दुखी होता है। तुम अपने से पूछो कि तुम्हारे और तुम्हारे करीबी सम्बंधी के शरीर छूटने पर तुम्हें क्या होगा? तुम और दूसरे सब अपने पैरों पर **(Self dependent)**हैं या पराधीन हैं। जहाँ सम्बंध कोई भी दिल में है वह पक्का दुखी होगा। जो जीते जी ही एक दूसरे के सिवाय रह नहीं सकता वह मरने के बाद कैसे रह सकेगा? इस लिए गुरू रिहर्सल करा देता है। जीते जी ही मौन सिखाता है। हम समझते हैं गुरू हमें जुदा करता है, द्वेष सिखाता है पर अन्दर से तुम्हारी इच्छा मोह रूपी रोग निकालता है। तुम्हें दर्द हो तो समझना कि इच्छा है, पर गुरू राईट है। हम चाहते हैं कि सम्बंधियों से निभ जाये पहले से भी अधिक प्रेम हो बाकी झूंगे में मुक्ति मिल जाये। वैराग्य और मौन के

सिवाय ज्ञान पक्का नहीं होगा। वैराग्य ही जड़ है। गुरू से और अपने से सच्चा रहना चाहिए। भोग और भगवान साथ नहीं मिलेगा। जब खट्टे होंगे तभी ज्ञान समझ में जायेगा। जब तक माया में से किसी भी प्रकार का रस आ रहा है बाहर से तब तक पक्का दुख होगा। गुरू के सिवाय दूसरे किसी से रत्ती भर भी प्यार है तो यह मोह है। सब तरफ से मन हटाकर हे अर्जुन मुझ में रख। जिसने भगवान में या अपनी आत्मा में मन नहीं टिकाया है वह माया में अटका हुआ है इसलिए वह दुखी होता है। मत करो किसी से प्यार सब मतलब के हैं यार, 'अपने सुख स्यूं सब जग बांन्धियों को काहू को नाहीं, प्रीतम जान लियो मन मांहिं।' दूसरों को खुश करने से अपने आप को खुश करो, आनन्द हासिल करो। **Be silence and rule the world.** उल्टी की हुई कभी चाटते नहीं है, ऐसे माया को मिथ्या समझा जिसने वह उससे प्रीत कैसे करेगा। जो स्त्री को अपनी स्त्री करके नहीं समझता है उसके पास सारी दुनिया विश्वास रखकर आयेगी कि हम तुम्हारे हैं क्योंकि वे समझेंगे कि यह केवल एक स्त्री के मोह में फँसा हुआ नहीं है, हमें भी प्रेम दे सकेगा। जो माया में बँधे पड़े हैं, वे यहं सहज योग समझ नहीं सकेंगे। जाग जाओ जो फिर झपकी न आये। तुम्हारी सबको ज़रूरत पड़े पर तुम्हें किसी की भी **Company** की ज़रूरत न पड़े। तुममे से

एक पक्का होगा तो दूसरे को सावधान करेगा नहीं तो "बुई अन्धा मिली अणजांण, वेठा वाट विञाए।" "बेड़ा पाणं लुढ़ी देई हत्थ बियन खे।"

दोनों अन्धे अनजान मिलकर अपनी राह भटक गये (भूल गये)। दूसरों को हाथ देकर (सहारा देकर) खुद बह गये। पहले अपनी जड़ पक्की करो (मज़बूत करो) अपने को सुधारो अपने को समझाओ। दूसरा है कहाँ जिसे खुश करें, दया करें, सुधारें और समझायें। अपने को केवल समझा कर पूरा करें उसके लिए यह जनम भी थोड़ा (कम) है। काश! अन्त तक सावधान रहे, कभी भी बेपरवाही (असावधानी) न रहे। **Controle** में यह जीवन पूरा हो जाये। हमें देखकर दूसरे भी हमारे आदर्श से सीखें। □

पत्र गीता भगवान का -107

हमें राज्य करने और भीख माँगने में कोई फर्क नहीं लगना चाहिए। 'प्रभु भावें तो बिन सांस राखे।' सब दुनिया के सुख हैं पानी पर लकीर। विवेक और विचार को बढ़ाओ। जब माया के सब पदार्थ मिथ्या लगते हैं तभी भगवान सत्य लगेगा। सत्संग में कहाँ–कहाँ से भक्त आते हैं उनके अनुभव ही हमें चढ़ाते हैं हमें कहीं भी आना जाना भी नहीं पड़ता है पर घर बैठे सब अपना अनुभव बताकर जाते हैं। जिन्होंने माया में अपनी सारी उम्र सत्यानाश की है वे कैसे दुखी हुए हैं यह दिखाई दे रहा है। अब प्रेम की दुनिया बढ़ाई है सबमें वही परमात्मा देखा है तो मोह की दुनिया से कैसे छूट गये हैं। सब हमें क्यों चाहते हैं? जितना गुरू को चाहते हैं उतना तुम्हें चाहते हैं? क्यों नहीं कोई तुम्हें चाहता? गुरू को सब राजा तन, मन, धन देकर मुक्त होते हैं। तुम्हें किसी ने आकर तन, मन, धन दिया है? कौन सी बाकी तुम्हारे अन्दर कमी है? गुरू और तुममें बाकी कौन सा फर्क है? तुमने इतना किसी को खींचा है तो वे तुम्हारे पास आए और रात दिन तुम्हें खींचे और तुम्हारी नींद खराब करे। तुमने अपना ऐसा दायरा निष्काम प्रेम का क्यों नहीं बढ़ाया है? गुरू तुम्हारी तरह सुस्ती और आलस्य करता है या सारा वक्त सबके उद्धार में व्यस्त है। नींद करते–करते जीवन की पहेली

किसी ने नहीं बूझी न ही दूसरों की बुझा **Solve** सकता है। ज्ञान के बाद निष्काम नहीं हुए तो फिर सकामी बंधनों में फँसे रहेंगे कोई न कोई कर्म बनेगा पर कटेगा नहीं। निष्काम में कर्म नहीं बनेंगे। गुरू का बोझ उठाकर नींद नहीं करनी है पर यह संदेश सबको छत पर चढ़कर देना है। □

पत्र गीता भगवान का -108

जैसे दान करके फिर वापस नहीं लेते हैं ऐसे हम सब कुछ भगवान का समझकर अपना नहीं समझें। आखिर भी है किसका? भगवान किसी समय भी वापस ले जायेगा क्यों न हम कहें कि जिसकी वस्तु उस आगे रखें, प्रभु की आज्ञा अपने माथे। गुरू से ख्याल मिलाकर एक कर दो तो कभी भी ऐसा नहीं कहोगे कि गुरू ने ऐसा क्यों कराया। 'तेरी इच्छा सो मेरी इच्छा।' आज्ञा पालन भी प्रेम में हो जाता है। जो ज़बरदस्ती आज्ञा पालन करता है उसकी खुशी दब जायेगी। किसी न किसी वक्त गुरू को ही दोष देगा कि गुरू ने यह बात मनवाई। लाचार नहीं पर खुशी से ख्वाब करना चाहिए। नाप तौल करो कि ये सच्चा या वो सच्चा। यह दुनिया सत्य है या परमात्मा। इस ज्ञान की कितनी कद्र करनी है। फीस क्या है? शीश दो तो ईश पाओ। जिसे गुरू की भलाईयों की कद्र है वह भूल कर भी गुरू की गालियों और क्रोध पर ऐतराज़ नहीं करेगा कहेगा कि इसमें भी भलाई है। तेरे काँटों से भी प्यार तेरे फूलों से भी प्यार। हैण्डिल होकर ही चलने में ही फायदा है कि जैसे तुम चलाओ वाह-वाह भगवान समय पर कोई भी परीक्षा भेजकर **Stock Checking** करता है कि झूठा कौन है सच्चा कौन? झूठे गिरते हैं खड्डे में, सच्चे पकते हैं। हर एक की परीक्षा हो जायेगी इसलिए सुजाग रहें,

परीक्षा के समय नींद न आ जाये, फेल न हो जायें। जिस समय ऊपर चढ़ते हैं तो अधिक सम्भल जाते हैं ऐसे इस ज्ञान में जितने ऊँचे हो जाओ सम्भलकर रहना कि कहीं फिसल न जाऊँ। चढ़े तो चाखे प्रेम रस गिरे तो चकनाचूर। मैं और तू में ही रोला (गड़बड़) है। अपने को जीते जी मारकर काफूर हो जाओ, राख भी न बचे। नम्रता, सेवा, श्रद्धा, प्रेम मरने तक हो, बढ़ती कला चन्द्रमा की तरह रहे नित-नित होत सवाया। कल से आज बढ़ोतरी (उन्नति) हो, पीछे पैर नहीं रखना है-शौक हो कि करूँगी या मरूँगी। कमज़ोरी सभी पापों का मूल कारण है दूसरा कोई भी पाप नहीं है। केवल आत्मघात से ही शरीर में कमी आती है कि मैं कैसे कर सकूँगी, मैं निर्बल हूँ। यह मंज़िल बड़ी औखी (कठिन) है, पर हम शेर की औलाद हैं तुम ने शेर का दूध पिया है तुम्हारा अन्दर (मन) सोने के कटोरे के समान शुद्ध और पवित्र है। गुरू ने लायक समझकर यह ज्ञान का अमृत पिलाया है। विश्वास तुमने जितना रखा है उतना पाया है। विश्वास करामात है। बीस आना विश्वास हो न कि सोलह आना- अपने में चाहे गुरू में। मुझे तुम हरदम याद हो। तुम्हारा सच्चा प्रेम और सच्ची सेवा कभी भूलने वाली नहीं है। गुरू की खास तुम पर नज़र है यह तुम्हें खुनकी रखनी चाहिए।□

पत्र गीता भगवान का -109

तुमने अपना आप पहचाना है– जहाँ मैं तुमसे तुम्हारे ढूढ़ने से पहले ही मिला हुआ हूँ इसलिए तुम पर्दे अपने हटाओ। मन का पर्दा, खुदी का पर्दा उतारकर देखो तो मैं न तुमसे जुदा हूँ न तुम मुझसे जुदा हो। देखने की लिए उस पदार्थ की कोशिश की जाती है जो अपने से जुदा होता है पर स्वयं प्रकाश हमारे साक्षी भाव से थोड़ा भी जुदा नहीं है इसलिए सिवाय उसके साथ एक होने के दूसरा कोई भी साधन उसे अनुभव नहीं कर सकता है।

❖ मैं कभी (कब) और कैसे मुक्त होऊँगा यह कैसे और कब निकाल दो तो अभी ही मुक्त हो।

❖ सत्य की राह पर एक भी शुभ चाहे अशुभ इच्छा रूकावट है।

हर एक अपने संस्कारों से आगे बढ़ता है। पूरा पुरूषार्थ करके सब पिछले संस्कार मिटाकर बिल्कुल साफ हो जाओ। रात और दिन का फर्क **Change** लाओ अपने आप में। जो पहले करते थे वह अभी नहीं करो। मन के एकदम उल्टा चलो तो मन मरा ही पड़ा है।

❖ **Will Power** वाले के सामने कोई भी माया खड़ी नहीं हो सकती है। बीसो नाखूनों का जोर लगाकर दाँतो से दाँत कसकर इच्छा का त्याग करो, नहीं तो इच्छा ब्रहम से जीव, जीव से निर्जीव बना देगी।□

पत्र गीता भगवान का -110

खावंद पहिंजे ख्याल में पियो रे फ़ाहीअ फ़ासी। तुम राजाओ के राजा अपने ही ख्याल में बिना रस्सी के बँध गये हो और कहते हो कि मैं बन्धन में हूँ , यह मेरे ऊपर फर्ज़ है यह ड्यूटी है मेरे ऊपर। मनुष्य है ईश्वर पर अपने को नहीं पहचानता तो गधा बनकर बैठ कर बोझ ढ़ोता है। अपने को संसार में मानकर बैठा है पर संसार बाहर नहीं है, मन ही संसार है। जैसे मन का संसार भुलायेंगे तैसे बाहर का संसार भी भूलता जायेगा केवल भगवान ही रह जायेगा। ख्याल में इतनी शक्ति है कि वह संसार को रच भी सकता है और लय भी कर सकता है। अपना ही ख्याल फँसाता है और छुड़ाता है। जीव समझकर फँसा हुआ समझता है ईश्वर समझकर वहाँ का वहाँ मुक्त समझता है। है ही अपनी समझ का रोला। जेल में दो जने गये एक ने देखा कीचड़,दूसरे ने देखे तारे। हर एक की दृष्टि अपनी है कि वह संसार देखता है या भगवान। **Change your outlook and view.** गुरू ने जब अपने को शमा की तरह जलाया तभी कोई परवाना बनकर उस पर अपना आप कुर्बान करता है। उसका आदर्श हमारे सामने है तो हमें भी सरलता होती है कि वह कैसे मौन में है, निष्काम है, कैसे फुर्नो से खाली है उसने अपना संसार कैसे गायब किया है। कहाँ गया उसका घर–बार,

कहाँ गये उसके सम्बंधी, साथी, दोस्त, समाज, लोक और लोकारीत? वह कैसे अकेला बैठा है कैसे उसे संसार छोड़ गया? **Be good and all will leave you.** उससे हम भी सीखें। नानक ताके लामे पाय। बाहर से छोड़ने से भी कुछ नहीं छूटता, अन्दर संकल्प–विकल्प जैसे–जैसे शान्त हो जाते हैं तैसे बाहर का संसार दिखने में नहीं आता। बाहर से हमें कोई बंधन में नहीं डाल सकता पर अपना ही मन बंधन है। मन का मौत ही आत्मा को जानना है। आत्मा में जो जागता है वह संसार से सोता है। जाग्रत में ही गहरी नींद का अनुभव करता है। गहरी नींद में यह ख्याल कभी नहीं उठता है कि मैं कैसे मुक्त होऊँ या दुखी–सुखी हूँ क्योंकि वहाँ उसका अहम सोया पड़ा है फिर जब जागता है तो अहम भाव में मैं–मैं करता है, मेरा तेरा करता है। जैसे गहरे नींद में थोड़े समय के लिए आनन्द है वह **Sample** है। ज्ञानी 24 ही घण्टे उस गहरी नींद के आनन्द में है। 'लाहे लोक लजा साथी सुता निन्ड में।' सामी कहता है लोक लाज उतारकर वह गहरी नींद में सोया पड़ा है। अपने से पूछो कि हम भी जागते हुए नींद में हैं या अभी जगत देखते हैं। जगत के दृष्टा हैं या अपने आप के।□

पत्र गीता भगवान का -111

सिर को अपना पाँव बना लें। ऐसी एक–एक के आगे नम्रता करो जो अगला पत्थर जैसे हृदय वाला हो तो भी पानी हो जाये नम्रता में ही अमरता है। एक से भी द्वेष होगा तो शान्ति नहीं आयेगी। अपने को रोज़ मोड़ो बदलो। 'फेरो खाओ न त फुरजी वेन्दा।' बदलाव लाओ नहीं तो लुट जाओगे। गुरू मन को मारना नहीं सिखाता पर मोड़ना सिखाता है। रबड़ की तरह जहाँ भी हो वहाँ मुड़ जायें कि 'मैं नहीं हूँ।' अपनी भूल ढूंढ़ने वाला बड़े से बड़ा बहादुर है। दूसरे की भूल देखने वाला बड़े से बड़ा मूर्ख है। पुरूषार्थ का मतलब दुनिया समझती है कुछ न कुछ करना। जप–तप तीर्थ दान, ध्यान धारणा समाधि बैठ कर करते हैं आने जाने में पड़े हैं भटक रहे हैं पर पुरूषार्थ का मतलब है मन की शान्ति, मौन। **Be still** राजा जनक ने कहा मेरी मुझको नमस्कार है। मैं ही तो हूँ। अब मेरे लिए कहाँ है शरीर कहाँ है सम्बंधी कहाँ है जगत? यह है पुरूषार्थ। यह स्थिति कुछ भी करने से नहीं होती, पर गुरू वाक्य सत्यम्, गुरू में विश्वास रखने से होती है। 'श्रद्धावान लभते ज्ञानम्।' अपना दिमाग़ नहीं चलाओ कुछ भी सोचना अज्ञान है। **Thoughless** होकर रहो। सोच विचार ज्ञान–अज्ञान सब भुलाकर सबमें प्रेम की भावना रह जाये। हल्के हो जाओ, यह है पुरूषार्थ।

करो कुछ भी नहीं। जो पहले करते थे वह करने का भाव ही न रहे। चित्त का अकर्ता भाव ही समाधि है हठ समाधि न हो कि मन चिन्तन करता रहे, बाहर से चुप करके बैठे पर अन्दर की शान्ति हो। द्वेत जायेगा तो संकल्प–विकल्प भी नहीं चलेगा। मैंने ये किया मैं ये नहीं किया मैं कब मुक्त होऊँगा? मुक्ति की परवाह नहीं है। तुम आत्मा का निश्चय करो तो मुक्ति तुम्हारी पानी भरने वाली नौकरानी बनकर आकर खड़ी होगी। कोई भी भोग तुम्हें खींच नहीं सकता है अपनी ओर, यदि तुम अपने में स्थित हो तो इस शरीर के बारे में नहीं सोचो कि कल वहाँ जाऊँगा। सूखे पीपल की तरह शरीर की फिक्र छोड़ दो। निराकार को अपने आप हमारी चिन्ता है, उसकी गति है जहाँ भी इस शरीर को रखे वह। आनन्द में रहो। गुरू की तरह सागर बनकर जाओ खुटेले नहीं। कोई भी शुभ–अशुभ इच्छा तुम्हें दुखी करेगी। निरइच्छा वाला जहाँ भी है वहाँ तृप्त भरपूर है। इच्छा वाले को कुछ भी मिलेगा तो शान्त नहीं होगा। **Much wants more** पत्र जल्दी लिखना।□

पत्र गीता भगवान का -112

जिसकी अमानत होगी वह अपने आप लेता रहेगा गुरू को कोई भी इच्छा नहीं है। गाय से दूध जो बछड़ा होगा वही आकर लेगा। गुरू देने वाला भी नहीं है, लेने वाले पर **Depend** करता है, वह तो दूकान खोलकर बैठा है, जब खुली बाज़ार तो सौदा नां किया जब हुई हड़ताल तो सौदा याद आया ऐसी हालत न हो जाये। इसका डर होना चाहिए। गुरू भी है अपनी तंदरूस्ती भी है, लगन भी है तो एकदम काम उतार कर बैठना चाहिए। इन तीनों में से कोई भी एक चीज़ हाथों से चली गयी तो मुश्किल हो जायेगी। दुनिया की कोई भी विद्या सिखाई जा सकती है क्योंकि यह बाहरी विद्या है पर अपने को पहचानने के लिए अपनी कृपा और गुरू में विश्वास चाहिए बाकी गुरू चाहे कि इसे ज्ञान दूँ तो नहीं दे सकेगा, पर लेने वाले की बड़ाई है। आपने भी जितना विश्वास रखा है उतना मिला, जितना नहीं रखा होगा उतना नहीं मिला होगा। सब तुम्हारी देर है बाकी गुरू तो झोली फैला कर बैठा है, "समुड्र जे अगियां तूं झले बीहु झोली अचानक अचेई का मोतयुन जी छोली।" गुरू में कैसे भी संशय आयें तो पूछने चाहिए पर शक नहीं रखना चाहिए। एक–एक बात धो–धो कर साफ करके उठायें। 'चरण गुरू के धोय–धोय पीउ।' आप समान जीते जी ही बनकर खड़ा होना है।

सब संशय भ्रम उतारकर ब्रहमं होकर खड़ा होना है। भूला हुआ तो यह मन है पर तू आत्मा है। भूला हुआ मन गुरू को अर्पण करने से हमेशा के लिए छूट जायेंगे। मन अन्त तक हमें भुलाता रहेगा पर हम आत्मा का आइना दिखाते आयें। गुरू में भगवान से भी अधिक विश्वास हो 20 आना तो माया के बाप की भी ताकत नहीं है जो हम पर वार कर सके। गुरू को तो यह भी इच्छा नहीं है कि मेरे में कोई विश्वास रखे पर हमारा बेड़ा पार तभी होगा जब विश्वास आयेगा। □

सन्त और ब्रहमज्ञानी में अंतर

संत बहुत ही दयालु प्रेममय और पवित्र दिखाई देता है। परन्तु ब्रहमज्ञानी बाहर से कठोर भी हो सकता है। रामकृष्ण परमहंस ने रानी रासमणि को खड़ाऊँ भी लगायी।

ब्रहमज्ञानी जगत् की बातें सुनकर इतना शान्त रहते हैं कि जैसे उन्होंने कुछ सुना ही नहीं। जगत् की बातों में वे रूचि भी नहीं लेते क्योंकि वे जगत् को मिथ्या समझते हैं। सन्त कभी परमात्मा से प्रार्थना भी करता है, किसी भी किस्म की पूजा पाठ व अनुष्ठान आदि भी करता है, वह स्वयं को और भगवान को अलग समझता है पर ब्रहमज्ञानी अभेद आत्मा में है। वह अन्दर से जानता है किपुजारी और परमात्मा जानने वाला और जानने की वस्तु एक ही है, वह आत्मिक शक्ति में रहता है।

सन्त बाहर से लड़ाई झगड़ा खून–खराबा देखकर परेशान हो जाता है जबकि खिलाफ आवाज़ भी उठाता है। परन्तु ब्रहमज्ञानी की नज़र तत्व पर है इसलिए बाहर की घटना देखकर उसका ह्रदय द्रवित नहीं होता है। वह जानता है कि तत्व से न कोई आता है न जाता है।

सन्त कभी–कभी मन के बहकावे में आ जाता है। दुनिया में अज्ञान के कारण ही तन के, मन के कष्ट बनाकर बैठे हैं। मन अपनी गद्दी छिनने नहीं देना चाहता है इसलिए बाहर से ब्रहमज्ञानी सबको अपना आप समझकर

प्यार करता है। उसके सामने अगर कोई दूसरे की बात करता है तो वह बोलता है कि दूसरा बना ही नहीं है तो वार्तालाप वहीं समाप्त हो जाता है।

अगर कोई ब्रहमज्ञानी से कहेगा कि मैं अमेरिका से या यूरोप से आया हूँ और इतने दिन बाद जाऊँगा तो उससे ब्रहमज्ञानी कहेगा कि आत्म में आना जाना है ही नहीं।

सन्त अपनी मान्यतायें बनाकर बैठे हैं कि गंगा स्नान करना है पर ब्रहमज्ञानी ऐसा कुछ नहीं करता है। वह एक ही बात मानता है कि मैं आत्मा हूँ और पवित्र आत्मा ही है।

सन्त को ज़रूरी नहीं है कि उसने तत्व को पकड़ा है इसलिए वह दुःखी–सुखी होता रहता है पर ब्रहमज्ञानी ने तत्व को पकड़ा है इसलिए वह दुःखी सुखी नहीं होता।

सन्त कुछ करता रहता है पर ब्रहमज्ञानी ने तत्व को जाना इसलिए बाहर से वह कुछ करे या न करे, कोई नियम में बँधा हुआ नहीं है।□

ओऽम

दादा भगवान का पत्र

दुख में धैर्य सबसे अच्छा है, व्यर्थ चिन्ता नहीं करनी चाहिए। आत्माकार को भय और निराशा कभी भी न हो। मुसीबत में मुस्कुराना सीखो। दिल नहीं हिलना चाहिए। चाहे दो ही घण्टे के बाद ही फाँसी पर चढ़ना हो तब भी अपने दो घण्टे खुशी में गुज़ारने चाहिए। समय पर फाँसी का हुक्म भी पलट सकता है, हम अपने ख्याल से मुसीबत बनाते रहते हैं। किसी को विश्वास नहीं है कि हमेशा क्या यूँ ही मुसीबत आ जायेगी। नहीं भी आ सकती है पर गिरे हुए ख्याल करके बैठ जाने के लिए हम स्वयं ही जिम्मेदार हैं। गिरे हुए ख्याल भले ही स्वतः आयें पर चढ़े हुए ख्याल करना भी हमारे हाथ में है। विकल्प भले आयें पर अच्छे संकल्प करना भी हमारे हाथ में है। क्यों न सदैव अच्छे संकल्प करें। ये आदत मिटा दो। बुरे व अच्छे ख्याल करना तो हमारे हाथ में है पर जब आत्मा में नहीं है तभी मन बुरा ख्याल देता है अपनी बुद्धि से मत सोचो, ईश्वर के प्रति समर्पित हो जाओ **(Don't think with your mind, surrender unto God.** प्रारब्ध से कोई भी नहीं भाग सकता जो होना है वो तो जरूर होगा, हम ख्याल करके ये कहते हैं, भगवान करे ऐसा न हो तो हमारे मर्ज़ी से कुछ भी नहीं हो रहा है। न ही कोई अनहोनी होगी, हिम्मत रखो तो परमात्मा तुम्हारे साथ है।

एकमात्र वह वस्तु जिससे हमें भयभीत होना चाहिए वह स्वयं भय ही है।

The only thing we have to fear, is fear it self.

चिन्ता और भय निकालकर अशोक रहें। जुल्मों का सामना करो पर इंतज़ार या चिन्ता या भय बिल्कुल मत करो। जो सच पर राज़ी है, भगवान भी उसका मददगार है। सबकी तकलीफों के समय आकर सहायता की है, यह पक्का विश्वास रखो। ना अपनी चलाओ, न ही परामात्मा के किये पर नाराज़ होओ। "जो तुद भाँवे सांई भलीकार।" इच्छा कैसी? कल के दुःख की चिन्ता आज मत करो। आज का दिन हिम्मत से गुज़ारो। निराश होना ही नास्तिक होना है। "दिल दरिया की तरह उदार रखो। मन में भया धारण करो कि बिना सेवा के बिमार हो जाओगे।"

हिम्मत और आनन्द से कितने तो कामों में (पढ़ने में, लिखने में, खेलने में) मशगूल रहो कि चिन्ता करने के लिए वक्त ही न रहे। खाली बैठे हुए को मन आता है। पहले ही सुजाग हो जाओ, देखो– ग़म और चिन्ता के समय खुशी करते हो? भगवान के भजन गाओ, अविश्वासी मत बनो। मन जो भी कहे उसे मत करो। "ये नहीं होगा" ऐसा जवाब मन को दिया करो। रोज़ हज़ारों बार मन ने हमें डराया होगा पर अभी तक हुआ तो कुछ भी नहीं।

फिर आज क्यों डरें। दूसरों के ऊपर कितनी मुसीबतें आई हैं, मैं थोड़े में ही दिल को क्यूँ कमज़ोर करूँ। तूफान भी जितनी देर के लिए आया होगा–रहेगा आखिर तो शान्त होगा। मैंने कल का भी सामना किया, आज को भी स्वीकार किया है, बाकी भविष्य (आने वाला कल) की क्या चिन्ता करूँ। प्रतिकूल समय आता है तो अक्ल भी आ जाती है। भगवान तो सदैव मेरे साथ है। इसके अलावा अन्य भी तो कई मुश्किलें आई वो कैसे चली गईं। काले बादल कैसे छँट गये। प्रारब्ध अनुसार मेरे दुख सुख मुझे भोगने हैं। आसक्तचित्त मत बनो। अपने से पूछा करो कि भला आखिर भी (ज़्यादा में ज्यादा) क्या होगा? अधिक से अधिक मौत। वो तो शरीर को ही मिलेगी। मैं तो अब भी अब भी अमर आत्मा हूँ। भया और चिन्ता में वो रहे जिसका धणी सांई न हो। सर्वशक्तिमान परमात्मा मेरा हो चुका है। भगवान सत्य की तरफ हमेशा ही है और मैं सच पर खड़ा हूँ। भगवान मेरे साथ है इसलिए अब मैं बेपरवाह हूँ। सीता माता को रावण ले गया फिर रामचन्द्र ने भी कहा कि जाकर रास्ते पर डिलीवरी करो तो भी सीता ने चिन्ता नहीं की। तुम्हारे साथ ऐसा क्या हो गया है? जो अवश्य ही होना है, उसका सोच विचार क्यों करें। 'थियणी अथस थिए, मूर न थिए।' अनहोनी नहीं होनी। कभी भी किसी मनुष्य का आधार मत लो। एक परमात्मा का ही

आधार हो। मनुष्य की टेक वृथा सब जान। ताला चाभी ईश्वर के हवाले कर दो। 'जो हिम्मत दिल से करता है वह भवसागर से तरता है।' दुश्मन की दुआ से भी डरो और मित्र की गालियाँ भी भली लगे। है ही विचार की शक्ति। 'ईश्वर की अजब कारीगरी है। उसकी रचना निराली है। दुःख भी सुख लगता है– मंसूर को शूली भी श्रृंगार लगी। तुम करो भला हम भलो न जानें।

साँप नहीं मारता साँप का (भय) संशय मार देता हे। विस्मृति दिल के दर्दों की चुनिंदा **(Selected)** दवा है। संकल्प में सृष्टि है। संकल्प किया तो खाट बिछ गयी, संकल्प किया तो स्त्री आ गई, फिर सोचा कहीं शेर न आ जोय तो शेर भी आ गया। खराब संकल्प ना करो। तार अभी आयेगा ही तो सब अपने संबंधियों को ही मार डालेंगे। संकल्प की सिद्धि हो जाती है। मेरा पति खराब नहीं है, मैं बिमार नहीं हूँ क्योंकि मैं आत्मा हूँ। कर्ण अपने को दासी पुत्र समझता था तो कमज़ोर हो जाता था और सूर्यपुत्र समझता था तो बहादुर हो जाता था। लकीर को बिना मिटाये छोटा–बड़ा करना तुम्हारे हाथ में है। मनुष्य को काल समझोगे और डरोगे तो मरोगे। बेचारा मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता पर तुम डरोगे तो वहीं की वहीं ख्याल ही में मर जाओगे जैसे गुलाल के लोटे के पानी को खून समझा तो वहीं का वहीं मर गया। **What potects**

the body? ये शरीर फ़खत प्रारब्ध कर्म से ही चल रहा है। प्रारब्ध पूरी होने पर कृष्ण को तीर लगा। एक सुंदर जवान खुशमिज़ाज सेठ है, केवल स्त्री बिमार है और कोर्ट में झूठा केस है उस पर– पर केस की पैरवी करने में वो कमज़ोर होता जा रहा है, इज़्ज़त का बहुत डर होता है। कब तक केस जाकर पूरा हो तब तक २० साल गुज़र गये। उसका वज़न ४० किलो घट गया चिन्ता में। तीस साल में ५० में पचास साल का हो गया। जवानी पूरी हो गयी–पत्नी भी ठीक हो गयी। केस भी झूठा साबित हो गया पर इतना दुःख २० साल देखा, उसका किसे दोष दें? भगवान ने तो केस में जिताया। लिखकर भेजना कि दोष किसका है? सजा से लेकर सब इंसान निर्बल हैं, कुछ कर नहीं सकते प्रारब्ध से बढ़कर (अधिक) कोई भी इच्छा पूरी नहीं करता। **You never try to avoid, what God sends, fear is a sign of want, lack of faith. Have faith in God.** तेरा भाणा मीठा लागे– डरते हो तो कमज़ोर होते जाओगे। बीमारी का ख्याल करने से क्या स्वस्थ हो जायेंगे? अपने ख्याल सुधारो। **What you can not care you must endure.**

Strength is life, weakness is death. Diffculties and troubles help you in developing your will power & power of endurance. Be Corageous.

परिस्थितियों को बदलना हमारे हाथ में नहीं है पर ख्यालों का फरेना हमारे हाथ में है। तुम कमज़ोर नहीं हो– ज़हीफाइ (कमज़ोरी) के तो ख्याल भी मत करो– कमज़ोर को आत्मा भी प्राप्त नहीं होती है। कमज़ोरी मौत है– शरीर की प्रीति रोगों का कारण है।

"As thou direct, so I work "this is easiest wya of passing out side the 5 phare of individual karma, for one who layth down all his capacities at hte feet of the Lords, Creats no karma for him-self and then as krishna pormise, "I take upon myself his balance of accounts." be like dairy lower it turns to the Sun.(सूरजमुखी)

विवेकानन्द समाधि में बैठा परिपक्वता के लिए– पर उठते ही कहा– कि 'अब फिर विवेकानन्द न बनूँ। यानि हमेशा याद हो, पक्का रहे कि 'ब्रहम हूँ' पर सुजाग होने के बाद भी वह शरीर रहते विवेकानन्द तो था पर स्वयं को शरीर नहीं समझता था। इसी प्रकार सबको नाम रूप तो दिखते हैं पर नाम–रूप भुलाकर फिर आत्मा देखनी है। जैसे जगत को भुलाकर जगदीश देखते हो, जैसे रसी देखने से सर्प का भ्रम चला जाता है–ये नित्य अभ्यास करना है। अभ्यास और वैराग्य इसलिए मिले हैं .... जो सुनते हो उस पर अमल करो। गीता 18/63 हे अर्जुन! तुम्हें गोपनीय से अति गोपनीय रहस्य मैनें

बता दिया है, अब जैसा समझो, वैसा करो। लड़ाई करो या न करो। 'ज्ञानी करे या न करे है वो स्वार्थ बिना' तुम सब अपने से पूछो कि अभी अपने स्वार्थ भी शेष हैं क्या? भगवान के ऊपर जो रखता है, उसका भला करता है फिर अपना स्वार्थ क्यों रखे? **Non possition** बनना है, मगज़ (बुद्धि) को तेज़ करना है। कितने भी उत्तर प्रश्न भले करो–जिसमें विश्वास आये उससे पूछना चाहिए। अब बहहुत पूछ चुके हो, अन्दर में ही प्राप्ति करो–भटकना, ढूँढ़ना बन्द करो।

We Rave to be all the time in quest.

शुभ अहंकार करो कि मैं भगवान हूँ और प्रकृति मेरी दासी होकर मेरे इशारे से दुनिया को चला रही है **Automatic** (स्वतः) मृगतृष्णा का जल जंगल में ज्ञानी को भ देखने में आ रहा है था और भूल से पानी समझ रहा था पर जब आगे जाता है तो याद आता है कि पानी नहीं है–भूल भले हो पर फिर सावधान करता जाता है स्वयं को ज्ञानी। 'मरने, जीने, घटने, बढ़ने वाला हूँ मर्द हूँ, स्त्री हूँ, ब्रहमचारी–गृहस्थी–वानप्रस्थी–संयासी हूँ, ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र हूँ, सिंधी, मद्रासी, बंगाली, पंजाबी हूँ, सुन्दर हूँ, काला हूँ, योगेश्वर–महेश्वर हूँ, मास्टर–शागिर्द, क्लर्क, ऑफिसर, सेठ हूँ, ज्ञानी हूँ, पूरा हूँ .... मैं करता हूँ– ये अज्ञान बैठकर बक रहे हो। मौन धारण करो। सब अपने आप हो रहा है। फिर अपनी मर्ज़ी से नहीं चलता

है–चलाओ तो चलता हूँ–नहीं तो बस जैसे भी रखे। जग में ऐसे रहो जैसे जल में नाव। **Live is the world like a boat in water.** देह अध्यास, देह का अहंकार रास्ता भटकाता है। □